प्रकाशक

श्री जैन धर्म प्रसारक संस्था
सदर बाजार, नागपुर.

सुर्वण नामावली

स्तंभ–मुनि श्री आनन्द ऋषिजी महाराज

संरक्षक–श्री नमीचन्दजी मगनमलजी पुगलिया
इतवारी नागपुर

आजीवन सदस्य (Life Members)

१ श्री हीरचंदजी नाथुलालजी पारख, सदर नागपूर

२ „ मानकचन्दजी सेरमलजी सुराना सदर नागपूर

३ „ कमरीमलजी गम्भीरचंदजी धामक

आश्रयदाता

१ श्री नेन्दरामजी चांदमलजी बोहरा पीपला

२ लालचंदजी रतनचंदजी महेश्वरा गडू

फतेराजजी धनराजजी सिंगी सिंधी

४ हीरालालजी ताराचन्दजी पुगलिया बाबुलगांव

५ „ सफल जैन संघ धनासा (दयापुर)

६ जैन संघ चांदूर बाजार, जि उमरावती

[illegible] हीरचंदजी नाथुलालजी पारख सदर नागपूर

प्रथमावृत्तिकी प्रस्तावना
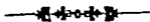
(१) इण जगतमांहे प्राणीमात्रने धर्ममार्गमांहे अवश्य प्रवर्त्तन हुवो चाहिजे कारण इण दुःखमय संसारसमुद्रमांहे नरकादिक चारु गतिमांहे जीव, ज्ञानावरणीयादिक अष्टकर्मना योगे मोहादिक शत्रुका वश हुयने संसारिक धन कुटुंबादिकना अल्पपौद्गलिक सुखमांहे राच्या थका जन्म, जरा, मरणादिक अनेक प्रकारका दुःख सहन करी परिभ्रमण करता अनंता पुद्गल परावर्तन काळ व्यतीत हुइ गयो ! परंतु सर्वोत्कृष्ट अनंत सुखमय एहवो अनादि श्रीवीतराग प्रणीत दयामय जैनधर्म केवारें पण जीव पामी शक्यो नहीं ते श्रीजैनधर्म केहवो छे ? के जेम चालता पुरुषने मार्गे चालता यष्टिका (लाकडी) आधारभूत होय छे, तेम जीवने मोक्षका अनुपम सुखकी प्राप्ति होवण वास्ते श्रीजैनधर्म निश्चयें आधारभूत छे अनादि मिथ्यात्वना योगें काम, क्रोध, लोभ, मोह, मत्सरादिकना धारण करणारा जीवाने ज्ञानावरणीयादिक कर्मथकी मुक्त करीने पोताना स्वस्वभावमांहे रमण करणार से एक उक्त धर्मनुं सेवन छे. ए धर्मने यथार्थ शुद्ध श्रद्धा पूर्वक आराधवाथी जीव, चतुर्गति रूप संसारको अंत करीनें जिहां जन्म नहीं, जरा नहीं, मरण नहीं, रोग नहीं, दुःख नहीं, एहवा अकलंक, अक्रिय, अकर्मी, अक्षय, अवेदी, अणाहारी, अबाधक, अभोगी आदिक अनंत सुखमय सिद्धरूप स्थानक प्रत्ये पामे छे

(२) हवे ते सिद्ध स्थानक पामवाने योग्य तो मात्र मनुष्य गतिमांज रहेला जीव छे; कारण के नरक तिर्यंचादिक गतिमांहेला जीवाने सिद्धपणुं पामवानो अभाव छे ते मनुष्यपणुं पण जीव, अनंतीवार पाम्यो, पण अनार्य देशमांहे उत्पन्न होवणासुं अथवा आर्यकुळमांहे उत्पन्न हुवो तो आभिग्रहिकादिक मिथ्यात्वना प्रसंगथी शुद्ध स्याद्वादरूप श्रीजैनधर्म पामी शक्यो नहीं, तेथी ते सर्व भव व्यर्थ गया हवे इण समय शुभ कर्मोदयें करी मोटी पुण्याइसुं मनुष्य गति आर्यदेश उत्तम कुळ, संपत्ति, नीरोगी शरीर, दीर्घायु सुगुरुनो संयोग, इत्यादि शुभ सामग्री मिळी छे तेम छतां जो विषय कषायादिकमांहे तल्लीन हुइने समकित दर्शनरूप धर्मनी प्राप्ति करणमांहे प्रमाद करांछा, तो प्राप्त हुवेला इण संयोगको विनाश हुयने फेर घणा काळताईं संसारचक्रमांहे परिभ्रमण करणा पडसे एहवो अवसर तथा सर्व प्रकारनो संयोग वारवार मिळणो घणो मुश्कील छे. ज्ञानसंपादन करने आत्माको कल्याण करण वास्ते, पूर्वकृत दुष्कर्मनो बदलो देवण वास्ते, तथा सर्व साधर्मीभायामांहे ज्ञानको प्रसार जो (पंडित पुरुषापासें सूत्रको व्याख्यान श्रवण करणासुं तथा ग्रंथ प्रसिद्ध करणासुं हुवे छे) ये होवण वास्ते धर्मकीज पूर्ण आवश्यकता छे; धर्म सरीखी प्रिय अने श्रेष्ठ वस्तु इण जगतमांहे दुसरी कोई पण नहीं छे सांसारिक संतति अने संपत्ति केवळ अनित्य छे जिहां सुधी शुभ कर्मोको उदय रेवे छे, तिहां सुधी सर्व इष्टवस्तुको संयोग आयें मिळे छे, अर अशुभ कर्माको उदय होवे ते वखतें सर्व इष्ट

वस्तुको वियोग हुयने अनिष्ट संयोगकी प्राप्ति हुवे छे. संसारमाहे विवाह आदि आरंभिक कार्य प्रयोजनमाहे हजारा रुपिया मोठा उत्सवमसुं खर्च कर देवाछा, सु वो तो फक्त सांसारिक इणहीज भवकी यश कीर्तिको कारण छे, अने धर्मनिमित्तें जो द्रव्य खर्च होवे तो इण भवना तथा परभवना सुखको तथा मोक्षना सुखनो पिण कारण छे. इण वास्ते समस्त जैन बंधुका अंतःकरणमाहे धर्मकी जागृत प्रेरणा निरंतर रेवण सामे तथा धर्मको उद्योत करण वास्ते प्रयत्न करने धर्मनिमित्त यथाशक्ति द्रव्य अवश्य खर्च होवणो चाहीजे इतरीज हमारी सर्व जैन बंधुने विनति छे

(३) ओ पुस्तक छपायने प्रसिद्ध करना वाचणारा सज्जनलोकांप्रते इण पुस्तकमाहे दाखल करेला ग्रंथाकी हमें किंचित् सूचना करा छा

(४) इण पुस्तककी आदिमें श्रावकाने नित्य उभयकाल करना योग्य छे आवश्यककी करणीरूप प्रतिक्रमणसूत्र छे, तिको अर्थ सहित दाखल कीनो छे कारण श्रावकने कोइ पण शास्त्र वाचणा भणाजणा, तिके सर्व अर्थ सहित भणीजणा चाहिजें. कारण यथार्थ अर्थ धारणामें होवे तोहिज वो ग्रंथ अनुभव सहित भणीयां कहेवाय, नहीं जरां सुआका पाठ प्रमाणें समजवो उणमाहे पण पडिक्कमणादिक छे आवश्यक तो नित्य सांझ सवार क्रिया करती वेला काम आवे छे इण वास्ते उणका अर्थ तो अवश्य धारणाइज चाहिजें, जिणसू, मात्र मूलपाठ जाणनारा लोकाने जे कांइ क्रिया करणको अनुभव होवे, वा लोकासुं अर्थ सहित जाणनारा मांहे कितराक दरजे अनुभवकी वृध्दि होवे छे, अने उणका फल पण उतराज दरजे जादा होवे छे इण प्रमाणें सिध्दांतमांहि भगवंत फुरमायो छे

(५) और, क्रिया करणार पुरुषका आत्माका अध्यवसाय आश्रयी पिण फलकी अधिक न्यूनता कही छे तथापि अर्थ धारणार अने अर्थ न धारणार यां दोनु जिणांका आत्माका अध्यवसाय (प्रणामकी धारा) सरीखा होय, तो पण अवश्य अर्थ न धारणारासुं अर्थ धारणाराने अत्यंत अधिक फल प्राप्त होवे छे इण वास्ते अर्थकी धारणा करणी आवश्यक छे, इण हेतुसू आवश्यक सूत्र तथा अन्यग्रंथ उपरसुं सामायिकादि सूत्रकी पाटीयां साथें पाठका अर्थ पण दाखल कराया छे ए सर्व हमारा साधर्मी भाई अर्थसहित भणीजणको उधम करेल इणतरे हमे पूर्ण आशा राखा छा

(६) श्रीजैनधर्ममाहे महान् विद्वान् परम **पंडित पूज्यश्री श्री १००८ श्रीकानजी रिखजी महाराज नी** संप्रदायना **स्वामीजी श्री १००८ श्री अयवंता रिखजी महाराज** तस शिष्य **स्वामीजी श्री १००८ श्री तिलोकरिखजी महाराज** महाप्रभाविक हुवा माहाराजसाहेबको जन्म संवत् १९०४ की चैत्र वदि ३ के दिन हुवो संवत् १९१४ का माहावदि १ गुरुवारके दिन माहाराजसाहेब **स्वामीजी श्री अयवंतारिखजी माहाराज** पासें वैराग्य भाव पामीने मोठा उत्साहसू **दीक्षा ग्रहण** कीनी संवत् १९३६ को चोमासो दक्षिण देश घोटनदीमांहे करीने अहमदनगर, आंबोरी, हिवरो, पूना, सतारा औरंगाबाद, धुलिया वगैरे अनेक ठिकाणे विचरतां भव्यजीवाने सम्यक्त्व प्रतिलाभी संसारसु तारिया छे संवत् १९४० को चोमासो करणवास्ते आषाढशुद्ध ९ के दिन अहमदनग

शहेरमांहे पधारिया, उणाहिज दिन तप धरने सावणवदि २ रविवारके दिन माहाराजसाहेब देवलोक हुवा ऐसा उत्तम पुरुषांको वियोग घणा भायाने दु:सह हुयने श्री जैनधर्मका महा पंडित पुरुष रत्नमायेका एक अमुल्यरत्नकी खामी पड गई

(७) स्वामीजी श्रीतिलोकरिखजी माहाराज अल्प आयुष्य मांहे, जेम पृथ्वी मंडलमांहे सूर्य प्रकाश करी अंधकारनो नाश करे छे एम मिथ्यात्वरूप अंधकारनो नाश करीने भव्य जीवरूप कमलने विकस्वर करण वास्ते, सिद्धान्तानुसारें मोठा मोठा ग्रंथोंकी रचना करी घणा भव्यजीवाने प्रतिबोधी परोपकार करणमांहि मोठो श्रेय लीनो छे माहाराज, साहेबको स्वभाव चंद्रमा परें शीतल, समुद्रनी परे गंभीर, मितभाषनी, वात्सल्यधारी करुणाकर सागर इत्यादिक गुणे करी सहित हुयने या पुरुषामांहे कवित्वशक्ति वाकचातुर्य, सम्यक् सूत्रकता श्रीजैनसिद्धान्त तथा परशास्त्रना पारंगामी वगैरे अनेक गुण प्रशंसनीय हुवा. माहाराज साहिबका गुणाकी स्तुतिकरां जितरी थोडीज छे

(८) माहाराजसाहेब निरंतर साधु संबंधी पडिलेहण, प्रमार्जन त्रिकाल काउस्सग्ग ध्यान तथा धर्मसंबंधि व्याख्यानादिक कार्य करीने परिवरिया पछे शेष रहेता वखतमांहि किंचित मात्र पण प्रमाद सेवन करता नहीं था, पण जैन सिद्धान्तमांहेसु आनंद श्रावकादिक महापुरुषोंका चरित्रानुसारें चोढालिया, छे ढालिया वगैरेकी रचना करता हुता, तथा वैराग्य भावने दर्शावनारी अनेक लावणीया पद, सवैया तथा श्रीजिनेश्वरस्तुतिरूप घणा स्तवन सज्झाय छंद श्रीचन्द्रकेवली श्रेणिकादिकना चरित्र रास प्रमुख अनेक छोटा मोटा ग्रंथोकी रचना कीनी छे अने ते इतरा तो रमणीय छे के जे मय वांचणासु जेहवो भावार्थ या ग्रंथामें दरसायो छे तेवाज भावार्थ की हुबेहुब असर वांचणवालाका मनमांहे ठसिया विना रेवेज नहीं ऐसी खुबी माहाराजसाहेबकी कविता मांहे वापरी छे थोडाकालमांहे माहाराज साहेब इणतरे प्राकृत भाषामें कवितारूपें सात्र शीत्तरहजार ग्रंथकी जोड करी जिनधर्मने दीपायो छे

(९) उपर लिख्या मुजब माहाराज साहेबका रचेला ग्रंथ प्रत्येक जैनधर्मी श्रावकने वांचवा भणवा योग्य जाणीने उणमेंहिसा केइ केइ ग्रंथ इण पुस्तकमांहे दाखल करिया छे जिणमें सर्व साधर्मि भाई वांचने भणीजने जरूर धारणा करेला इणतरेकी हमारी अभिलाषा पूर्ण करणमांहे हमारा साधर्मी भाई पश्चात पडसी नहीं जो जो ग्रंथ इण पुस्तकमांहे दाखल करिया छे तिके सर्व हमारा साधर्मी भायाने घणाज उपयोगी छे और दुसरा श्रावक लोकां पासे माहाराज साहेबकी जोडको ग्रंथ घणो लिखतमांहे पडियो छे पण हाल ते प्रसिद्ध हुवा नहीं सु मोटी दिलगीरी मालम पडे छे; कारण प्रस्तुतसमयमा विद्वान पुरुष थोडा जाणे छे जिणवास्ते पंडित पुरुषांका रचेला ग्रंथ जो प्रसिद्ध नहीं होसी तो ज्ञानकी वृद्धि किस तरे होसी ! इण वास्ते ज्यां श्रावक लोकांपासे माहाराजसाहेबका रचेला ग्रंथ होसी वे प्रसिद्ध करणमांहे प्रमाद करेला नहीं ऐसो हमाने भरोसो छे

(१०) ओ पुस्तक श्रीजैन धर्मको उद्योत हुयने ज्ञानको प्रसार होवण वास्ते, तथा भव्यजनाकी समकित दृढतर होवण वास्ते तथा श्री तिलोकरिखजी माहाराजका गुण

प्रगटकरण वास्ते श्रीदेव गुरु धर्म प्रसादे छपायने हमारा प्रिय सकल जैन बधु आगल सादर करियो छे

(११) इण प्रतिक्रमण सत्यबोधका पुस्तकने महाराजसाहेबका अतिशयका कारणसूं नीचे लिख्या मुजब ज्या सज्जनलोकां उदारमने करी श्रीजैनधर्मको उद्योत हुवणवास्ते आगाउ मदत दीनी छे, तीके बोहोत प्रशंसनीय छे. जेम हंस पक्षीकी चचूमाहे एहवाज कोई जातना पुद्गल रह्या छे, के तेहथी तेहनी चचू सदाकाल दुग्धनेज ग्रहण करणका स्वभाववाली होय छे, तेम सद्गुणीजनाका अंतःकरणना परिणामने विषे एहवाज कोई उत्तमजातिना पुद्गल रहेला छे, के ते थकी तेहनी बुद्धि सदाकाल सत्कार्य करवाना विषेज प्रवर्तमानथकी रहे छे इण प्रमाणेंज सर्व जैन बधु आगासूं धर्मको उद्योत करणवास्ते हरएक प्रकारकी मदत करणकी उमेद जादा राखेला, इसी हमे पूर्ण आशा राखांछां

नांव.	रूपिया.
मुता नवलमलजी किसनदास, अहमदनगर	२२५
साढ बिरदीचंदजी चुनीलाल, राहाता . ..	२२१
मुता मोकमदासजी हाजारीमल, सातारा . .	२२१
गुगलिया हुकमचंदजी नेमीदास, अहमदनगर .	११५
ओस्तवाल पेमराजजी पन्नालाल, अहमदनगर. ...	१०१
गुंदेचा माइदासजी छोगमल, अहमदनगर .	६१
गुंदेचा मोतीचंदजी रतनचंद, अहमदनगर .	६१
मुणोत पनराजजी शिवदास, अहमदनगर. ..	६१
मुता हजारीमलजी आगरचंद, अहमदनगर .	६१
सींगी बनेचंदजी दोलतराम, अहमदनगर	६१
गांधी गुलाबचंदजी रतनचंद, आंबोरी	५१
कोटेचा तिलोकचंदजी आसकरण, धुलिया .	५१
मुता खुबचंदजी लुणकरण, हिवडा खानरा ...	५१
गांधी हिंमतमलजी हामीरमल, माहादपटेलकी चिचोंडी	५१
गांधी बछराजजी राजमल, महादपटेलकी चिचोंडी .	४१
भंडारी माणकचंदजी मोतीचंद, अहमदनगर	४१
गांधी तेजमलजी राजमल, अहमदनगर ..	३१
नाहाटा नंदरामजी बालाराम, धुलिया .. .	२५
गांधी किस्तूरचंदजी भिकनदास, माहादपटेलकी चिचोंडी	२५
मुता नेमीदासजी प्रेमल, गुलेजगड ..	२५
मुणोत हुकुमचंद जवानमल, हिवडा खानरा . .	२५
गुंदेचा जितमलजी किसनदास, नांदूरबारागांव	२५

क्षमापना

(१२) इण ग्रथमांहे जिनराज शब्द हामे शास्त्रका बराबर जाण न होवणासु वे सुधारणवास्ते असमर्थ हुया छा पण सुविद्वान लोकां इण पुस्तकमांहेला सामायिक, प्रतिक्रमण, तथा पच्चक्खाण वगैरेका पाठ अने अर्थमांहे तथा और कोइ ठेकाणे चुक्क होइ होसी तो वे सर्व हमाने अज्ञ जाणी हमारा उपर दोष न राखना आप वाचने सुधारने हमाने लिखेला, एहवो सुज्ञ लोकमांहे एक प्रकारको स्वाभाविक गुणज होय छे वास्ते इण मदद मादा लिखणको काइन कारण नही छे पिण मुल वग्ग मिच्छामि दुक्कड देने हमाने आलोयणा कीधी चाहिजे इण ग्रथमांहेला मूल पाठको अगर अर्थको तथा स्तवन सज्झाया दिक बाकी विषयका कोइ एक शब्द अगर अक्षर न्यून अधिक अशुद्ध रीतें, आघो पाछो जाणतां, अजाणता वगैरे कोई प्रकारें भूलथी लिखिज गयो होसी तथा ग्रंथ छपावणमांहे कोइ प्रकारको दोष लाग्यो होसी तथा ग्रथको अविनय अशातना जाणता अजाणता हमारी तरफसु होइ होसी तो ते सर्व मन वचन कायायें करी श्रीअरिहत सिद्ध केवली भगवतनी सामें सर्व दोषप्रत्यें हमारें मिच्छामि दुक्कड होजो अपराधकी क्षमा होजो

(१३) ओ पुस्तक छपावणका काममांहे तथा शुद्ध करणका काममांहे हमारा प्रिय जैन बधु भाई मीमसिहमाणेक घणी तसदी लीनी छे जिण वास्ते उपकारो आभार मानां छां श्रीजिनधर्मका उद्योत करणको उद्यम करने हमारा बधु निरतर श्रेय लेसी, इसी हामे चाहना राखां छां कि बधु चिरंजीयात् शुभ भवतु

विज्ञप्ति

[१] इण पुस्तकका ५७ पानमे पडिक्कमणाकी विधीमांहे सखेहणा अठारे पाप स्थानक कहीने इच्छामि ठामि कहिजे इणतरे लिख्यो सु केइ श्रावक इण मुजब केहे छे मे केई सखेहणा अठारे पाप स्थानक कहीने दस प्रकारको मिथ्यात्व तथा केइ श्रावक २५ प्रकारको मिथ्यात्व तथा चौवे स्थानादिया जीवांरी आलोयणा करीने पछी इच्छामिठामिनी पाटी कहे छे सु आप आपकी गुरु आम्ना तथा परपरा प्रमाणे करीजे

[२] तथा सामायिक पारवानी विधिमांहे काउस्सगमांहे इरियावहीकी पाटी चितवणी लिख्यो छे परतु केइक श्रावक लोगस्सकी पाटी चितवे छे वास्ते आप आपकी गुरु आम्ना प्रमाणे करणो इण पुस्तकका दुजा पानमें तिक्खुत्ताकी पाटी मांहे पयाहिणं करेमि वंदामि " लिख्यो छे सु केइ भाषा इणतरे केवे छे तथा केइ भाषा ' पयाहिणं करामि " केवे छे, सु आप आपकी गुरु आम्ना तथा परपरा प्रमाण केवणो

श्रीः

॥ द्वितीयावृत्ति तथा जीवनचरित्रकी प्रस्तावना ॥

धर्म-कर्म-गुण-राशि-दर्शकम्
मान-मोह-मद-मार-मर्दकम्
अज्ञ-जीव-तिमिरापहारकम्,
"सत्यबोध" कथन यथार्थकम् ॥ १॥

प्रियवाचकवृंद ! प्रातःस्मरणीय, **पूज्यपाद महात्मा श्री तिलोक ऋषिजी महाराज** विरचित प्रतिक्रमण सत्यबोधकी उपयोगिता, लोकप्रियता, समाजके किसी भी तत्त्वज्ञ पुरुषसे छिपी नहीं है, आज उसके द्वितीय संस्करणके अवलोकनका लाभ जो समाजको मिल रहा है इसका श्रेय प्रथम तो अहमदनगर निवासी श्रीमान तथा तत्प्रांतवर्ती श्रीसंघको है। कारण जिस समय पूज्यपादका शरीरावसान अहमदनगरमें हुवा उस समय वहाके विज्ञ श्रावकवर्गने अर्थात् जिनकी सुवर्ण नामावली प्रथमावृत्तिके प्रस्तावनामें दी है उन लोगोंने महाराजश्रीके विरचित उपलब्ध स्फुट कविताओंका संग्रह करके पुस्तकाकारमें मुद्रित कराया जिसके अवलोकनका सौभाग्य आजभी समाजको प्राप्त हो रहा है। परंच वह पुस्तक इतनी पर्याप्त संख्यामें प्रकाशित नहीं हुई थी कि समस्त अभिलाषी जनोंकी इच्छापूर्ति हो सके इस लिए स्थान स्थान पर पुनः उसकी संस्करणसूचक शब्द स्वर्गीय गुरुवर्य **श्री रत्नऋषिजी महाराज** तथा पंडितरत्न मुनि **श्री आनंदऋषिजी महाराजके** श्रवणरंध्रपर पडते थे

गुरुवर्य **श्री रत्नऋषिजी महाराजका** वियोग विक्रमाब्द १९८४ मिति ज्येष्ठ कृष्णा ७ सप्तमी सोमवारके दिन हिंगणघाटके नजदीक **अल्लीपुर** में हुवा उस वर्षमें मुनि **श्री आनंदऋषिजी महाराज** ठाणे २ का चातुर्मास **हिंगणघाट में** हुवा चातुर्मास समाप्त होनेपर वहासे विहार करके मांडोरी, वरोरा, चादा, वणी, पांढरकवडा, वेला, सिंधी वगैरह क्षेत्रोंको स्पर्शते हुए नागपुर सदरबाजारमें पधारना हुवा विक्रमाब्द १९८५ के ज्येष्ठ कृष्णा सप्तमीके रोज गुरुवर्य **श्रीरत्नऋषिजी महाराजका** जीवनचरित्र मुनि **श्री आनंद-ऋषिजी महाराजने** श्रावकोंको सुनाया, और उसके साथ यह भी सुनाया कि महाराज श्री के हृदयमें साधुधर्म पालते हुए समाजसेवा, विद्याप्रेम, एकता वगैरह सद्गुण विद्यमान थे, अतः उनके स्मारक स्वरूप कोई ज्ञानप्रचारक संस्था यहा स्थापित होवे तो ठीक है, ऐसा उपदेश होनेपर वहांकी जनताने उत्सुक होनेपर "**श्री जैनधर्म प्रसारक संस्था**" स्थापित की जिसके द्वारा छोटे २ ट्रेक्ट प्रकाशित होकर अपना नाम वह सार्थक कर रही है

विक्रमाब्द १९८५ में मुनि **श्री आनंद ऋषिजी** महाराज का चातुर्मास **सदर बाजार नागपूर में** हुवा उस समय पारसिवनी निवासी **श्री तिलोकचंदजी सेठिया** और श्रावक संघ महाराज श्री के दर्शनार्थ आया था उन्होंने वार्तालाप करते हुए यह प्रस्ताव उपस्थित किया के **श्री तिलोक ऋषिजी** महाराज विरचित प्रतिक्रमण सत्यबोध नामक

जो पुस्तक है, उसीके पठनसे हमारे क्षेत्रमें धर्मजागृति हुई है, अब यह पुस्तक अलभ्य है यदि उसका दूसरा संस्करण होता हो तो ५०० पांचसो रुपिया उसके लिए देता हूं तदनंतर *धर्मगिरिनिवासी* सुश्रावक श्रीमान् नवलमलजी सुरजमलजी धोका तथा मसा (अहमदनगर) निवासी श्रीमान् रतन चंदजी जसराजजी छाजेड और कई एक उपस्थित धर्म प्रेमी लोगोंने प्रतिग्राही नहीं बल्कि रुपियोंकी दृष्टि कर दी जिनकी सुवर्ण नामावली इस आवृत्तिके आश्रयदाताओंकी श्रेणिमें दी गई है। और उन्हीं लोगोंके उत्साहसे अहमदनगरवाले श्रीमान् नवलमलजी किसनदासजी मुथाकी अनुमति लगाकर पुनरावृत्ति का कार्य प्रारम हुआ अब इस श्रेयका भागी आश्रयदाता वर्ग तथा **श्री जैन धर्म प्रसारक संस्था** सदर बाजार नागपूर का कार्यकर्ता मंडल है

इस पुस्तकके पुनरावृत्ति के साथही आज ४९ वर्ष के बाद पूज्यपाद **श्री तिलोक-ऋषिजी महाराज का** जीवन चरित्र भी आप लोगों के सन्मुख रखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, कारण कि जिस समय पूज्यपाद स्वर्गारूढ हुए उस समय **गुरुवर्य श्री रत्न ऋषिजी महाराज** श्री की छोटी अवस्था थी जीवनचरित्र संकलन करनेकी शक्ति तथा सामग्री उनके पास नहीं थी जब आप विद्याभ्यास करने के लिए मालवामें पधारे, उस समय से पूज्यपादके जीवन चरित्र का शोध करने लगे विद्याभ्यास करके तथा मालवा, मेवाड, बागड, गुजरात आदि देशोंमें विचरकर तेरह वर्ष के बाद दक्षिण देशमें पधारे और अपने रचना किए हुए **तिलोक चंद्रिका** नामक पुस्तकमें पूज्यपाद के चरित्र विषयक कुछ साराश बातें लिख दी परंतु वह लेख पर्याप्त नहीं हुआ, अतरात्माकी प्रेरणा बराबर होती रही

अवसर पाकर गुरुवर्य **श्री रत्न ऋषिजी महाराज** अपने शिष्य मुनि **श्री आनंद ऋषिजी** महाराजसे भी फरमाया करते थे कि ' हे आनंद ! पूज्यपाद महाराज श्री का जीवन चरित्र पूर्ण नहीं हुआ गुरुवर्य के उद्‌गारको श्रवण करके मुनि **श्री आनंद ऋषिजी** महाराज पूज्यपाद के जीवन चरित्र का संकलन करने लगे अधिकाश बातों का संग्रह तो गुरुवर्यसेही हुआ था फिर मालव देशसे कविवर्य महात्मा पंडित रत्न मुनि **श्री अमी ऋषिजी** महाराज का दक्षिण देशमें पदार्पण हुआ उनके पाससे पूज्यपाद चरित्र नायक के हाथ का लिखा हुआ सुवर्णाक्षरवाला एक पत्र प्राप्त हुआ जिसमें जन्म कुंडली तथा जीवन पर्यंतकी दिन चर्या विशद रूपसे लिखी थी महासतीजी **श्री नंदूजी** महाराज आठ वर्ष तक मालव देशमें विचरे थे उनके द्वारा तथा दक्षिण देशमें विराजती हुई पूज्यपाद की अग्रशिष्या सती शिरोमणि **श्रीरामकुवरजी** महाराज और पूज्यपाद के दर्शन किए हुए वृद्धों के द्वारा तपास करके *अवशिष्ट चरित्र का अनिसलित संग्रह किया था*

विक्रमाब्द १९८८ के चातुर्मासमें घोडनदी (आमलेश) निवासी श्रावकोंका अत्यंत आग्रह हुआ कि पूज्यपाद श्री तिलोकऋषिजी महाराजका जीवनचरित्र प्रकाशित

किया जाय तब जीवन चरित्रके रचनाका भार व्याकरणाचार्य, साहित्य शास्त्री, विद्यावारिधि, विद्वद्रत्न, प राजधारी त्रिपाठीजी मु खैराटी,पोष्ट सीधेगौर, (गोरखपुर) ने सहर्ष स्वीकार किया.

जीवनचरित्र तैयार हो जानेके बाद मुनि **श्री आनंदऋषिजी महाराज** और त्रिपाठी शास्त्रीजीका यह विचार हुवा कि अपना विहार दक्षिण देशके तरफ हो रहा है, वहाके शास्त्रज्ञ, सुश्रावक **श्री किसनदासजी मुथा** वगैरहकी सम्मति लेनेके बाद यह जीवनचरित्र प्रगट किया जाय अहमदनगर पहुचनेपर जीवनचरित्र प्रकाशित करनेके विषयमें चर्चा छिडी साधु स्वयमाहितैषी मुथाजीने कहा कि आजकल जितने जीवनचरित्र छपते है, वे प्राय (अतिशयोक्तिमे परिपूर्ण रहते है) " एक हाथकी काकडी नौ हाथका बीज " इस कहावतके अनुसार है जिनका आद्योपात अवलोकन तथा चरित्रसे मननीय अनुकरणीय विषयोंका साराश समझना भी कठिन हो जाता है फिर **श्री पुनमचदजी** भंडारीजीने कहा कि ठीक है, आप लोग पहले इसका अवलोकन करें, पीछे न्यूनाधिक, आस्ति नास्तिका अनुकूल उत्तर दें

तदनंतर दुपहरमे बारह बजेके बाद **श्रीमान् किसनदासजी मुथा, श्रीमान् कुंदनमलजी फिरोदिया वकील, श्रीमान् मगनमलजी गांधी, श्रीमान् हीरालालजी गाधी (टिळक), श्रीमान् उत्तमचंदजी बोगावत वकील, श्रीमान् धोंडीरामजी मुथा, श्रीमान् पुनमचंदजी भंडारी** वगैरह सुश्रावक एकत्रित हुए सबकी सम्मतिसे पंडित रत्नमुनि **श्री आनंद ऋषिजी महाराज** जीवनचरित्र सुनाने लगे जिस समय चित्रालकार काव्य, और ज्ञानकुजरका वर्णन आया, उस समय उन हस्तलिखित पन्नोंको देखनेकी मुथाजी वगैरा श्रावकोंकी अभिलाषा हुई उन सब प्रमाणभूत दर्शनीय अद्भुत लेखोंको देखकर सब श्रावकोंका अंत करण आल्हादित हुवा

फिरोदिया वकील साहबने फरमाया कि जिस महापुरुष **श्रीतिलोक ऋषिजी महाराज**के द्वारा दक्षिण देशमे जैनधर्मका पुनरुद्धार हुवा ऐसा कहा जाता है और जनताको चमत्कृत करनेवाले उनके हस्तलिखित ऐसे २ लेख विद्यमान है, उनका जीवनचरित्र क्यों न प्रकाशित किया जाय ? मेरी तो यह राय है कि जिस तरीकेसे वे ग्रामानुग्राम विचरे हैं, उसी तरीकेसे विशदरूपसे प्रकाशित किया जाय, तथा सब चित्रोंका फोटो दिया जाय यदि इन चित्रोंका फोटो नहीं दिया जायगा तो इन अद्भुत कृतियोंके विषयमें जनताको संशय होगा

इसपर उपस्थित सज्जनोंका एकमत होनेपर जीवन चरित्र प्रकाशित करानेका पूर्ण निश्चय हुवा परच फिरोदियाजीके कथनानुकूल सब चित्रोंके छपानेमें बहुत द्रव्यका व्यय था, इसलिए यह कार्य पूरा न हो सका इस जीवन चरित्रके अवलोकनका लाभ जो आज समाजको मिल रहा है, इसका पूर्ण श्रेय श्रीमान् **रतनलालजी** कोटेचा, श्रीमान् **कन्हैयालालजी** कोटेचा, बोदवड तथा वहाके श्रीसंघको है, क्योंकि उन्हीं लोगोंके अत्यत आग्रहसे यह कार्य प्रारंभ हुवा

दक्षिण प्रांतवर्ती पीपळा [अहमदनगर] निवासी श्रीमान् चांदमलजी सोभाचंदजी बोरा तथा श्रीमान् तेजमलजी नंदरामजी बोराजीने चित्रालंकार काव्य, वीरस्तव, और आनन्दकुंवरके पत्रोंको प्रकाशित करके संस्थाको अर्पण किया उसीसे जीवन चरित्रको विशेष शोभा हुई है, उस ग्रंथके मालिक पीपळानिवासी श्रावक हैं.

इसके पश्चात् सकल श्रमणसंघसे सादर निवेदन है कि पूज्यपाद विरचित ग्रंथोंका अबतकभी बराबर पता लगाया जाता है. अद्यावधि जितने ग्रंथोंका पता लगा है, उनका नाम तो प्रायः जीवनचरित्रमें दिया गया है अब यदि किसीभी व्यक्तिके पास कोई ग्रंथ होवे तो कृपाकर सिर्फ उस ग्रंथका नाम, रचनाका देश काल, सूचित करें, ताकि उसको दूसरे संस्करणमें संकलित किया जायगा, और आप लोगोंका उस बाबतमें आभार माना जायगा

इस पुस्तकके अंदर लेखक तथा मुद्रकके असावधानतासे तथा दृष्टिदोषसे बहुतसी अशुद्धियां रहनेकी संभावना है, उसको सुधारकर बांचे

गच्छतः स्खलनं क्वापि, भवत्येव प्रमादतः
हसंति दुर्जनास्तत्र, समादधति सज्जनाः ।

इत्यलम्

निवेदक.

गुलाबचंद पारख — भैरूदान मद्दाणी

मंत्री — उपमंत्री

श्री जैनधर्म प्रसारक संस्था,
सदर बाजार, नागपूर.

आभारदर्शन.

इस बडी पुस्तकको प्रकट करनेमें ज्ञान प्रेमिओंने निम्न प्रकार आर्थिक सहायता देकर संस्थाके उत्साहको बढाया है। अतः साभार धन्यवाद दिया जाता है।

७०० रु. श्रीमान हीरचंदजी नानुलालजी पारख सदर बाजार नागपूर.

५०० ,, ,, नवलमलजी सुरजमलजी धोका, यादगिरी.

१०१ ,, ,, आसकरनजी रतनचंदजी वैद, मुंगेली.

१०० ,, ,, स्वर्गवासी राजमलजी बोरूंदिया गनोरी निवासी की धर्मपत्नी श्रीमती जडाव बाई.

५१ ,, ,, मयाशंकर चतुरभुज, उमरावती.

५१ ,, श्री जैनसंघ, चांदूर बाजार, (उमरावती)

५१ ,, ,, मूलचंदजी केसरीचंदजी कोचर, एलीचपूर.

५१ ,, ,, मगनीरामजी आचलिया की धर्मपत्नी श्रीमती लछमीबाई पींपळखुटा.

२०॥ ,, श्रीमती केसरबाई, बोरीनिवासी मारफत श्री लालचंदजी रघुनाथदासजी, बोदवड.

३०० ,, श्रीमान् रतनचंदजी जसराजजी छाजेड, घ्रसा, (अहमदनगर) पहिलेसे १५० पुस्तकके ग्राहक बने।

२५० ,, दानवीर श्रीमान् शेठ नेमीचंदजी सरदारमलजी पूगालिया, इतवारी नागपूरवाले १२५ पुस्तकके ग्राहक बने.

१०१ ,, रायबहादुर श्रीमान् शेठ फूलचंदजी चांदमलजी नाहार, बरेलीवाले ५० पुस्तकके ग्राहक बने.

२ ,, श्रीमान् घेवरचंदजी केसरीचंदजी बोथरा, पोहना, (हिंगणघाट)

श्री नवलमलजी किसनदासजी मुथा अहमदनगरवालोंने इस पुस्तकके द्वितीय संस्करण की आज्ञा दी इस लिये, भुसावलनिवासी श्री सागरमलजी ओस्तवाल, नागपूर सदर बाजार निवासी, श्री भैरुदानजी बद्धाणी, आदिने प्रुफसंशोधनका काम किया है इसलिये तथा प्रेस मेनेजरने कई प्रकार की सुविधा कर दी इसलिये, इन सब सज्जनोंका आभार मानते है

प्रकाशक.

विषयानुक्रमणिका

श्री तिलोक ऋषिजी महाराज का

ॐ जीवन चरित्र ॐ

॥ ओश्म् ॥

लेखकके दो शब्द

संसारसागरस्यान्तं, गन्तुमीहास्ति चेद्यदि ।
चरित्रं महतां पोतं, कृत्वा गच्छन्तु मानुका ॥ १ ॥

हे भव्यपुरुषो ! इस संसाररूपी समुद्रसे पार होनेकी इच्छा यदि आप लोगोंकी है, तो महान पुरुषोंके चरित्ररूपी नौकापर आरूढ होकर सुखसे जाइय, अर्थात् यदि आप दुःखमय जगतमें सुखसे जीवन व्यतीत कर परलोकको सुधारना चाहते हैं तो सब उपायोंको छोड़कर सिर्फ उत्कृष्ट चरित्र सम्पन्न महात्माओंका चरित्र पढ़िये और तदनुसार अनुकरण कीजिए। इस समय भाषा साहित्यके अन्दर इतनी अधिक संख्यामें नूतन पुस्तकें निकल रही हैं कि जिनका नामोल्लेख करना अशक्य है; परंतु इन पुस्तकोंके अवलोकनसे " विनायक प्रकुर्वाणो रचयामास वानरम " इस लोकोक्तिके अनुसार फलस्वरूप उन्नतिके स्थानमें अवनति ही दृष्टिगोचर हो रही है अर्थात् समाज प्रतिक्षण चारित्र शिथिल व अनुत्साही हो रहा है। आज यदि इन पुस्तकोंके चतुर्थांशमें स्वर्गीय स्वामी अजरामरजी महाराज, तथा चरित्रनायक पंडितवर्य श्रीतिलोकऋषिजी महाराज, वर्तमान शतावधानी पंडित रत्नचंद्रजी स्वामीजी महाराज, आदिकी जीवनी तथा उनके साहित्यके समान पुस्तकें प्रकाशित होतीं तो आज समाज उन्नतिके शिखरपर अवश्य पहुँच गया होता। क्योंकि—

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः ।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ॥ १ ॥

अर्थात् जिस रास्तेसे श्रेष्ठ पुरुष गमन करते हैं, उसीका अनुकरण करके तदनुयायी समाज भी चलता है इस लिये आध्यात्मिक तथा पारमार्थिक लाभको सेवन करनेवाले महान् पुरुषोंका जीवनचरित्र यदि जनताके सामने रक्खा जाय तो चरित्र नायकके प्रारंभिक कर्तव्य तथा उनके गुणोंके साथ अपने कर्तव्य तथा गुणोंकी तुलना करके " हेयोपादेय " अर्थात् बुरेका त्याग और अच्छेका ग्रहण करके समाज मनुष्यजीवनका लाभ ले सकता है।

पूर्वकालमें जो प्रसिद्ध महात्मा और विद्वान हो गये हैं व अपने शारीरिक आध्यात्मिक कर्तव्यको करते हुए आत्मिक, मानसिक, सामाजिक उन्नतिके लिए तीर्थंकर, गणधर साधु, श्रावक तथा अन्य सच्चरित्र पुरुषोंके चरित्रावलोकन तथा लेखनमें ही समय व्यतीत करते थे। देखिये जैनाचार्योंने—चरितानुयोग कथानुयोग—प्रभावक चरित नेमि निर्वाण, वगैरह तथा वैदिक मतोंमें रामायण महाभारतादि ग्रंथ कि इनके रचयिता सत्पुरुषोंने संसारमें प्रसिद्ध भव्य पुरुषोंके चरित्रलेखन द्वारा अपने साहित्यमें कितना उत्कर्ष प्राप्त किया है ! साथ ही साथ इसके मनन करनेसे पुण्य होता है, दुरित विध्वंस होता है, इत्यादिक तात्विक

नादिक कार्योंके पश्चात् आए हुए जिज्ञासु वर्गोंके साथ प्रश्नोत्तर वगैरहमें सब काल व्यतीत हो जानेसे समयका अभाव था

सं १९८८ के चातुर्मासमें बोदवडमें **श्रीउत्तम ऋषिजी** के अध्यापनार्थ मैं आया उस समय **श्रीआनन्द ऋषिजी** ने इस विषयकी चर्चा मेरे सामने रक्खी कि " मेरे अध्ययनकालमें पूनासे अहमदनगर तक जितने स्थानोंमें पूज्यपाद **श्री तिलोक ऋषिजी महाराजका** पदार्पण हुवा था, प्रायः सब आप देख चुके हैं उस कालमें वृद्धोंद्वारा तत्तत्स्थानोंमें महाराजश्रीके विषयमें बातें सुन चुके है और महाराज श्री के हाथका लिखा हुवा दिनचर्यापत्रका उतारा बहुत कुछ मेरे पास है, यदि आपकी इच्छा होवे तो पूज्यपाद महाराजश्री का जीवनचरित्र अवलोकन करनेका लाभ सबको दीजिये, परंच इस जीवन-चरित्रमें सिर्फ जितनी बातें वृद्धोंके द्वारा आपके श्रवणपथमें आई हैं, जो महाराज श्री के हस्तलिखित प्रमाणभूत हैं, वेही बातें सूक्ष्मरूपसे दर्शाइ जाय "

इस बातको स्वीकार कर आज विशिष्टगुणसपन्न, जैनागमकेसरी, कवींद्र, प्रातः-स्मरणीय, पूज्यपाद **श्री १००८ श्री तिलोक ऋषिजी महाराजका** सक्षिप्त जीवनचरित्र समाजके सामने उपस्थित करनेमें मुझको अत्यत आल्हाद पैदा होता है; परच उसके साथ ही साथ खेद यह उत्पन्न होता है कि जिस महान् पुरुषका यश मालवा, मेवाड, मारवाड, पजाब, कच्छ, गुजरात, महाराष्ट्र, बरार, निजाम स्टेट आदि देशोंके कोने २ में आज भी सब मनुष्योंके श्रवणरंध्रमें भ्रमरवत् गुजारव कर रहा है, तथा जिनके पच परमेष्ठीके कविताको आबाल वृद्ध श्रावक श्राविकागण प्रतिक्रमणमें अहर्निश प्रेमपूर्वक गान करते हैं, उस जग-द्विख्यात आदर्श महात्माका चरित्र मेरे ऐसे साधारण व्यक्तीसें लिखनेका साहस करना मानो सूर्यको देखनेके लिए दीपक जलाना है । तथापि—

सोई भरोस मेरे मन आवा, कोन सुसंग बडाई पावा ।
धूमौ तजे सहज करुआई, अगर प्रसंग सुगंध बसाई ॥ १ ॥

परम वैष्णव रामचंद्रचरणानुरागी गोस्वामी तुल्सीदासजीके इस उक्तिके अनुसार यथामति लिखनेके लिए लेखनी उठा रहा हू क्योंकि जिस महात्माके अलौकिक कर्त-व्योंको श्रवण तथा अवलोकन कर श्रोतागण वर्गोंके शद्वपर मोहित हुये नागके समान डोलने लगते हैं, उसी परम शत्रुविजयी महान् पुरुषका परम पावन यश मेरे आत्मा तथा बुद्धीको अवश्य पवित्र करेगा

अद्वितीय वादिगजकेसरी इस चरित्रनायकका परिमितकालीन अदभुत कर्तव्योंका यदि मैं अपने अल्पबुद्धिसे वर्णन करू तो भी वह एक बृहत् पुस्तक हो सकता है इस भयसे सुक्ष्मरूपमें यह चरित्र दिया जाता है कि जिसका आद्योपान्त वाचन श्रवण मनन कर जिज्ञासुगण परम लाभ उठावेंगे और यदि इस लेख में व्यवहारिक तथा साहित्य सम्बन्धि लेखोंकी अधिकता या न्यूनता दृष्टि गोचर होवे तो लेखक को क्षमाप्रदान करेंगे

प० राजधारी त्रिपाठी, गोरखपुरीय ।

संस्कृते पूज्य पादस्य गुरुपरम्परासहित जीवनचरित्रम्

नत्वाऽथ शासनपतिं महतं वीरम्,
स्तुत्वा गिरं निखिलजन्मगुरोश्च तस्य ॥
शिष्यासुमगोप्रमुदे ऋषिपुङ्गवानाम्
पाटावलिं वितनुतं स्वश्रुतक्रमेण ॥ १ ॥

आदित्यवंशप्रभवा खलु कोशलेन्द्रा,
काले गतेऽथ विदिता रघुवंशनाम्ना ॥
एवं हि समतिसमाजमहर्षिवर्गो,
जातो 'कहान्' त्रि ऋषिगच्छप्रसिद्धिमाप्त ॥ २ ॥

श्रीमत्सुपूज्यपदवीं ऋषिपुङ्गवानाम्,
रूढ 'कहान' जी ऋषिरथ न मूलतोऽस्ति ॥
जागर्ति तद्गुणगणप्रसरस्तथापि,
एतावता म विदितो विदितप्रभाव ॥ ३ ॥

तत्पाटवार्धिरमणऋषिवरामुख्य,
ताराऋषिस्सकलशास्त्रविशारदश्च ॥
कालाऋषिस्तदनु पूज्यपदऽविरूढ,
एवंक्रमेण भवम् (बसु) ऋषिपूज्यपाद ॥ ४ ॥

पूज्योऽथधन्य (धनजी) ऋषिरग्रमरो मुनीना
मयवंतशिष्यप्रवर खलु तस्य जातः ॥
तच्छिष्यलोकविदित प्रथितप्रभावा,
जातस्तिलोक इति साकलनामभृत ॥ ५ ॥

अस्त्येकं रतलाम नाम नगरं शोभाशिरोभूषणं,
यस्मिन्श्रीदुलिचन्द नाम विदितः श्रीमानभूच्छीलवान
नानू नाम विभूषिता गुणवती साक्षात्क्षमारूपिणी,
भार्याजीजनदस्य धन्यदिवसे सन्तानरत्नत्रयीम् ॥ ६ ॥

वेदाकाशनिधीश्वराख्यगणिते चैत्रे शुभे हायने,
पक्षे कृष्णतमे तृतीयदिवसे विष्णुर्दिवशेष्विव ।
नक्षत्रेषु यथा हिमांशुरभवत्पुत्रः " सुराणा " मणिः,
गोत्रोद्धारणकारणः स विबुधैर्नाम्ना तिलोकः कृतः ॥ ७ ॥

धन्येऽब्दे नगरञ्च पण्डितमणिः प्राप्तोऽयवन्तामुनिः,
सार्धं धर्मपरैरपारमतिभिः शिष्यैस्तथा साधुभिः ।
तस्योपाधिपराङ्मुखैः सुवचनैः प्राप्ता विराग मती,
श्रीनानू शरणं गता मुनिपतेः सन्तानरत्नैः सह ॥ ८ ॥

वेदैकग्रहरात्रिभूषणमिते माघे च पक्षे सिते;
सौम्यर्क्षे प्रतिपत्तिथौ निजवयोद्विःपञ्चके हायने ।
पूर्णः सर्वकलाभिरङ्कविकलश्चन्द्रो यथा स्व गुरु,
स्वीकृत्य प्रवरं मुनिं जिनमुनिर्जातस्तिलोकः प्रभुः ॥९॥

काले स्वल्पतमे तपोभिरमल सम्प्राप्य ज्ञानामृत,
निर्माय स्वयशःशरीरममरं पूर्वार्जितैः कर्मभि : ।
कायोत्सर्गपरायणेन मनसा ध्यायन्प्रभु शाश्वत,
मोहग्राहभयावह जगदुदन्वन्त तरीतुं सदा ॥ १०॥

शास्त्राणां समुपेत्य सप्तदशकं वृक्षं यथा पक्षिणा,
नित्यं पोषणतत्परं मुनिवर शान्तं नितान्तं रतम् ।
तद्वयुक्तिरसानुभावभरिता पीयूषसंवर्षिणी,
ध्यानज्योतिरपास्तकिल्विषमिमं प्राप्ता कवित्वप्रभा ॥११॥

एषा पष्टिसहस्रपद्यरचना रम्या मुनर्भारती,
गायन्ती स्तुतियोग्यदिव्यपुरुषान्लीलाचरित्रादिषु ।
लोकानुग्रहहेतवे सुविदुषां चेतः प्रसादाय च,
पूर्णा शान्तरसेन जन्तुजनया गङ्गेव विभ्राजति ॥ १२ ॥

हंसा वै सरसीमिव प्रतिदिनं फुल्लैः सरोजैर्युतां,
नानाभावविभाविनीं ममसज्जन्वाणीं गुणग्राहिणः ।
विद्वान्सो मुनयः प्रसिद्धयशसो वार्तोप्रसङ्गादिषु,
प्राशंसन्नतिहर्षिता मुनिपतरस्यैवमानां प्रभाम् ॥ १३ ॥

गोकर्णप्रमिते द्वितीयमतिलघो मूलसूत्रन्दलं,
सर्वं स्पष्टविभामिते सुविमलं शास्त्रं सपुच्छीसुणम् ।
लोकास्तस्य प्रशस्तलेखनकलानैपुण्यवारांनिधे-
र्गाम्भीर्यप्रतिमापनऽप्यविभवा मुग्धा इवाभवत ॥ १४ ॥

चित्रे वर्षमयं मुनेर्भगवतीशास्त्रानुसारं चितं
श्रीसिद्धासनहस्तिपालसहितो विद्यायते कुञ्जरः ।
मन्ये तत्परवित्र प्रवीणमुनिनाऽगाधामपारामपि,
एनां चित्रकलानदीमतिमलामालादितु मरनत ॥१५॥

एवम्वाद्यपुरःसुवर्णरचनाद्दीप्यमाना रथ
लीलाहः सुविराजिता विरचितः सम्मोहनधेनमाम् ।
अन्ते भाति विपाकसूत्रयुता या मोहप्रमेरिमान
शीलादीन्परिशीलयनसुमनमः स्वान्तं समारूप्य मत् ॥१६॥

एषा जैनमतानुयायिभिरहो मार्गस्य कान्तिन्यतः,
आसीद्दैवतदीपशिखण्डिता कृत्या मुनीनां गणः ।
आरमान्ते परिसात्य पादपपरा द्विरदा पिपासमर्पि,
धर्मोद्धारणकारणेन मुनिना मेयं सनाथीकृता ॥ १७ ॥

नोट—१ आठ प्रश्नोंका उत्तर देना यह अष्टावधान नहीं किन्तु एकसाथ-लिखना पढ़ना-बातमें बैठे हुए व्यक्ती के भाव का अनुभव करना ऐसे आठ अवधान करो है

प्राप्तो " घोडनदे"ऽत्र रत्नमिव तं श्रीरत्ननामा मुनिः,
प्राप्त्या यस्य सुचण्डमार्गजलधेर्मन्थः कृतार्थोऽभवत्
आषाढे नवमीदिने सितदले प्राप्तः स दीक्षाव्रती ,
शिष्यत्वं रसपावकग्रहहिमज्योतिर्मिते हायने ॥ १८ ॥

शिष्यैरस्तसमस्तदोषनिचयैः संसेवितः श्रीमुनिः,
ग्रामंग्राममुपेत्य शास्त्रकथित धर्मं समादिष्टवान् ।
यं श्रुत्वा बहुलाप्यजैनजनता जैनं मतं शाश्वतं,
संसारोदधिपोतरूपिणमिमं संश्रित्य शोभायते ॥ १९ ॥

एवं वर्षचतुष्टयं मुनिवरैः स्वीयैः प्रयासाम्बुभिः,
सिक्तो धर्मतरुः सुगंधसुमनोभिः सेवितः स्थापितः ।
संसारीयविपाकमोहमदिरोन्मादेन मत्तो जन,-
श्छायां यस्य समेत्य सौख्यजननीं प्राप्नोति शान्ति शुभाम्॥ २० ॥

संप्राप्तः स मुनीश्वरोऽथ नगरं प्रावड्ऋतुं यापितुं,
तत्राकस्मिकरोगरुग्णवदनो ज्योतिः परं चिन्तयन् ।
आकाशश्रुतिरत्नचन्द्रगणिते वर्षे सिते श्रावणे,
प्राप्तो दिव्यदशा द्वितीयदिवसे वैमानिकैः सत्कृतः ॥ २१ ॥

आयातः स्मृतिमार्गमप्यविरतं दत्ते वियोगो मुनेः
शल्यानीव मनःसुखी ततमसा सान्द्रं मुनीनामपि ।
किन्त्वेनं सुविचार्य शास्त्रवचनं शाम्यन्ति तेषां व्यथाः ,
कालेस्मिन्नवसर्पिणीति गदिते को वामरत्वं गतः ॥ २२ ॥

संप्राप्य मानपदवीं निखिलोर्ध्वपुंसां,
लोके परत्र च चिरं खलु मोदते यः ।
श्रीपूज्यपादकमलस्य गुरोश्च तस्य,
शृण्वन् स्तुवन् गुणगणान् मुदमाप्नुवन्तु ॥२३॥

॥ पूज्यपाद श्री तिलोकऋषिजी महाराजका जीवन वृत्तान्त ॥

महाराज श्री की गुरुपरम्परा

विक्रमसंवत्सरके पन्द्रहवी शताब्दी के प्रारम्भ कालमें सूरत निवासी वीरजी वोराकी पुत्री फूलाबाई के कुक्षिसे लवजी नाम के पुत्र उत्पन्न हुए. वे अनेक शास्त्रोंका अभ्यास कर माता पिताकी आज्ञानुसार लोंकागच्छ में दीक्षा धारण कर शुद्धाचार पालन करते हुए शास्त्रानुसार शुद्ध सद्बोध तथा जैन साधुओं के शुद्धाचारकी स्मृती जनताके हृदयमें भरते हुए ग्रामानुग्राम विचरने लगे। उनके पश्चात् श्री सोमजी ऋषिजी पाटपर विराजमान हुए, तत्पश्चात् पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज पाटपर सुशोभित हुए, और यहीं से उनके नाम से सम्प्रदाय की स्थापना हुई, पूज्यश्री को ४०००० चालिस हजार गाथाएँ कंठस्थ थी, यह परम्परा द्वारा सुना जाता है यद्यपि ऋषिसम्प्रदाय सर्वसम्प्रदायोंसे प्राथमिक तथा प्रवर्तक कही जाती है तथापि जैसे सूर्यवंशीय राजगण प्रबलप्रतापी राजा रघुके कालसे रघुवंशी कहलाये वैसेही पूज्यश्री कहानजी ऋषिजी के नामसे यह ऋषि सम्प्रदाय विख्यात हुआ। पूज्यश्रीके बाद क्रमसे पूज्यश्री तारा ऋषिजी, पूज्यश्री काला ऋषिजी, पूज्यश्री बक्षु ऋषिजी आचार्य पदपर आरूढ हुए पूज्यश्रीके छठवें पीढीमें तपस्वीराज श्री देवजी ऋषिजी महाराज विराजमान हैं। पूज्य श्री बक्षूऋषिजी महाराजके पाटपर पूज्यश्री धनजी ऋषिजी विराजमान हुए उनके प्रथम शिष्य श्रीअयवंता ऋषिजी द्वितीय श्रीखूबाऋषिजी महाराज हुए. श्री अयवंता ऋषिजी के पाटवी शिष्य चरित्र नायक श्री तिलोक ऋषिजी महाराज हैं जिनका सूक्ष्म जीवनचरित्र आपके करमें सुशोभित है आपके पाटवी शिष्य श्री रत्नऋषिजी महाराज हुए प्रशिष्य श्री आनन्द ऋषिजी महाराज विद्यमान हैं महाराज श्री के शिष्य प्रशिष्य परम्परा सविस्तर परिशिष्ट में दिए है और महाराज श्री खूबा ऋषिजी के प्रशिष्य पूज्यश्री अमोलक ऋषिजी महाराज विद्यमान हैं जो कि जैन शास्त्रोंका भाषान्तर तथा ग्रंथ निर्माण कर मार्ग में सुशोभित हैं। श्री अयवंता ऋषिजी महाराजके द्वितीय शिष्य श्री लालजी ऋषिजी महाराज थे आपके शिष्य विद्वद् रत्न मुनि श्री दौलत ऋषिजी महाराज थे जिनके पाटवी शिष्य मुनि श्री मोहन ऋषिजी महाराज विद्यमान हैं।

॥ अध्याय ॥ १ ॥

महाराजश्रीकी जन्मभूमि तथा पूर्वचरित

मालवदेशमें बहुत प्राचीन कालसे बसा हुआ रतलाम नामका शहर है, वहांपर ओसवाल जातिके सुराणा गोत्रमें उत्पन्न हुए समृद्धिसंपन्न प्रतिष्ठित श्रेष्ठी दुलीचंदजी नामक श्रावक रहते थे। पर्याप्त रूपसे इहलौकिक सुखसाधनका कारण होनेपर भी आप उससे "पद्मपत्रमिवाम्भसा" अर्थात जलमें कमलदलके समान निर्लेप रहते थे किसीने ठीक कहा है:-

वसन विषयमध्येऽपि न वसत्येव बुद्धिमान् ।
सवसत्येव दुर्बुद्धिरसत्सु विषयेष्वपि ॥ १ ॥

अर्थात् बुद्धिमान पुरुष सांसारिक विषय वासनाके बीचमें रहकर भी उससे उदासीन रहते हैं, दुर्बुद्धि लोग अनित्य विषयोंमें सासारिक साधन नहीं होनेपर भी सदा उसीमें लीन रहते हैं। शेठजी बाह्यदृष्टीमे व्यवहारिक व्यापारादिक कार्योंको करते हुए बहुधा अपने समयको सन–मुनिराजोंकी सगति तथा शास्त्रके अभ्यास–श्रवण मननमें बिताते थे। अपने तन धनको धर्मके लिये न्योछावर करनेको सदा कटिबद्ध थे

दुलीचंदजी शेठ की धर्मपत्नीका नाम **नानूबाई** था यह बाई पवित्रता पतिव्रता आचार विचारकी लावण्यमयी मूर्ति थी दोनो सध्यामें सामायिक, प्रतिक्रमण तथा भगवद्भजन, सत्पात्रदान इत्यादि सत्कर्मोंमें प्रवृत्त रहती थी। बाईजीका जितना धार्मिक ज्ञान तथा चरित्र ऊंचा था, उतनाही सासारिक व्यवहारमें पतिके साथ अपना अनुपम प्रेमभाव प्रगट करके वास्तविक अर्द्धांगिनी शब्दको सिद्ध कर दिखाया था।

इस प्रकारसे सासारिक सुखका अनुभव करते हुए रत्नगर्भा बाईजीके कुक्षीसे प्रथम धनराजजी दुसरे कुवरमलजी ये दो पुत्र और हीराबाई एक पुत्री उत्पन्न होनेके बाद विक्रम सवत् १९०४ के चैत्र कृष्ण तृतीया बुधवार को एक ऐसे पवित्रात्मा प्रगट हुए कि उस भव्यात्माका शरीर सस्थान कमलनेत्र सुवर्णवत मनोहर भव्याकृतिको देखकर प्राणीमात्रके हृदयमें अपूर्व आल्हाद पैदा होता था, अत एव यथार्थ तिलोकचन्द्र नामसे वह लोकमें विख्यात हुए उनका हस्तलिखित जन्मपत्र इस प्रकार है–

विक्रम शुभ संवत् १९०४ शके १७६९ उत्तरायणे रवौ वसततौ चैत्रमासे कृष्णपक्षे तृतीयाया तिथौ घव्य ६०।० चित्रानक्षत्रे घव्यादय: १०–३७ व्याघातयोगे ३९–० सूर्योदयाादिष्ट घटी ३३–५०। सूर्य मीन सक्रातेर्गताशा: १२ समये जन्म।
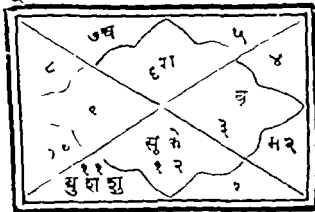
जन्मांग चक्रम्

तिलोकचद्रजी जब कुमारावस्थामें थे, उसी समयसे व्यवहारिक लिपिज्ञानके साथ माताके द्वारा धार्मिक शिक्षा भी बहुत कुछ प्राप्त कर लिये थे और तभीसे साधु तथा आर्याजीके विषयमें अप्रतिम भाव था। आपके जन्मके ४ चार माह पहले ही आपके पिताजीका जीवन प्रदीप निर्वाण हो चुका था, अत पितृसुखसे आप एकात वचित रहे।

॥ अध्याय ॥ २ ॥

वैराग्य.

विक्रम सवत् १९१४ में श्रीमज्जैनाचार्य परम पूज्य श्री श्री १००८ **श्री कहानजी ऋषिजी** महाराजके सप्रदायके बालब्रह्मचारी पण्डितवर्य **श्री श्री अयवता ऋषिजी** महाराज अपने शिष्य वर्गके साथ रतलाम पधारे, आपके व्याख्यानमें बहुत नरनारी एकत्रित

हुए। अपने पुत्रों और पुत्रीको साथ लेकर त्रिलोकचन्द्रजीकी माता नानूबाई भी समाजमें बैठी थीं। उस रोज महाराजश्रीका व्याख्यान "न वैराग्यात्परो बन्धुन संसारात परो रिपु" अर्थात वैराग्यसे बढ़कर कोई अपना बंधु नहीं है, और सांसारिक विषयोंसे बढ़कर कोई शत्रु नहीं है; इस विषयपर अत्यंत प्रभावशाली व्याख्यान हुआ। व्याख्यान श्रवण करते ही पतिवियोग दुःखिता नानूबाईको शुद्ध वैराग्य उत्पन्न हुआ और पितृहीन अपने चारों संतानोंको छोड़कर दीक्षा लेनेके लिये अपना दृढ़ निश्चय कर लिया

माताकी यह दशा देखकर हीराबाई जिसकी सगाई आश्रावाले श्रीलक्ष्मनरामजीका नवयुवकके साथ हो चुकी थी वह भी माताकी अनुगामिनी होनेके लिए तयार होगई पार वारके तथा इतर सबही लोगोंने सांसारिक बातोंसे बहुत कुछ प्रलोभन दिया परन्तु वह बाई अपनी कुमारी अवस्थामें भी अपने ध्येयसे तनिक भी चलायमान नहीं हुई वैराग्यपर कायम रहा

उस समय त्रिलोकचंद्रजीकी अवस्था ० मास वर्ष आठ माहकी थी परंच प्रतिष्ठित समृद्धिसंपन्न गृहमें जन्म लेनेसे सैलानेवाले कुमीचंदजीकी कन्या गुलाबकवरके साथ सगाई हो चुकी थी उपदेश श्रवण करनेसे तथा माता और अपनी भगिनी दशाको देखकर उनका भी आत्मा मोहनिद्रासे जागृत हुआ उन्हें वैराग्य स्फुरित हुआ संसारकी अनित्यताका भासमान होने लगा यावत सुखके तरफ मन दीक्षा और अपनी माता तथा बहनसे पहलेही संयम लेनेके लिये उत्सुक हो गये और उनके साथ साथ मध्यम भ्राता कुंवरमलजी भी उनके सहगामी बननेको कटिबद्ध होगये

वसिष्ठजीने रामचंद्रजीसे कहा है–

ते महान्तो महाप्राज्ञा निमित्तेन विनैव हि।
वैराग्यं जायते येषां तेषां त्वममलमानसाम् ॥१॥

अर्थात् वे महाबुद्धिमान महाभाग्यशाली वास्तविक धन्य हैं कि जिनके निर्मल मनमें बिनाकारण वैराग्य उत्पन्न होता है। यथार्थ इस बातको त्रिलोकचन्द्रजीने सिद्धकर दिखादिया पूर्वका संस्कार उदय हुआ अपूर्ण १ दश वर्षकीही अवस्थामें ऐसा कठिन क्षुरधारासम संयम व्रतपर स्वतः वैराग्यपूर्वक चढ़नेको तैयार हो गये। पुण्यात्मा पुरुषका उच्चपदपर जानेके लिये अतिकठिन भी मार्ग अत्यन्त सुगम हो जाता है. आपके वैराग्यको माताजी अपने प्रेमभावसें कुछ अन्तराय उपस्थित कर सकती परंच पुत्रसे प्रथम वैराग्यारूढ होनेसे पुत्रको समझानेके लिए किंचितमात्र साधन उनके पास न रहा

॥ अध्याय ॥३॥

संवत १९१४ माघ कृष्ण प्रतिपद् गुरुवारको दीक्षा काल

शहरमें चारोंतर्फ इस बातकी सनसनी फैल गई दीक्षाकाल नियत होगया, पंडितवर्य श्री अयवंता ऋषिजी महाराज वहां विराजमानही थे आसपासके औरभी साधु तथा आर्याजीका शुभागमन हुआ संवत १९१४ माघ कृष्ण प्रतिपद् गुरुवारको चतुर्विध संघ के समक्ष बड़े समारोहके साथ दीक्षा महोत्सव हुआ उस समय रतलाममें एकत्रित भया हुआ

जैनसंघ दर्शनीय था ऐसी परंपरागत बातें सुननेमें आता है कुंअरमलजी व तिलोकचन्दजी विद्वद्गिरोमणी श्री अयवंता ऋषिजी महाराज के शिष्य हुए और नानूबाई तथा हीराबाई सतीशिरोमणी दयाजी सिरदारांजी की शिष्या हुई इसप्रकार एकही रोज एक घरकी चार दीक्षाऐं हुई.अब केवल धनराजजी अपने पैतृक सम्पत्तिपर रह गये, श्री कुंअर ऋषिजी महाराज आजीवन एकान्तर उपवास करते रहे और १ चोलपटा तथा १ चादर के ऊपर अपना निर्वाह करते थे, उन्ही महात्माने भोपालमें जाकर अनेक मन्दिर मार्गियोंको अपने प्रामाणिक सदुपदेशमें साधुमार्गी बनाये, उन्हीं के सदुपदेशमें शास्त्रोद्धारक पण्डितवर्य पूज्य श्री अमोलक ऋषिजी महाराज तथा उनके पिताजी श्री केवल ऋषिजी महाराज मन्दिर मार्गको छोडकर साधुव्रतको धारण किये, दीक्षाकालमें महाराज श्रीतिलोक ऋषिजी की उम्र ९ वर्ष १० मासकी थी इससे पाठकवृन्द अनुभव कर सकते है कि मनुष्यका क्या कर्तव्य है ? उसके जीवनका क्या उद्देश है ?

साराश यहकि–मनुष्ययोनिमें जन्म पाना यह साधारण बात नहीं है इस योनिमें जन्म लेनेके लिये देवतालोग भी लालायित रहते हैं, इसी योनिमें सारासार धर्माधर्मादिक तत्त्वोंका विचार करके समस्त बन्धनोंसे निर्मुक्त होकर शाश्वत शान्तिको प्राप्त कर सकता है । इसलिये ऐसा अनुपम अमूल्य मनुष्य जीवनरूपी चिंतामणि रत्नको पाकर इसका दुरुपयोग नहीं करना चाहिये, ऐसाभी कभी दिलमें न लाना चाहिये की मेरे लिये अभी समय बहुत है, क्योंकि कालरूपी शत्रु अपना केश पकडकर बैठा है न मालुम किस समय खींच लेवे । परच यह ससार मोहरूपी जालसे चौतर्फ घिरा हुआ है, अज्ञानरूपी अन्धकारसे ढका हुआ है, अतएव ऐसेही पथप्रदर्शक पुण्यात्माओंका चरित्र अवलम्बनकर चलना, अपार संसारसे पार होनेका सर्वोच्च साधन है

॥ अध्याय ॥४॥

शास्त्राभ्यास

श्री तिलोक ऋषिजी महाराजनें गुरुजीके सेवा शुश्रूषाके साथ शास्त्राभ्यास प्रारभ किया जिस शास्त्रको आप हाथमें लेते थे मानो वह उनके हृदयकमलपर पहलेहीसे निवास कर चुका था। ठीकही है–"**बहुनां जन्मनामन्ते विवेकी जायते पुमान्**" अनेक जन्मोंके अभ्याससे पुरुष विद्वान् होता है। स्वल्पकालमेंही आपने " श्री दशवैकालिक सूत्र, उत्तराध्ययनसूत्र, सूत्रकृताङ्गजी, अनुत्तरोपपातिक, निरियावलिकादी पच सूत्र, अंतगड सूत्र वगैरह १७ शास्त्र कठस्थ कर लिये थे, शास्त्रस्वाध्यायमें अविरल प्रेम था बहुतसे संत तथा आर्याजीनें आपके द्वारा शास्त्रीय ज्ञान प्राप्त किया था, सतारावाले सुश्रावक बालमुकुन्दजी मुथा को शास्त्रकी प्रारम्भिक शिक्षा आपहीके द्वारा हुई थी, वे कालांतरमे अच्छे शास्त्रज्ञ बने थे मुथाजी जीवनपर्यन्त हमेशा पूज्यपाद महाराजश्रीका गुणानुवाद करतेथे। महाराजश्री त्रिकालमें प्रतिदिवस एक घटा ध्यानमें निमग्न होकर उत्तराध्ययनजी वगैरह शास्त्रोंका स्वाध्याय करते थे उस समय आपके कनिष्ट गुरुभ्राता श्री विजयऋषिजी महाराज

आपको मस्तक आदि जावोंके पराक्रमसे नचानेके लिये प्रमार्जन करतेथे यह बात वृद्ध परम्परासे सुनी जाती है।

॥ अध्याय ॥५॥

कवित्वशक्ति

महाराजश्री क्षणमात्र समयका दुरुपयोग नहीं करतेथे, आलस्यका लेशमात्र भी आपके पास नहीं था आलस्यको परम शत्रु समझते थे अत उसका फल स्वरूप आपने थोडेही कालमें कवित्वशक्ति द्वारा गागरमें सागर भर दिया है किसीने ठीक कहा है

आलस्यं यदि न भवेज्जगत्यनर्थः,
को न स्याद्बहु धनको बहुश्रुतो वा ।
आलस्यादियमवनिः ससागरान्ता
संपूर्णा नरपशुभिश्च निर्धनैश्च ॥१॥

अर्थात्– अनर्थकारी आलस्य यदि इस संसारमें नहीं होता तो अति धनाढ्य और प्रखर विद्वान् कौन नहीं होता ? परंतु आलस्यके वजहसे समुद्रपर्यन्त यह पृथ्वी पशुतुल्य मनुष्योंसे और निर्धनोंसे भर गई है सम्वत १०२१ का चातुर्मास भी परम उपकारी श्री अयवंता ऋषिजी महाराजका सुजालपूरमें हुआ था चातुर्मासके बाद क्रमशः विहार करके सम्वत १०२२ के आषाढमें मेसरोद पहुंचे वहींपर आषाढ शुद्ध ९ नवमी रविवारको सुगृहीतनामधेय श्री अयवंताऋषिजी महाराज अपना आयुष्य पूर्ण कर देवलोकारूढ हुए ! उस समय श्री तिलोकऋषिजी महाराजकी अवस्था १७ वर्ष २ मासकी थी गुरुवियोगसे आपके हृदयकमलपर अति कठिन आघात पहुंचा परन्तु अपने आत्मज्ञान द्वारा संसरण-शील संसारकी प्रगतिपर ध्यान देकर "काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम्" इस तर्फ अपने चित्तवृत्तिको लगाये नित्य नैमित्तिक कर्मोंसे कुछभी समय यदि आपको मिल जाताथा तो उसको काव्य रचनामें सफलतामें लातेथे।

महाराज श्रीके बनाये हुए काव्योंका ऋषि सम्प्रदाय तथा अन्य सम्प्रदायके बहुतसे साधु तथा आर्याजीके पास पता चलता है परन्तु वे सब ग्रन्थ मुझको उपलब्ध नहीं हुए अत उनकी नामावली नहीं दी है। सिर्फ आपके प्रशिष्य श्री आनन्द ऋषिजी के पास अप्रकाशित जितने ग्रन्थ हैं उनके नाम अंकित करते हैं १ श्री श्रेणिक चरित्र ढाल ८४ गाथा गणना १२५ , २ श्री चन्दनबाली चरित्र, ३ श्री समरादित्यकेवली चरित्र, ४ श्री सीता चरित्र, ५ धर्मबुद्धिपापबुद्धि चरित्र, ६ हंसकेशव चरित्र, ७ अर्जुनमाली चरित्र, ८ धन्नाशालिभद्र चरित्र ९ भृगुपुरोहित चरित्र, १० हरिबलकाव्य, ११ पच्चक्खाण काव्य, १२ तिलोकबावनी प्रथम, १३ तिलोकबावनी द्वितीय, १४ तिलोकबावनी तृतीय अपूर्ण, १५ गजसुकुमारचरित्र १६ अमरकुमार चरित्र १७अम्बमणिहार,चरित्र १८चाररसप्रधान महावीर स्वामीचरित्र ये सब ग्रंथ इस प्रकारके हैं की जिनको श्रवण करते हुए श्रोतागण आनन्द समुद्रमें मग्न हो जाते हैं जिस व्यक्तिने कभी एकबारभी इन चरित्रोंको पढा या सुना है

वही इसका अनुभव कर सकता है ये सब प्राय: शास्त्रोंके आधारसे रचे गये हैं, ऐसा मेरा अनुभव है परन्तु इन ग्रन्थोंकी अनुपम अपूर्व रचना शैलीपर विद्वानोंका समानका सहृदय मनुष्य मुक्तकंठसे प्रशंसा किये बिना रह नहीं सकता है सार काव्यमे लिखा है कि.--

वर्णः कतिपयैरेव ग्रथितस्य स्वरैरिव ।
अनन्ता वाङ्मयस्याहो गेयस्येव विचित्रता ॥ १ ॥

अर्थात्– वर्ण क ख ग वगैरह उतनेही रहते हैं परन्तु ऋषभ गान्धार आदिक स्वर सातही रहते हैं, परंच गानेवालेके गानेमें फरक पड जाताहै यह गानेवालोंकी विचित्रता है इन ग्रंथोंके बाद १ **प्रतिक्रमण सत्यबोध** २ **ज्ञानप्रदीपक** छपा हुवा है जो दक्षिण, खानदेश, वरार, निजामस्टेट वगैरह देशोंमें बहुतसे श्रावकोंके पास उपलब्ध हैं जिनकी द्वितीयावृत्ति फिर नागपुर सी०पी० में महाराज **श्री तिलोक ऋषिजी** के पाटवी शिष्य **श्री रत्नऋषिजी** महाराज के स्मारक स्वरूप **"श्री जैनधर्म प्रसारक"** संस्थासे प्रकाशित हो रही है इस ग्रंथमेभी महाराज श्री के बनाये हुए जो अनेक रत्न हैं वे भी दर्शनीय हैं कुलमिल आपका बनाया हुआ प्रकाशित या अप्रकाशित आज करीब गाथा संख्या ७५ पचहत्तर हजारके उपलब्ध है, सोभी ये ग्रंथ विक्रम संवत १९२७ के बाद जो रचे गये हैं वेही हैं, उसके पूर्वका पत्ता नही चलता है आप विहार करते हुए जिस वर्ष तथा जिस स्थानपर जो ग्रंथ या कविता निर्माण किये है, वे सब सूक्ष्मरूपसे अध्याय ९ वेमें दर्शाये जायेंगे

॥ अध्याय ॥६॥

लेखनकला।

महाराजश्रीका लेखनकलामेंभी उत्युत्कृष्ट प्रेम था इसकलामेंभी आप उच्च शिखरपर आरूढ थे यह कहनेमें तनिकभी अत्युक्ति न होगी पूज्यपाद महाराजजीके हातका लिखा हुवा एक पत्र आपके प्रशिष्य अर्थात् स्वर्गीय **श्री रत्न ऋषिजी** महाराजके सुशिष्य **श्री आनन्द-ऋषिजी के** पास मौजूद है जो९इंच लम्बा५इंच चौडाईके विस्तारमें है उसके तीन अंशमें **श्री दशवैकालिक सूत्र सम्पूर्ण** लिखा हुवा है चौथे अंशमे **पुच्छीसुणं मूल** अर्थात **श्री सुयगडांगसूत्र** के प्रथम श्रुतस्कंधका छठवा अध्ययन जिसमें **श्री महावीर स्वामी** की स्तुति की है वह और २५६ डगलाका थोकडा लिखा हुआ है यह दृश्य जिनलोगोंने प्रत्यक्ष नहीं किया होगा, उनको लेखककी असत्यता प्रतीत होनेकी सम्भावना है परंच ऐसे ५-६ पत्र म्हाराजश्रीके हातके लिखे हुए अच्छे २ मुनिराजोंके पास सुरक्षित हैं संवत १९८१ मे कच्छ (कपाया) से **श्री नागचंद्रजी स्वामी** ने **श्री रत्न ऋषिजी महाराज** के पाससे मंगाकर उसका फोटो लेकर फोटोकी कई प्रतियोंके साथ उसको वापस कर दिये पूज्यपाद महाराज श्री दोनों हाथ तथा दोनों पैरसे लिख सकते थे और एक समयमें आठ अवधान आप कर सकते थे ये सब बातोंके प्रमाण भूत अबभी दाक्षिण अहमदनगर तथा पूना जिलेमें दो चार वृद्ध विद्यमान है

॥ अध्याय ॥ ७ ॥

चित्रकला

पूज्यपाद महाराज श्री चित्रकलामें भी अत्यन्त प्रवीण थे उन्होंने भगवतीजी शास्त्रानुसार कविनामय तथा गद्यमय ज्ञानकुंजर तैयार किये हैं जिसमें अम्बारी सवारसहित एक बृहत् हाथीका आकार है. सूंडसे प्रारम्भकर पढ़ने जाये क्रमशः हाथीका सब अवयव तैयार होता जायगा और बृहत् हस्तीके आकृतिके अन्दर एक चवभीमर जगहमें सब अवयव सहित ९५ हाथीके आकार हैं इसकाभी फोटो श्री नागचन्द्रजी स्वामीके पास मौजूद है एक चित्रमय शीलरथ तथा १॥ हाथके दीर्घ विस्तारमें सम्पूर्ण आनुपूर्वी इत्यादिक आपके चित्रकलाविषयक दर्शनीय अपूर्व चीजें श्री आनन्द ऋषिजी के पास मौजूद हैं, विशेष उल्लेखनीय आपका बनाया हुआ एक विचित्रालंकार नामका काव्य है जिसमें २४ चौबीस तीर्थंकरोंकी स्तुति दोहाछन्दमें की गई है उसहीके अन्दर छत्रबन्ध दुर्गबन्ध नमस्कार मंत्र वगैरह अनेक चीजें निकलती हैं जिसको देखकर बड़े २ कविलोग और विद्वानलोग भी आश्चर्य चकित हो जाते हैं। उस चित्रालंकारकाव्यका परिचय निम्न लिखित प्रकारसे है।

इसीके चारों तरफसे गोमूत्रिकाबंधमें तीन तरहके नमोक्कार मंत्रके अक्षर आए हुए हैं (१) णमो अरिहन्ताणं णमो सिद्धाणं णमो आयरियाणं णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं एसोपंच नमोक्कारो सव्वपावप्पणासणो॥ मंगलाणंच सव्वेसिं, पढमं हवइमंगलम्॥ यह प्रसिद्ध नमोक्कार मंत्र है (२) श्रीपंचप्रज्ञप्तिसूत्र के अन्दर दी हुई गाथामेंभी नमोक्कार है, वह इस प्रकारसे 'नमीऊण असुरसुरगुरुलभुयगपरिवंदिए गयकिलेसे। अरिहे सिद्धायरिये उवज्झाए सव्वसाहूए' इसमेंभी पांच पद आए हैं (३) सिद्धाण नमो किच्चा संजयाणंच भावओ। इसमेंभी नमोक्कार मंत्र संक्षिप्तरूपमें आया है अर्थात् सिद्ध और साधु ऐसे दो पदोंको श्री उत्तराध्ययनसूत्रके बीसवें अध्ययनमें यह प्रथम गाथाके पूर्वार्धमें लिया है। सारांश– अरिहन्त और सिद्ध इन दो पदोंका सिद्ध इस पदमें समावेश होता है, और आचार्य उपाध्याय और साधु ऐसे तीन पदोंका साधु शब्दमें समावेश होता है, क्योंकि साधु बननेके बादही आचार्य उपाध्याय पदवियां योग्यता होनेपर प्राप्त होती हैं। और इस चित्रालंकार काव्यमेंहा दो चौकडिया है (१) एकमें दान शील तप भाव यह अक्षर आए हैं और (२) में नाण दंसण चारित्र ऐसे अक्षर आए हैं.इस काव्यमें श्रीमान तुंगाचार्य प्रणीत श्री भक्तामर स्तोत्र का २६ वा श्लोक है यह यह "तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ" वगैरह पूर्ण श्लोक है। और उसके आगे श्री दशवैकालिक सूत्रके प्रथम अध्ययनकी पहली गाथा है वह इस प्रकार है 'धम्मो मंगलमुक्किट्ठं अहिंसा संजमो तवो॥ देवावि तं णमंसंति जस्स धम्मे सया मणो॥ इति॥ इसके आगे काव्यालंकारके बीचमें ॐ नमः सिद्ध॥ ऐसे अक्षर निकलते हैं और चित्रालंकारके नीचे दोनो बाजूसे जो छत्रबन्ध है, इनमें पूज्यपाद महाराजश्रीमें सवत मिति देते हुए अपना नामभी उन अक्षरोंमें सम्मिलित किया

है, वह ऐसा "सवत उगनीसे अठावीस जाण, निश्चल केवली वेण प्रमाण ॥ ऋषिपचमी विचितरि अलकार, तिलोकरिख कहे गुरु उपकार ॥ यह चौपाई छ्द है इन सब चीजोंका फोटो लेकर जीवन चरित्रमें सम्मिलित करने के लिये मैंनें **श्री आनन्दऋषिजी** महाराजसे अनुरोध किया था, परंच चित्रोंके फोटो टाईप करानेमें विशेष व्यय है, इस वजहसे सव चित्र प्रकाशित न हुए परंच जहांपर आपका पदार्पण हो, वहांके व्यक्तियोंनें इन सब चीजोंका अवलोकन अवश्य करना चाहिये इनके देखनेसे प्रत्यक्ष मालूम होता है की जैन समाजमें कैसे कैसे विद्वान् महात्मा गुणीपुरुष उत्पन्न हो गये है अपनाभी क्या कर्तव्य है- गृहस्थ अथवा संयमदशामें रहकर किस तरह अमूल्य मनुष्यजीवनका सदुपयोग करना चाहिये

॥ अध्याय ॥ ८ ॥

संत समागम तथा गुणग्राहकता

पूज्यपाद महाराज श्रीके समकालीन जो अच्छे अच्छे प्रसिद्ध विद्वान् थे, उनसे वे मिलाप करते थे उन महात्माओंके पास जो कुछ ग्रहण करने योग्य विषय होता था, उसको उत्कंठापूर्वक ग्रहण करते थे, इस विषयमें आप संतोष नहीं रखते थे .

वशिष्ठजीनें रामचंद्रजीसे कहा है- हे रामचंद्र !

येषां गुणेष्वसंतोषो, येषा रागःश्रुतं प्रति,
सत्यव्यसनिनो ये च, ते नराः पशवोऽपरे ॥ १ ॥

अर्थात्-जो गुण ग्रहणके विषयमें असतोष रखते है और शास्त्रके विषयमें प्रेम रखते है, सत्य बोलना यही व्यसन जिनके पास है वेही मनुष्य है, और सब पशु है वास्तविक ये तीनों बातें महाराजश्रीमें मौजूद थीं आप पूज्य **श्री रेखराजजी** महाराज तथा पूज्य **श्री धर्मदासजी** महाराजके सम्प्रदायके **ज्ञानचन्द्रजी** तथा **मोघजी** स्वामी और कोटा सम्प्रदायके सुप्रसिद्ध विद्वान **छगनलालजी** महाराज, पंडितवर्य **श्री फकीरचन्दजी** महाराज, **पूज्य श्री उदयसागरजी** महाराज वगैरह मुनिराजोंसे मिलाप करके उन लोगोंके प्रेम पात्र बने थे, और भी प्रसिद्ध मुनिराजोंका मिलाप हुआ था परच कब किस स्थानपर मिलाप हुआ इस विषयमें महाराज श्री का हस्त लिखित कोई प्रमाण नहीं मिलनेसे देनेमें नहीं आया.

॥ अध्याय ॥ ९ ॥

चातुर्मास.

अध्याय ५ में हम लिख आये हैं कि अपूर्ण १८ वर्षकी अवस्थामें **श्री तिलोकऋषिजी** महाराज श्री के गुरुमहाराजका वियोग हुआ उसी समयसे आप गुरुजीका सब तरहका भार सभालने लगे सुजालपुरमें पूज्यपाद **श्री अयवंताऋषिजी** महाराज विक्रम संवत

१९२१ का चातुर्मास कर चुकेथे पवित्र पुरुष अपने पद पकज द्वारा जिस स्थानको पावन करते हैं, वही तीर्थस्थान है, अत पूज्य श्रीने संवत् १९२२ में प्रथम चातुर्मास सुजालपुरमें किया इस प्राथमिक चातुर्मासमें बडाही उत्साह हुआ अनेक श्रावक तथा श्राविकाओंने द्वादश व्रतका प्रत्याख्यान वगैरह लिया दूर दूर से बहुत लोग दर्शनार्थ आए थे. व्याख्यान श्रवण कर संतुष्ट हुए वहींसे आपकी कीर्तिरूपी भेरीका नाद दिशाओंमें प्रतिध्वनि करने लगा चारोंतर्फ ज्ञानरूपी पद्म परिमलका सुगध प्रसृत हुआ, व्याख्यानमें अत-गडजी सूत्रका उपदेश होता रहा महाराज श्रीका गुरुवियोगके बाद यह प्रथमही चातुर्मास है। चातुर्मासके बाद विहारकर उज्जैन, खाचरोद, रतलाम वगैरह १५ क्षेत्रोंको पावनकर संवत् १९२३ का चातुर्मास आपने मंदसोर में किया व्याख्यानमें पन्नवणा और समवायांगसूत्रजी तथा उत्तराध्ययनके अध्ययन हुआ अनेक प्रकारके व्रत प्रत्याख्यानादिक भी हुए. मंदसोरमें अच्छे अच्छे श्रावक थे आपका व्याख्यान श्रवण कर उनके दिलमें संतोष पैदा हुआ कि आपके द्वारा समाजका कुछ उद्धार अवश्य होगा परन्तु महाराजश्रीके अपूर्व उपदेशरूपी अमृतके पान करने की इच्छा अभी शान्त नहीं हुई अतः चातुर्मासके विहारके बाद फिरभी मन्दसोरमेंही चातुर्मास करनेके लिये श्रावक समुदायने अत्यन्त आग्रह किया अतः संवत् १९२४ का चातुर्मासभी आपने ठाणा ३ से मंदसोर खीचारोज में किया।

मंदसोरसे विहारकर अनुक्रमसे रतलाम, सैलाने, चितौड, अजमेर वगैरह २१ क्षेत्रोंको पावन कर कोटा पधारे। कई स्थानोंकी चातुर्मासकी प्रार्थना चल रही थी आखिर कुमतसे कोटाकी प्रार्थना स्वीकृत हुई संवत् १९२५ का चातुर्मास कोटा रामपुरा में नोहरदासजीके नोहरेमें हुआ व्याख्यानमें आचारांगजी का वाचन हुआ आपके वक्तृत्व शक्तिसे मोहित होकर श्रोतागण कमलपर भमरके समान लीन रहते थे बडेही उत्साहके साथ वहांका चातुर्मास सफल हुआ

कोटासे विहार कर क्रमशः झालरापाटन, अमरकोट, सारगपुर होते हुए फाल्गुनमें सुजालपुर पधारे उस समय यहांके श्री श्रावकोंकी हर्षकी सीमा न रही हाथमें आये हुए चिंतामणिको हाथसे बाहर नही जाने देना चाहिये ऐसा विचार कर चातुर्मासकी प्रार्थना करनेमें शुरू कर दिया यहांके श्रावकोंका धर्मानुराग प्रेम भाव पहलेहि से था फिरभी अत्यन्त उत्कृष्ट प्रेम देखकर प्रार्थना स्वीकृत हुई संवत १९२६ का चातुर्मास सुजालपुर में बडे उत्साहके साथ हुआ धर्मोन्नति भी अधिक हुई। व्याख्यानमें श्री अनुत्तरोववाई, और सुयगडांगजी फर्माये गये। सुजालपुरसे विहारकर क्रमशः १७ क्षेत्रोंको पावनकर जन्मग्राम रतलाममें पहुंचे यहांके सघका विशेषतः आग्रह हुआ कि यह क्षेत्र आपने नामसे तथा कीर्तिसे मुख्य केन्द्र होनेसे हरदम मुनिराजोंके आवागमनसे बहुत कुछ प्रतिष्ठा प्राप्त कर लिया और आप ऐसे नररत्नको पैदा कर अपना नामभी यथार्थ स्पष्टीकरण कर चुका है परन्तु इस रत्नसे लाभ उठाने का यथेष्ठ अवसर यहांके निवासियोंको न मिला, अत हम लोगोंकी प्रार्थना है कि इस वर्षके चातुर्मास की प्रार्थना स्वीकारकर श्रीसंघको अनुगृहित कीजिये

महाराजश्रीने प्रार्थनास्वीकार कर लिया **संवत १९२७ का चातुर्मास बडे समारोहके साथ रतलाम** माणिकचौकमें ठाणा पाचके साथ समाप्त हुआ, व्याख्यानमें **श्री-भगवतीजी** तथा **श्री अतगढजीका** वाचन हुआ ।

रतलामसे विहार कर अनुक्रमतः छोटी सादडी, वडी सादडी, वगैरह २७ क्षेत्रोंको पावनकर माघ शुद्ध ९नवमी रविवारको उदैपुर प्राप्त हुए, वहापर आपके पधारनेसे बडाही उत्साह और धर्मका प्रकाश हुआ यहापर २०वीस रात्र निवासकर विहार करते हुए निमच, नारायणगढ, अमरावद वगैरह ३५क्षेत्रोंको पवित्र कर विक्रम सवत् १९२८ के वैशाखमें रतलाम पधारे, उसी जगह " **इन्द्र विजय छन्दोबद्ध तिलोक बावनी** " वैशाख शुक्ल नवमी शनिवारको पूर्ण किये। रतलामसे विहार कर १०दश क्षेत्रोंको पवित्रकर साजापुरमें पहुचे **संवत १९२८का चातुर्मास ठाणा ३ से साजापुर** अच्छे उत्साह पूर्वक समाप्त हुआ, उसी जगह भाद्रपद शुक्ल ५ पचमीको **विचित्रालकारकी** रचना समाप्त हुई है विचित्रालकारका पूर्ण परिचय अध्याय ७ में हम लिख चुके हैं चातुर्मासके व्याख्यानमें **श्री भगवतीजी** तथा **श्री उववाईका** उपदेश होता रहा साजापुरसे विहार-कर क्रमशः देवास, इन्दौर, धार वगैरह ३८ क्षेत्रोंको पावनकर **संवव् १९२९ का चातुर्मास धरियावद्में** ठाणा ४से किया। व्याख्यानमें **स्थानाङ्ग उपासकदशाङ्ग** का उपदेश होता रहा । इस वर्षका रचा हुआ **सुदर्शन सेठका चौढालिया** श्रावणकृष्ण तृतीयाके रोज समाप्त किया हुवा **मुनि श्री माणक ऋषिजी महाराज के** पास उपलब्ध है । तथा **"अर्जुन माली मुनिका"** चौढालिया मुनि **श्री आनन्द ऋषिजी के** पास उपलब्ध है परंच कब और कहापर इनको बनाया यह उल्लेख नहीं मिलता है; अनुमानतः चातुर्मासमें बना होगा ऐसी कल्पना कर सकते है

धरियावदसे विहारकर अनुक्रमसे १७ क्षेत्रों को पावनकर वि० संवत् १९३० के वैशाख कृष्ण प्रतिपदको मदसौर पधारे, वहाके विज्ञ श्रावक वर्ग पूज्यपाद महाराजश्रीके समागमसे पहले दो वर्षोंमें लाभ उठा चुके थे इस लिये फिर चातुर्मासकी प्रार्थना की। प्रार्थना स्वीकृत होनेके बाद महाराजश्री अन्यत्र विहार न करन पाये। **अतः सं० १९३० का चातुर्मास मदसोर** में हुआ मंदसौरमें वैशाख कृष्ण १० दशमी सोमवारको " **पंचवादी-काव्य**" बनाये, जिसकी रचना विद्वानोंके देखने योग्य है ज्येष्ट कृष्ण ६ षष्ठी रविवारको **"साधुस्तोत्र"** की रचना किये आषाढ शुक्ल तृतीया शुक्रवार के रोज मंदसौरमें रचा हुवा **धर्मजयकुमारकी** चौपाई महासतीजी **श्री रतनकुंवरजी** के पास उपलब्ध है आषाढ शुक्ल तेरस सोमवारको **"रिखभदेवजिनस्तवन"** की पूर्ति किये इसके बाद सवत १९३० के रचे हुए (१) "अरिहतजिन स्तवन छद" (२) "**अतीत अनागत वर्तमान चौविश जिन स्तवन**" ये दो स्तोत्र प्रकाशित उपलब्ध है परच इनके रचने का स्थान और कालका उल्लेख नहीं है, साहचर्यसे येभी मंदसौरमें रचे गये होंगे ऐसा हो सकता है ।

संवत १९३१ तथा १९३२ का चातुर्मास साजापुरमें हुवा ऐसा महाराज-

थकि लेखसे प्रमाण मिलता है परंच इन दो वर्षोंमें कितने क्षेत्रोंमें आपने विहार किया और किस किस शास्त्रोंका उपदेश हुआ इसका कुछ उल्लेख नहीं मिलता है सतो संवत् १०३१ के रचित ग्रन्थोंका पता है सिर्फ संवत १९३२ के ज्येष्ठ कृष्ण द्वितीया शनिवार सिद्धियोगमें "भय भंजन अरिहंत स्तवन" मालापुरमें रचित उपलब्ध है। भाद्रपद शुक्ल तेरस सोमवार के रोज नमिचरित्रकी रचना समाप्त किए तथा (२) "भ्रमभंजनकुमति चर्पटिका" (उपनाम प्रश्नोत्तरयुक्त चर्चामाला) यह मयमी प्रकाशित है परंच स्थान समयका उल्लेख नहीं है

संवत १९३२ के चातुर्मासके बाद मालापुरसे विहार कर इन्दौर उज्जैन वगैरह ८ क्षेत्रोंमें भ्रमणकर संवत १०३३ का चातुर्मास सुजालपुरमें किये उस वर्षमें भी कोई विशेष उल्लेख नहीं मिलता है सिर्फ श्रावण शुक्ल १४ शुक्रवार श्रवण नक्षत्र सौभाग्य बवकरण मकरचंद्रमें स्थान मालवा सुजालपुरमें 'सीता चरित्र' को किया यह ग्रंथ अप्रकाशित उपलब्ध है.

चातुर्मासके अनन्तर सुजालपुरसे विहारकर देवास इन्दौर होते हुए मार्गशीर्षमें रतलाम पधारे वहां मार्गशीर्ष वदि १० दशमीको श्री भवानीऋषिजीकी दीक्षा हुई ७ वें रोज बड़ी दीक्षा हुई वहांसे विहारकर फाल्गुनी पूर्णिमा जावरामें किये तत्पश्चात् १० दश क्षेत्रोंको पवित्रकर संवत १९३४ का चातुर्मास रतलाममें किये व्याख्यानमें जम्बूद्वीप पनन्ती श्रीआचारांग, निरियावलीका उपदेश होता रहा.इस वर्षका रचित 'आचार्य स्तोत्र' उपलब्ध है जो वैशाख शुक्ल पूर्णिमा सोमवार को बनाया उसमें स्थानका उल्लेख नहीं है

रतलामसे विहारकर ३१ क्षेत्रोंको पावन कर फाल्गुन कृष्ण २ को प्रतापगढ़ पधारे १० दश रात्र निवासकर तदनंतर मन्दसौर ग्राममें पधारे वहां चैत्र शुक्ल १२ रविवार को श्री प्यारा ऋषिजी की दीक्षा हुई वहींसे जावरावाले श्रावकोंकी चातुर्मासकी प्रार्थना शुरू हुई व प्रार्थना स्वीकृत हुई वहांसे विहार कर २२ क्षेत्रोंको पावन किए और ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया रविवार के दिन ' कृष्णाजी को ब्याहलो ' नामक ग्रंथ की रचना किए बाद चातुर्मासके लिए जावरे पधारे

संवत १९३५ का चातुर्मास बड़े उत्साहपूर्वक जावरामें समाप्त हुआ उसी समय देश दक्षिण ग्राम घोडनदी जिल्हा पूनाके सुश्रावक गंभीरमलजी लोढा मालवामें मुनिराजोंके दर्शनार्थ पधारे थे उस समय दक्षिण देशमें मुनिराजोंका संचार बहुतही कम था अर्थात् प्रायः मुनिराजोंसे एकदम शून्य था अतः गंभीरमलजी लोढाने कोटा सम्प्रदायके सुप्रसिद्ध विद्वान श्री छगनलालजी महाराजसे दक्षिण देशमें विहार करनेकी प्रार्थना की परंतु आपने स्वीकार नहीं किया फिर वहांसे जावरा पुज्यपाद श्री तिलोक ऋषिजी महाराज के चरणोंमें अपनी अर्ज सुनाए विशेष उपकार समझकर महाराजश्रीने प्रार्थनास्वीकार कर लिया चातुर्मास खतम होनेही आपने श्री प्यारा ऋषिजी तथा श्री कंचन ऋषिजी ठाणे ३से दक्षिणकी तर्फ पदार्पण किया मार्गशीर्ष १५ को धारमें पधारे वहां ८दिवस निवासकर विहार करते हुए इन्दौर, सनावद होते हुए बरहानपुर पधारे वहां

आसपासके ग्रामोंमें दिगम्बर सम्प्रदाय के अन्तर्गत तारण स्वामीका एक मत चलता है उसको माननेवाले एक जातिके वणिक है ये केवल शास्त्रोंको मानते हैं और पूजते हैं उपदेश देकर इनमेंसे बहुत लोगों को **साधुमार्गी** बनाये वहासे आगे चलकर फैजपुर पधारे वहा आर्याजी **श्रीभूराजीकी** दिक्षा हुई, उनको सती शिरोमणी **श्रीहीराजीके** निश्रायमें देकर वहासे भुसावल, जल्गाव होते हुए सवत् १०३५ चैत्र वदि नवमी को घोडनदीको अपने चरण रजोंसे पवित्र किया

संवत् १०३६ की दिनचर्या

दक्षिण देशमें उस समय हर्षकी सीमा न रही उस समयके ४-५ चार पाच वृद्धोंसे मेरी मुलाखात हुई है उनके मुखसे उस समयका उत्साह सुननेही योग्य है बहुत दूर दूरके श्रावक घोडनदीमे महाराज श्रीके दर्शनार्थ आए, और सबलोग अपने तर्फ विहार करानेके कोशीसमें लगे, परच अहमदनगरके श्रावकोंने अपने कार्यमें सफलता दिखाई १८ अठारह रात्र घोडनदीमें रहकर बाद अहमदनगरके तर्फ विहार किया अहमदनगरमें उस समय समाज विख्यात दृढधर्मी **रभाबाई** विराजमान थी **श्री तिलोक ऋषिजी महाराज** नगरमें पधार गये, यह शब्द जिस व्यक्तिने प्रथम सुनाया उसको बधाईमें सुवर्णका कंकण बाईजीने प्रदान किया, यह बात वहांके वृद्धोंद्वारा सुनी गई है अहमदनगरमें बडाही उत्साह मनाया गया. २१ एकविश रात्र महाराज वहा विराजमान थे चातुर्मासकी प्रार्थना सुरु हुइ परच घोटनदी वाले सुश्रावक गभीरमलजी लोढाजीकी बातें सुनाकर अग्रिम वर्षके लिये कुछ छाया देकर विहार कर गये नगरसे विहार करनेके बाद ३६ क्षेत्रोंको पावनकर आषाढ वदि १४ को घोडनदीमें पधारे

उसके पश्चात समार पक्षकी महाराज श्री की जेठी बहिन सती शिरोमणी **श्री हीराजी** ने मालवासे विहार करते हुए ठाणा ३ से घोटनदीमें पधारे, उस समय आपलोगोंके उपदेशसे दक्षिण देशका पुनरुद्धार हुआ, ऐसा सुना जाताहै बहुतसे पुण्यात्मा व्यक्तिओंने अपने मनुष्य जीवनकी सफलता प्राप्त कर ली आषाढ शुक्ल ९ नवमी शनिवारको एक समयमें चार दीक्षा हुई, पिता और पुत्र **श्रीस्वरूपऋषिजी** तथा **श्रीरत्नऋषिजी महाराज** ये दोनों व्यक्ति **श्री तिलोकऋषिजी महाराजके** शिष्य हुए इन लोगोंके वैराग्य का कारण तथा कर्तव्य **श्री रत्न ऋषिजी महाराजके** जविन चरित्रमें वर्णित है एव माता पुत्री **श्री चंपाजी** तथा **श्री रामकुवरजी** सती शिरोमणी आर्याजी **श्री हीराजीकी** शिष्या हुई इस तरह ठाणा ७ का चातुर्मास **संवत १९३६ का बडे आनन्द पुर्वक घोडनदी** में समाप्त हुआ वहींपर चातुर्मासमें " **११ ग्यारह गणधरकी प्रथम स्वाध्याय** " नामकी कविताकी रचना की व्याख्यानमें **समवायाङ्गजीका** उपदेश होता रहा चातुर्मासके बाद मार्गशीर्ष कृष्ण १३ गुरुवारको आर्याजी **श्रीरम्भाजीकी** दीक्षा हुई मार्गशीर्ष शुक्ल ५ पचमी शुक्रवारको विहारकर स्थान परिवर्तन किये फिर पौष शुक्ल ६ षष्ठी शनिवारको **श्रीगोकूलजीकी** दीक्षा हुई, पौष शुक्ल १२ द्वादशीको विहार किये विहार करते हुए आबोरी पधारे, वहां

माघ वदि १ प्रतिपद् बुधवारको श्रीछोटाजीकी दीक्षा हुई वहांसे विहार करके सोनई पधारे वहां " एषणासमिति " नामक ग्रन्थकी समाप्ति किये–यद्यपि उस ग्रंथमें तिथिका उल्लेख नहीं है तथापि विहारक्रमसे पता चलता है कि माघ कृष्ण ५ पंचमी शनिवारको समाप्ति की गई है वहांसे विहारकर फाल्गुन कृष्ण में सांडवा पधारे वहीं फाल्गुन कृष्ण १० दशमी शनिवारमें " सोलपछविशी " नामक ग्रन्थ बनाया वहांसे विहारकर १५ क्षेत्रोंको पावनकर नासिक, गणागल्ला ब्रह्मणकरवाला सराफजीके उपासरेमें १ तीन रात्र रहकर बसल–पिंपलगांव पधारे वहां फाल्गुन शुक्ल चतुर्थीको " अमरकुमार चरित्र नामका काव्य समाप्त किया वहांसे विहारकर संवत् १९३६ के चैत्र वदि ३ को फिर सांडवा पधारे संवत १९३६ का रचा हुआ ग्रंथ " गजसुकुमारकी लावनी नामका उपलब्ध है परंतु उसके रचनामें तिथी और स्थानका उल्लेख नहीं है

सवत १९३७ की दिन चर्या और चातुर्मास

चैत्रवदि ३ तृतियाको सांडवा पधारे चैत्रवदि १३ बुधवारको आर्याजी श्री नन्दुजीकी दीक्षा हुई वैशाख वदि १ प्रतिपदको वहांसे विहारकर २१ क्षेत्रोंको पावनकर बानके हिंगणा पधारे वहां ६ ७ रात्र विराजमान थे वहांपर वैशाख कृष्ण १३ तेरसको 'विनय आराधनाका चौढालिया' तयार किया और वैशाख शुक्ल ३ तृतियाको "उपदेशी लावनी" की रचना की, वहांसे विहार कर वैशाख शुक्ल ८ मी को अहमदनगर पधारे वहांके सुश्रावक वर्ग महाराज श्रीके दक्षिण देशमें आगमन कालसेही चातुर्मासके लिये लालायित थे संवत १९३७ का चातुर्मास बडे समारोहके साथ अहमदनगरमें समाप्त हुआ बहुत दूर २ से श्रावक वर्ग महाराज श्रीके व्याख्यान तथा दर्शनका लाभ लेने आएथे व्याख्यान में श्री आचारगजी सूयगडांगजी का उपदेश होता रहा चातुर्माससें आपने भाद्रपद कृष्ण १४ चतुर्दशी शुक्रवार सिद्धयोगमें 'वर्द्धमान दुन्दोटन" नामक काव्य बनाया है, आश्विन कृष्ण चतुर्थी बुधवार भरणी नक्षत्र हर्षण योग भला पठ धर्म स्थानकमें 'श्रीचन्द्रकेवली चरित्र' की रचना समाप्त की है इसकी ६७ गाथा संख्या ७५० मैं यह ग्रंथ है और आश्विन कृष्ण १४ चतुर्दशी बुधवारको 'द्वितीय चौविस जिन स्तवन" की रचना समाप्त हुई है आश्विन शुक्ल द्वितिया बुधवारको ' बीस विहरमानोंकास्तवन ' अलग अलग बनाये हैं, आश्विन शुक्ल १० विजय दशमीके रोज पंच परमेष्ठी स्तवन" को तथा "वीररस प्रधान श्री महा वीर स्वामीका पंचढालिया" की रचना हुई है कार्तिक कृष्ण ३० दीपमालिकाके रोज "वर्द्धमान स्वामीका चौढालिया " की रचना हुई है तदनंतर मार्गशीर्ष कृष्ण२ गुरु वारको विहारकर अहमदनगर धर्मशालामें रात्रभर विराजमानथे वहांसे विहारकर पारनेर अलकुटी वगैरह २१ क्षेत्रोंको पावनकर घोडनदी पधारे वहां मार्गशीर्ष शुक्ल११ को 'ज्ञान कुंजर तैयार किये जिसका वर्णन अध्याय ७ में कर आये हैं वहांसे विहारकर पौष शुक्लमें भोगोंदा निम्बा अहमदनगरमें पदार्पण किये वहां पौष शुक्ल अष्टमी शुक्रवारको ' जीव

रक्षा उपदेश लावणी " तथा "श्रावक उपर लावणी" ये दोनों पद्योंको बनाया, वहांसे विहारकर चिचोंडी पधारे, वहा माघ वदि अष्टमी को "मुनि गुण मंगल माला" का रचना किये और वहां १४ रात्र विराजमानथे, वहासे विहारकर माघ शुक्लमें करमाला पधारे वहां माघ शुक्ल दसमी भौमवारको "श्रावक छत्तिशी" की रचना की और माघ शुक्ल तेरसको "नरक दुःख वर्णन" की रचना किये, वहा ६छे रात्र निवासकरके मिरजगांव पधारे, वहा फाल्गुन कृष्ण २द्वितीया बुधवारको "अध्यात्मफाग स्वाध्याय" तैयार किये वहांसे विहारकर कटा पधारे, वहापर फाल्गुण कृष्ण एकादशीको "सोलह स्वप्नकी लावणी की रचना किये। वहांसे विहारकर फाल्गुण शुक्ल ७मी को नगरमें पधारे, फाल्गुनी पूर्णिमा को ४७ वां लोच अहमदनगरमें हुआ संवत १९३७ के सालमे बने हुए "पुण्य आश्रयी लावणी" तथा "धन आश्रयी पद" भी उपलब्ध हैं, परच स्थान और तिथी का पता नहीं है

संवत १९३८ की दिनचर्या और चातुर्मास

अहमदनगरमे विराजते हुए चैत्र कृष्ण ७ सप्तमी को 'शील सप्तमी स्वाध्याय' की रचना किये, तदनतर चैत्र शुक्ल पचमी रविवारको नगर स्थानकसे विहारकर सिद्धेश्वर (सिद्धि) बागमे रात्रनिवास किये उसी रोज "अध्यात्मबाग स्वाध्याय" की रचना किये वहासे विहारकर आंबोरी पधारे वहा दश रात्र निवास किये चैत्र शुक्ल ११ सोमवारको "कालकी लावणी" की रचना की चैत्र शुद्ध पूर्णिमाको 'सातवार अध्यात्म स्वाध्याय' [२] पन्द्रहातिथी अध्यात्म स्वाध्याय" [३] बारहमास अध्यात्म स्वाध्याय" [४] " अध्यात्म गिनगौर " इतने काव्य आंबोरीमें बनाये हैं आंबोरीसे विहारकर मिरी पधारे वहा वैशाख शुक्ल तृतीयाको" अक्षयतृतीया अध्यात्म स्वाध्याय" की रचना किये वैशाख शुक्ल ६को "करमपचीशी" की लावणी रचे और वैशाख शुक्ल १२ बुधवारको " कक्का-बत्तीशी लावणी " की रचना किये वहासे विहारकर देवटाकली पधारे वहा ज्येष्ठ कृष्ण तृतीया सोमवारको (१) " पंच आराकी लावणी " (२) " कालकी लावनी " ये दो काव्योंकी रचना किये वहांसे विहारकर कमशः क्षेत्रोंको पावन करते हुए रस्तापूर पधारे वहा " उपदेश आश्रयी पदकी " रचना ज्येष्ठ शुक्ल ६ षष्ठी को हुई है वहांसे खरुडी पधारे वहा जेष्ठ शुक्ल ७ सप्तमी को "उपदेश छत्तीशीकी पूर्ति किये इस तरह विहार क्रमसे ६९ ग्रामोंको पवित्रकर ज्येष्ठ शुक्ल ११ को अहमदनगरमें पदार्पण किये वहा आषाढ कृष्ण १प्रतिपदाको श्री लक्ष्मीजी [लछमाजी] की दीक्षा हुई ७ वें रोज बडी दीक्षा हुई आषाढ शुक्ल नवमीको विहारकर ठाणा ४ से आंबोरी चातुर्मासके लिये पधारे ठाणा १० दशसे श्री आर्याजी श्री हीराजीका आगमन हुआ इसतरह ठाणा १४ चवदाका चातुर्मास संवत १९३८ का आंबोरीमें सपन्न हुआ वहा पर्युषण पर्वमें "पर्युषणपर्व अध्यात्म स्वाध्याय" की रचना किये और भाद्रपद शुद्ध ११ को शीलाङ्गरथ " की रचना किये, जिसका वर्णन अध्याय ७ में दिया है चातु-

मासमें आश्विन शुक्ल १० विजय दशमी के रोज [१] " चौविस जिनस्तवन " [२] अध्यात्म दशहरापर्व स्वाध्याय" ऐसे ऐसे काव्योंकी रचना समाप्त किये, कार्तिक कृष्ण तेरस को '१ धन तेरस अध्यात्म स्वाध्याय' १४ चतुर्दशीको २'रूपचतुर्दशी अध्यात्म स्वाध्याय"अमावस्याको ३ "दीपमालिका अध्यात्म स्वाध्याय" की रचना हुई आंबोरीमें रचा हुआ चार प्रकारका '११ गणधरका स्वाध्याय" मिलता है, परन्तु तिथिका उल्लेख नहीं है. अनुमानतः चातुर्मासमें बने होंगे चातुर्मासके बाद मार्गशीर्ष वदि २ द्वितीयाको विहार कर ग्रामोंमें बुंगरगण पिपलगांवमें दो रात्र बिताकर अहमदनगर पधारे वहां १५ पन्द्रह रात्र विराजमान थे वहांसे विहारकर मार्गशीर्ष शुक्ल ४ चतुर्थी शुक्रवारको केडगांव पधारे मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमीको श्री 'गौतम स्वामीके रास' को बनाया विहारक्रमसे कामरगांव मे बना हो ग्र तदनन्तर अनुक्रमशः विहारकर चांभारकुटीमें पधारे, वहा पौष शुक्ल १२ द्वादशीको श्री झमकूजी आर्याजीकी दीक्षा हुई ७ में रोज बडी दीक्षा हुई वहा १६ रात्र विराजमान थे उन दिनोंमें माघ कृष्ण ३ तृतीया शनिवारको '२८ प्रकारके चौविस जिन स्तवन' की रचना की ४ चतुर्थी रविवारको 'तीन प्रकारका उपदेशी फटका'" आठ प्रकारका चौविस जिन स्तवन " की समाप्ति किये माघवदि ५ को चांभारकुटी से विहार करते हुए अहमदनगर पधारे २० बीस रात्र विराजमान थे वहां माघ शुक्ल पंचमीको 'बसंत पञ्चमी अध्यात्म स्वाध्याय' की रचना किये फाल्गुन कृष्ण ७ सप्तमीको नगर से विहारकर प्रवरासंगम वालूंबा औरङ्गाबाद वगैरह ३२ क्षेत्रोंको पावनकर संवत १९१८ चैत्र शुक्ल १० को आंबोरी पधारे एकादशी सोमवारको आंबोरीमें 'चमाजीकी लावणी" की रचना किये वहांसे विहारकर चैत्र शुक्ल १२ द्वादशी शुक्रवारको फिर अहमदनगर पधारे

संवत १९१९ की दिनचर्या और चातुर्मास

नगरमें ४४ चौवालिस दिन विराजमान थे वहा वैशाख शुक्ल १४ चतुर्दशी मङ्गलवारको ' हंस केशव चरित्रकी रचना किये और ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्थी रविवारको धर्मबुद्धि पापबुद्धि चरित्र का रचना समाप्त किये तत्पश्चात् ज्येष्ठ वदी ९ नवमी गुरुवारको 'हरियाजी और अमराजी' की दीक्षा हुई ज्येष्ठ वदी १२ रविवारको नगरसे विहार कर गये कई क्षेत्रोंको पवित्रकर घोडनदी पधारे ज्येष्ठ शुक्ल २ द्वितीयाको खंदक मुनिका चोढालिया समाप्त किये वहांसे विहारकर कई क्षेत्रोंको पावनकर पुना पधारे वहा ७ रोज विराजमान थे वहींपर मानापेठमें आषाढ कृष्ण १ प्रतिपद को मेतारज मुनिका चौढालिया तैयार किये और आषाढ कृष्ण ४ चतुर्थीको 'तेरहकाठियाकी स्वाध्याय' की रचना किये पुनासे विहारकर १७मार्गमें विचरकर आषाढ शुक्ल११एकादशी को घोडनदीमें पधारे शिष्याओंके साथ सती शिरोमणी श्री हीराजी का भी शुभागमन हुआ, ठाणा १८ से संवत १९१९ का चातुर्मास घोडनदीमें बडेही उत्साहपूर्वक समाप्त हुआ व्याख्यानमें भीउववाईसूत्र श्रीचंद्रकेवलीका रास का उपदेश होता रहा भाद्रपद शुक्ल१०को आर्याजी भीलकमाजी का संथारा ४॥पहरका हुआ और वहीं आश्विन शुक्ल प्रतिपद शुक्रवार

अमृत वेला तुला लग्नमें '**श्री श्रेणिक चरित्र**" की समाप्ति किये मार्गशीर्ष वदि ५पञ्चमी बुधवार को **रंगजीकी** दीक्षा हुई षष्टीको घोडनदीसे विहारकर रात्रभर मन्दिरमें निवास किया, वहांसे विहारकर कइएक क्षेत्रोंको पावनकर **सतारा** शहरमे पदार्पण किये, वहां भवानी पेठमें १३ रात्र निवास किये, वहींपर मार्गशीर्ष शुक्ल८अष्ठमी सोमवारको २ प्रकारका "**उपदेश स्तवन पद**" और मार्गशीर्ष शुक्ल ११ एकादशीको "**उपदेश फटका**" की रचना किये तथा पौष कृष्ण तृतीया बुधवारको "**आनन्द श्रावक का चौढालिया**" और चतुर्थी गुरुवारको "**कामदेव श्रावकका चौढालिया**" की रचना समाप्त किये और पौष शुक्ल ५ पञ्चमी शनिवारको "**भृगुपुरोहितका पंचढालिया**" तैयार किये वहासे विहारकर ७ क्षेत्रोंको पवित्रकर पूना पधारे, वहां पौष शुक्ल पञ्चमीको "**दीप मालिका द्वितीय अध्यात्म स्वाध्याय**" की रचना किये दश रात्र पूनामें विराजमान होकर सेल पिपलगांव पधारे, वहां पौष शुद्ध अष्टमीको '**श्री सुधर्मा स्वामीकी स्वाध्याय**' की रचना किये, १३ रात्र वहा विराजमान ये वहा **श्री कंचन ऋषिजी** की दीक्षा माघ शुक्ल पञ्चमीको हुई. वहांसे विहारकर क्रमशः क्षेत्रोंको पावन करते हुए मंचरमें पधारे वहा माघ शुक्ल १३ तेरसको '**कर्म विपाक मालाकी**' रचना किये मंचरसे विहारकर फाल्गुन शुक्ल ६ को अहमदनगरमें पधारे उसी रोज '**चौदह नियम स्वाध्याय**' की रचना किये

संवत् १९४० की दिन चर्या और चातुर्मास.

अहमदनगरमें विराजते हुए चैत्र शुक्ल २ द्वितीया सोमवारमें **श्री दशवैकालिक सूत्रके** दश अध्ययन का कवितामय भाषांतर तथा तृतीयाको '**शालिभद्र चरित्र**' की रचना सम्पूर्ण किये । अप्रकाशित '**समरादित्य केवली चरित्र**' वडा ग्रन्थ है, वह चैत्र शुक्ल १ प्रतिपदमें प्रारम्भकर आषाढ शुक्ल पञ्चमी चंद्रवार पू फाल्गुनी नक्षत्र वरिदान योग अमृत-वेलामे आम्बोरीमें समाप्त हुआ मिलता है परञ्च संवत् का ठीक पता नहीं है सं १९४० में इस समयपर पूज्यपादका विराजना उनके दिनचर्यासे साबित होता है, अतः मालुम पडता है कि उनका अन्तिम काव्य वही है वस इतने ही दिनकी दिनचर्या तथा निर्माण किये हुए ग्रथ मिलते हैं बादका कुछ पता नहीं है स्वर्गीय गुरुवर्य **श्री रत्नऋषिजी महाराज** के मुखारविंदसे ऐसा श्रवण गोचिर हुवा है कि सवत् १९४० का चातुर्मास अहमदनगरमें करनेके लिए आंबोरीसे विहार करनेका निश्चय कर रात्रिमें शयन कर गये, रात्रिके चतुर्थयाममें आपने स्वप्न देखा की मैं पहाडके उपरी भागसे नीचे गिर पडा हूं महाराजश्रीकी नींद टूट गई उठकर ध्यान स्वाध्याय, प्रतिक्रमण पूर्ण किये विहार करनेके लिये कमर बाध स्थानकसे बाहर हुए, उस समय कोयलेकी टोपली दिखपडी आगे चलनेपर सन्मुख महिष आ रहा है ये सब अप-शकुनको देखकर महाराजश्रीने नजदीक ही एक बगीचेमें रात्रभर निवास किया पञ्चमीको ठाणा पांचसे **डोंगरगण** पधारे, षष्ठीको पिंपलगाव पधारे, वहा एक वृक्षके नीचे ध्यान

करनेके लिये चले हुए उसी समय शिरोवेदना प्रारम्भ हुई अहमदनगरके श्रावक वर्ग महाराजश्री के अगवानीमें आ पहुंचे थे, औषधोपचार होने लगा परन्तु तीव्र वेदना और अधिक होती गई यह सनसनी फैलतेही आसपासके बहुतसे श्रावक वर्ग इकठ्ठा हो गये, फिर रात्रिमें ८ बजेके बाद भयंकर ज्वरने पूज्यपाद महाराजश्री के शरीरपर अपनी सत्ता जमाई तीन दिन चिंचवाडमें महाराजश्री के साथ सब श्रावक वर्ग उपस्थित थे ज्वरका प्रकोप उत्तरोत्तर बढताही गया, अब ऐसे समयमें इस स्थानपर अस्वास्थ्य होकर पूज्यपाद श्रीका रहना श्रावक वर्गके हृदयमें अत्यंत दुःखकर था परन्तु कि कर्तव्यतामें विमूढ थे अहमदनगरमें महाराजश्री के प्राप्त होनेका उपाय उन लोगोंमें कुछ सूझता नहीं था समय सूचक पूज्यपाद महाराजश्रीने अपने श्रावकोंकी इस प्रकार व्याकुलता देखकर मानसिक बलसे साहस कर आषाढ शुक्ल ९ नवमीके दिन अहमदनगरमें पधार गये

अनेकों वैद्य डाक्टरोंका औषधोपचार निरवच्छिन्न होने लगा लेकिन सब निष्फल हुआ. ज्वरका प्रकोप और शिरोरोग तो पहलेहीसे प्रबल था, विहार करनेसे औरभी उनको सहायता मिल गई

सूर्य अस्त हुआ

आखिर श्रावण वदि २ रविवार को अहमदनगरमें महाराज श्री तिलोक ऋषिजी रूपी जैन समाजका सूर्य अस्त हो गया, इस नश्वर शरीरको छोडकर महाराज श्री का आत्मा स्वर्गारूढ हुआ यह समाचार मालवा और दक्षिण देशोंमें तुरन्त फैल गये. जिस समय महाराज श्री के देहांतके समाचार रतलाम में पहुंचे, उस समय रतलाममें श्रीमज्जैनाचार्य १००८ श्री हुकमीचंदजी महाराज के संप्रदायके पूज्य श्री १००८ श्री उदयसागरजी महाराज विराजमान थे, उन्होंने रतलाम संघ के सामने हमारे जैन संप्रदायका एक सूर्य अस्त हो गया ऐसा फरमाया

उस समय महाराज श्री का शरीरही नहीं किंतु जैन समाजही निर्जीव होगया जैन भारती निराश्रय हो गई संपूर्ण जैन समाजमें मानोंकी अंधेरी छा गई सुनते हैं कि उस समय वज्रहृदय भी मनुष्य आपके इस चिरकालीन विरह दुःखसे दहक उठा. यह लिखनेकी नहीं प्रत्युत अनुभव करनेके योग्य बात है कि—

जिस अमर आत्मा का यह शरीर आजभी मौजूद है उनके पांचभौतिक शरीरके वियोग कालमें सहृदय समाजकी कौनसी दशा हुई होगी !

मै अनुमान करता हू की उस कालमें ऐसा कोई चेतन प्राणी समाजमें न होगा कि जिसका हृदय पूज्यपाद महाराज श्री के वियोगसे पिघलकर अश्रुपात न किया हो परन्तु अब इस अश्रुपातसे होनाही क्या है ! उस पवित्रात्मा की मूर्ति अदृश्य हो गई इस संसार में उनका पांचभौतिक शरीर आज न रहा, संसारकी रचना अद्भुत है. सुख दुःख, हर्ष,

शोक क्षण २ पर बदलते रहते हैं, दाक्षिण देशके श्रावकोंका दिव्य नेत्रपटल खुलगया, वे लोग शाश्वत यशः शरीरके दर्शनार्थ उठ खड़े हुये, सब लोग यह विमर्ष किये कि जब पूज्यपाद विराजमान थे, उस समय अपने २ पुण्य के अनुसार हम लोग लाभ ले चुके, अब उनका यशःशरीर विद्यमान है, अति बल पूर्वक उसकी रक्षा करना समाजका कर्तव्य है। ऐसा विचारकर पूज्यपादके रचे हुए कविताओं का सम्रह करने लगे जहांतक उन लोगों को उपलब्ध हुआ उसको प्रकाशित किये और उसके प्रस्तावना में जाहिर किये कि अभी बहुत से भाइयोंके पास महाराज श्री के रचेहुए विषयोंका पता चलता है, वे भाई कृपाकर उन विषयोंको हमारे पास भेजदेवें ताकी सर्व साधारण उसका लाभ ले सके, परञ्च कौन सुनता है जो जिसके पास रहा वह वहीं गुप्त रहगया **श्रेणिक चरित्र वगैरह १९ ग्रंथ तो मुनि श्री आनंद ऋषिजी** के पास है, जिनको प्रकाशित करने के लिये आजतक विमर्श दोलारूढ है। पूज्यपादके विषयमें यह खास जानने योग्य बात है कि, दाक्षिण देशमें आपने फिरसे **स्थानकवासी जैन संप्रदाय** की स्थापना की यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा, कि यदि महाराज श्री का पदार्पण न हुआ होता तो कितनेक जगह श्रावकोंको आज **मुखवस्त्रिका** बांधना भूल गया होता।

उपसंहार.

प्रियसज्जन पाठकवृन्द! प्रातःस्मरणीय पूज्यपाद **श्री तिलोक ऋषिजी महाराज** की अलौकिक उपरोक्त गुण सम्पात्ति यथामति यथाशक्ति तथा जितने प्रमाण उपलब्ध हुए तदनुसार लिखा गया है नहीं तो समाज विख्यात ऐसे प्रधान पुरुषके गुणोंका वर्णन कवीश्वरों द्वारा जितना कियाजाय उतना थोडाही है। अब उपसहार रूपमें महाराज श्री के गुणसमुद्रसे सार खींचकर आपलोगों के सामने उपस्थित करता हू।

सद्गुणगणालंकृत **श्री तिलोक ऋषिजी महाराज** ३६ वर्ष २९ दिनके अवस्थामें इस पाञ्चभौतिक शरीरको त्याग किये, जिसमें २५ वर्ष ६ माह १ दिनका सयम पालन कर इस अल्प कालमेंही चन्द्रवत् मिथ्यात्वरूपी अधकार का नाशकर जैन दर्शनाभिलाषी भव्य पुरुषों को कुमुदवत् विकास करने के लिये शास्त्रानुसार साठ सत्तर हजार गाथाकी संख्यामें बड़े बडे ग्रंथों को रचकर जैन समाजके ऊपर उपकारोंका कतार बोझ दिया है।

स्वभाव.

महाराज साहब का स्वभाव चन्द्रमा समान शीतल, समुद्र समान गम्भीरथा, आबालरूढ ब्रह्मचर्य, मिष्टमित भाषण, अपूर्व कवित्वशाक्ति, वाक्यचातुर्य समयसूचक था जैन शास्त्र तथा पर शास्त्र गामित्व वगैरह अनेकगुण आपमें अधिक प्रशसनीय थे।

चारित्रशुद्धि

महाराज श्री का चारित्र इतना शुद्ध था कि उसका वर्णन उस तत्व के वेत्ता ही पुरुष कर सकते हैं परपक्षीय लोगभी आजतक मुक्त कण्ठसे उनकी प्रशंसा करते हैं, यह उनके चारित्र शुद्धिका ही सबूत है क्योंकि चारित्रहीन पुरुषका गुण समूह धूलिमें मिल जाता है, प्राणीमात्र में विशेषत साधु पुरुषोंका चारित्र ही एक अमूल्य रत्न है उसीके रक्षासे वह विश्वपर अपनी सत्ता जमा सकता है।

वाग्मिता

पूज्यपादकी वाणी जो निकलती थी वह अक्षरशः सनातन जैन धर्मके अनुकूलही निकलती थी आपके प्राय हर एक वाक्यसे हित शिक्षा का भाव पूर्ण भरा हुआ निकलता था महाराजकी दक्षिण देशके कुछ गावोंका नाम एक सवैयामें आपने लिखा है उसमें व्याव-हारिक तथा आध्यात्मिक उपदेश इतना उच्च कोटिका भरा हुआ है कि शायद कहीं दूसरे कवियोंके मुखसे ये भाव निकले हों और जिन्होंने ऐसे उत्कृष्ट कवियों के काव्योंका परिशीलन किया होगा वही इसके अन्तरङ्ग भावको पा सकते हैं देखिये पूज्यपाद महाराज विरचित सम्यग्बोध नामक बड़ी पुस्तक के पृष्ठ २२१ में अहमदानगर पाद इत्यादि।

निर्ममत्व

महाराज श्री इतने बड़े प्रधान पुरुष होकर भी ऐसे विनम्र भावसे रहते थे कि जिसकी हद है अहंकार उनके पास स्थानही नहीं पाया ऐसे उच्च आदर्श कवि होते हुए भी अपने काव्योंमें "मिच्छामि दुक्कडं" शब्द देते गये हैं।

ज्ञानबल तथा शास्त्रज्ञान

पूज्यपादका ज्ञानबल भी बहुत प्रबलथा यह लोग कहते है कि यदि महाराज श्री के सामने कोई किसी प्रकारका प्रश्न करताथा तो उनका उत्तर अनेक शास्त्रोंके प्रमाण द्वारा प्रश्नकर्त्ताके हृदयको आल्हादित कर देते थे। बहुतसे व्यक्तियों में यह देखा जाता है कि पृच्छक के प्रश्नों का सुनकर आवेश में आजाते हैं परन्तु पूज्यपाद के सामने जिज्ञासु या धृतभीत वा परीक्षक तथा अन्य किसी प्रकार से जो प्रश्न करते थे उन सब लोगोंको प्रेम भावसे उत्तर देते थे प्राणी मात्रमें यह गुण अनुकरणीय है। बस पूज्यपाद के चरित्र विषयिणी लेखनी को यहीं विश्राम देताहूं कारण कि पूज्यपाद के काव्यों द्वारा तथा तत्का-लीन वृद्धों द्वारा उनके जीवनमें पद पद पर रहस्य प्राप्त होता है उन सब बातोंको लिख-नेके लिये मेरी शक्ति नहीं है दूसरा यह कि जो विशेषज्ञ हैं उनसे कोई बात छिपी नहीं है और जो उनसे अपरिचित हैं व लेखक के साथ साथ पूज्यपाद के विषयमें भी सन्देह करेंगे अत प्रेम भावसे प्रार्थना है कि गुण ग्राही सज्जन आदर पूर्वक इसको पठन तथा पूज्य पाद के गुणोंका अनुकरण कर इस परिश्रमका सदुपयोग करेंगे।

ॐ शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!!

अथ श्री तिलोकाष्टकम्.

सवित्री नानू माँ जननवसती रत्ननगरी,
दुलीचन्दस्तातः प्रवरगुणवान्यस्य विदितः ॥
कलेनश्रीयुक्तो व्रतनियमनिर्वासितमलो,
गुणैः शुभ्रैर्धन्यो जयतु स तिलोको मुनिवरः ॥१॥

भावार्थ–रतलाम नगरी में माता **नानू बाई** प्रसिद्ध गुणवान् पिता **दुलीचन्दजी सुराणा** के यहां उत्पन्न होकर श्रेष्ठ कलाओंसे युक्त तथा व्रत नियमोंसे मलों को हटानेवाले उज्वल गुणों से युक्त प्रवित्रात्मा श्री **तिलोक ऋषिजी महाराज** अपने यशःशरीरसे सर्वोत्कृष्ट विराजित होवें ॥ १ ॥

महद्दिव्यं ज्ञानं समधिगतमेतेनतपसा,
कथं स्वल्पे काले तदिह विदुषां मोहजननम् ॥
परं यद् ग्रन्थौघं विरचयति तान्मोहविगतान्,
गुणैः शुभ्रैर्धन्यो जयतु स तिलोको मुनिवरः ॥ २ ॥

भावार्थ– तपोबल से थोडेही काल में जो आपने दिव्यज्ञान उपार्जन कर लिया क्या यह विद्वानों को भी आश्चर्यकारी नहीं है ? उससे भी अधिक आश्चर्यकारी मोहको हटानेवाले आपसे रचे गये ग्रंथ समूह हैं. उज्वल गुणोंसे युक्त ऐसे पवित्रात्मा **श्री तिलोक-ऋषिजी महाराज** अपने यशःशरीर से सर्वोत्कृष्ट विराजित होवें ॥ २ ॥

यशःपुञ्जं यस्य चरितसमरादित्यप्रभृतौ,
सुपद्यैर्विस्तीर्णैरयुतरससंख्यैः सुविमलम् ॥
जनान्मार्गध्वस्तान्प्रतिदिशति निःश्रेयसपदम्,
गुणैः शुभ्रैर्धन्यो जयतु स तिलोको मुनिवरः ॥ ३ ॥

भावार्थ– साठ हजार गाथा संख्यासे रचे गये हुए **समरादित्यकेवली** चरित्रादिको में जिनका निर्मल यशःपुञ्ज विस्तीर्णता को प्राप्त होकर मार्गसे बिछुडे हुए प्राणियोंको कल्याणमार्गका उपदेश कर रहा है उज्वल गुणों से युक्त प्रवित्रात्मा **श्री तिलोक-ऋषिजी महाराज** अपने यशःशरीर से सर्वोत्कृष्ट विराजित होवें ॥ ३ ॥

बृहच्छास्त्रं पुच्छीसुणमिह लिखित्वैकदलके,
परांकाष्टां नीतां विशदप्रवरा लेखनकलाम् ॥
विजेतुं स्पर्द्धन्ती जगति रमते चित्रणकला,
गुणैः शुभ्रैर्धन्यो जयतु स तिलोको मुनिवरः ॥ ४ ॥

भावार्थ– एक पत्र के उपर **दशवैकालिक सूत्र** संपूर्ण तथा **पुच्छीसुणं** लिखकर अति निर्मल उच्चकोटी का जो लेखनकला प्राप्त किये उसको भी जीतने के लिये जिनकी चित्रकला स्पर्द्धा (इच्छा) कर रही है. ऐसे उज्वल गुणों से युक्त पवित्रात्मा **श्री तिलोक-ऋषिजी महाराज** अपने यशःशरीर से सर्वोत्कृष्ट विराजित होवें ॥ ४ ॥

महाराष्ट्रे देशे यदपि बहुला जैनजनता
न गम्यं किन्त्वासीदतिगहनमार्गो हि मुनिना ॥
सहमानाकष्टं तदपि विविधमागादुपगतो
गुणैः शुभ्रैर्धन्यो जयतु स तिलोको मुनिवरः ॥ ५ ॥

भावार्थ– यद्यपि दक्षिण देशमें जैन जन समूह अधिक है तथापि अति कठिन मार्ग होनेसे मुनिराजों का सचार कम था परन्तु आप अनेक कष्टों को सहन करते हुए कर्तव्यवशसे यहां आकर प्राप्त हो गये ऐसे उज्वल गुणों से युक्त पवित्रात्मा **श्री तिलोक ऋषिजी महाराज** अपने यशःशरीर से सर्वोत्कृष्ट विराजित होवें ॥ ५ ॥

प्रसुर्यं श्रीरत्न प्रभृति निजशिष्यैः परिवृतः
चतुर्थे विश्रामऽहमदनगरे पूज्यचरणः ॥
गतः कायोत्सर्गं सुरपुरमगात्कीर्तिविशदः,
गुणैः शुभ्रैर्धन्यो जयतु स तिलोको मुनिवरः ॥ ६ ॥

भावार्थ– दक्षिण देशमें चौथे चातुर्मास के लिये महाराज **श्री रत्न ऋषिजी** वीगह शिष्यों के साथ अहमदनगर में पधारे वहां इस नश्वर शरीर को छोडकर विमल कीर्ति के साथ सुरपुर सिधारे ऐसे उज्वल गुणों से युक्त पवित्रात्मा **श्री तिलोक ऋषिजी महाराज** अपने यशः शरीर से सर्वोत्कृष्ट विराजित होवें ॥

समुद्योगाद्यस्य धनदवसतिर्वै यमदिशा,
शरण्यं शान्ताख्यं शरणमुपयाता जिनमतम् ॥
मुनीनां जैनानां निवसतिरियं सौख्यजननी
गुणैः शुभ्रैर्धन्यो जयतु स तिलोको मुनिवरः ॥ ७ ॥

भावार्थ [जिस महात्माके समुचित उद्योगसे यमदिशा= दक्षिणदिशा धनदवसतिः= कुबेर के नगर समान हो गई –] अर्थात् जिस दक्षिण देशमें मुनि लोग जाने में संकोच रखते थे, उस देश को आपने मालवा मारवाड सदृश मुनिराजों का सुखकर निवासस्थान बना दिया–और शरणको चाहनेवाला जिनमत शांति स्थल पा गया ऐसे उज्वल गुणों से युक्त पवित्रात्मा **श्री तिलोक ऋषिजी महाराज** अपने यशःशरीर से सर्वोत्कृष्ट विराजित होवें ॥ ७ ॥

प्रसादाद्यस्यमं हरितभरितं धर्मविटपं
मुनीशः श्रीरत्नः प्रखरविदुषानन्दमुनिना ॥
सुशिष्येणोपेतो वचनपयसा सिञ्चतितराम् ,
गुणैः शुभ्रैर्धन्यो जयतु स तिलोको मुनिवरः ॥ ८ ॥

भावार्थ– जिस महात्मा के प्रसाद से यह जैन धर्मरूपी हरा भरा वृक्ष दिख रहा है, और उस वृक्ष को आपके पाटवी शिष्य **श्री रत्न ऋषिजी महाराज** ने अपने सुशिष्य प्रखर विद्वान् श्री आनन्द ऋषिजी के साथ वचनरूपी जलसे सिञ्चन किया,

ऐसे उज्वल गुणों से युक्त पवित्रात्मा श्री तिलोक ऋषिजी महाराज अपने यशःशरीर से सर्वोत्कृष्ट विराजित होवें ॥ ८ ॥

शास्त्रविशारद पंडितवर्य श्री अमीऋषिजी महाराज प्रणीत

॥ श्री तिलोकाष्टक ॥

॥ १ ॥ सवैया ॥

उत्तम व्रत धारे, दूर पातिक हरनहारे,
विपति विदारे आप अमृतके क्यारे थे ।
ज्ञान संयम मतवारे, दान करुणा लतवारे,
चित उज्वल हितवारे, पक्ष दूपणते न्यारे थे ।
तत्त्व मारग उच्चारे, किए कुमतिसे किनारे,
होन शिवके दुलारे सुमतिके प्राण प्यारे थे ।
वचन अमृत उच्चारे अमर धामको पधारे,
वे तिलोकरिख स्वामी जगजीव रखवारे थे ॥

॥ २ ॥

मात नानूके नाने नहिं रहे जग छाने
विश्वमांहि प्रगटाने जास महिमा वखाने हैं ।
सुधा वचन सुन काने घने जीव हरखाने
दया भाव उर आने जैन तत्त्वको पिछाने हैं ।
क्रिया दान देत दाने मोक्ष मारग बताने
जिनराज गुण गाने नहिं नेक अरसाने हैं ।
आज अमृत गुण जाने वे तिलोकरिख दाने
हाय! छिनमें बिलाने मेघ इंद्र ज्यों छिपाने हैं ॥

॥ ३ ॥

मनमें वैराग्य धार त्यागके संसार शिव–
मार्ग चित्त लाग सब पातकते न्यारे थे ।
उदे बडभागे जैनागम अनुरागे सागे

आपके प्रताप आगे मिथ्यामति हारे थे ।
बडे बडे पंडितके खण्डित किए हैं मान
अमृत बखाने धर्म–दीपक उजारे थे ।
महा गुणवारे ज्ञान क्रिया धनवारे
ये तिलोकरिख स्वामी जग जीव रखवारे थे ॥

॥ ४ ॥

सकल संसार सुख जानके अनित्य चित्त
त्याग भाव धारी हितकारी शुभ संत है ।
आस्रव प्रमाद टार रागद्वेषादि विदार
विषय कषाय लाय ठारि उपसंत है ।
धारे जिनवैन मोक्षपथ सुख देन येन
देखत दीदार भव्य हिय हुलसंत है ।
अमीरिख कहे पाल सजम विशुध्द चित्त
स्वामीजी तिलोक सुरधाममें वसंत है ॥

॥ ५ ॥

व्है गयो जगत जाल पातकर्ते दूर शूर,
धर्म दया मूल भेद रसनार्ते के गयो ।
के गयो अनेक मत आगमके भेद भार
अमृत जिनवैन चद आननर्ते पे गयो ।
चे गयो अमर धाम आतम आराम काम
घने भव्य जीवनको ज्ञान दान दे गयो ।
दे गयो सुमत चित अमृत अखंड सो
तिलोकरिख स्वामी गुण नामी एक व्है गयो ॥

॥ ६ ॥ गीता छंद ॥

कुमति तिमिर दल दलन स्वामी
धर्म दीपक सम हुए ।

शुद्ध जैन आगम भेद अमृत
सार रसनातें चये ।
भवि जीवको दरसाय शिवमग
जैन मत धारी किये ।
उपकारि धन्य तिलोकरिख गुरु
आप सुरवासी भये ॥

॥ ७ ॥

दयाके निधान भव्यजीवनके प्राण औ
सुजान ज्ञान ध्यानमें विमग्न गुणधामी थे ।
बालब्रह्मचारी महा दुक्कर आचारी सार-
काव्य कलाधारी हितकारी विसरामी थे ।
सुधा सम वाणी मृदु सब्रनके ज्ञाता दानी
देय उपदेश जीव तारवेके कामी थे ।
अमृत रटत नाम लेतही कटत पाप
ऐसेही प्रतापी श्री तिलोकरिख स्वामी थे ॥

॥ ८ ॥ सवैया २३ सा. ॥

तिलोकके नाथकी आन गहे उर
संजम ले चित्त होय विशोक ।
विशोक हिये तप चारित पालत
टालत पाप अनत्थ विलोक ।
विलोक लिये जिनवेण भलीविध
वंदत भव्य सदा देइ धोक ।
धोक पियूष दिए तिहुं काल कृपाल
कृपा कर स्वामि तिलोक ॥

॥ श्री सूर्यमुनि महाराजसे प्राप्त ॥

परिशिष्ट भाग

पूज्य पाद महाराजश्री का शुभागमन दक्षिण देशमें हो जाने से जैन धर्म का कितना विकास हुआ यह तो वाचक वृन्द स्वयं अनुमान कर सकते हैं, परन्तु सारांश रूपमें यहभी प्रकाशित कर देना चाहता हूं कि महाराजश्री के सदुपदेशसे ४ वर्षके अन्दर दक्षिण देशमें कि०मे व्यक्ति त्यागी संयमी बने और पूज्यपादके यशःशरीर को पालन करते हुए किस तरह समाजको दिपा रहे हैं।

पारनेर चातुर्मास में हम लिख आये हैं कि घोडनदी के सुश्रावक गम्भीरमलजी लोढा के प्रार्थना से महाराजश्री का दक्षिण देशमें पधारना हुआ और प्रथम घोडनदी में पिता पुत्र महाराज श्रीस्वरूप ऋषिजी तथा महाराज श्री रत्नऋषिजी की दीक्षा हुई, एवं माता पुत्री सतीजी श्री चम्पाजी तथा श्रीरामकुंवरजी महाराज की दीक्षा हुई, तदनन्तर महासती श्रीरंगुजी, लछमाजी हरियाजी अमृताजी सोनाजी वगैरह सती शिरोमणी आर्याजी श्री हीराजी के निश्रायमें बहुतसी शिष्यायें हुई। शिष्योंमें पाठवी शिष्य श्री रत्न ऋषिजी महाराज हुए आपके दीक्षा काल से चौथे वर्षमें गुरु वियोग हुआ, उस समय आपकी बाल्यावस्था थी शास्त्रकी शिक्षा गुरु मुखसे आपको विशेष न हो सकी अतः आपने उसी अवस्थामें अनेक परीषहों को सहन करते हुए सतीजी श्री हीराजी महाराज की सहायताले मालवा पधारे वहां अच्छे मुनिराजों के द्वारा शास्त्रका परमोच ज्ञान सम्पादन कर मालवा मेवाड गुजरात वगैरह प्रदेशों में अपनी प्रखर वक्तुता के प्रभावसे स्वर्गस्थ पूज्यपाद महात्मा श्री तिलोक ऋषिजी के नाम को चिरस्थायी कर तेरह वर्ष के बाद महाराज श्री अमोलक ऋषिजी को साथ लेकर दक्षिणदेश में पधारे मालवा में भी आपके प्रथम शिष्य श्री हुक्मऋषिजी महाराज हुए उनके शिष्य श्री केवलजी ऋषिजी महाराज हुए जो कि निरंतर चौदह वर्षतक एकबार गृहीत तक के आधार पर अपना निर्वाह किये थे और दक्षिण देशमें आपके प्रथम शिष्यश्री दगडु ऋषिजी हुए दुसरे श्री सुलतान ऋषिजी महाराज हुए परन्तु अपनी स्वच्छन्दतासे थोडेही समय में वे आपसे पृथक हो गये बाद संवत १९७० मार्गशीर्ष शुक्ल ९ नवमी रविवार के दिन मिरी में श्री आनंद ऋषिजी की दीक्षा हुई उस वक्त में आपकी उम्र तो सिर्फ १३ वर्ष की थी परन्तु ' होन हार बिरवानके होत चीकने पात' इस कहावतके अनुसार आपने शास्त्र मर्यादा के अनुकूल इतनी विनीतता के साथ अपनी शिष्यवृत्ति दर्शाई कि श्री आनन्द ऋषिजी से १ क्षणभर भी पृथक रहना वे असह्य समझते थे अति कठिन परिश्रम द्वारा जैनागमका स्वय अभ्यास कराकर तथा दूर २ से संस्कृतके विद्वानों का बुलाकर व्याकरण तर्क काव्य अलंकार चम्पू वगैरह यथोचित अध्ययन कराया और सं १९७९ के ज्येष्ठ शुक्ल २ रविवार को मांडुर में श्री उत्तम ऋषिजी को दीक्षित कर १ पूर्ण सहायक स्थापित कर गये जिनको साथमें लेकर मुनि

श्री आनन्द ऋषिजी दक्षिण, खानदेश, वराड, सी पी नागपूर वगैरह प्रान्तोंमें विहार करके पूज्यश्री १००८ श्री कहानजी ऋषिजी महाराज के सम्प्रदाय के चन्द्र श्री तिलोक ऋषिजी महाराज तथा गुरुवर्य श्री रत्न ऋषिजी महाराज के यश दुंदुभी का आवाज चौतर्फ जैन जैनेतर के श्रवण रन्ध्र में भर रहे हैं।

सती शिरोमणी श्री हीराजी महाराज के निश्राय में जितनी शिष्यायें हुई उनमें विदुषी सतीजी श्री रामकुंअरजी महाराजने पूज्यपाद श्री तिलोक ऋषिजी महाराज तथा सतीजी से शास्त्र का उच्च ज्ञान प्राप्त कर लिये, और उस ज्ञानको वटबीजाङ्कुरवत् कालान्तर मे उच्चतर कोटि में प्राप्त कर लिया, उनके पाण्डित्य मधुरवाग्मिता सौम्यमूर्ति की अद्वितीयताका अनुभव, जिन व्यक्तियोंने उनके दर्शनका लाभ लिया है वेही कर सकते हैं इस महासतीजी के द्वारा दक्षिण देशमें बहुतही जैनधर्म का प्रकाश हुआ, अनेकों दीक्षायें हुई आपके शिष्याओं में अग्रशिष्या स्वर्गीया श्री सुन्दरजी महाराज थे उनको प्रधानजी तथा नना महाराज के नाम से लोग आव्हान करते थे, उनके प्राभाविक मूर्ति तथा गुणों की प्रशंसा आजतक जनता मुक्त कण्ठसे करती है, सम्प्रति महासतीजी की अग्र शिष्या विदुषी सतीजी श्री शांति कुंअरजी वगैरह ठाणा १२ से विराजमान है।

फैजपुरमें महासतीजी श्री भूराजी महाराज की दीक्षा हुई थी उनकी शिष्या सतीजी श्री प्रेम कुंअरजी तथा विदुषी सतीजी श्री राज कुंअरजी ठाणा ९ से सम्प्रति विराजमान है।

महासतीजी श्री नन्दूजी महाराज की दीक्षा साईखेडा में हुई थी, आपने सती शिरोमणी श्री हीराजी के साथ ८ वर्ष माल्वा मे विचर कर शास्त्र ज्ञान सम्पादन कर दक्षिण में पधारे,आपके द्वारा पूज्यपाद के जीवन चरित्र के विषयमें बहुतसी बातों का पता चला है आपकी अग्र शिष्या सतीजी श्री कुंवरजी आदि ठाणा ६ विराजमान है.

ॐ शुभं भूयात्
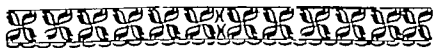
श्री सत्यबोध
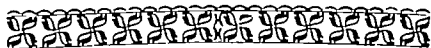
॥ श्री महावीराय नमः ॥

कविकुलभूषण, शास्त्रविशारद, स्वामीजी श्री श्री १००८ श्री तिलोक ऋषिजी महाराज विरचित सत्य बोध प्रारम्यते

छद संग्रह.

॥ चोवीस जिनछद ॥

॥ छंद त्रिभंगी ॥

श्री आदि जिनद, समरस कर्द, अजित दिनर्द, भज प्राणी॥ संभव जगत्राता, शिवमगराता, घो सुखशाता, हित आणी ॥ अभिनदन देवा, सुमति सुसेवा, करो नित मेवा, रिपुघाता ॥ चोविस जिनराया, मन वच काया, प्रणमु पाया, घो साता ॥ १ ॥ टेक ॥ श्रीपद्म सुपासं, ससिगुणरास, सुविधि सुवासं, हितकारी ॥ श्री शीतल स्वामी, अतरजामी, शिवगत गामी, उपकारी ॥ श्रेयांस दयाला, परम कृपाला, भवजनवाला, जगदाता ॥ चो० ॥ २ ॥ वासुपूज्य सुकत, विमल अनत, धर्म श्रीसतं, सतकारी ॥ कुथु अरनाथं, तज जग साथ, मल्लि सुआथ, सग धारी ॥ मुनिसुव्रत सुनमि, आरमाने दमी, दुर्मतिन वमी, तपराता ॥ चो० ॥ ३ ॥ रिष्टनेमि घडाइ, नार न व्याही, तोरण जाइ छटकाई ॥ नाग नागण ताइ, दिया बचाइ, पारस साइ, सुखदाई ॥ जय जय वर्द्ध मान, गुणानिधि स्वानं, त्रिजग भान, शुद्ध आता ॥ चो० ॥ ४ ॥ ससारका फदा, दूर निकदा, धर्मका छदा, जिन लीना ॥ प्रभु केवल पाया, धर्म सुनाया, भव समजाया, मुनि कीना ॥ कहे रिख तिलोक, सदा तस धाक, घो सुख थोक, चित चाता ॥ चो० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्री पच परमेष्ठी छंद ॥

॥ नाराच छंद ॥

तिलोक सत श्रेष्ठिक, नमामि पारमेष्ठिकं ॥ भजे भजे उद गलं, भवामि सदा मगलं ॥ १ ॥ सर्वांग अंग सुदर, मारत मार

दुर्धर ॥ सहस्त्र अष्ट लंछनं, समस्त शुद्ध स्वच्छनं ॥ २ ॥ तितिक्ष जे चतुष्टकं, हणंत कर्म दुष्टकं ॥ तपश्चर्या सपुष्टकं, धरंत ध्यान सुष्टुकं ॥ ३ ॥ सुज्ञान पूर्ण धारकं, अज्ञान मर्म वारकं ॥ सुअष्ट प्रातिहारकं, सुभव्य जीव तारक ॥ ४ ॥ प्रमाद वाद खंडितं, अनंत गुण मंडितं ॥ अशुभ योग दंडितं, नमामि परम पंडितं ॥५॥ सुभानु कोटि भास्करं, भवाब्धि तारक परं ॥ विकारदृष्टि मोचनं, नमामि शांतिलोचनं ॥ ६ ॥ सर्वल पाप खंडनं, सुजैनधर्म मंडनं ॥ अनंत सुखदायकं, नमामि संघनायकं ॥ ७ ॥ विशिष्ट गुण अष्टकं, समस्त शत्रु नष्टकं ॥ अरूप रूप रासकं, सदैव स्थीर वासकं ॥ ८ ॥ अनंत सुख सुस्थितं, रहंत सद्म निर्मितं ॥ भवोघ सर्व वारकं, नमामि निर्विकारकं ॥ ९ ॥ छत्रीश गुण शोभितं, कषाय चउ अक्षोभितं ॥ सुसंपदाष्ट साचकं, नमामि नित्य वाचकं ॥ १० ॥ प्रमाण नय संश्रुतं, पचीश गुण संयुतं ॥ सुज्ञान अन्य दायणं, नमामि उपाध्यायणं ॥ ११ ॥ तजंत जगत जालकं, परप्राण रक्षपालकं ॥ वर्जंत पापकारणं, गर्जंत धर्मधारणं ॥ १२ ॥ तर्जंत काम क्रोधकं, लर्जंत सो विरोधकं ॥ वितराग आण शोधकं, नमामि संत जोधकं ॥ ३ ॥ अज्ञानता प्रहारणं, अखील सुख कारणं ॥ हणंत मोह फेणतं, नमामि जिनवैणतं ॥ १४ ॥ मिथ्यांधकार भंजनं, ददाति ज्ञान अंजनं ॥ प्रमाद दुःख चूरणं, नमामि सत्य गुरुणं ॥ १५ ॥ तिलोकरिख संस्तवे, शरणुं सदा भवोभवे ॥ कृपार्णव मया करी, सदैव द्यो हिरी सिरि ॥ १६ ॥ कलश ॥ दोहा ॥ जय जय श्रीपरमेष्ठिने, जय जय श्री जिनवेण ॥ जय जय श्री गुरुकी रहो, दियो सुमारग जैन ॥ १ ॥ इति

॥ परमेष्ठी परमानद छद ॥

॥ दोहा ॥

ओं नमो अरिहताण, इम पाचु पद माय ॥
ओं ऱ्हों ऱ्हीं श्रीं ऱ्हों स्वाहा, जपता ऱ्हीं श्रीं थाय ॥ १०८ ॥ १ ॥

अ० सि० आ० उ० सा० ।

॥ छद त्रिभगी ॥

प्रणमु सरसती, होय वरमती, चित्त हुल्से अति, गुण थुण वा ॥ शुद्ध भावे ध्यावे, सो सुख पाये, एक चित्त चावे, यश सुणवा ॥ जय जय परमेष्ठी, जगम श्रेष्ठी, ए पद ज्येष्ठी, जगधार ॥ त्रिज गमभार, नाम उदार, जय सुखकार, नवकार ॥ १ ॥ टेक ॥ धार गुणवंता, श्री अरिहता, लोग महता, गुण गहेरा ॥ घन घातिक कर्म, मिथ्या भम, त्याग अधर्म, विष लहरा ॥ शुद्ध मन ध्याया, केवल पाया, इदर आया, तिणवार ॥ त्रि० ॥ २॥ वर परिषद् धारे, रूप अपारे, सुणि अवधारे, जिनवाणी ॥ अमृतसुं प्यारी, जग हित कारी, सुर नरनारी, पहचाणी ॥ कइ सजम धारे, कइ व्रत धार, कम विदारे, शिव स्वार ॥ त्रि० ॥ ३ ॥ द्वितीय पद ध्यावो, सिद्ध गण गावो, फिर नहीं आवो, जिहा जाइ ॥ जे अलख निरंजन, भवि मन रंजन, कर्मके भंजन, शिव साइ ॥ पुदगलदा फदा, दूर निकदा परमानदा, अविकार ॥ त्रि० ॥ ४ ॥ अठ गुणके धार, जगत नि हारे, काल न मारे, उन ताइ ॥ जिहां सुख अनता केवल्यता, गुण उच्चरता, छे नाहीं ॥ निज वास वताइ, थो मुझ तांइ, तुमसा नाहीं दातार ॥ त्रि० ॥ ५ ॥ गणिवर पद त्रीजे, नित्य नमीजे, सेवा कीजे, रूप भरी ॥ पच महाव्रत पाले, दूषण टाल, गज जिम माले, शूर हरी ॥ पांचु वश करते, पच उच्चरते, पाचुही हरते, दुःखकार ॥ त्रि० ॥ ६ ॥ शीतल जिम चदा, अचल गिरिंदा, गण पति इदा, शिरदार ॥ सागर जिम गहेरा, ज्ञान लहेरा, मिथ्या

अंधेरा, परिहारं ॥ संपद वसु पावे, न्याय बढावे, पाले पलावे, आचारं ॥ त्रि० ॥ ७ ॥ गुरु सेवा साधी, विनय आराधी, चित्त समाधी, ज्ञान भणे ॥ बारे अंग वाणी, पेटीसमाणी, पूरव नाणी, संशे हणे ॥ निरवद्य सत्य भाखे, शास्तर साखे, गुण अभिलाखे, निज सारं ॥ त्रि. ॥ ८ ॥ उवज्झाया स्वामी, अंतरजामी, शिवगति गामी, हितकारी ॥ शीखणने आवे, जोग शिखावे, न्याय बतावे, उपकारी ॥ दुर्गतिमां पडतो, कादव गडतो, चित्त करे चडतो, तिण वारं ॥ त्रि० ॥ ९ ॥ कंचुक अहि त्यागे, दूरे भागे, तिम वैरागे, पाप हरे ॥ झूटा परछंदा, मोहनी फंदा, प्रसुका बंदा, जोग धरे ॥ सब माल खजीना, त्यागन कीना, महाव्रत लीना, अणगारं ॥ त्रि० ॥ १० ॥ पाले शुद्ध करणी, भवजल तरणी, आपद हरणी, दृष्टि रखे ॥ बोले सत्य वाणी, गुप्ति ठाणी, जगका प्राणी, सम लखे ॥ शिव मारग ध्यावे, पाप हटावे, धर्म बढावे, सत्य सारं ॥ त्रि० ॥ ११ ॥ ए प्रणमे भावे, विघ्न हटावे, अरि हारि जावे, दूर सही ॥ जे तप तेजारी, दुःख बिमारी, सोग सवारी, आत नहीं ॥ ग्रहपीडा भागे, दृष्टि न लागे, शत्रु न जागे, लीगारं ॥ त्रि० ॥ १२ ॥ ए मंतर नीको, तारक जीको, त्रिजग टीको, सुखदाता ॥ ए मंत्र करारी, महिमा भारी, लहे नर नारी, सुखसाता ॥ सरजीवन वेली, दे धन ठेली, भव भव केली, यह सारं ॥ त्रि० ॥ १३ ॥ पद्मासन वाली, रंग निहाली, आरत टाली, ध्यान धरे ॥ तिलोक पयंपे, भावसु जंपे, ऋद्ध सिद्ध संपे, जेह धरे ॥ एह छंद त्रिभंगी, गावे उमंगी, भव भव संगी, जयकारं ॥ त्रि० १४ ॥ इति ॥

॥ श्री महावीर जिनस्तवन छंद ॥

॥ त्रिभंगी छद ॥

जिन शासन स्वामी, अंतर जामी, शिवगति गामी, सुखकारी ॥ जगमें जसवंता, श्री भगवंता, सुगुण अनंता, उपकारी

सिध्दार्थकुल आया, जगत सुहाया, शुभ पल जाया, गुण धारी॥ धन त्रिसलानदन, कुलध्वज स्यदन, जिन चरणनकी, बलिहारी ॥ १ ॥ आसन कपाया, सुरपति आया, शीस नमाया, शुभ भाव ॥ वैक्रियमा पासे, मेलि हुलासे, ल जिन तासे, गिरि आवे ॥ तीहा प्रभुजीनो, महोत्सव कीनो, फिर मुक दीनो, ज्या महतारी ॥ धन० ॥ २ ॥ युग वदना करके, निद्रा हरके, स्तवन उच्चरके, घर जावे ॥ भइ रवि उगाइ, रुधत्र ताइ, दासी धधाइ, दरसावे ॥ नृप महोत्सव कीया, दान जु दीयो, हर्षित हीयो, निहारी ॥ ध न० ॥ ३ ॥ यौवन वय माही, नारी व्याही, अवसर पाइ, जोग ग्रहे ॥ तपस्या तन नाव, शम दम भावे ध्यान सुध्यावे, कष्ट सहे ॥ प्रभु क्षमा सागर, ज्ञान उजागर, गुण रत्नाकर, अघवारी ॥ धन० ॥ ४ ॥ शुध्द सयम पाले, दूपण टाले, शिवमग चाले, जगत्राता ॥ क्रोध मानने माया, लोभ हटाया, मोह भगाया, अरिघाता ॥ शूकल मन ध्याया, कर्म खपाया, केवल पाया, जि णधारी ॥ धन० ॥ ५ ॥ सुणि नाथ बडाई मन अकडाइ, आया चलाइ, प्रभु पासे ॥ विस्मय अति पाया, चित्त लजाया गर्व गमाया श्रीमासे ॥ प्रभु भम मिटाया जिनमग आया सजम ठाया तिण सारी ॥ धन० ॥ ६ ॥ परथम इन्द्रभूति पुरधर श्रुति त्रिपदी संयुति फरमाया ॥ गणधरपद लीना, परम प्रवीना, शम दम भीना तन ताया ॥ चुमालीमे लारा गणधर ग्यारा भए अनगारा व्रत धारी ॥ धन० ॥ ७ ॥ चार तीरथ थाप्या, पाप उथाप्या सुव्रत आप्या नरनारी ॥ केइ स्वग सिधाया केइ शिव पाया श्रीजिनराया हितकारी ॥ शैलेशी मावे प्रभु शिव पाव जगमें नावे अविकारी ॥ धन० ॥ ८ ॥ प्रभु अलख निरंजन, भव दुःख भंजन भविजन रंजन कृपाला ॥ जे शुद्ध मन ध्यावे दुःख पलावे सुख उपावे प्रतिपाला ॥ कहे रीख तिलोक निरतर धोक

दीजो शिव थोकं, भवपारी ॥ धन० ॥ ९ ॥ इति ॥
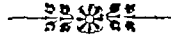
॥ श्री अरिहंत छंद ॥

॥ मोतीदाम छद ॥

सदा जगनायक स्हायक हंस, सुकायक वायक लायक वंस ॥ सुश्रेष्ठ विशेष्ट सुज्येष्ट कहंत, अहो अरिहंत करो सुख सत ॥ १ ॥ सुतात सुमात सुभ्रात सुजात, सुगात सुवात सुपात सुआत ॥ सुलंछन अष्ट सहस्त्र कहंत ॥ अहो. ॥ २ ॥ विशाल सुभाल सुवाल अबाल, दयाल मयाल अजाल कृपाल ॥ सुमाल सुलाल भवीक इच्छंत ॥ अहो. ॥ ३ ॥ अखंड अडंड अचंड अतंड, अगंड अवंड, असंड सुसंड ॥ अफंडण छड भये गुणवंत ॥ अहो. ॥ ४ ॥ महावीर गंभीर ध्यान सुस्थीर, अचीर विचीर अगीर सुगीर ॥ अपीर सुपीर सुबोध कहंत ॥ अहो. ॥ ५ ॥ अरीश विरीश शत्रुदल पीस, जगीश मगीश गुणीश वरीश ॥ अखेह अछेह अभेह रहत ॥ अहो. ॥ ६ ॥ उत्थापक पाप तीर्थकर आप, जपंत जिनंद बधंत प्रताप ॥ अनंत गुणातम श्रीभगवंत ॥ अहो. ॥ ७ ॥ अनेह विनेह अगेह सुगेह, अमेह विमेह अदेह विदेह ॥ अलेप सुलेप सदा दरसंत ॥ अहो. ॥ ८ ॥ न कर्म न भर्म न गर्म उछाह, अक्रोध अमान अमाय अदाह ॥ अरोग असोग अभोग तरंत ॥ अहो. ॥ ९ ॥ सुज्ञान अराध समाधि प्रणाम, विहार करंत भवी हित काम ॥ भजंत सुरासुर स्वामि महंत ॥ अहो. ॥ १० ॥ कहंत सदा उपदेश रसाल, हठंत मिथ्यातम वंधन जाल ॥ आराधक होय तिरंत अनंत ॥ अहो. ॥ ११ ॥ रटंत कटंत दुरीत समस्त, लहंत सुखामृत वंछित वस्त ॥ उध्दारक वृध्द साहित हितवंत ॥ अहो. ॥ १२ ॥ त्रिजोग निवार वसे शिवलोक, चरणांबुज धोक, ते रिख तिलोक ॥ विलोक सुदेव जपो जग कंत ॥ अहो. ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ श्री सिद्धाष्टक छंद ॥

॥ नाराच छंद ॥

प्रसिद्ध सिद्ध शिव कंत संत श्रेष्ट देव हो॥ झटक दी सकल पाप, खेव नीरलेव हो॥ कलंक धक ढक अक, रच रंग न डंबर ॥ कृपा करो दयानिधी ऋद्धि वृद्धी सिद्धी करं ॥१॥ टेक॥ अरूप रूप स्व अनूप, भूपभू अखड हो॥ अफड मड दड गड, छडके प्रचड हो॥ अनत ज्ञानरूप तोय पाप मेल सहरं॥ कृपा ॥ २ ॥ प्रमाद क्रोध मान माय, लोभ लेश सो नहीं ॥ अनत काल स्थीत है, अनत सुख रासही॥ अष्ट महा गुण मूल स्व सदा सुसवरं॥ कृपा ॥ ३ ॥ विकार खार दूर टाल, राग द्वेष सहऱ्या॥ अगाध जो भवोधि सो, धर्मपोतथी तऱ्या॥ प्रत्येक एकमेक आप, व्याप हो गुणागरं॥ कृपा ॥ ४ ॥ अलेख रेख रूप नाहीं, पापफंद बंध सो॥ आहार मार हास्य त्रास, नाश काम धधसो ॥ अभंग ज्ञान सग चग गुप्त ना उजागरं ॥ कृपा ॥ ५ ॥ अलोक लोक द्रव्य क्षेत्र काल भाव जाण हो॥ त्रिलोकनाथ भ्रात भ्रात, मत्र चत्र भाण हो॥ विनाश किया रोग सोग, भोग भाव भंगुरं ॥ कृपा ॥ ६ ॥ जपत जाप आग नाग सिंह घोर सो हटे॥ कटत धध द्रव्य भाव, राग दुःख जे मिटे॥ विषय कषाय लाय जाय, आय सुख सागरं ॥ कृपा ॥७॥ तिलोकरिख हस्त जोड, करत नित्य वदना॥ निरोग बोध लाभ चहाय कर्मकी निकंदना॥ नहीं जगत माही ओर, आपसो विश्वभरं॥ कृपा ॥ ८ ॥ नित्य ए सिद्धाष्टक पठंति जे मनोहरं ॥ विज्ञान मुक्ति सुख द्रव्य, भाव होत नागरं॥ नान्यत्र देवलोक माही, सिद्धस्थान उपरं॥ कृपा ॥९॥ दोहा॥ अ जर अमर अविकार हो सिद्ध निरजन देव ॥ किंकर पर करुणा करो दीजो अविचल सेव ॥ १ ॥ इति॥

दीजो शिव थोकं, भवपारी ॥ धन० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ श्री अरिहंत छंद ॥

॥ मोर्तीदाम छद ॥

सदा जगनायक स्हायक हंस, सुकायक वायक लायक वंस ॥ सुश्रेष्ठ विशेष्ट सुज्येष्ठ कहंत, अहो अरिहंत करो सुख सत ॥ १ ॥ सुतात सुमात सुभ्रात सुजात, सुगात सुवात सुपात सुआत ॥ सुलंछन अष्ट सहस्र कहंत ॥ अहो. ॥ २ ॥ विशाल सुभाल सुवाल अवाल, दयाल मयाल अजाल कृपाल ॥ सुमाल सुलाल भवीक इच्छंत ॥ अहो. ॥ ३ ॥ अखंड अडंड अचंड अतंड, अगंड अवंड, असंड सुसंड ॥ अफंडण छड भये गुणवंत ॥ अहो. ॥ ४ ॥ महावीर गंभीर ध्यान सुस्थीर, अचीर विचीर अगीर सुगीर ॥ अपीर सुपीर सुबोध कहंत ॥ अहो. ॥ ५ ॥ अरीश विरीश शत्रुदल पीस, जगीश मगीश गुणीश वरीश ॥ अखेह अछेह अभेह रहत ॥ अहो. ॥ ६ ॥ उत्थापक पाप तीर्थंकर आप, जपंत जिनंद बधत प्रताप ॥ अनंत गुणातम श्रीभगवंत ॥ अहो. ॥ ७ ॥ अनेह विनेह अगेह सुगेह, अमेह विमेह अदेह विदेह ॥ अलेप सुलेप सदा दरसंत ॥ अहो. ॥ ८ ॥ न कर्म न भर्म न गर्म उछाह, अक्रोध अमान अमाय अदाह ॥ अरोग असोग अभोग तरंत ॥ अहो. ॥ ९ ॥ सुज्ञान अराध समाधि प्रणाम, विहार करंत भवी हित काम ॥ भजत सुरासुर स्वामि महंत ॥ अहो. ॥ १० ॥ कहंत सदा उपदेश रसाल, हठत मिथ्यातम बधन जाल ॥ आराधक होय तिरंत अनंत ॥ अहो ॥ ११ ॥ रटंत कटंत दुरीत समस्त, लहंत सुखामृत वंछित वस्त ॥ उध्दारक वृध्द साहित हितवंत ॥ अहो. ॥ १२ ॥ त्रिजोग निवार वसे शिवलोक, चरणांबुज धोक, ते रिख तिलोक ॥ विलोक सुदेव जपो जग कंत ॥ अहो. ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ श्री सिद्धाष्टक छंद ॥

॥ नाराच छंद ॥

प्रसिद्ध सिद्ध शिव कंत, सत श्रेष्ठ देव हो ॥ झटक दी सकल पाप, खेव नीरलेव हो ॥ कलंक चक ढक अंक, रच स्व न ढयर ॥ कृपा करो दयानिधी ऋद्धि वृद्धी सिद्धी कर ॥ १ ॥ टेक ॥ अरूप रूप स्व अनूप, भूपघू अखंड हो ॥ अफंड मंड दंड गंड, छंडके प्रचंड हो ॥ अनंत ज्ञानरूप तोय, पाप मेल सहरं ॥ कृपा ॥ २ ॥ प्रमाद क्रोध मान माय लोभ लेश सो नहीं ॥ अनंत काल स्थीत है, अनंत सुख रासही ॥ अष्ट महा गुण मूल, स्व सदा सुसंवर ॥ कृपा ॥ ३ ॥ विकार खार दूर टाल राग द्वेष सहन्या ॥ अगाध जो भवोधि सो, धर्मपोतथी तन्या ॥ प्रत्येक एकमेक आप, व्याप हो गुणागरं ॥ कृपा ॥ ४ ॥ अलेख रेख रूप नाहीं, पापफंद धंध सो ॥ आहार भार हास्य त्रास नाश काम अंधसो ॥ अभंग ज्ञान सग चंग, गुप्त ना उजागर ॥ कृपा ॥ ५ ॥ अलोक लोक द्रव्य क्षेत्र काल भाव जाण हो ॥ त्रिलोकनाथ भ्रात भ्रात, मंद्र चद्र भाण हो ॥ विनाश किया रोग सोग, भोग भाव भंगुर ॥ कृपा ॥ ६ ॥ जपत जाप आग नाग सिंह चोर सो हटे ॥ कटंत बंध द्रव्य भाव रोग दुःख जे मिटे ॥ विषय कषाय लाय जाय, आय सुख सागरं ॥ कृपा ॥ ७ ॥ तिलोकरिख हस्त जोड, करत नित्य वदना ॥ निरोग बोध लाभ चहाय कर्मकी निकंदना ॥ नहीं जगत माही ओर, आपसो विश्वंभर ॥ कृपा ॥ ८ ॥ नित्य ए सिद्धाष्टक, पठंति जे मनोहरं ॥ विज्ञान मुक्ति सुख द्रव्य, भाव होत नागर ॥ नान्यत्र देवलोक माही, सिद्धस्थान उपरं ॥ कृपा ॥ ९ ॥ दोहा ॥ अजर अमर अविकार हो, सिद्ध निरजन देव ॥ किंकर पर करुणा करो दीजो अविचल सेव ॥ १ ॥ इति ॥

॥ श्री आचार्य छंद ॥

॥ मरहट्टा छंद ॥

जे ज्ञान महंता, समकितवंता, चारितर तप धार ॥ उत्कृष्टी करणी, भवजल तरणी, पंचम वीर्य आचार ॥ स्वयं पाले पलावे, पाप हटावे, उपदेशे नर नार ॥ गणिवर पद त्रीजे, नित्य नमीजे, कीजे सफल जमार ॥ १ ॥ टेक ॥ सब हिंसा टाले, दया सो पाले, निरवद्य बोले विचार ॥ दत्त व्रत ब्रह्मधारी, परिग्रह टारी, पंच जाम शुद्ध धार ॥ सुरत चक्खु नासा, रसना फासा, इद्रिय जीतनहार ॥ गणि. ॥ २ ॥ पशु पंडग नारी, थानक टारी, नारिकथा परिहार ॥ अंग निरखवा वारे, आसन टारे, सुणे न शब्द विकार ॥ क्रीडा न संभारे, सरस रस टारे, करे न अधिको आहार ॥ गणि. ॥ ३ ॥ अंगशोभा टाले, वाड ए पाले, क्रोध न करे लगार ॥ अभिमान तजंता, कपट तजंता, ममता दी सब मार ॥ कषाय एह चारी, महा दुःखकारी, भरमावे संसार ॥ गणि. ॥ ४ ॥ कर्मनका फंदा, दूर, निकंदा, चाले ईर्या विहार ॥ निरवद्य मुख वाणी, ले शुद्ध अन्न पाणी, दोष बयालिस टार ॥ जयणा करि लेवे, विधिसु परठेवे, समिति ए सुखकार ॥ गणि. ॥ ५ ॥ मन बचन काया, गुप्ति त्रिहुं डाया, गुण छत्तीस उदार ॥ शुद्ध किरियाधारी, ज्ञान भंडारी, करता पर उपकार ॥ उपदेश सुनावे, भर्म उडावे, तारे भवि नर नार ॥ गणि. ॥ ६ ॥ वर रूप दीपंता, महाबलवंता, वाणी अमृत धार ॥ अक्षर शुद्ध बोले, सात् नय खोले, डोले नही लगार ॥ विद्या निधाना, युगप्रधाना, गुणगण रत्नाकार ॥ गणि. ॥ ७ ॥ कुपक्ष नहीं ताणे, सब मत जाणे, अन्यमतको परिहार ॥ शीतल शशि जीपे, रवि जिम दीपे, साथे बहु अनगार ॥ पाखंड हटावे, जैन दिपावे, पाले संजम भार ॥ गणि. ८ ॥ आचारज नाणी, गुणनिधि खाणी, आचारज सुखकार, ॥ समरण सुखकारी, महिमा भारी, अरि करी भय परिहार ॥ दुःख जावे दूरे, संकट चूरे, पूरण रहे भंडार ॥

गणि ॥ ९ ॥ आचारज स्वामी, अंतरजामी, सिद्ध पदके दातार ॥ गुणिवर गुण गावे, पार न पावे रसना रचे हजार ॥ अलप गुण गाया, मन समझाया, तिलोक करे नमस्कार ॥ गणि ॥ १० ॥ संवत उग णीसे, वर्ष चोतीसे, वैशाख पूनम शशिवार ॥ जो जपशे भावे, सोही सुख पावे, छंद मरहठा धार ॥ प्रातें उठ पदे, दुरित निकंदे, रिद्ध सिद्ध जय जयकार ॥ गणि ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ श्री उपाध्याय छंद ॥

॥ हाटकी छंद ॥

संसार सागर, दुःख आगर, जाणे नागर, धीर ए ॥ तत काल त्यागे, दूर भागे, शूर सागे वीर ए ॥ मुनिराज पासे, ग्रहे दीक्षा, ज्ञान शिक्षा, आप ए ॥ चउथ पद उवज्झाय सुखकर, कीजे नित्य प्रति जाप ए ॥ १ ॥ टेक ॥ आचारंग चंग, अंग सुयगड, ठाणायंग सुखकार ए ॥ चउथो समवायांग नीको, भगवइ ज्ञाता सार ए ॥ उपासक अंतगड, अंग अष्टम, अनुत्तरोववाइ थाप ए ॥ चउथे ॥ २ ॥ प्रश्न व्याकरण, भण्या पूरण, अंग विपाक, रसाल ए ॥ गुरुदेव पासे, अर्थ धान्या, चउदं दूषण टाल ए ॥ ग्यारा अंग, संगो-पांग, शीख्या अति, चित्त चाल ए ॥ चउ ॥ ३ ॥ उत्पात अग्नी, वीर्य तृतीय, अस्ति ज्ञान सत्त जाणीए ॥ आतम प्रवाद, अरु कर्म पूरव, प्रत्याख्यान वखाणीए ॥ विद्या अवध, प्रवाद पूरव, धारत सोहि न धाप ए ॥ चउ ॥४॥ प्राण क्रिया, विशालपूरव लोकबिंदु, सार ए ॥ चतुर्दश पूरव, अंग ग्यारा, पाठ अर्थ, सुधार ए ॥ अभिमान तज कहे, वण चारु, नहिं करत कूडी थाप ए ॥ चउ ॥ ५ ॥ भविकजन, जो, प्रश्न पूछे, नव पदारथ, भाव ए ॥ सूक्ष्म बादर, द्रव्य गर्दे ि, पूछे कोइ, प्रस्ताव ए ॥ तब देत उत्तर, शोध सुचर, दे सिु, राउ, छाप ए ॥ चउ ॥ ६ ॥ ज्ञानदाता, धर्म

राता, बोले निरवद्य, वेण ए ॥ मिथ्यात खंडण, जैन मंडण, पाले जिनवर, केण ए ॥ गणिपदने, जोग सोहे, नामकर्म, आताप ए ॥ चउ. ॥ ७ ॥ महाव्रत पाले, दोष टाले, चाले इरजा, शोध ए ॥ कर्मरूपी शत्रुघातक, परम शूरा, जोध ए ॥ मन वचन काया, करण तीनुं, करत नहीं, सो पाप ए ॥ चउ. ॥ ८ ॥ उपाध्याय भक्ति, करत जुक्ति, ज्ञानगर, जीवंत ए ॥ मिथ्यात जावे, बोध आवे, थावे शिवपुर, कंत ए ॥ जैनमारग, तरण तारण, अवर सव कलाप ए ॥ चउ. ॥ ९ ॥ जिन नहीं, जिनराज सरखा, वेण सत, सुखकार ए ॥ देश जिनपद, मांहि विचरे, करता पर, उपकार ए ॥ मिथ्यात्व अंधा, कर्म फंदा, ज्ञान असि कर, काप ए ॥ चउ. ॥१०॥ भवप्राणी तारे, संशे टारे, बहु सूत्र विस्तार ए ॥ उत्तराध्ययन, इगियारमांने, कह्यो वर्णव, जहार ए ॥ तिलोक रिख, कर जोडि वंदे, सदा पुण्य प्रताप ए ॥ चउ० ॥११॥ इति ॥

—:(❀):—

॥ श्री साधु छंद ॥

॥ कामनी मोहनानी देशी ॥

साधु निर्ग्रंथने वंदना कीजिए, मानवको भव सफल करीजीए ॥ धन्य जे संत गुणवंत सोभागिया, भोग किंपाकसा जाणके त्यागीया ॥१॥ पंच महाव्रत समकित पालता, चार कषाय दावानलं टालता ॥ भाव सच्चे मुनि वंदूं में नित्त ए, कर्ण सच्चे जोग सच्चे सुकित्तए ॥२॥ धन्य जे क्षमा वैरागमें राचिया, द्रव्य छ नव पदारथ जाचिया ॥ मन वचन काया सम धारता, ज्ञान दर्शन चरण शुद्ध सारता ॥३॥ समभावे करी वेदनी खमता, मरण आया थकी जे करे समता ॥ गुण सत्तावीस सजम जे धरे, राग अने द्वेष जे किंचित नहिं करे ॥४॥ तीन ही शल्य सो नेत मोह कंदिया, मोहनी कर्मसूं ते नहीं फंदिया ॥ नहीं करे विकथसुध्य पुरण ध्यवता, शुक्लध्यान

भर कर्म खपावता ॥५॥ दया छकायकी पालता जे मुनि, क्रिया भेद भद नहीं करे महागुणी ॥ नव वाड मुनिधम पाले अखड ए, सकल मिथ्यातको छण्डयो अफड ए ॥६॥ बावीस परिसह जीतिया ते सही, बावन प्राणरक्षक विचरे मही ॥ बावन अनाचीरण टालता, चोराशी उपमायुक्त वे चालता ॥७॥ एक एक चउथादि षष्ठमासी करं, एकावली रतनावली आदरे ॥ गुण रतन सवच्छर धारता, प्रतिमादिक सलेखना जहारता ॥८॥ तप ऊणोदरी छे अति माटका, भिक्षाचरी रसत्याग नहीं छोटका ॥ काय किलेसने पडिसलीनता, षष्ठ तप धारके तन करे क्षीणता ॥९॥ प्रायश्चित्त विनय वैयावच्च जे करे, सज्झाय ध्यान काउसग्ग आदरे॥ प्रच्छन्न खट तप साध अणगार ए, टाले सही जिके कर्मको खार ए ॥१०॥ चन्द्र ज्यू सोमदृष्टि करी दीपता, तपतजें रविकिरणने जीपता॥सागर जम गभीर कहीजीए, कुजर जम धीरजता लीजीए॥११॥ लब्धि पाया भली प्रगट तपस्या फली, खलोसही जलासही प्रसिद्ध प्रगटी भली॥ वप्पोसही कइ आमोसही पत्तिया, सव्वोसही कोठबुद्धि केइ मत्तिया ॥१२॥ बीजबुद्धी वली पदानुसारिया, एकक मुनिवर वैक्रिय धारिया ॥ चारणा विज्जहरा मुनिराजिया, ऋजु विपुलमति संशय भाजिया ॥१३॥ एकेक मनि श्रुति अवधि धणी, मन पयव केवल शाभा घणी ॥ केवली दोय क्राडी सुखकार ए, नवकाडी उत्कृष्ट विचार ए ॥१४॥जघन्य दाय सहस्त्र काडी जती, सहस्त्र प्ररग्रक उत्कृष्ट पदें सजती॥ आज्ञा जिनदकी पालता जे सदा, धन्य जे जगतमें सकल छोडे अदा ॥१५॥ दुरित टल मुनि मावसूं जपता, तम दालित हाव जिम रवि तपता ॥ कर्म शत्रु जीके करत निकन्दना, रिख तिलाकजी कर तस वदना ॥१६॥ सवत उगणीश तीस महारए, ज्येष्ट आदि छट सूरज वारए॥ कामनी मोहना छदमें जाणीए, सु वली जले पुष्कर मानीए ॥१७॥ कलश॥ इम ऋद्धि वृद्धि समृद्धि दारण, जपो मुनिवर भावसु ॥ धर्मदेव महन्त प्रणमु, थूण्या सुगुरु पसावसु ॥ एम जाणी सेवो प्राणी,

सुसाधु मन खंत ए॥ ते लहे शिवपद रूप निश्चे, निर्भय शिवसुख संत ए ॥ १ ॥ इति ॥

—:(❀):—

॥ अथ चतुर्विंशति जिन नाम नमोत्थुणं युक्त छंद ॥

जय जय आदीश्वरजी अजित भणी, संभव अभिनंदन मोक्ष धणी ॥ सुमति पद्म सुपास मणी, चंद्रप्रभुकी जग महिमा घणी ॥१॥ पुष्पदंत शीतल हण्या कर्म अरी, श्रेयांस वासुपूज्य आर्ति हरी ॥ श्रीविमल अनंत धर्म जीत करी, शांतिनाथ प्रभु हन्यो रोग मरी ॥२॥ कुंथु अर मल्लि जिन सुखदाता, मुनिसुव्रत नमीश्वर जगताता ॥ रिष्टनेमि करुणारस माता, पारस पारस सम विख्याता ॥ ॥३॥ वर्द्धमान जिनंद शासनराया, अति क्षमा करी केवल पाया ॥ चोवीश जिनेश्वर मन भाया, प्रणमुं वदूं मन वच काया ॥४॥ अरिहंत धर्म आदि तीर्थकरे, स्वयमेव बोध शुध्द ध्यान धरे ॥ पुरुषोत्तम हरि जिम नाही डरे पुरुषोत्तम पुडरीक पक सिरे ॥५॥ पुरुषोत्तम प्रभु गंधहस्ति भले, जिन विचरे जहां पाखंडी गले ॥ लोकोत्तम नाथ हितकार फले, दीपक ज्यो मिथ्या तम सर्व दले ॥६॥ उद्योत करे भविलोक हिये, अभयज्ञान रूपी प्रभु नेत्र दिये ॥ शुद्ध मारग भूले जग जे प्राणी, मोक्ष पथ बतावे सुखदाणी ॥७॥ कर्म शत्रुसु त्रास्या भवि आवे, तिनकु जिन शरणागत थावे ॥ संयम जीतव दायक स्वामी, बोध बीज दाता नमु शिर नामी ॥८॥ धर्मदायक देशक नायगाणं, धम्म सारही जिन चक्रवर्ती जाणं ॥ अरिहंत अपाडिहय वरनाणं, दंसणधरा वियट्ट छउमाणं ॥ ९ ॥ रागद्वेष जिन्नाणं जावयाणं, भव ओघ तिन्नाणं तारयाणं ॥ धन जिन बुद्धाणं बोधकाणं, अट्ठकर्म मुत्ताणं मोयगाणं ॥१०॥ सव नाण दंसण शिव अचल थया, आरोग अणंत अखय अबाध रह्या ॥ आवे नहीं फिर

इण जगमांई, सिद्धगति नामधेय कहाई ॥११॥ जिण थानक प्रभु सप्रात थया, निज गुण सपूरण आठ कया ॥ असुर सुर गरुड सु यग देवा, इन्द्र चक्र करे प्रभुकी सेवा ॥१२॥ कल्पवृक्ष चिंतामणिथी भारी, जिनवर महिमा अपरपारी ॥ नरक निगोद गतिका ताला, जिन नाम थकी मंगलमाला ॥१३॥ करि केसारी सावज दुष्ट जिके, वली उदक अगनि भय दुःख तिके ॥ दुजन छल बल नहीं चालि सक, जा प्रभु समरण कर भाव पके ॥१४॥ बध बधन परवश दुःख कटे, बली चार चरड भय दूर हटे ॥ गड गबड ज्वरादिक रोग मिटे, जो एक चित्त जिन नाम रट ॥१५॥ ऋद्धि सिद्धि परिवार भडार अति, तस आदर द सुरराज पति ॥ जिन समरण थी प्रशस्त मति, दिन दिन वध महिमा पुण्यरती ॥१६॥ आभ कागद लखिणी मेरु तणा, उदधि जल जति मसी आणा ॥ सुरगरु गुण गावे प्रम भणी, अनत गुणातम त्रिजग धणी ॥१७॥ तिलोक रिख कहे शिर नामी, मुझ दरसण द्यो अंतरजामी ॥ भव भव शरणु आप तणु, जब लग नहिं थो मुझ सिद्ध पणु ॥१८॥ सवत् उगणीसे वर्ष त्रिशे, जिनस्तवन किया चित्त जगीश ॥ पढ सुण जो नरनारी, तस घर वरते मगल चारो ॥१९॥ इति ॥

॥ आनदमंदिर नाम मगल छद ॥

सफल संसार अवतार ए हुं गणुं ॥ ए देशी ॥

ॐ ह्रीं श्रीं नमो श्री अरिहत ए, टालो संकट सहु शत्रु दुदत ए ॥ घन घातिक चउ कम किया अंत ए, ध्याइयो शुकल ध्यान महमन्त ए ॥ १ ॥ पाया प्रभु विमल ज्ञान केवल सही, द्वादश परषदा सदवा आवही ॥ करुणाकर सिंधु उपदश फरमावही, सुणत भवि प्राणी मन तन हुलसावही ॥२॥ अथिर जग जाणक संजम आदरे, केइ बारा व्रत निमळ उच्चर ॥ कइ विशुद्ध समकीत समाचरे, तिण दिने चतुर्विध सघ

स्थापन करे ॥३॥ विचरे भूमडले भविकजन तारवा, जन्म जरा मरणना संकट वारवा ॥ प्रथम मंगल इम जिन प्रते वंदिये, भव भव दुष्कृत दूर निकंदिये ॥४॥ ओ न्ही श्री नमो सिद्ध उर्ध्व राजके, सिद्ध करो सव मनो वंछित काजके ॥ अजर अमर अविनाशी अविकार ए, सुख अनत अनंत गुण धार ए ॥५॥ राग रंगित नही कर्म सगत नही, निर्भय स्थान अवगाहन अटल लही ॥ अखंड अडंड प्रभु जगत शिरोमणि, अडग धर्म झुडमे वंदु त्रिजग धणी ॥६॥ ओ न्ही श्री सव साधु उमायके, तार भव प्राणी उपदेश बतायके ॥ भोग किंपाकसा जाणके त्यागिया, धन्य जे संत गुणवंत सोभागिया ॥७॥ ओ नमो जिन अवधि परमावधि, ओ नमो केवली उग्र तपस्यानिधि ॥ ओ नमो कोठ नमो बीजबुद्धिया भणी, पदानुसारी संभिन्नसोया मुनि ॥८॥ वंदुं रिज्जुमति विपुलमत्तिके, पूर्वदश चतुर्दश अष्ट नैमित्तिके ॥ वैक्रिय लब्धि धरा जंघा विद्याचरा, प्रश्न श्रमण वली गगन गामी धरा ॥९॥ उग्र तप घोर तप दीप्त-तपस्या धरा, घोर पराक्रमी शीलवंता खरा ॥ रीश आणे नही करत कोइ निंदना, हरख आणे नही जो करे वदना ॥१०॥ अनशन तप कोइ करत ऊणोदरी, वृत्तिसंक्षेप रसत्याग भिक्षाचरी ॥ काय किलेश संलीनता आदरे, प्रायश्चित विनय वेयावच मनशुं करे ॥११॥ सज्झाय ध्यान काउसग्ग ठावही, कंचन कंकर एकसम भावही ॥ जघन्य पृथकृत्व शय सहस्र कोडी जती, उत्कृष्ट पदे रिख वंदू मे शुभमति ॥१२॥ ओ नमो धर्म श्री जैन जिन भाखियो, दुर्गति पडत भव भव थिर राखियो ॥ दया भगवती सव शास्त्रमे वर्णवी, हिरदे अनुकंपा सो दाख्यो जिनजी भवी ॥१३॥ निज आतम सम जाण सव प्राणीने, पालो दया अनुकंपा चित्त आणीने ॥ जीव अनत तऱ्या ईण प्रभावथी, जेम उदधितणो पार लहे नावथी ॥१४॥ हिंसामय धर्म सो दूर निवारजो, चोथु मंगल एह धरमनुं धारजो ॥ तन धन जोबन अ-

थिर करि जाणजो, चारुही मगल उत्तम मानजो ॥१५॥ चारनु शरण नित्य लीजो ये पलपले, एह परभावथी सब सकट टल ॥ दुशमन चोर भूरत कोइ नहि छले, सिंह सर्पादिक देखि दूरा टले ॥१६॥ गड गुवड रोग महाकष्ट असाध्य सो, एह सरणायकी लहे समाध सो ॥ ताब तेजारी त्रूटे इण ध्यावता, विघ्न व्यापे नहीं पथमें जा यता ॥१७॥ भूत झोटिंग अरु डंकणी शकणी, विघन करे नहीं देवी सिहकणी ॥ नरेंद्र सुरेंद्र फणींद्रादिक देवता, सकल वश थाये चउ शरण शुद्ध लेवता ॥१८॥ अहि जिम गरुडना शद्भथी थरहरे, तेम चउ शरणथी पाप आघो डरे ॥ ईणमाही शका रति मत आणजो सद्गुरु कहेण प्रमाण पीछाणजो ॥१९॥ रिख तिलोक दे धोक चउ शरणन, आरोग्य समकित अरु भवजल तरणने ॥ भणशे गुणशे एह स्तवन भावे करी, सोही भविजीव लहेशे अविचल सिरी ॥२०॥ कलश ॥ अरिहत सिद्ध महाराज साधु, धरम केवलि जाणिये ॥ ए चारु मगल चारु उत्तम चारु शरणा मानिये ॥ इहलोक सपत्ति सुख बहुला, आगे सुख श्रीकार है ॥ तिलोकरिख कहे सुणे सरधे, होय सदा जयकार है ॥२१॥ इति ॥

॥ मगल छद ॥

॥ मंगलकी दसी ॥

ढाल ॥ जय जय अरिहत जिनदा, मुख पूनम पूरण चदा ॥ सेवे सुर असुर नरिंदा, प्रभु भविजनके सुखकदा ॥१॥ त्रूटक ॥ हरिगात छद ॥ सुखकंद साहेब भए सबके, तप महा दुष्कर किया ॥ घन घातिके सब कर्म हणकर, ज्ञान केवल पाइया ॥ चोतीस अतिशय प्रगट दीसे, अमृत वाणी उच्चरे ॥ प्रातिहार अष्ट विशेष जिनके, संघ चउ स्थापन करे ॥२॥ ढाल ॥ जगगुरु जगनायक स्वामी, जग तारक अतरजामी ॥ प्रभु मुक्ति जावणके कामी, नित नित प्रणमु

शिर नामी ॥३॥ त्रूटक ॥ शिर नामि प्रणसुं करुणासिंधु, जघन वीस जिनेश्वरु॥ उत्कृष्ट एक शत सित्तर जाम, होय तस वंदन करु॥ उपकारी इण सम नहीं जगमे, मन वचन तन ध्याइये॥ होय संपत्ति विपत नासे, प्रथम मंगल गाइये ॥ नित्य० ॥४॥ ढाल॥ जय जय सिध्द् सदा सुखकारी, अष्ट कर्म किया सब छारी ॥ प्रभु तीनुही जोग निवारी, पाये शिवपुरके सुख भारी ॥५॥ त्रूटक॥ सुख भारी जिनके है अनूपम, आतमिक अविचल सदा॥ निरंजन निराकार जिनके, दुःख नही व्यापे कदा॥ अजर अमर अविकार ईश्वर, अटल अवगाहन धणी॥ अविकार करुणावंत वदूं, सकल लोक शिरोमणि ॥६॥ ॥ ढाल ॥ त्रस नालीके उपर जाणो, जहां मुक्तिशिला सुवखाणो॥ चेतुं छत्र शशिने संठाणो, पेतालिस लक्ष योजन परमाणो ॥७॥ त्रूटक ॥ परमाण दलमे अष्ट योजन, अधिक पतली अंत सो॥ तिण उपरे पंचदश भेदे, सीधा सिध्द् अनंत सो ॥ सकल कारज सिध्द् जिनके, भाव भक्ति सराइये॥ पाइये सिध्द् पद जिणसुं, सिध्द् मंगल गाइये ॥ नित्य० ॥८॥ ढाल॥ जय जय सब साधु सोभागी, आरंभ परिग्रहके त्यागी ॥ तप जप किरिया अनुरागी, उनकी सुरता सुगतिसु लागी ॥९॥ त्रूटक॥ लागि सुरता शिववधूशुं, असंजम सेवे नहीं॥ महाव्रत पाले इंद्री जीते, कषाय चारु हठावही॥ वैराग भावे अधिक क्षमा, जोग तीनुं सम करे॥ ज्ञान दरसण चरण पूरण, रोग मरणसु नही डरे ॥ मुनि० ॥१०॥ ढाल ॥ केइ चउदे पूर्वके धारी, केइ द्वादश अंग भंडारी॥ केइ अवधि मनःपर्यव ज्ञानी, तेजोलेश्या लब्धि करी छानी ॥११॥ त्रूटक॥ करि छानि लब्धि वैक्रिय आहारक, ध्यान शुक्लज ध्याइया ॥ घनघातिक केइ कर्म काटी, ज्ञान केवल पाइया ॥ पृथक् कोडी सहस्र मुनिवर, उत्कृष्ठ जघन्य मनाइये ॥ वांदिये शुद्ध भाव भविका, साधु मंगल गाइये ॥ १२॥ ढाल ॥ जय जय जैन धर्म जयकारी, केवलि प्ररूपित हितकारी ॥ इणमें

जीवदया अगवानी, या तो सब सिद्धांते बखानी ॥१३॥ त्रूटक ॥ बखाणी सर्व सिद्धांत माही, शका नहीं इणमें रति ॥ निज प्राण सम सब प्राणी जाणो, साचा इम निर्मल मति ॥ शाश्वतो त्रिहु काल माही, सकल जिन दाख्यो सही ॥ ए शुद्ध सरधा धारिया विण, करणी लेखामें नहीं ॥१४॥ ढाल ॥ जाके जीवदया रुचि जागी, सो जाणो हलुकर्मी सोभागी ॥ निरवद्य शुद्ध करणी भारी, इणसु तरिया अनंत संसारी ॥१५॥ त्रूटक ॥ ससारी तरिया अनत इणसु, आदरो इम जाणिने ॥ लही अविचल सुख सपत, दुःख थो मत प्राणिने ॥ ज्ञान दर्शन चरण माही, धर्म हिरदे लाइय ॥ सर्व आगम सार चउथो, धर्म मगल गाइये ॥ निस्य ध० ॥१६॥ ढाल ॥ अरिहंत सिध्द साधु धर्म ए चारी, लोकोत्तम एह विचारी ॥ शरणागत ए चउ मानो, इणमें शका मत आणो ॥१७॥ त्रूटक ॥ मत आणो शका शरण लेता, दुःख नहीं व्यापे कदा ॥ घोर दुष्मन रोग नासे, लहो अविचल सपदा ॥ कहे रिख तिलोक मुझने, शरण होजो सर्वही ॥ सुणे सरधे तेहि जनने, होशे सुख साता सही ॥ सदा हो० ॥१८॥ इति ॥

-:::§:::-

॥ भयभजन अरिहतजीको छद ॥

चापाइ छद

जय जय विश्वनाथ जसवत, प्रणमु श्री अरिहत महंत ॥ कुशल वेलि जल पुष्कर धार, दुरित तिमिर भानु ससार ॥१॥ चिन्तवल चिंतामणि पास, कल्पवृक्ष जिम पूरण आस ॥ आरत हरण करण सुख संत, चरण सरण भाव मन खत ॥२॥ क्रोध मान छल लोभ निवार, भए केवळ पद तुम ससार ॥ इंद्र नरिंद सुरासुर देव, मन वच काय करे तुम सेव ॥३॥ लिपटे सप चदन तरु भाल, गरुडशब्द सुणि नासत व्याल ॥ जंसु वृक्ष कर्म अहि जाण, तुम समरणते होत प्रयाण ॥४॥

कोटि वृंद नारी जणे पुत, तुमसो अवर न प्रसवे सुत ॥ उगे नक्षत्र चउदिशि माय, दिनकर पूरव दिशि प्रगटाय ॥५॥ तुम निर्मल गुण आगर देव, क्षमासागर आप अछेव ॥ धर्म धुरंधर सारथवाह, धर्मचक्री प्रभु त्रिजग नाह ॥६॥ अविनाशी अविकारी अरूप, निर्भय करण परम सुख भूप ॥ जगगुरु जगबंधव जगईश, त्रिकरण शुद्ध नमावुं शीश ॥७॥ जनम जरा मरण दुःख सोग, एह अनादि लग्यो भवरोग ॥ तुम समरण औषध जो लेत, भव भव व्याधि रंच न रेत ॥८॥ तुम जगवच्छल करुणावंत शांतिकारक श्रीभगवत ॥ में मतिहीण अलप मोय बोध, तुम गुण कैसे वरणवुं शोध ॥९॥ केइक हरिहर जपत महेश, केइक सरस्वति गौरी गणेश ॥ केइक रवि शशि नवग्रह देव, केइक जल थल अगनी सेव ॥१०॥ केइक ईसा पैगंबर पीर, केइक देवी भैरव वीर ॥ मे मन निश्चें कियो निरधार, तुम सम और न को संसार ॥११॥ किहां सरशव किहां मेरु उत्तंग, किहा केशरी बलवंत कुरंग ॥ राधामणि वैडूर्य फेर, जैसे अमृत अंतर जहेर ॥१२॥ जैसे वस्तर कंबल हीर, निशि दिन अंतर कायर वीर ॥ आकदुध किहां धेनु खीर, खीरसागर किहां खारू नीर ॥१३॥ पुण्य पाप फल रंक ने राय, परगट द्रव्य सुपनकी माय ॥ सत्य झूठ तस्कर साहुकार, आगिया तेज रवि झलकार ॥१४॥ जैसे कर्म घाति कर्मवंत, प्रत्यक्ष अंतर भासे अनत ॥ विश्वविख्यात सदा सुखकार, ज्युं उदधिमें द्वीप आधार ॥१५॥ भूख्या भोजन प्यासा नीर, रोगी औषधथी मन धीर ॥ पंखी नभ नट वंश विचार, तिम तुम नाम तनो आधार ॥१६॥ बालक जननी गउ वच्छ हेत, हंस सरोवर आसरे रेत ॥ ज्यों हस्ती कज्जलवन प्रीत, अंब कोयल चकवी आदीत ॥१७॥ सति भरतार पपैया मेह. मधुकर मालती अधिक सनेह ॥ लोभी मनमें धनको जाप, तैसे हुं समरु प्रभु आप ॥१८॥ हिंसा झूठ चोरी उन्माद, सेव्यो परिग्रह क्रोध अनाद ॥ मान माया त्रसना अति कीध, राग द्वेष ने क्लेश प्रसिद्ध ॥१९॥ आल दिया करि चाडी कूड, पर अपवाद किया

भरपूर ॥ विषय कषाय रतारत आण, बांध्या निकाचित कर्म अजाण ॥ २०॥ कपट साहित कही मृषावाद, मिथ्यामत करणी आल्हाद ॥ करण करावण करी में मोद, पाप अठारा धर्मविरोध ॥२१॥ इण विधि करिया करम कठर, पहुंतो नरक सह्या दुःख पूर ॥ परमाधामी दीनी त्रास, नही मानी किंचित अरदास ॥२२॥ तिरियच वेदन सागर रूप, जगम थावर पडियो कूप ॥ छेदन भेदन कष्ट महत, जनम मरण दुःख सह्या अनत ॥२३॥ नरभव नीच जाति कुल कोन, दुःखी दरिद्री भयो अति दीन ॥ जन जन आगे जोड्या हाथ, पूरण नहि मिलियो जल भात॥ २४ ॥ पाप उदय नाटकियो देव, भयो में करी सुरनी सेव ॥ पाड्या नाटक तोडी तान, करम उदे मे भयो हैरान ॥२५॥ षडगति भ्रमण महा दुःख लीन, तुम शरणा विन भव भव दीन ॥ कीधा में अपराध अपार, भरिया हुं अवगुण भंडार ॥२६॥ खोय दियो में निरर्थक काल, मोहनी कर्म भम जजाल ॥ सप अधारे जेवडी जेम, छीप खड रूपु महे तम ॥२७॥ मृग मरीचिका आणत तोय, प्यास बुझावण हिरणा साय ॥ धावत धावत छोडे प्राण, तेसें में भमियो अज्ञाण ॥२८॥ जैस ज्वर तन प्रबलता हाय, अन्नरुचि नहीं व्यापे साय ॥ तैसे कुकर्म उदयगत जीव, धर्मरुचि नहि आवत ईव ॥२९॥ जब तन ज्वरको मिटत विकार, तब साह वांछा करत आहार ॥ अशुभ कर्म जब होत प्रयाण, तब तुम शरण महे भवियाण ॥३०॥ जाणी में आगम अनुसार, किंचित तुम मारगकी कार ॥ ज्ञान दर्शन पूरण चारित्र, पले नहीं मुझ शुद्ध पवित्र ॥३१॥ पण एक चरण शरणकी आस, धारी में अब हिय विमास ॥ आश निराश करण नहीं रीत, तुमसु लागी पूरण प्रीत ॥३२॥ तुम सम ओर न कोइ कृपाल, अधम उद्धारण दीन दयाल ॥ तुम विन कोन मो होत सहाय, तुम विन कोन भविक सुखदाय ॥३३॥ गज मदवत महा विकराल, सन्मुख आवे न नरकू माल ॥ मारण आवे भगतो

फाल, तुम जपतां हरि होवे शियाल ॥३४॥ कलपंत काल समीर अदंड, जले दावानल धूम्र प्रचंड ॥ ऐसे कष्ट भजे जन कोय, तुम कीरत जल शीतल सोय ॥३५॥ श्याम रंग दृग लाल कराल, क्रोध उद्धत ध्यावे विकराल ॥ नागदमन तुम नाम विशाल, रटतां विघन करे नही व्याल ॥३६॥ भूपसुं भूप करे संग्राम, रक्त खाल वहे तिण ठाम ॥ ऐसे संकट ध्यावे आप, लहे रण विजय टले संताप ॥३७॥ अथाग जल वहे वाय कुवाय, उठे किल्लोल वाहन कंपाय ॥ ऐसी विपत ध्यान करनार, सो सहि पावे सागर पार ॥ ३८ ॥ सास खास ज्वर गुंबड दाह, कुष्ट भगंदर रोग अगाह ॥ जो तुम प्रणमें भाव निःशंक, ततक्षण प्रलय होत आतंक ॥३९॥ पावन बेडी हथकडी हात, रोके भाखसी रुंधे भात ॥ ऐसी आपदा समरे आप, बंधण छूट टले संताप ॥४०॥ तुम रणमोचन गरिबनिवाज, बंधन छोडे श्रीजिनराज ॥ तुम त्रिहुं लोकमें तिलक समान, तुम नामे दिन दिन कल्यान ॥४१॥ ओं न्हीं श्रीं नमो नमो अरिहंत, ऋध्धि सिध्धि वृद्धि सुख संत ॥ देजो दीन दयानिधी मोय, भव भव सरणो वांछु तोय ॥४२॥ हय गय रथ दल प्रबलता पूर, वेरी दुश्मन नासे दूर ॥ पूत सपूत कलत्र गुणवंत, मिले संजोग रहे सुख जंत ॥४३॥ दुश्मन बल नहिं लागे दाव, वैर मिटी होय सज्जन भाव ॥ जहां जावे तिहां आदर होय, मोहनी मंत्र नाम तुम जोय ॥४४॥ जड मूरख नर जे मतिहीन, पण तुम समरणमें रहे लीन ॥ बुध्धि प्रबल सो पंडित थाय, जगमें पूजा होत सवाय ॥ ४५॥ आभको कागद मशी सब नीर, लेखणी लेवे सुदर्शन गीर ॥ जो लिखे सरस्वति गुण विस्तार, सागर कोडी लहे नहिं पार ॥४६॥ अल्पमति हुं प्रमादी जीव, कैसे तुम गुण कहु अतिव ॥ तुम वालेश्वर जीवन प्राण, राज राजेश्वर गुणानिधी खाण ॥४७॥ तिलोकरिख करे अरदास, अंतरजामी तुम गुण रास ॥ आपके पास न

मागु लेश, मोय बतावो निज प्रदेश ॥४८॥ एतिक अरजी लीजो मानि, कबहुं न भूलू तुम एसान ॥ नीठ नीठ जाण्या तुम देव, भव भव दीजो थांहरी सेव ॥४९॥ संवत उगणीसे षत्तिस मान, ज्येष्ठ कृष्ण तिथी दूज प्रमान ॥ वार शनी सिद्धि जोग विचार, भय भंजन स्तव कियो उचार ॥५०॥ शहर शाहजापुर मालव देश, सुखशाता थउ तीथ हमेश ॥ भणे गणे सुणे जे नर नार, तस घर वर्ते मंगल चार ॥५१॥ इति ॥

॥ अतीत अनागत वतमान चतुर्विंशति जिन छन्द ॥

॥ चोपाइ छंद ॥

प्रणमु परमेष्ठी गोतमस्वाम, जिनवाणी सरस्वती सुखधाम ॥ गुरु चरणांवुज प्रणमु साव, कहु त्रिहु काल चोवीशी नाव ॥ १ ॥ अतीत चोवीशी भइ है अनत, त वंदु मैं शिवपुरकंत ॥ पण एक वर्ते मानथी अतीत, नाम कहु तस मन धरि प्रीत ॥ २ ॥ प्रथम केवलज्ञानी जिनराज, निर्वाणी सागर तारणी जाज ॥ महाजस विमल जिनद सुखकार, सर्वानुभूति श्रीधर उध्दार ॥ ३ ॥ दत्त दामोदर, जपु जिनदेव, सुतेजस्वामी हरि कर्मखेव ॥ मुनिसुव्रत सुमति जिन ईश, शिवगति स्वामी नमु निश दीस ॥ ४ ॥ अस्तगजी नमीश्वर जाण, अनल नम्या होवे जन्म प्रमाण ॥ जसोधर कृतारथ दोइ जिनराज, जनेश्वरजी छो गरिय निवाज ॥ ५ ॥ शुध्दमतिजी शिवकर नमु, भव भव संचित पातक गमु ॥ स्यदन चन्न जेम सुभाव, संप्रतिजी प्रणमु चित्त चाव ॥ ६ ॥ अतीत चोवीशी नाम ए जान, प्राते नित जपजो भवियाण ॥ अब कहु वतमान जिन नाम, इनहिज भरतक्षत्र मये स्वाम ॥ ७ ॥ ऋषभ अजित संभव अभिनंद, सुमति कुमति करि दूर निकंद ॥ पद्म सुपारस जिन सुखकंद, चंद्रप्रभु पर

तिख जिम चंद ॥८॥ सुविधि शीतल श्रेयांस सुधीर, वासुपूज्य विमल जगपीर॥ अनंत धरम शांति कुंथु दयाल, अर मल्लि मुनिसुव्रत कृपाल ॥९॥ एकविशमा नमिनाथ उदार, रिष्टनेमि तजि राजुल नार॥ पार्श्वप्रभु वंदूं वर्द्धमान, ए वर्तमान चोविशी जाण ॥१०॥ कर्म हणी केवल पद पाय, चोविश जिन पहुंता शिव माय॥ मेहर करो मुझपर अरिहंत, रवि शशि सागर उपमावंत ॥११॥ तुम दरशणकी मुझ चित्त चाय, पल पल वंदूं शीश नमाय॥ अनागत चोविशी भरत मझार, तेहना नाम सुणो नरनार ॥१२॥ पद्मनाभ सुरदेव सुपास, स्वयंप्रभु शिव करशे वास॥ सर्वानुभूति देवश्रुत जिनेश, उदय करम नहीं राखशे रेस ॥१३॥ पेढाल पोटिल सत्यकीरति जाण, सुव्रत अमम होशे जग भाण॥ तेरमा निःकषाय खुलास, चउदमा जिनवर तो निष्पुलाक ॥१४॥ निर्मम चित्रगुप्त समाध, तरशे भवजल जेह अगाध॥ सवर जिनेश अढारम जोय, यशोधर विजय मल्लि जिन होय ॥१५॥ देव जिन अनंतवीर्य सुचंग, भद्रकृत द्रव्य भाव उत्तंग॥ अनागत होशे दीनदयाल, दया धरम उपदेश रसाल ॥१६॥ ते पण थापशे तीरथ चार, तरशेकेई भवियण नरनार॥ अतीत अनागत ने वर्तमान, बहोतेर तीर्थंकर प्रमाण ॥१७॥ आगम ग्रंथ तणे अनुसार, संवत् उगणीसे तीस मझार॥ भणतां गुणतां सुख सुविशाल, तिलोकरिख कहे मंगल माल ॥१८॥ इति॥

—:(❀):—

॥ अरिहंत जिन छंद ॥

प्रणमुं जे मुनींद्र जिनेंद्र भणी, जस सेवे नरेंद्र सुरेंद्र फणी॥ कीर्ति अनंत संत स्वामी तणी, त्रिहुं लोकमें साहेब आप धणी ॥१॥ गृहवास तजी प्रभु सुमति करी, तपरूप हुताशनि कर्म धरी ॥ सुद्ध

भात्र धमन करि मल हरी, प्रभु केवल कमला खेग वरी ॥१॥ जेह दीपे आतिशय चोतीस करी, नैरोग्य महा दिव्य देह भरी ॥ सघेन सठाण प्रथम पावे, जल मेल कलंक जो नहिं थावे ॥ ३ ॥ निर्लेप निर्दोष शरीर रहे, तनु कांति उद्योत प्रकाश पहे ॥ शिर अगर कुट आकार दिसे, निष कज्जल कुचिय केश शिशे ॥४॥ दाडिम फूल तव णिज केशभूमी, संचित पुण्य पूरण नाही कूमी ॥ निलाड दीपे अधर्चंद्र टीका, उडुपति पूरण सो मुख नीको ॥ ५ ॥ परमाणुपेत श्रवण सोहे, भमुह तणु निरखे मन मोहे ॥ नयनाबुज विकस्वर श्वेत मला, उत्तग दीरघ नासा सरला ॥ ६ ॥ अधराख्ण विद्रुम रग दीपे, दत श्रेणी धवळ शशि तज जीपे॥ रसनारत अमृत जल वरसे, दाढी मुछ सुदर केश दरसे ॥ ७ ॥ गिरवा खंध भुज जस पुष्ट वली, फणी जिम प्रभु बाहा दीसे भली ॥ अछिद्र सकोमल शुभ पाणी, पुष्टागलि ताम्र रग नख जाणी ॥ ८ ॥ रवि शशिदिक रेखा करमां ही, सब एक सहस्र अष्ट दरसाई ॥ उतरता पासां उस उदरी, गंगावृत विकस्वर नाभि खरी ॥ ९ ॥ सिंहकटि वृत्ताकार सही, शुंडादड उरुपिंडी शाभ रही ॥ कूरम सम पृष्ठ चरण दोई, अंगुली नखमें कुछ खोड नहीं ॥ १० ॥ पगतलीमें पद्म कमल सोहे, प्रभु निरखत सुर नर मन मोहे ॥ प्रभु आगे तेज मंद दिनकरका, मर्यादित केश नख जिनवरका ॥ ११ ॥ लोहि मांस उजल गउ खीर करी, केतकी जिम स्वासा सुगध भरी ॥ आहार निहार अदृष्ट सदा, नहीं देख सके चर्मदृष्टि कदा ॥ १२ ॥ धर्मचक्र त्रिहु छत्र आकाश चले, दिव्यशक्ति खग श्वेत चमर ढले ॥ पादपीठिका सिंहासन नभमांही, सो रतन फिटक वर छवि छाइ ॥ १३ ॥ सहस्र ध्वजा परिवार करी, सो इन्द्रध्वजा लहकत खरी ॥ छप ऋतु अशोक तरु सम वरते, अधकार भामडल नीवरते ॥ १४ ॥ सम भूम हुवे प्रभु जिहां विचरे, कटककी अणिया उलट करे ॥ जोजन लगे छ ऋतु सुखकारी,

अचेत वायु रज परिहारी ॥ १५ ॥ वरसे जल मंडल रज जमे, वरसे फुलका पुंज अनेक गमे ॥ दुर्गंध टले शुभ वास रमे, अर्ध मागधी भाषा लोक गमे ॥ १६ ॥ वारे परिषद् मध्य धर्म कहे, निज निज भाषा सब अर्थ गहे ॥ वैर भाव न जागत सिंह अजा, वादीजन वाद करंत भजा ॥ १७ ॥ ईति होवे नही सौ कोश लगे, मरि मारी सो सब दूर भगे ॥ स्वपरचक्री दुःख देत नही, सौ कोश दुष्काल न आवे कहीं ॥ १८ ॥ अधिक अणगमतो नहीं वरसे, थोडोपण नहीं ज्युं जन तरसे ॥ आतंक जिरण सब टल जावे, नूतन वेदन नहीं संतावे ॥ १९ ॥ प्रभु चोतिश अतिशय करी छाजे, वाणी पेतिस जिम घन गाजे ॥ चोसट इंद्रो जिनभक्ति करे, सुर नर सेवा मन हर्ष धरे ॥ २० ॥ पाखंड मत खंडण मान भणी, त्रिगडो रचे करवा महिमा घणी ॥ प्रथम प्राकार सो रूपा तणो, कंचनको सीसा पीत भणो ॥ २१ ॥ तोरण माणि रत्नमें चंग कह्यो, पावडी दश सहस्र प्रमाण लह्यो ॥ दुजो गड सोवनके मांहि, रतन कोशीसां छबि छाही ॥ २२ ॥ रतनगड त्रीजो प्रवर घणो, कोशीसां माणिके मांही भणो॥ पावडिया चारुहि पोल तणी, पांच पांच हजार रसाल बणी ॥ २३ ॥ भितियां तीनुही कोटि गणी, अर्द्ध सहस्र धनुष उत्तंग भणी ॥ धनुष तेत्रीस बत्तीस अंगुली, उपर वली ग्रंथाकार खुली ॥ २४ ॥ पावडिया उंचा चोडापणे, एक रयणीके परमाण बने ॥ लंबा तो धनुष पंचाशी सही, पीठिका मध्य भागे शोभ रही ॥ २५ ॥ आयाम विष्कंभ छविश तणी, दोयेशे वली धनुष उचाइ भणीं ॥ कोट कोटको अंतर सो तेरे, जोजन मंडल प्रकाश करे ॥ २६ ॥ पीठिकापर स्फटिक रतन केरो, सिंहासन सोहे अधकेरो ॥ तिणपर विराजी धर्म कहे, वारे परिषद्की बैठक कहे ॥ २७ ॥ श्रावक श्राविका देश विरति धणी, कल्प वासिक देव इशान अणी ॥ विमाणिक सुरि साधु समणी, ए तीनुंही अगनि कूण भणी ॥ २८ ॥ व्यंतर ज्योतिषी अरु भवणपति,

नैऋत कूण बेठत देव अति ॥ देवी घली तीनुही देवतणी, वायव्य कूण बठत सेव भणी ॥२९॥ इणविधि बेठी उपदेश सुणे, शुद्ध भाव थकी अघ मेल धुणे॥ एक जोजन लगे अमृतधारा, वैरागपणे ग्रहे मत सारा ॥३०॥ ग्रह गण उगे नित दिश चारी,॥ एक दिश प्रगटे रवि हद धारी॥ प्रसवे नंदन केइ जगनारी, धन धन जिन धन महेतारी ॥३१॥ जे रवि शशि मेरु उपमा सिंधु, गुण कहि न शकु मुझ मति बिंदु॥ जिनगुण महिमा पार न पाव, सुरगुरु सरस्वति स्वयं गुण गाव ॥३२॥ प्रभु समरण जो करे भाव पक, अरि करि हरि जोर न लाग सके ॥ जल जलन जलोदर रोग हटे, बध बधन परवश दुःख कटे ॥३३॥ रिद्धि सिद्धि भरपूर भडार घणा, परताप से प्रभुजी नामतणो॥ प्रथम पद मगल अति भारी, तिलोक कहे सेवा द्यो चरणांरी ॥३४॥ संवत उगणीसे सवत्सर तीसे, ए छन्द स्तवना करी जगीशे॥ शुद्ध भाव भणे गुणे नरनारी, ते पावे भवजलनिधि पारी ॥३५॥ कळश॥ इम देव अरिहंत सेव कीरति, करिये एक चित्त चावसु ॥ तरिये भवजल दुःखसागर, बेठ कर जिम नावसु ॥ शुभ नाम मगल टले उदगल, करुणा मुझपर कीजिये ॥ चरण सरणकी सेव साहब, अचल पदवी दीजिये ॥ प्रभु अवसो महेर करीजिये ॥१॥ इति॥

—(❀)—

॥ जिनवाणी छद ॥

॥ त्रिभगी छंद ॥

जय जय जिनराया, सूत्र सुणाया, धम बताया, हितकारी ॥ गणधरजी झेली, सधि सुमली, नयरस केली, विस्तारी ॥ रचे द्वादश अग, भंग तरंग, भूय अभग, अति भारी ॥ धन धन जिन वाणी, सय सुख दानी, भवजन प्राणी, उर धारी ॥१॥ टेक ॥ यह

नहिं तीर्थंकर, केवल गणधर, अवधि मुनिवर, मनज्ञानी ॥ जंघा विद्याचारी, पूरवधारी, आहारक सारी, महाध्यानी ॥ नहिं गगनगमणी, पद अनुसरणी, वैक्रिय करणी, परिहारी ॥ धन. ॥२॥ देवर्द्धि खमासमण, तारण भवियण, उद्यम लेखण, जिण कीनो ॥ इणहिज आधारे, पंचम आरे, धर्मज धारे, जिनजीनो ॥ आलंबन मोटो, सूत्रको ओटो, रंच न खोटो, हितकारी ॥ धन. ॥३॥ शुद्ध सम्यक तरुवर, अति दृढ परवर, वाणी सुधाकर, जलधारा ॥ या दया वधारण, हिंसा वारण, शिवसुख कारण भव पारा ॥ ए बुद्धि बढावे, भर्म कढावे, पाप बुडावे, शुभ चारी ॥ धन. ॥४॥ जे चिंता उच्चाटण, मोहनी दाटण, त्रिशल्य काटण, कातरणी ॥ अरिकंद कुदाली, बंधन पाली, सुरतरु डाली, सुत जरणी ॥ भवोदधिके मांइ, जहाज कहाइ, बेठो जाइ, नरनारी ॥ धन. ॥५॥ संशय विपर्याय, अने अध्यवसाय, तिहुअण माय, होय नहिं ॥ त्रिदोषरहितं, त्रिगुणसहितं, त्रिपदी रीतं, भेद सही ॥ शुद्ध न्याय आराधी, शिववधु साधी, कर्म उपाधि, जिण वारी ॥ धन. ॥६॥ या विराधन करके, यहांसे मरके, उपज्या नरके, दुःख पाया ॥ वली छेदन भेदन, ताडन तर्जन, बहु विध बंधन, घबराया ॥ वलि गर्भमें लटक्या, चौगती भटक्या, जक्तमें अटक्या, भय भारी ॥ धन. ॥७॥ जिण हितकर जाणी, श्री जिनवाणी, सो भवि प्राणी सुख पाया ॥ समकित शुद्ध करणे, मिथ्या हरणे, भवजल तरणें, शिव पाया ॥ तिलोकरिख जाची, शारदा साची, मन तन राची, जयकारी ॥ धन. ॥८॥ कलश ॥ दोहा ॥ जिनवाणी जयकार हे, अनुभव रसको सार ॥ नय प्रमाण विचारजो, पक्षपात परिहार ॥१॥ शम दम उपशम भावशुं जे साधे नरनार ॥ तिलोकरिख तिणने सदा, प्रणमें वारंवार ॥२॥ इति ॥

॥ अथ चोवीश तीर्थंकरका लेखाकी चोवीशा प्रारम ॥

॥ तेमां प्रथम एकसो पच्चीश बोल सख्याकी गाथा ॥ श्री वीर जिणंद सासण धणी, जिन त्रिभुवन स्वामी ॥ ए देशी ॥ प्रणमु निरतर नित्य, जिन चोविशी वतमाना ॥ नाम १ बोध भव संख्या, २,द्वीप ३ क्षेत्र ४ दिशा ५ पहिचानो ॥ विजय ६ पूर्वभवनाम ७, प दवी ८ तिहाँ ज्ञान ९ जणाउ ॥ सेव्या स्थानक सख्या १ , स्वर्ग गति ११ स्थिति वताउं ॥ च्यवन तिथि १२ नक्षत्र १३ समे प १४, सुपन १५ सख्या १६ विचार १७ ॥ जनमतिथि १८ वेला भली १९, ओगणीश बोल विचार ॥१॥ त्रिशमामें जन्म देश, २० नगर २१ माता २२ पिता २३ गति २४॥२५ ॥ दिशा कुमारी २६ इन्द्र सख्या २७, गोत्र २८ वशकी रीती २९ ॥ नाम स्थापन ३० प्रभु चिन्ह ३१, देहका लच्छन ३२ दाखु ॥ वर्ण ३३ बल ३४ अवगाहना ३५, उच्छेद आसमागल ३६ माखू ॥ प्रथम आहार ३७ विवाहना ३८ प, लोकांतिक ३९ दान सुधार ४० ॥ कुमार पद स्थिति ४१ राजनी ४२, शिबिका नाम विचार ४३ ॥२॥ दीक्षातिथि ४४ वय ४५ तप ४६, दीक्षा परिवार ४७ पुर जाणो ४८ ॥ वन ४९ तरु ५० दीक्षा समय, ५१ लोच मुष्टि परमाणो ५२ ॥ सजम ज्ञान ५३ पुष्पमाल ५४, थिति ५५ वलि प्रथम आहारो ५६ ॥ पारणा काळ ५७ पुर नाम, ५८ वली परथम दातारो ५९ ॥ दातार गति ६० वृष्टि दिव्यक ६१ हुय, वसुधारा संख्या ६२ जाण ॥ विहार भूमि ६३ तपस्या ६४ परम, पसठमो अभिग्रह परिमाण ६५ ॥३॥ उपसग ६६ प्रमादको काल ६७, छद्मस्थको काल ६८ जे आणुं॥ गुणसिखरमे केवल तिथि ६९ केवल पुर ७० वन वखाणुं ७१ ॥ केवल तप७२ वृक्ष नाम ७३ मान ७४ वला ७५ तीरथ७६तीर्थविच्छेदो ७७॥ वर्जित दोष ७८ अतिशय ७९ वाणी ८० प्रातिहार्य ८१ सुरसव ८२ उमेदो ॥ प्रथम गणधर ८३ वली साधवी ८४ प, भक्तिवंत नृप नाम

८५ ॥ शासणाधिष्ठ जक्ष ८६ जक्षणी, ८७ गणधर ८८ संख्याभिराम ॥४॥ साधु ८९ साधवी ९० श्रावक, ९१ श्राविका, ९२ केवल ज्ञानी ९३ ॥ मन परजव ९४ अवधि धार, ९५ पूर्व धारक ९६ पहिचानी ॥ वैक्रियवंत ९७ वादी ९८ प्रत्येक बुध, ९९ प्रकीर्ण संख्या १०० परिमाणो ॥ महाव्रत १०१ संजम १०२ आवसग्ग, १०३ सर्व आयु १०४ तिथि निर्वाणो १०५ ॥ मोक्ष नक्षत्र १०६ स्थानक १०७ वली ए, मोक्ष आसण १०८ तप धार १०९ ॥ मोक्षवेला ११० परिवार तस, १११ युगांतकृत भूमि ११२ विचार ॥५॥ पर्यायांतकृत भूमि, ११३ मुनि प्रकृति ११४ वस्त्र वर्णो ११५ ॥ जन्म ११६ दीक्षा ११७ केवल, नक्षत्र ११८ श्रावक व्रत ठाणो ११९ ॥ आचार १२० आरो उत्पत्ति, १२१ धर्म भेद १२२ संजम गुण १२३ अणगारो १२४ ॥ सासण थिति १२५ इम बोल, एकसो पच्चीश सारो ॥ केइक चोथा अंगथी ए, केइक ग्रंथ विचार ॥ श्रोता ते अवधारजो, जिम टले कर्म विकार ॥ वरते मंगल चार ॥६॥

॥ हवे एकशो पच्चीश बोलमांथी प्रथम बोले

चोवीशे जिनना नाम कहे छे ॥

॥ जय जय आदि जिणंद, अजित संभव सुखकारी ॥ श्री अभिनंदन सुमति, पद्म सुपास विचारी ॥ चंदप्रभ श्रीसुविधि, शीतल श्रेयांस दयाला ॥ वासुपूज्य धन विमल, अनंत जिन धर्म कृपाला ॥ शांति कुंथु अर मल्ली नमु ए, मुनिसुव्रत नमि नेम ॥ पार्श्वनाथ वर्द्धमानजी, प्रणमु मन धरि प्रेम ॥ ७ ॥ १ ॥

॥ हवे समकित प्राप्त थया पछी चोवीशे जिननी भवसंख्या कहे छे ॥

॥ रिखभ जिणंद भव तेरा, चंद प्रभु सात लहीजें ॥ दुवादश शांति जिणंद, मुनिसुव्रत नव लीजे ॥ रिष्टनेमि नव, पार्श्व नाथ दश भव अधिकारा ॥ सत्तावीस वर्द्धमान, महोटा भवतणा विस्तारो ॥ शेष

जिन त्रिहुं त्रिहुं भणो ए, प्रथमाहे अधिकार ॥ समकित पाया तिहांथ की, भव सह्या सुविचार ॥ ८ ॥ २ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना पूर्वभव द्वीपना नाम कहे छे॥

प्रथम चार वली सोलमासु, चरम जिनवर लग जाणा ॥ जंबुद्वि पके माय, तीर्थंकर गात्र वधाणा ॥ नवमासु बारमा जाण, अर्ध पुष्क- रके माही ॥ शेष सात जिनराज, धातकी खंड लहाई ॥ तृतीय बोल इम द्विपनो ए, आगममें अधिकार ॥ सुगुणा जन हिय धारजो, अनु भव दृष्टि विचार ॥ ९ ॥ ३ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनां जन्मक्षेत्रनां नाम कहे छे ॥

॥ पहेलासु बारमा सुधी, पूर्व विदेह क्षेत्र कहीजें ॥ विमल धम जिन भरत, धातकी खंड ग्रहीजे ॥ जंबु पूर्व विदेह क्षेत्र, शांति कुंथु अर जाणुं ॥ जंबु पश्चिम विदेह, माहे जिनराज वखाणु ॥ अनंत ऐरवय धातकी ए, जंबु भरत मझार ॥ विशमासु छेला लगें, सदहो क्षेत्र सुमार ॥ १० ॥ ४ ॥

॥ पूर्वोक्त क्षेत्रमां चोवीश तीर्थंकरनी जन्म दिशा कहे छे ॥

॥ रिखभ सुमति सुविधि, शांति कुंथु जिनराया ॥ ए सितासु उत्तर माहे, सितोदा दक्षिण पाया ॥ विमल धम विशमाथी, छेला मेरु दक्षिण माइ ॥ मेरुथी उत्तर दिशा, अनंताजिन आदि उपाई ॥ शेष दिशी जगदीशजी ए, सीताथी दक्षिण मांय ॥ वर करणी पर भावथी, गोत्र तीर्थंकर पाय ॥ ११ ॥ ५ ॥

॥ ते पूर्वोक्त दिशामां पण चोवीश तीर्थंकरना जन्म सत्वधि विजयना नाम कहे छे ॥

॥ पुखलावती वच्छा रमणिजा, मंगलावती विचारो ॥ पद्मासुं आठमा सुधि, चार पहि नाम उचारो ॥ वली चारे पही रीत, नव मासु बारमा धारो ॥ मादपुरी रिष्ठा भद्दिल, पुंडरीक गणि खगपुरी

सारो ॥ सुसमा वीतसोगा चंपापुरि ए, कोसंबी राजगृही जाण ॥ अयोध्या अहिच्छत्ता चर्म जिन, विजयपुरी नाम प्रमाण ॥ १२ ॥ ६

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरोनां पूर्व भवना नाम कहे छे. ॥

॥ वज्रनाभ १ विमलवाहन, २ विपुलवल ३ माहाबल ४ नामें॥ आतिबल ५ अपराजित, ६ नंदि ७ पद्म ८ गुणधामो ॥ महापद्म ९ पउभ, १० नालिणी गुल्म ११ पद्मोत्तर १२ ॥ पद्मसेन १३ पद्मरथ, १४ दृढरथ १५ मेघरथ १६ नरवर ॥ सिंहावह १७ धन पति १८ वेश्रमणजी १९ ए, श्रीवर्म २० सिद्धारथ २१ सुप्रातिष्ठ २२ ॥ आनंद २३ नंदन २४ नामथी, करणी कीनी विशिष्ट ॥ १३ ॥ ७ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनी पूर्वभव पदवी तथा पूर्वभव ज्ञान तथा विशस्थानकमें कितरा सेवन कीनां? ते कहे छे. ॥

॥ पूरव भव जिनरिखभ, एकछत्र पदवी पाया ॥ भणीया चउदा पूर्व, करणी कारि मन वच काया ॥ शेष तेवीश मंडलीक, भण्या सहु अंगइग्यारा ॥ पेला छेला प्रभु वीश, वोल सेवन किया सारा ॥ वावीश जिन एक दोय त्रिहुं ए, सेव्यां स्थानक सार ॥ गोत्र तीर्थंकर बांधियुं, धन धन कृपावतार ॥ १४ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥

हवे ते चोवीश तीर्थंकरनी स्वर्गगति कहे छे.

सर्वार्थ सिद्ध १ विजय २ ग्रैवेयक, ३ जयंत ४ आभिनंदन ५ सुमति ॥ नमो छठ्ठा ६ ग्रैवेयक, ७ विजय ८ आण ९ अच्चुत १० उत्पत्ती॥ ॥ अच्चु ११ प्राण १२ सहसार १३, प्राणत १४ वालि विजय १५ विमाणो ॥ शांति १६ कुंथु १७ अर सर्वार्थ १८ सिद्ध, १९ मल्ली जयत प्रमाणो ॥ अपराजित २० प्राणत वली २१ ए, अपराजित २२ रिठ नेम ॥ पार्श्व २३ वीर प्राणतसुरें, २४ उत्कृष्टस्थिति सुख खेम ॥ १५ ॥ ११

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनी च्यवन कल्याण तिथि कहे छे. ॥

॥ आषाढमास वदि चोथ १, वैशाख शुद्ध तेरस जाणो २ ॥ फागुण आठम शुक्क, ३ वैशाख शुद्ध चोथ प्रमाणो ४ ॥ श्रावण उजली

बीज, ५ माघ वदि छठ कहीजें ६ ॥ अष्टमी माग्ध कृष्ण ७ कृष्णचै
त्र पचमी लीजें ८ ॥ वा॒ फागुण नोमी तिथि ९ प, वदि छट वै
शाख १० तिम ज्येष्ट ११ ॥ वासुपूज्य च्यवन कल्याणसों, ज्येष्ट शुदि
नवमी विशिष्ट ॥ १२ ॥ १६ उजली बारस वैशाख, १३ श्रावण वदि
सातम १४ आई ॥ वैशाख शुदि १५ माद्रवकृष्ण, १६ दोईमें तिथि
सातम ठाई ॥ नोमी श्रावण कृष्ण, १७ फागुण शुदि बीज उजाली
१८॥ फागण श्रावण १९ शुदि, चोथ २० पूनम सुविशाली ॥ चउ
दश उज्वल आसोजनी २१ प, कार्त्तिक वदि बारस २२ आण ॥ चोथ
चैत्र वदि २३ अषाढशुदि छठ तिथि २४ च्यवन कल्याण ॥ १७ ॥ १२ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरना च्यवन नक्षत्रनां नाम कहे छे ॥

॥ उत्तराषाढा १ रोहिणी नक्षत्र २, मृगशीर ३ पुनर्वसु ४ आ
यो ॥ मघा ५ चित्रा ६ विशाखा ७ अनुराधा ८ मूल ९ बतायो ॥
पूर्वाषाढा १० श्रवण ११, शतभिषा १२ माद्रपद उत्तरा १३ ॥
अनंत रेवती १४ पुष्य, १५ भरणी १६ शांति जिने कहि सुतरा ॥
कृत्तिका १७ रेवती १८ अश्विनी १९ प, श्रवण २० अश्विनी २१
धार ॥ चित्रा २२ विशाखा २३ हस्तोत्तरा, २४ च्यवन जिन नक्षत्र
विचार ॥ १८ ॥ १३

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना च्यवन समय तथा स्वप्न तथा स्वप्न
संख्या तथा स्वप्न सबधि विचार केने पूछ्यो ? ते कहे छे ॥

॥ सहु जिनवरनु च्यवन, थयुं आधीनेशि विरियां ॥ सहु दिना
चउदे स्वप्न, उत्तम उत्कृष्ट उच्चरियां ॥ निजपतिसू कह्या स्वपन,
नाभि कह्यो इद्रनी आग ॥ स्पपन पाठकसु तबीस, भूप परसन्न
विधि धागे ॥ दान मान दई भेजिया प, आनद अग अपार ॥ पुण्य
दशा परभावथी, सुखें रह्या गर्भमझार ॥ १९ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६॥ १७॥

॥ चोवीश तीर्थंकरनी जन्म तिथि तथा ज मवेळा कहे छे ॥

॥ चैत्र वदि १ महा शुद्ध, २ दोईमें अष्टमी सारा॥ महा शुद्ध चउद

दश ३ दूज, ४ मास पक्ष से हि विचारो ॥ अष्टमी शुकल वैशाख, ५ कार्तिक वदि ६ बारस धारो ॥ बारस उजली ज्येष्ट. ७ पोष वदि बारस जहारो ८॥ मगशिर ९माघ वदि १० पचमी बारस ए, बारस फागुण वदि ११ जाण ॥ चउदश फागण वदि १२ शुद्ध त्रीज माहा, १३ बैशाख वदि तेरश १४ प्रमाण ॥ २० ॥ त्रीज महा शुध्द १५ ज्येष्ठ, वदि तेरश १६ दरसाई ॥ वदि चउदश वैशाख, १७ मृगाशिर शुध्द दशमी १८ ठाई ॥ मृगाशिर शुध्द इग्यारस १९, ज्येष्ठ वदि अष्टमी ठाणो २० ॥ अष्टमी श्रावण वदि २१, श्रावण शुद्ध पंचमी २२ जाणो ॥ पोष वदि तिथि दशमी २३ ए, चैत्रशुद्ध तेरश मांय २४ ॥ अर्धरात ढलीयां सहु, जन्म्या श्री जिनराय ॥ २१ ॥ १८ ॥ १९ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरना जन्मदेशना नाम कहे छे. ॥

॥ पहेलासुं पंचमा लगें, देश कोशल । १ । २ । ३ । ४ । ५ ।। वच्छ ६ काशी ७ ॥ पूर्व देश ८ प्रसिद्ध ९, मलय १० वली अ प्रसिद्ध ११ विमासी ॥ अंगदेश १२ पांचाल, १३, कोशल १४ धर्मजिन अप्रासिद्धो १५ ॥ शांति १६ कुंथु १७ अरनाथ, जन्म कुरु १८ देशमें लीधो ॥ विदेह १९ मगध २० विदेहमें २१ ए, कुशावर्त्त २२ काशी २३ विशाल ॥ पूर्वदेश २४ आरज विषे, जन्म्या दीनदयाल २२॥२०॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरनी नगरी कहेछे ॥

॥ इक्खागभूमि १ अयोध्या २ जाण, सावत्थि ३ अयोध्या ४ कहीयें ॥ कंचनपुर ५ कोसंबी, ६ बणारसी ७ चंदपुरी ८ लहीयें ॥ काकंडी ९ भद्दिलपूर १०, सिंहपुर ११ चंपा १२ जाणो ॥ कंपिलपुर १३ अयोध्या १४, रत्नपुर १५ नाम बखाणो ॥ हथिणापुर १६ गज १७ नाग ए, १८ मिथिला १९ राजगृहि २० ठाम ॥ मथुरा २१ सोरीपुर २२ बणारसी, २३ कुंडलपुर २४ जन्म धाम ॥ चोवीश जिन जन्मधाम ॥ २३ ॥ २१ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरनी मातानां नाम कहे छे ॥

॥ मरुदेवी १ विजया २ सेना, ३ सिद्धार्था ४ नामें देवी ॥ मंगला ५ सुसीमा ६ पृथिवी, ७ लखमणा ८ रामा ९ कवी ॥ नदा १० विष्णु ११ जया १२ श्यामा १३ सुजसा १४ जाणी ॥ सुव्रता १५ अचिरा १६ श्रीनाम १७ देवी माता १८ गुणखाणी ॥ प्रभावती १९ पद्मावती २० ए, वप्रा २१ शिवा २२ सुखकार ॥ वामा २३ त्रिशला २४ जाणीयें, प्रभु जननी सुविचार ॥ २४ ॥ २२ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरना पितानां नाम कहे छे ॥

॥ नाभि १ जितशत्रु २ जितारि, ३ संवर ४ मेघ ५ श्रीधर ६ राया ॥ प्रतिष्ठ ७ महासेन ८ सुग्रीव ९, दृढरथ १० विष्णु ११ कहाया ॥ वासुपूज्य १२ कृतवर्म, १३ सिंहसेन १४ भानु कहीयें ॥ १५ ॥ विश्वसेन १६ सुरराय १७ सुदर्शन १८ कुंभसु लहीयें १९ ॥ सुमित्र २० विजय नरपति २१ कह्या ए, समुद्रविजय २२ सुविख्यात ॥ अश्वसेन २३ सिद्धारथजी, २४ ए चोविश जिन तात ॥२५॥२३॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरना पितानी गति कहे छे ॥

रिखभ जिनेश्वर तात, नागकुमारनी माई ॥ ईशान कल्पनी मांय, दुमासुं आठमा ताई ॥ नवमासु सोलमा जाण, गया कल्प सनत्कुमारो ॥ सतरमासु तेवीसमा तणा, गया महेंद्र मझारो ॥ सिद्धारथ स्वर्ग बारमा ए, रिखभदत्त शिववास ॥ अजर अमर सुख पाइया, प्रणमुं नित्य उल्लास ॥२६॥ २४॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरनी मातानी गति कहे छे ॥

॥ प्रथमसु अष्टमा लगें, वरजिन नदा माई ॥ पहोती मुक्ति मझार, नवमासु सोलमा ताई ॥ पहोती सनत्कुमार, त्रिशला अच्चु स्वर्गमझारो ॥ सत्तरमाथी त्रेवीश, जिनंदजननी सुविचारो ॥ महेंद्र कल्पें गइ महासती ए, पाइ सुख श्रेयकार ॥ केइ हवे जाशे शिवपुरी, केइ गइ मुक्ति मझार ॥ २७ ॥ २५॥

हवे चोवीशे तीर्थंकरनां जन्म कल्याणकमां दिक्कुमारिका तथा इंद्रो आव्या ते तथा चोवीशे तीर्थंकरनां गोत्र, अने वंश कहे छे ॥

॥ जाणी प्रभुनो जन्म, छपन्न कुमारी आई ॥ सहुना चोसठ इंद्र, मोच्छव मेरु गिरि कियो जाई ॥ मुनिसुव्रत रिष्टनेमि, गोत्रवर गौतम पाया ॥ हरिवंश अवतंस, जगमें प्रसिद्ध कहाया ॥ काश्यप गोत्री शेष जिन सहु ए, इक्ष्वाकु वंश तस जाण ॥ वसुधर कुल जातमें, जन्म लियो जगभाण २८॥ २६॥ २७॥ २८॥ २९॥

॥ हवे चोवीश जिननां यथागुण विशेषनाम कहे छे. ॥

॥ प्रथम वृषभनुं स्वपन, देखि जननी हरखाणी ॥ तिणथी रिखभ कुमार, नाम स्थापनविधि जाणी ॥ गर्भमांय जिनराय, पासा रमतां राय राणी ॥ राणी 'जीत विचार, अजित जिन नाम पहिछानी॥ प्रभुजी गर्भमें आविया ए, दुष्काल टल्यो तिण वार ॥ धान्य संभव थयो ते भणी, संभव नाम उदार ॥ २९ ॥ गर्भमांय जिणवार इंद्र जयकार उच्चार्यो ॥ उपनो आनंद ताम, नाम अभिनंदन धार्यो॥ सुमति उपनी मात, शोक्यपुत्र न्याय सु कीनो ॥ जाणी गर्भ प्रभाव, सुमति सुत नामज दीनो ॥ पद्म कमल शय्यापर ए, सुवर्णना दोहलो थाय ॥ नाम पद्मप्रभुजी तणुं, थयु प्रसिद्ध जगमांय॥३०॥ पासा खरधरां मात, सुंदर थयां गर्भ प्रभावे ॥ दियो सुपारस नाम, मात चंद्र पियण उमावे ॥ चंद्रलंच्छन चंद्रवर्ण, चंद्रप्रभ नाम कहावे॥ सुविधे थयो सहु, सुविधि जिन नाम विख्याता ॥ भूप दाहज्वर जाग, राणी कर फरसथी शाता॥ तिणथी शीतल कुमरसु ए, नाम दियो हित धार ॥ द्रव्य भाव शीतल प्रभु, नामथकी निस्तार ॥ ३१ ॥ क्रूरदेव मणिगाढ, जनाने दोहलो तिही खेलण ॥ जावतां श्रेय थयो देव, श्रेयांस सुत नाम सुमेलण ॥ त्रिकट देवघर वास, वसण दोहलो थयो माई ॥ वसतां पूज्या सो सुरें, वासुपूज्य नाम थपाई ॥ तन मति विमल थई मातनी ए, दियो विमल सुत नाम ॥ मात देखी अनतमणिमालथी,

अनंत अनम गुणधाम ॥ ३२ ॥ धर्म इच्छा गर्भतरमात, धर्म जिन नाम प्रसिद्धा ॥ शांति करी पुर माय, शांति प्रभु न मज दीधा ॥ अरि थया कंथुआ जम कुंथु प्रभु नाम थपाणा ॥ रत्नमय आरा दिठया, अरह जिन नाम कहाणा ॥ फूलसेजे सपन दोहला प, मल्लो सुनाम उदार ॥ मुनि जिम माता भावधो, मुनिसुव्रत सुविचार ॥ ३३ ॥ शत्रु नमाड्या सर्व, नमी जगमाहा कहाया ॥ अरिष्ट रत्न दस्यो चक्र, अरिष्टनमिनाथ सुहाया ॥ कृष्ण सप विंटी सज, माता निज हाथ हठाया ॥ पार्श्वनाथ पुरिसादाणी, प्र सिद्ध खट मतमें गाया ॥ वृद्धि थई ऋद्धि संपदा प, तिण कारण वधमान ॥ इंद्र दियो महावीर, जय जय जय जगभान ॥ ३४ ॥ ३० ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनां चिन्ह तथा लक्षण कहे छे ॥

॥ वृषभ १ गज २ हय ३ कपी४, भारडपंखी ५ चिन्ह सोहे ॥ पद्म ६ साथीयो ७ चंद्र ८, मकर ९ श्रीवच्छ १० मन मोहे ॥ गेंडे ११ माहिप १२ वाराह १३ सिंचाणो १४ वज्र १५ कहीजे ॥ हारिण १६ बकरो १७ नंदावर्त १८ कलश १९ काछ्वो २० सुमहीजे ॥ नीलोत्पल २१ शंख २२ सप २३ प, सिंह २४ चिन्हथी ओलखाण ॥ एक सहस्र अष्ट लक्षण भलां, सहु जिननु परिमाण ॥ ३५ ॥

॥ हवे चोवीश जिनना वर्ण तथा बल कहे छे ॥

॥ चंद्रप्रभजी ने सुविधि, दोय जिन शुक्ल सुहावे ॥ पद्मप्रभ वासुपूज्य, देहद्युति रक्त कहावे ॥ मल्लिनाथ श्रीपार्श्व, नीलवर्ण दमके काया ॥ मुनिसुव्रत रिष्ट श्याम, रंगे अधिक सुहाया ॥ शेप शाल जिनवर सहु प, कंचन वर्ण शरीर ॥ अनंतबल सहु जिन तणु, घन घन साहस धीर ॥ ३६ ॥ २३ ॥ ३४ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनी अवगाहना उष्छेदांगुल तथा आत्मांगुले कहे छे ॥

॥ धनुष पांचसें १ उष्छेदांगुल, साढी चारसो २ जाणो ॥ चारसें ३ -

साडीतिनसें, ४ तीनसें ५ अढिसें ६ बखानो ॥ दोयसें ७ देढसें ८ सोय ९, नेउ एंशी कह्या ईसो ॥ सित्तेर साठ पचास, पेंतालीस चालीस पेंतीसो ॥ तीस पच्चीस वीस पनरा दश ए, हस्त नव सात विचार ॥ एकसो वीश आत्मांगुलें, जाणो जग किरतार ॥ ३७ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरने आहार, तथा विवाह, तथा लोकांतिकें देवोनी स्तुति तथा दान दीधुं, ते कहे छे. ॥

॥ प्रथम कल्पतरु आहार, शेष विशिष्टज लीनो ॥ मल्ली रिष्टनेमि वर्जि, शेष सहु व्याहज कीनो ॥ सहुने लोकांतिक देव, कह्युं प्रभु भविजन तारो ॥ जाण्यो संजम समय, प्रभु दियो दान उदारो ॥ सोनईयो सोल मासानो ए, तीनसें अठ्याशी कोड ॥ एंशी लाख उपर वली, एक सवच्छर जोड ॥३८॥३७॥३८॥३९॥४०॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनी कुमारस्थिति कहे छे ॥

॥ पूरव विश लख १ अढार २, पनरा ३ साडीबारा ४ दशो ५॥ साडिसात ६ पंच ७ अढी ८ पूरव सहस्र पच्चासो ९ पूर्वसहस्र पच्चीश १०, वर्ष एकविश ११ लक्ष जाणो ॥ अठारे १२ पनरा १३ साडी सात १४, अढीलक्ष १५ धर्म बखाणो ॥ सहस पचीश १६ तेवीस १७ एकवीस १८ ए, सो १९ साडि सात २० हजार ॥ अढाई सहस्र २१ तीनशें २२ त्रीश २३ त्रीश २४, बरस रहिया स्वामि कुमार॥३९॥४१॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनी राजास्थिति कहे छे. ॥

॥ पूरव त्रेसठ लाख १ त्रेपन २, चुमालीश ३ साडी छत्रीशो ४ ॥ गुणातिस ५ साडी एकवीश ६ चउदे ७, खट ८ एक ९ एक १० जगीशो ॥ पूरव पचास हजार ११ बरस, बयालीस लाखो १२ ॥ वासुपूज्य बर्जित त्रिश १३, वीश १४ पंद्रा १५ पंच १६ दाखो ॥ पचास सहस्र १७ साडिसहेंतालीस १८ बइयालीस ए १९, मुनिसुव्रत पंद्रा हजार २० ॥ नमी पंच २१ शेष तिहुं मेली २२ २३ २४, राजपदनो परिहार ॥ ४० ॥ ४२ ॥

॥ हवे चोवशि तीर्थंकरनी शिविकानां नाम कहे छे ॥

॥ सुदसणा १ सुप्रभा, २ सिद्धार्था ३ अर्थ सिद्धा ४ कहीयें॥ अभयकरा ५ निवृत्तिकरा ६, मनोहरा ७ मनोरमा लहियें ८॥ सुरप्रभा ९ शुक्रप्रभा १०, विमल प्रभा ११ नाम वखानी ॥ पृथिविनाथा १२ देवदिन्ना १३, सागरदत्ता १४ नागदत्ता १५ जाणी ॥ सर्वार्था १६ विजया १७ विजयतीका ए १८, जयती १९ अपराजिता २० धार ॥ देवकुरा २१ धारावती २२, विशाळा २३ सुचद्रप्रभा २४ शिविका सार ॥ ४१ ॥ ४२ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनी दीक्षातिथिनां नाम कहे छे ॥

चैत्र वदि आठम १ नोम महा २ पूनम मार्गशिरकी ३॥ महा शुद्ध द्वादशी ४ शुद्ध वैशाख नोमी ५ जिनवरकी ॥ कार्तिक वदि ६ जेष्ट शुद्धि ७ पोष वदि ८, त्रिहु तेरश तिथि जाणो॥ मार्गशिर वदि तिथि छठ, माघ ९ वदि बारस १ ठाणो॥ फागण वदि तरश तिथि ए, ११, फागण अमावस १२ जाण ॥ माघ शुक्ल तिथि चतुर्थी १३, विमल जिन दीक्षा कल्याण॥४२॥ वैशाख कृष्ण चउदश १४, माघ शुक्ल तेरस धारो १५ ॥ ज्येष्ठ वदि चउदश १६, वैशाख शुद्ध पचमी १७ सारो ॥ इग्यारस १८ शुद्ध माघ, १९ म ल्लिजिन एह तिथि आई ॥ फागण शुद्ध द्वादशी, २० आषाढ वदि नोमी २१ कहाई ॥ श्रावणशुद्ध छठ २२ नेमजी ए, पोष वदि दशमी २३ जाण॥ मार्गशिर वदि दशमी २४ इम, जिन दीक्षा कल्याण॥४३॥४४॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनां वय तथा दीक्षा तप कहे छे ॥

॥ वासुपूज्य मल्लि नमी, नेमी पारस वर्धमानो ॥ प्रथमवयली दीक्षा, शेष जिन अंत वय मानो ॥ वासुपूज्य तप चोथ, अठम तप मल्लि जिन पासो ॥ सुमति जिन कर आहार, दीक्षा लिनी सुउल्हासो ॥ शेष वशि जिनेश्वर ए, छठ तप सजम धार॥ दीक्षा ली जगदीश जी, धन धन प्रभु अवतार॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरनो परिवार कहे छे ॥

॥ चार सहस्र नर साथ, रिखभ प्रभु दीक्षा धारी ॥ छशे श्री वासुपूज्य, मल्लि तीनशे परिवारी ॥ तीनशे पारस नाथ, चरम जिन एकलविहारी ॥ शेष ओगणीश जिनराज, एक एक सहस्र उच्चारी ॥ इणाविध चोवीश जगदीशने ए, दीक्षासमय परिवार ॥ तप जप करी जिण शिव वरी, प्रणमुं वारं वार ॥ ४५ ॥ ४७ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनां दीक्षापुर दीक्षावन कहे छे ॥

॥ रिखभ अयोध्या नेम द्वारका, शेष जन्म पूरमें धारी ॥ आदि जिनंद सिद्धार्थ, वनमें भये अणगारी ॥ दूजाथी ग्यारमा लगें, सहस्राम्र वन विचारी ॥ विहार गृह दोय सहस्राम्रवप्र, शांतिथी मल्लि उच्चारी ॥ ए चिहूं सहसावन कह्यां ए, नील गुहान सह सावन जाण ॥ आश्रमपद ज्ञात खंडमें, दीक्षावन पहिचान ॥ ४६ ॥

॥ हवे चोवीश जिननां दीक्षातरु, तथा दीक्षा वेळा, दीक्षा लेती कया वखत तीर्थंकरें केटली मुष्टिनो लोच कर्यो ते, तथा तेमनुं संयमज्ञान, दुष्यमोल, दुष्यस्थिति कहे छे ॥

॥ सर्व अशोक तरुतलें, संयम समे ज्ञानज चारो ॥ रिखभ जिनंद चउमुष्टि, शेष पंच मुष्टि उच्चारो ॥ सुमति श्रेयांस नेमी पार्श्व, पूर्वान्हें दीक्षा कालो ॥ शेष पाश्चिमान्ह समे, दीक्षा लीनी उजमालो ॥ प्रथमसुं त्रेविशमा लगें ए, देव दुष्य सदा जाण ॥ वर्ष जा जेरो वीरने, लेखामें परिमाण ॥ ४७ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरमां कया तीर्थंकरें शेनो दिव्य आहार कर्यो तथा कया तीर्थंकरनो केटलो पारणाकाल ? ते कहे ॥

॥ रिखभ जिनंदे आहार, प्रथम इखुरसनो कीयो ॥ शेष जिनंदने खीर तणो, भोजनवर लीयो ॥ रिखभ जिनंदनो पारणो, आयो बारे मासी ॥ शेष जिनंदनो पारणो, आयो दुजे दिन विमासी ॥ धन धन

दीन दयालजी ए, जगतपति जगदीश ॥ शम दम उपशम सागरू, वदू में निश दीश ॥ प्रणमु में० ॥ ४८ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना पारणानां नगर कहे छे ॥

॥ गजपुर १ अयोध्या २ सावात्थि ३, अयोध्या ४ विजय ५ पुर घीनो ॥ ब्रह्मस्थलें ६ पाडली ७, पद्म खड ८ श्वेतपुर ९ कीनो ॥ रिष्ट १ सिघस्थ ११ महापुर, १२ धनक १३ वर्धमान पुरमाइ १४ ॥ सोमणस १५ ग्राममदीर १६, चक्रराज १७ पुरठाई १८ ॥ मिथिला १९ राजगृहि २० वीरपुर २१ ए, द्वारिका २२ कोप कटग्राम २३ ॥ कोलाग सन्निवेश २४ माहावीर इम, पारणा तणा पुर धाम ॥४९॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना प्रथम दातार कहे छे ॥

॥ सिज्जस १ ब्रह्मदत्त २ नाम, सुरिंददत्त ३ इंद्रदत्त ४ वखाणो ॥ पद्म ५ सोम देवनाम, ६ महिंद ७ सोमदत्त ८ सो जाणो ॥ पुष्प ९ पुनर्वसु १० नद ११, सुनंद १२ जय १ असधारी ॥ विजय १४ धर्म सिंह १५ सुमित्र १६, व्याघ्र सिंहनाम १७ विचारी ॥ अपराजित १८ विश्वसेनजी १९ ए, ब्रह्मदत्त २० दिन्न २१ उदार ॥ वरादिन्न २२ धन २३ बहुल २४ कह्या, प्रथम दान दातार ॥५०॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरने प्रथम दान देनारनी गति तथा पंचदिव्य तथा वसुधारा, तथा क्षेत्र विहार कहे छे ॥

॥ पहेलासु आठमा तणा दातार, तिणभव शिव पाइ ॥ नव मासु छेला लगें, मुक्ति त्रीजा भव मांइ ॥ पच दिव्य सहुने अभण, साढो बारा काडी वसुधारा ॥ रिखभ छेला जिन तीन, आर्ज अनार्ज विहारा ॥ शेष वीश जिनराजजी ए, आरज देश मझार ॥ विचन्या दीनदय ल अी, करवा पर उपगार ॥ ५१ ॥ ६० थी ६३ ॥

॥ हवे च.वी.श ीर्थंकरना उत्कृष्ट तप, तथा अभिग्रह, उपसर्ग अने प्रमाद काल कहे छे ॥

॥ रिखभ जिनंद शासन उत्कृष्ट, तप वारें मासी ॥ बिजासु त्रेविश

मा लगें, तप अठ्ठमासी विमासी ॥ वर्धमान खटमासी सर्व, अभिग्रह द्रव्यादिक चारो ॥ उपसर्ग पारस वीर, शेष सहुने परिहारो ॥ प्रमाद काल श्रीरिखभने ए, एक अहोरात्र उच्चार ॥ अंतर मुहूर्त्त श्रीवीरने, शेष सहुने परिहार ॥ ५२ ॥ ६४ थी ६७ ॥

॥ हवे चोवीस तीर्थंकरनों छद्मस्थकाल कहे छे ॥

॥ सहस्र वर्ष १ वारा २ चउदा, ३ अठारा ४वीश विवेको ५ ॥मास ६ छ ७ नव ८ चार ९ तीन, १० दोईने ११ एक १२ एको १३ ॥ तिन १४ दोय १५ एक १६ एक १७ नव, १८ मल्ली जिनने एक १९ पहेरो ॥ इग्यारा मास २० नव जाण, २१ चोपन दिन नेमजी हेरो २२ ॥ रात्रि त्र्याशी पारस प्रभु २३ ए, साडीवारा वरस विचार ॥ उपर पंदरा दिन चरम २४, छद्मस्थकाल सुमार ॥ ५३ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनी केवलज्ञाननी तिथि कहे छे. ॥

॥ फागण वदि १ पोष शुद्ध, तिथि इग्यारस २ आइ ॥ पंचमी कार्त्तिक कृष्ण ३, पोष शुदि चौदश ४ ठाई ॥ चैत्र शुद्ध इग्यारस, ५ चैत्रकी पुनम ६ कहीयें ॥ फागण वदि छठ सातम ७।८, कार्त्तीक शुद्ध तीज सुगाहियें ९ ॥ पौष वदी चउदश १० माघ अमावस ११ ए, बिज माघ शुकल वखाण १२ ॥ शुद्ध पौष छठ्ठ १३ श्रीविमलजिन, जाणो सुकेवल कल्याण ॥ ५४ ॥ वैशाख वदि चउद शी १४, पौष शुद्ध पूनम १५ सारो ॥ पौष १६ चैत्र शुद्ध नौमी १७, तेज अनुकर्में बिचारो १८,॥ कार्त्तिक शुद्ध द्वादशी १९, माघ शुद्ध ग्यारस धारो २० ॥ फागण द्वादशी कृष्ण २१, माघ शुद्ध इग्यारस जहारो ॥ अमावस आसोजनी ए २२, चैत्र चोथ वदि २३ ठाण ॥ वीर वैशाख शुद्ध दशमी २४, जाणो केवल कल्याण ॥ ५५ ॥६९ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनां केवलज्ञाननां नगर कहे छे ॥

॥ पुरिमताल १ अयोध्या २ सावत्थी ३, दोय वाले अयोध्या

स्थानो ४१५ ॥ कोसम्बी ६ वाणारसी, ७ चन्द्रपुरी ८ कातिपुर ९ मानो ॥ भद्दिल १० सिंहपुर ११ चपा १२, कपिल्पुर १३ अयोध्या ठाणो १४ ॥ रतनपुर १५ शाति १६ कुथु १७, अरह १८ गजपुर पहिचानो ॥ मिथिला १९ राजग्रहि २० मिथिला ए २१, रेवतका चल २२ जाण ॥ वाणारसी २३ जंभिक ग्राममें २४, पाया केवल नाण ॥ ५६ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरना कवलज्ञान पामवानां स्थान तथा कटल तपें केवलज्ञान उत्पन्न थयु ? ते कहे छे ॥

॥ आदि जिनंद शकट मुख, दुजासु इग्यारमा ताई ॥ सहस्राम्र विहारग्रह जाण, विमलजीसँ पार्श्वे लहाइ ॥ आश्रम पद कहु स्थान, सलीला रजु वालुका आइ ॥ केवल वन विचार, रिसभ तप अष्टम माइ ॥ वासुपूज्य मह्ली नेमजी ए, पार्श्व चोथ तप माय ॥ शेप ओगणीश छट्ठ तपविषे, ज्ञान केवल प्रगटाय ॥ ५७ ॥ ७१॥ ७२॥

॥हवे चोवीश तीर्थंकरोने जे वृक्षोनी नीचें कवलज्ञान उपनु ते वृक्षनां नाम, तथा अशोक वृक्षोनी उचाइ कहे छे ॥

॥ वड १ सत्तवण २ शाली ३ राजादनी ४ प्रियगु सुहावे ५॥ छत्ताइना ६ सरस ७ नाग ८, मल्लिका ९ विल्व १० तिंदुक ११ कहावे ॥ पाडल १२ जंबू १३ अश्वत्थ १४, दहीवन १५ नंदि १६ भिलक्की छाया १७ ॥ आम्र १८ अशोक १९ चपक २०, वकुल २१ वेडस तलें आया २२ ॥ धातकी २३ शाली २४ उच पणे ए, देहथी धार गुणा जाण ॥ शासनपति श्रीवीरने एकत्रिश धनुष्य प्रमाण ॥ ५८ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनी केवल ज्ञाननी वेला, तथा प्रथम समवस रणमें तीर्थ स्थापन तथा जिनांतरें तीर्थ विच्छेद कहे छे ॥

॥ रिखभ जिनदसें पार्श्व लगें, कवल पूर्वान्हें ॥ महावीर गुण धीर केवलवेला पश्चिमान्हें ॥ प्रथम समोसरण माय, तीरथ थाप्या

तेवीशो ॥ छेला दूजा मांय, तीर्थ थाप्यां जगदीशो ॥ नवमासु सोलमा विचे ए, सात अतरा मांय ॥ तीर्थविच्छेद थयो तिहां. भांख्यो श्री जिनराय ॥ ५९ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थकरने दोष वर्जितपणुं तथा अतिशय तथा वाणी तथा प्रातिहार्य तथा देवसेवा कहे हे ॥

॥ अठरा दोष वर्जित, सकल जिनवर सुखदाता ॥ चोत्रीश अतिशयधार, पेतिस वाणी सुविख्याता ॥ सहुने प्रातिहार्य आठ, ठाठ माहापुण्यसे पाया ॥ एक कोटी सहुने देव, सेव करे ललसन उलसाया ॥ धन धन दीन दयानिधि ए, अनंत गुणातम देव ॥ मन वच काय करी सदा, द्यो प्रभु अविचल सेव ॥ ६० ॥ ७८ थी ८२ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थकरना प्रथम गणधर कहे छे ॥

॥ पुंडरीक १ सिहसेन २, चारु ३ वज्रनाभ ४ कहीजें ॥ वरम ५ प्रद्योतन ६ विदर्भ ७, दीन ८ वराहक ९ गहिजे ॥ नंद १० कच्छप ११ सुभूम १२, मंदर १३ जस १४ अरिष्ट १५ गुणवंता ॥ चक्रायुध १६ सांव १७ कुंभ १८, अभिक्षक १९ मल्लि २० महंता ॥ शुभ २१ वरदत्त २२ आर्यदिन्न २३ ए, इंद्रभूति २४ गणधार ॥ ए चोवीश जिनना प्रथम, प्रणमु नित अणगार ॥ ६१ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थकरनी प्रथम साधवी कहे छे ॥

॥ ब्राह्मी १ फल्गुणी २ श्यामा ३, अजिता ४ काश्यपी ५ जाणो ॥ रति ६ सोमा ७ सुमना ८, वारुणी ९ सुजसा १० बखाणो ॥ धारणी ११ धरणी १२ धरा १३, पद्मा १४ आर्यशिवा १५ सती ॥ सूचि १६ दामिनी १७ रक्षिता १८ वंदु बंधुमती १९ पुष्पवती २० ॥ अनिला २१ जक्षदिन्ना २२ पुप्फचुला २३ ए, चंदनबाला २४ नाम ॥ ए चोविश वडि समणीने नित नित होजो प्रणाम ॥ ६२ ॥ ८४ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थकरना भक्तिवंत राजा कहे छे ॥

॥ भरत १ सगर २ अमितसेन ३, मित्रवर्य नृप ४ सारो ॥ शतवीर्य

५ अजितसेन, ६, दानवीय ७ मघवा ८ धारो ॥ वृद्धिवीर्य ९ सिमधर १० त्रिपृष्ट ११ द्विपृष्ट १२ नृप जाणा ॥ स्वयभु १३ पुरुषोत्तम नाम १४, पुरुषसिंह १५ कोणाल १६ वखाणो ॥ कुबेर १७, सुभूमजी १८ जित १९ विजय २० ए, हरिषेण २१ कृष्ण २२ उदार ॥ प्रसेनजित २३ श्रेणिक २४ चरम, भक्तिवना नृप धार ॥

॥ हवे चावीश तीर्थकरना शासनना यक्ष कहे छ ॥

॥ गामुख १ महायक्ष २, त्रिमुख ३ नायकमुख ४ कहिये ॥ सुवुरु ५ कुसुम ६ मातग ७, विजय ८ जित ९ ब्रह्मा १० लहीयें ॥ जक्षट ११ कुमार १२ षण्मुख १३, पाताल १४ किंनर १५ गरुड १६ धारो ॥ गधर्व १७ यक्षट १८ कुबर १९, वरुण यक्ष २० भृकुटि २१ विचारो ॥ गोमेद २२ पार्श्व २३ मातग २४ नामें ए, सासणाधिष्ट यक्ष जाण ॥ प्रभु समरण कर भावथु, हरे सकट हित आण ॥६४॥८६॥

॥ हवे चावीश तीर्थकरनी अधिष्टायिका यक्षणी कहे छे ॥

॥ चक्रेसरी १ अजितबला २, दुरितारि ३ कालिका देवी ४ ॥ महाकाली ५ श्यामा ६ शाति, ७ भृकुटी ८ सुतारिका ९ लेवी ॥ अशोका १० मानवी ११ चडा १२, विदिता १३ अकुशा १४ जक्षणी ॥ कदर्पा १५ निर्वाणी १६ बला १७, धणा १८ धरणी प्रिया १९ प्रभु यक्षणी ॥ नरदत्ता २० गधारी २१ अंबिका ए २२, पद्मावती २३ सिद्धायिका २४ नाम ॥ सासणाधिष्ट ए जक्षणी, सारे वछित काम ॥६५॥

॥ हवे चावीश तीर्थकरना गणधरनी सख्या कहे छे ॥

॥ चोरासी १ पचाणु २ जाण, एकसो दाय ३ सुजाना ॥ एकसो इग्यारा ४ साय, ५ एकसो सात ६ पिछानी ॥ पचाणु ७ त्राणु ८ गिणत, अट्यासी ९ बयासी १० सामी ॥ सत्तातर ११ गुणसित्तर १२ सत्तावन १३, पचास १४ सा ने नमु गिर नामी ॥ पेंतालीस १५ छत्तीस १६ पेंतीस १७ वली ए, तातिस १८ अठ्ठाविस १९ अढार

२० ॥ सतरे २१ इग्यारे २२ दश २३ इग्यार २४ ते, प्रणमुं प्रभु गुणधार ॥ ६६ ॥ ८८ ॥

॥ हवे चोवीस तीर्थंकरना साधुनी संख्या कहे छे. ॥

॥ सहस्र चोराशी १ एकलक्ष २, दोय ३ तीनलक्ष ४ विचारो ॥ तीनलख पर सहस्र वीश ५, तीन लक्ष तीस हजारो ६ ॥ लक्ष तीन ७ अढी ८ दोय ९ एक १० चोरासी सहस्र ११ अणगारो ॥ वहोत्तर १२ अडसठ १३ छासठ १४, चोसठ १५ बासठ १६ रिख धारो ॥ साठ १७ पचास १८ चालीस १९ वली ए, त्रीश २० वीश २१ अढार २२ ॥ सोला २३ चवदा २४ सहस्र सव, वदूं प्रभु अणगार ॥६७॥८९॥

॥ हवे चोवीस तीर्थंकरनी साधवीनी संख्या कहे छे. ॥

॥ तीन १ लक्ष तीन २ तीन ३ खट ४ पांच ५, चउ ६ चउ ७ तीन ८ एक ९ एक १० एको ११ ॥ दुजासुं ग्यारमा लगें, सहस्र अनुक्रमें विवेको ॥ त्रीश २ छत्रीश ३ त्रीश ४ त्रीश ५, वीश ६ त्रीश ७ अशी ८ वीशो ९ खट १० तीन ११ सहस्र एक लाख १२, एकलख १३ आठसें श्रमणीसा ॥ बासठ १४ बासठ सहस्रपरचारशे ए १५, इगसठ १६ सठ १७ छछशे धार ॥ साठ १८ पचावन १९ पचास, २० इगतालीस २१ चालीस २२ कही, अडतीस २३ छत्तीस २४ धार ॥ प्रभु श्रमणी परिवार ॥ ६८ ॥ ९० ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना श्रावकोनी संख्या कहे छे.॥

॥ आदिनाथ तीन लाख, दुजासुं पदरमा तांई ॥ श्रावक दोय दोय लाख, (१६ मासुं २४ मा लगे एक लाख छे) उपर एक एक लाख कहाई ॥ सहस्र पच्चाश अठाणुं, त्राणुं अठ्याशी इक्याशी ॥ छिहतर सतावन पचास, गुनातिस नेव्याशी उगणयासी ॥ पन्नर आठ छ चार नेउं ए, नेव्याशी चोरासी धार ॥ त्र्यासी बहोत्तर सित्तर गुणसितरा, चोसठ गुणसठ सार ॥ समजो उपर हजार ॥६९॥९१॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरनी श्राविकानो परिवार कहे छे ॥

॥ लक्ष पच पच छ पच, पंच पच उपरंत चारो ॥ (सोल मासू २४ मा ताई त्रण लाख उपरान्त हजार छे) सोलमासुं तीन तीन लक्ष, उपरत सख्या चोपन हजारो ॥ पेंतालीस छत्रीस सचा वीस, सोळा पच त्राणु नेव्याशी ॥ एकोतेर अठावन अडता लीश, छत्तीस चोवीस चउदे बिमासी ॥ तेरे त्राणु इक्यासी बहोत्तेर ए, सित्तेर पचास अडतालीश ॥ छत्रीस गुणचालीश अठारा, सहस्र, श्राविका कहि जगदीश ॥ ७० ॥ ९२ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरने केवलीनो परिवार कहे छे ॥

॥ सहस्र वीस १ बात्रीस, २ पदरा ३ चउदा ४ तेरा ५ ॥ बारे ६ इग्यारे ७ दश, ८ सहस्र साढीसात ९ भलेरा ॥ सात १ साढी छ ११ खट १२, साढीपच १३ पंच १४ साढीचारो १५ ॥ त्रेंता लीशे १६ बत्तिशें १७, अठ्ठाविशशें १८ बावीससें १९ बारो ॥ अठारासें २० सोळासें २१ पन्नरसें ए २२, पारस एक हजार २३ ॥ सातसें २४ केवली वीरने, प्रणमूं ते सुखकार ॥ ७१ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरना मन पर्यव ज्ञानीनी सख्या कहे छे ॥

॥ पुनि तेरा १ हजार बार २ सहस्र, पर पांचशें पचासो ॥ बारा ३ सहस्र पर डेडसा, इग्यारा ४ सहस्र साढी छसे बिमासो ॥ दश ५ सहस्र साढी चारशें, सहस्र दश ६ तीनशें उपर ॥ एकाणुसें ७ पचास, एसीसें ८ शत पचोत्तर ९ ॥ पिचोतर १० साठ ११ पेंसठ १२ वळी ए, पंचावनशें १३ जाण ॥ पचास १४ पेंसालीस १५ सेंकडा, मुनि मन परजव नाण ॥ ७२ ॥ शांति जिनंद सहस्र चार, १६ तेत्रीशसें चालीस १७ उपर ॥ पचीसशें एकावन, १८ साढीसत्तरशें १९ मुनिवर ॥ पन्नरसें २०,साढीबारसें २१, नेमि प्रभु एक हजारो २२ ॥ पार्श्वप्रभुके जाण, साढी सातशें अणगारो

२३ ॥ वर्धमानजीके पाचशे २५ ए, अढाई द्वीप मझार ॥ जाणे सहु मन वारता, प्रणमृं ते अणगार ॥ ७३ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना अवधिज्ञानी साधु कहे छे. ॥

॥ सेकडा नेउं १ चोराणुं २, छन्नु ३ अठ्ठाणुं ४ जाणी ॥ सहस्त्र इग्यारा ५ दश ६ नव ७, आठ ८ अवधि नाणी ॥ सेकडा चोराशी ९ बोहोतेर, १० साठ ११ चोपन १२ अडतालीसो १३ ॥ त्रेतालीश १४ छत्तीस १५ तसि १६, वली पच्चीश १७ छवीशो १८ । बावीश १९ अठारा २० षोडश ए २१, पन्नरा २२ दश २३ सत सात २४ ॥ अवधि नाणी जिनवर तणा, वंदूं उठि परभात ॥ ७४ ॥ ९५ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना पूर्वधरोनी संख्या कहे छे. ॥

॥ छेतालीसशे पचास १, सेतिससे वीश २ विचारो ॥ इक विशशे पचास ३, पंद्रसे ४ चोविशशे ५ धारो ॥ तेविशशे ६ विशशे परत्रीश ७ चदा प्रभु दोय हजारो ८ ॥ सेकडा पन्ना ९ चउदा १०, तेरा ११ बारा १२ इग्यारो १३ ॥ दश १४ नव १५ आठ १६ छशें सित्तर १७ ए, छशे दश १८ छशें अडसठ्ठ १९ ॥ पांचशे २० साडीचार २१ चारशे, २२ साडी तिनशे २३ तिनशे विशिष्ट २४ ॥ पूरव धारक श्रेष्ठ ॥ ७५ ॥ ९६ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना वैक्रिय लब्धिवंत मुनि कहे छे. ॥

॥ छशे वीश सहस्त्र, चारशे वीश हजारो ॥ उगणीश सहस्त्र शत आठ, ओगणीश सहस्त्र वैक्रिय धारो ॥ अठारा सहस्त्र सत चार, सोला सहस्र एक शत आठो ॥ पंद्रा सहस्र शत तीन, सहस्र चउदा तेरे पाठो ॥ बारा इग्यारा दश सहस्र ए, नव आठ सात जाण ॥ खट सहस्र एकावनशे, वैक्रियधारी प्रमाण ॥७६॥ त्रहोत्तरशे गुणातिससे, सहस्र दो पंच विचारो ॥ पंद्राशे "इग्यारासे जाण, सातशें वीर प्रभु धारो ॥ महा तपस्या परभाव, वैक्रिय लब्धि जिण पाइ ॥ गोपवी

राखी तेह, लोकने खबर न काइ ॥ इम मुनि चोवीश जिन तणा ए सत्ताविश गुण धार ॥ प्रणमु मन तन कायसु, नित्यप्रत्यें वार वार ॥ ७७ ॥ ९७ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरना वादी मुनिनी सख्या कहे छे ॥

॥ बारा सहस्र साढाछसें, चार सत बारा हजारो ॥ बारा इग्यारा सहस्र दश, उपर शत चारा ॥ छन्नु शत चोराशी, छहोंत्तर साठ अट्ठावन ॥ पचास सैंतालीस छत्तीश, बतिश अठाविश चोवीश मन ॥ विश सोला चउदा बारे दश ए, आठसें छसें सत चार ॥ शेंकडा सख्या समजीयें, जिनवादी अणगार ॥ ७८ ॥ ९८ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरने प्रत्येक बुध्धमुनि, तथा प्रकीर्ण, तथा महाव्रत, तथा चारित्र, तथा पडिकमण कहे छे ॥

॥ साधुसख्या प्रत्येक बुध, तेता प्रकीर्ण विचारो ॥ आदि अत पच जाम, शेष महाव्रत कहे चारो ॥ प्रथम चरम के पच, चारित्र करे अगीकारो ॥ दूजो त्रीजो चारीत्रसो, मध्याजिनने परिहारो ॥ प्रथम चरम जिनसासणें ए, पडिक्कमणु उभयकाल॥ शेष बावीश प्रायश्चित समे करे आवश्यक उजमाल ॥ ७९ ॥ ९९ थी १०२

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनु सर्वायु कहे छे ॥

॥ पूर्वचाराशी १ लाख, बहोत्तर २ साठ ३ पचासो ४ ॥ चालिश ५ तीश ६ वीश ७ दश, ८ दोय ९एक १ पूर्व विमासो ॥ वर्ष चो राशी ११ लाख, बहोंत्तर १२ साठ १३ वलि त्रीशो १४ ॥ दश १५ एक १६ लक्ष कुथु, पचाणु १७ सहस्र गहीसो ॥ चोराशी १८ पचावन १० तिश २ वलि ए, दश २१ नेमी एक हजार २२ ॥ सो २३ वली बहोत्तर २४ वर्षनुं प्रभु आउखु सुविचार ॥ ८० ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनी निर्वाण तिथि कहे छे ॥

॥ माघ वदि तेरश १ चैत्र, उभे शुद्ध २ पचमी ३ आइ ॥ शुद्ध अष्टमी वैशाख ४, शुक्र चैत्र नोमी ५ कहाइ ॥ ईग्यारस मार्ग शिषवदि,

६ फागण वदि सातम ७ ठाई ॥ भाद्रवा वदि सातम, ८ नोम भाद्रवा शुद्ध ९ मांई ॥ वैशाख वदि १० तिथि दूजसु ए, तिज श्रावण वदि ११ जाण ॥ आषाढ शुद्ध चउदश १२ बारमा, दाखी तिथि निर्वाण ॥८१॥ सातम आषाढ वदि १३, चैत्र १४ जेष्ठ शुद्ध पंचमी १५ जाणी ॥ ज्येष्ट वदी तेरश तिथि,१६ वैशाख वदी पडिवा १७ ठानी ॥ मार्गसिर फागुण शुद्ध, दशमी १८ बारस १९ कहीयें ॥ ज्येष्ट वैशाखवदि नोम, २० दशमी तिथि २१ सुगहीयें ॥ आषाढ श्रावण शुद्ध अष्टमी ए,नेमी पार्श्व २२।२३ जिनजान ॥ कार्तिक अमावस वीरजिन २४,पाया पद निर्वाण ॥ ८२ ॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरनां निर्वाण नक्षत्र कहे छे. ॥

॥ आभिजित १ मृगाशिर २ आर्दरा ३, पुष्य ४, पुनर्वसु ५ आयो ॥ चित्रा ६ अनुराधा ७ ज्येष्टा, ८ मूल ९ पूर्वाषाढा १० गायो ॥ धनिष्टा ११ उत्तराभाद्र, १२ दोयके रेवती १३ जाणो ॥ १४ पुष्य १५ भरणी १६ कृत्तिका १७, रेवती १८ भरणी १९ वखाणो ॥ श्रवण २० अश्विनी २१ चित्रा २२ वली ए, विशाखा २३ स्वाति २४ विचार ॥ इन नक्षत्र निर्वाणपद, पाया शिव सुखसार ॥ प्रणमु वारं वार ॥८३॥१०६॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनुं मोक्षस्थान तथा अणसण तप कहे छे. ॥

॥ रिखभ अष्टापद शिखर, वासुपूज्य चंपा जाणो ॥ नेमि नाथ गिरनार, पावापुरी वीर वखाणो ॥ शेष समेत शिखर, गीरि पर अणसण लीना ॥ छ दिन रिखभ जिणंद, वीर छठम तप चीना॥ शेष जिनंद एकमासनोए, [illegible] अणसण [illegible] अजोगी मुक्तिगया प्रणमूं वारंवार ॥ जय [illegible] दातार [illegible] १०७ १०८ ॥

॥ हवे चोवीश [illegible] छे. ॥

॥ [illegible]

आसण [illegible] ॥

अपरान्हें धारो ॥ तिण निचला जे अठ, जिन पूर्वान्हें विचारो ॥ धर्म कुंथु नमि वीर प्रभु ए, अपर रात्रि निर्वाण ॥ शेष आठ पूर्व रात्रिमें, मुक्ति गया जगभाण ॥ ८५ ॥ १०९ ॥ ११० ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरने मोक्ष समय अणसणधारक कहे छे ॥

॥ आदिजिनद दश सहस्र, पद्म प्रभु तिनशें आठो ॥ पांचशें सुपारस सग, वासुपज्य छशें पाठा ॥ विमलसगें खट सहस्र, अनत जिर्के सात हजारो ॥ धर्म एकसा आठ, नवशें शाति विचारो ॥ पाचशें छत्रिश मल्लि नेमी ए, तत्रीश पार्श्वप्रभु लार ॥ माहावीर एका एकी, शेप सहस्र परिवार ॥ प्रभु साथे अणसणधार ॥ प्रणमु ते वार वार ॥ ८६ ॥ १११ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनी युगातकृत भूमि तथा
पर्यायांतकृत भूमि कहे छे ॥

॥ रिखभ जिनद असख्यात, पाट मुनि मुक्ति सिधाया ॥ नेमी आठ चउ पार्श्व, चरम जिन तीन वताया ॥ शेष जिनद सख्यात, युगातर भूमि कहीयें ॥ पर्यायांतक श्री आदि, अतरमुहूरत लहीयें ॥ नमि धर्म न्याय पारस त्रिहू ए, वर्द्धमान वर्ष चार ॥ शेष एक दिनांतरं, मुक्ति गया अणगार प्रणमुं ते वार वार ॥८७॥११२॥११३॥

॥ हवे चोवीशे तीर्थंकरना मुनियानी वेची प्रकृति, तथा वस्त्र रग,
तेमज जन्म नक्षत्र, दीक्षानक्षत्र, केवल ज्ञान नक्षत्र, तथा
केटलाश्रावक व्रत, पचाचार, ते सव कहे छे ॥

॥ आदिजिणद मुनिराज, प्रकृति ऋजु जड जाणो ॥ चरम प्रभुका वक्रजड, शेप ऋजु सरल वखाणो ॥ आदि अत श्वेतवस्त्र, शेप पचरगा ठाणो ॥ च्यवन नक्षत्र जेह, तेहि जन्मदीक्षा नाणो ॥ सहुने श्रावक व्रत दुवादश ए, सहुने पच आचार ॥ जे पाली शिवपुर गया, प्रणमु ते वार वार ॥ ८८ ॥ ११४ ॥ थी १२० ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनी उत्पत्तिना आरानो समय, धर्म भेद तथा संयमभेद अने मुनिओना गुण कहे छे. ॥

॥ त्रीजा आरानी अंत, रिखभ जिनवर प्रगटाया ॥ चोथा आरा मध्य अजित, शेष अंत दरसाया ॥ श्रुत अरु चारित्रधर्म, सकल दो भेद बताया ॥ संजम सतरा प्रकार, पाले सहु जिन मुनिराया ॥ गुण सत्तावीश धारणा ए, तारण तरण मुनिंद ॥ ते प्रणमुं मनवच करी, आणी अधिक आनंद ॥ ८९ ॥ १२१ थी १२४ ॥

॥ हवे चोवीश तीर्थंकरनुं केटलो काल शासन रह्युं ? ते कहे छे. ॥

सागर पचास लक्ष कोड १, आदिजिन सासण कहीयें ॥ इम त्रिश २ दश ३ नव ४ लाख, कोडी सागर सर्दहिये ॥ हजार नेउं ५ नव ६ जाण, नवशें कोडी सुपासो ७ ॥ नेवुं ८ नव कोड ९ सागर, शीतल एक १० कोडि विमासो ॥ तिणमें सो सागर ग्रहो ए, वर्ष छासठ लक्ष जाण ॥ सहस्र छत्रीश कमती कह्यो, दशमा सासण प्रमाण ॥ ९० ॥ सागर चोपन ११ त्रीश, १२ नव १३ चउ १४ धरम तिहुं सागर १५ ॥ तिणमें पूणो पल घाट, शांति अर्ध पल १६ उज्झागर ॥ कुंथु जिन पाव पल, १७ कमति वर्षकोडि हजारो ॥ अरह कोडि हजार १८, चोपन लक्ष १९ मल्लि विचारो ॥ षट २० पंच २१ लक्ष पोणी २२ चोरासी सहस्रज ए, अढाईशें २३ एकविश हजार २४ ॥ समण समणी शासन प्रभु, प्रणमुं ते वारं वार ॥ ललि ललि वारंवार ॥ ९१ ॥ १२५ ॥

॥ अथ स्तवन आरति प्रारंभः ॥

॥ जयजय श्री जगदीश, रोष अरु तोष मिटाई ॥ जय जय श्री जगदीश, कर्म कण पीसे सांई ॥ जय जय श्री जगदीश, ध्यायो प्रभु शुकल ध्यानो ॥ जय जय श्री जगदीश, पाया सब केवल ज्ञानो ॥ जय जय श्री जगदीशजी ए, करवा पर उपगार ॥ दीधि

महा धर्म देशना, तान्या बहु नर नार ॥९०॥ जय जय श्री जगदीश, केइ समदृष्टि करिया ॥ जय जय श्री जगदीश केइ श्रावक उद्धरिया ॥ जय जय श्री जगदीश केई कीना अणगारो ॥ जय जय श्री जगदीश, केइ कीना केवल धारो ॥ जय जय श्री जगदीशजी ए आप तन्या परतार ॥ शिव सुख अविचल संपदा, पाया पद अविकार ॥९३॥ जो समरे एक चित्त, वित्त नित वछित आवे ॥ जा समरे एक मन, जन तन रोग मिटावे ॥ जो समरे चित्त चाव, भाव तस निमल थावे ॥ जो समरे एक ध्यान ज्ञान केवल प्रगटाव ॥ इन कारण भविजन सहु ए, नाम ठाम शुभ काम ॥ गुणग्राम लेखा विधि रचि रुचि शुचि हितधाम ॥ ९४ ॥ अल्पश्रुति प्रमादी, आलसी में अति भारी ॥ श्रीगुरुने परसाद, भक्ति वश शक्ति सुधारी ॥ बाल ख्याल जिम ग्रथ, निजमति लायक वणायो ॥ हीण अधिक विपरीत, जाहमें शब्द जो आयो ॥ मिच्छामि दुक्कड सब साखसु ए, श्रीजिनवाणी तेत ॥ अशुद्ध जो देखो बुधजना, शुद्ध कर लीजो सुहेत ॥ ९५ ॥ संवत ओगणीशों चालीस, मास मधु नाम विचारो ॥ शुक्ल पक्ष पचमी तिथि, वार गुरु जोग उदारो ॥ देश दक्षिण प्रसिद्ध, अहमद नगर मझारो ॥ किनो यह महास्तवन, सवाशें बोल विस्तारो ॥ अनुक्रमें समकित दृढ भणी ए, बाल तोल अमोल ॥ ?ारा भविजन भावशु गाथा सविशु खोल ॥ ९६ ॥

॥ हवे पट्टावली लिख्यते ॥

॥ पूज्यश्री कान्हजी रिखि, बीज शशि जेम परतापी ॥ दिपायो दयाधम, कुमतिमति दूर उत्थापी ॥ तस पाटोधर पूज्य, तारा रिखजी जस धारक ॥ काला रिखजी तस शिष्य, बक रिखजी सुविचारक ॥ तस शिष्य पूज्यगुण आगरा ए धनजी रिखजी महाराय ॥ तस शिष्य श्रीगुरु मम तणा, श्रीचतुराजी रिखराय ॥ तास तणोजी सुपसाय॥९७॥ शिशु सम था हू अज्ञानी, गुरु उपगारज कीनो ॥ दीनो धमको बोध

शोध हिरदे लय लीनो ॥ जाणी किंचित रीत, प्रीत हित निज पर कारण ॥ तिलोकरिख कहे जेन, यंत्र भवजलनिधि तारण ॥ जो समरे जगगुरु भणी ए, यथा जोग विधि धार ॥ जगगुरु पद पावे सही, वरते मंगल चार ॥ ९८ ॥ कलश ॥ जय जय जिनंद, सुखकंद साहेब, जक्त पति जग, रंजणं ॥ अजर अमर, अविकार निर्भय. करम रिपुदल, गजण ॥ तिलोकरिख कहे. [illegible] ॥ सुख खेम, कल्य ण शिवपद लाभ मुक्ति दा जय करो ॥ प्रभु सब भव सरणो आपरो ॥ ९९ ॥ इति चोविस जिनराज, गरीबनिवाज तरण तारण जहाजको, एकसो पच्चीस बोल नामादिक लेखागर्भित महास्तवन समाप्त ॥

॥ अथ मुनिगुण मंगलमाला प्रारंभः ॥

॥ आदर जीव क्षमा गुण आदर ॥ अथवा धन धन संप्रति साचो राजा ॥ ए देशी ॥ समरूं श्रीअरिहंत सिद्ध साधु, धर्मजिण आणा मझार जी ॥ चारुहि मगल उत्तम सरणो, होजो सदा सुखकारजी ॥ प्रणमूं ते गुणवत त्रिकाले, त्रिकरण मन वचकाय जी ॥ १ ॥ ऋद्धि सिद्धि सुखसंपत्ति शाता, नित नित देवे सवाय जी ॥ प्र० ॥ २ ॥ आतित अनत चोवीशी वंदू, केवली अनत अपार जी ॥ वर्त्तमान चोविशी साहेब, नाम कहु सुविचार जी ॥ प्र० ॥ ३ ॥ ऋषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पद्म सुपासजी ॥ चंदा प्रभुजी ने सुविधि जिनेश्वर, शीतल द्यो शिववास जी ॥ प्र० ॥४॥ श्रीश्रेयांस वासुपूज्य वंदूं, विमल अनंत धर्मदेव जी ॥ शांति कुंथु अर माल्लि मुनिसुव्रत, नमि नेमी करूं सेव जी ॥ प्र० ॥५॥ पारस अने वर्धमान जिनेश्वर, ए चोविश जिनराय जी ॥ कर्म खपाई केवल पाया, मुक्ति विराज्या जाय जी ॥ प्र० ॥ ६ ॥ जयवंता सीमंधर स्वामी, युगमंधर सुखकार जी ॥ बाहु सुबाहु ए चउ विचरे, जंबुद्वीप मझार जी ॥ प्र० ॥ ७ ॥ सुजात स्वयंप्रभ ने ऋष-

मानन, अनतवीरज जगभाण जी ॥ सुरप्रभु विशाल वज्रधर, चद्रा
नन गुणखाण जी ॥ प्र० ॥ ८ ॥ पूरव पश्चिम चार चार जिन,
धातकीखड मझार जी ॥ विचर गाम नगर पुर पाटण, करता पर
उपगार जी ॥ प्र० ॥ ९ ॥ चद्रबाहु भुजग ईश्वर जी, नेमीश्वर शिव
मत जी ॥ वीरसननें श्रीमहाभद्र जी, देवजसजी जसवत जी ॥
प्र० ॥ १० ॥ विशमा अजितवीरज जगनायक, चार चार जिन राय
जी ॥ पुष्करार्धमें विचर साहिब, नाम नवनिधि थाय जी
प्र० ॥ ११ ॥ उत्कृष्टे पदें एकसो सित्तेर, जघन्य केवली काडी दोय
जी ॥ उत्कृष्ट पदें पृथकत्व कोडी तिनमें, वर्तमान जे होय जी ॥ प्र०
॥ १२ ॥ अष्ट गुणातम पदरा भेद, सिद्ध सदा सुखकार जी ॥ अ
लख निरजन भगवु स भजण, समरता सुखकार जी ॥ प्र० ॥१३॥
आचारज अष्ट सपदा धारक, वारक मिथ्या भर्म जी ॥ गुण
छत्रीश ईश चउ तीरथ, दीपावे जैनधर्म जी ॥ प्र० ॥ १४ ॥ इद्र
भूति अग्निभूति वदू, वायुभूति गुणवत जी ॥ चोथा व्यक्त सुधर्मा
स्वामी, मडितजी जसवत जी ॥ प्र० ॥ १५ ॥ मोयपुत्र अकपित
अचल जी, मतारज गुणधार जी ॥ इग्यारमा परभासजी वदू,
चुम्मालिशसें परिवारजी ॥ प्र० ॥१६॥ चोविश जिनना गणधर वदू,
चउदसें बावन जाण जी ॥ चउदा पूरव धारक सारा, पहूता सहु
निर्वाण जी ॥ प्र० ॥ १७ ॥ ऋषभ सेनादिक सहस्र चोराशी,
मुनिवर गुण भडार जी ॥ धीर वीर गभीर गुणातम, नमता जय
जयकार जी ॥ प्र० ॥ १८ ॥ आरिसाभवनमे श्रीभरतेश्वर, पाया
केवल ज्ञान जी ॥ अनुक्रमें आठ पट्टाधर इणविध, पाया पद
निर्वाण जी ॥ प्र० ॥ १९ ॥ बाहुबल मुनिवर महा बळीया, बार
मासी तप ध्यान जी ॥ मान मालिने पग उठायो, पाया केवल
ज्ञान जी ॥ प्र० ॥ २० ॥ बूझ करता पुत्र अठ्ठाणु, श्रीआदिश्वर स्वामि
जी ॥ समजाइ दियो सजम तेहने, पहोता ते शिवधाम जी ॥ प्र०

॥ २१ ॥ सागर मघवा खट खंड त्यागी, चक्री सनत्कुमार जी ॥ रूप देखवा सुर छल कीधो, लीधो संजम भार जी ॥ प्र० ॥२२॥ पद्म हरी खेण जयनामें रिख, चक्री दश ऋद्धि छोड जी ॥ शम दम उपशम धीर गुणागर, कर्मबंधण दिया तोड जी ॥ प्र० ॥ २३ ॥ अचल विजय भद्ररिख वंदू, सुभद्रमुनि रिखि राय जी ॥ सुदर्शन आनंदन नदन, राम गया शिवमांय जी ॥ प्र० ॥ २४ ॥ हलधर बलिभद्र जी पहोता, पचम स्वर्ग मझार जी ॥ उत्तम पुरुष ए पुण्य प्रतापी, वली कहु अंगनुसार जी ॥ प्र० ॥ २५ ॥ आर्द्रकुमार माहाबुद्धिवंता, जीत्या महा पंचवाद जी ॥ संयम पाली शिवपद पाया, जिन आणा मरजाद जी ॥ प्र० ॥ २६ ॥ उदय पेढालपुत्रें करी चर्चा, गौतमस्वामीसुं जाय जी ॥ कुमारपुतिया नाम लेइने, सूत्र सुयगडांगनीमांय जी ॥ प्र० ॥ २७ ॥ दश दशांग त्रीजे अंग चाल्या, कह्या तिहां मुनिवर नाम जी ॥ ते सहु शिवगामी गुणधामी, कीनां उत्तम काम जी ॥ प्र० ॥ २८ ॥ सूत्रसमवायांग मांही प्रकाश्यां, नाम केई प्रसिद्ध जी॥ गणधर मुनिवर चउद पूर्वधर, नाम लियां ऋद्धिसिद्ध जी ॥ प्र० ॥ २९ ॥ पिंगल नाम नियंठे पूछ्या, प्रश्न पंच रसाल जी ॥ खंधक सन्यासी सुणके ततक्षण, वीर पासें गया चाल जी ॥ प्र० ॥ ३० ॥ सशय निवरत्यां सजम लीनो, कीनो तप श्रीकार जी ॥ अणसणधारी स्वर्ग बारमे, थया एका अवतार जी ॥ प्र० ॥ ३१ ॥ वीर जिनेश्वर तात वखाणुं, रिखभदत्त गुणधार जी ॥ शेठ सुदर्शन राज ऋषीश्वर, धन गागियो अणगार जी ॥ प्र० ॥ ३२ ॥ ए चारे ऋषि मुगतें पहोता, धन धन भगवंत मात जी ॥ देवानंदा धन सति जयवंतो, पूछ्या प्रश्न विख्यात जी ॥ प्र० ॥ ३३ ॥ वीर प्रभुजीनी नंदिनी वंदूं, सती सुदर्शना जाण जी ॥ दीक्षाधारी कर्म निवारी, पाइ पद निर्वाण जी ॥ प्र० ॥ ३४ ॥ पंचमी पडिमा कार्तिक शेठें, धारी तिण सो वार

जी ॥ तापस खीर जम्यो मोरा पर, जाण्यो अथिर ससार जी ॥ प्र० ॥ ३५ ॥ सहस्र अष्टोत्तर गुमास्ता सार्थे, आदर्यो सजमभार जी ॥ शेठ थया शक्रेंद्र सौधर्मे, जाशे मोक्ष मझार जी ॥ प्र० ॥ ३६ ॥ साला देश तजि सजम लीधो, दियो भाणेजने राज जी ॥ करी क्षमा धनराय उदाई, सार्या आतम काज जी॥ प्र० ॥ ३७ ॥ गगदत्त आणद कोसल रिखरोझा, सुनक्षत्र नाम अणगार जी ॥ श्रवणमूति आराधक थईने, पहोता स्वर्ग मझार जी ॥ प्र० ॥ ३८ ॥ सिद्धार्थी चवीने मुक्ति सिधाशे, इत्यादिक अणगार जी ॥ नाम ठाम तप जपको वर्णव, विवाहपन्नत्ति मझार जी ॥ प्र० ॥ ३९ ॥ धारणीसुत श्रेणिक नृपनंदन, धन धन मेघ कुमार जी ॥ आठ अतेउर छिनमें छोडी, त्याग दियो ससार जी ॥ प्र० ॥ ४० ॥ गुणरतन भिक्खु पडिमा तप, अते अणसण कीध जी ॥ विजयविमानमें जाय विराज्या, होशे विदेहमें सिद्ध जी ॥ प्र० ॥ ४१ ॥ बत्रीश नार तजी रभासी, धन थावच्चा कुमार जी ॥ नेम प्रभुपे सजम लीधो, सहस्र पुरुष परिवार जी ॥ प्र० ॥ ४२ ॥ थावच्चा मुनिसु चर्चा कीनी, शुकदेव सन्यासी जाण जी ॥ एक सहस्र शिष्य सार्थे सजम, लीधो गुणनिधि खाण जी ॥ प्र० ॥ ४३ ॥ पथकादिक परधान पाचसों, सेलक राय नी लार जी ॥ अढाइ सहस्र पुडरीकागिरी सिद्धा ॥ धन जिणरा अवतार जी ॥ प्र० ॥ ४४ ॥ रेणा देवीकी केण न कीधी, रत्नद्वीपसु आय जी ॥ सजम लीनो चपा नगरी, जिनपाल मुनिराय जी ॥ प्र० ॥ ४५ ॥ तीन धन्नाये धार्यो संजम, सुगुरु थिविरनी पास जी ॥ तीनु परथम स्वर्गें सिधाया, महाविदेह शिववास जी ॥ प्र० ॥ ४६ ॥ छए मित्र मल्लि जिनवरना, महाबलादिक गुणवत जी ॥ गणधर पद मही मुक्ति विराज्या, थया सिद्ध भगवत जी ॥ प्र० ॥ ४७ ॥ सुबुद्धि प्रधानजीयें भलि विधे, पाणी परचो बताय जी ॥ जितशत्रु नृपको भर्म मिटायो, दोइ गया शिवमाय जी ॥ प्र० ॥ ४८ ॥

तेतली मुनिवर गुणना दरिया, पोट्टिला दियो प्रतिवोध जी ॥ केवल पामी मुक्ति विराज्या, तजियो सकल विरोध जी ॥ प्र० ॥ ४९ ॥ युधिष्टिर अर्जुन अने भीमजी, सहदेव नकुल अणगार जी ॥ मास मास तप अभिग्रह कीनो, नेम वंदण सुविचार जी ॥ प्र० ॥ ५० ॥ हस्तिकल्पपुर गोचरी करतां नेम तणुं निर्वाण जी ॥ सुणिने पांडव पांच शत्रूंजे, संथारो लियो जाण जी ॥ प्र० ॥ ५१ ॥ दोय मास संलेखणा सिद्धा, श्रमणी द्रौपदी सोय जी ॥ संजम पाली स्वर्ग पंचमें, एकावतारी होय जी ॥ प्र० ॥ ५२ ॥ धर्मघोष शिष्य धर्मरुचि जी, किड्यां पर करुणा आण जी ॥ कडवा तुंवानो आहारज कीधो, खीर खांड सम जाण जी ॥ प्र० ॥ ५३ ॥ क्षण अंतरमें वेदना प्रगटी, रिख समता मन धार जी ॥ सर्वार्थसिद्धमें जाय विराज्या, च्यवि गया मुक्ति मझार जी ॥ प्र० ॥ ५४ ॥ कुंडरिक भाईने डगियो जाणी पुंडरिक संजम धार जी ॥ सर्वार्थसिद्ध लियो तीन दिवसमे, धन जिणरो अवतार जी ॥ प्र० ॥ ५५ ॥ सुव्रतादिक श्रमणी महासतिया, पाली प्रभु नी आण जी ॥ ते वर्णन भिन्न भिन्न करि देखो, ज्ञाता अंग प्रमाण जी ॥ प्र० ॥ ५६ ॥ गौतम समुद्र सागर अने गंभीर, थिमितने अचल कुमार जी ॥ कपिल अक्षोभ प्रश्नसेन ने विष्णु, अक्षोभ सागर जसधार जी ॥ प्र० ॥ ५७ ॥ सागर समुद्र हेमवत नामें, अचलधरण गुणवंत जी ॥ पूरण अभिचंद्र एह अठारा, भ्राता जाणो सहु संत जी ॥ प्र० ॥ ५८ ॥ अंधक विष्णुसुत धारणी अंगज, आठ अंतेउर मेल जी ॥ नेम समीपे लीनो संजम, करि मुगतिमें सहेल जी ॥ प्र० ॥ ५९ ॥ वसुदेवसुत देवकी जाया, अणियसेण अनंतसेण जी ॥ अजितसेण अणिहय रिपुनामें, देवसेण शत्रुसेण जी ॥ प्र० ॥ ६० ॥ सुलसाघर वधिया छे बंधव, बत्रीश बत्रीश नारि जी ॥ तजिने नेम प्रभुपे संजम, लेइने छठ छठ धार जी ॥प्र०॥६१॥ पूरवधारी कर्म निवारी, पहोता मोक्ष मझार जी ॥

वसुदेवसुत धारणी अंगज, सारण थया अविकार जी ॥ प्र० ॥ ६२ ॥ गजतालव जिम कोमल काया, धन धन गजसुकुमाळ जी ॥ वसुदेवसुत देवकी अगज, छोड्यो जग जजाल जी ॥ प्र० ॥ ६३ ॥ एकाकी समशानमें जाइ, उभा ध्यान लगाय जी ॥ ससरो देखी रीषें भराणो, माटीकी पाल बणाय जी ॥ प्र० ॥ ६४ ॥ धग धगता खेराना खीरा, मेल्या रिखने शीश जी ॥ महावेदना सहि सम परिणामें, मुक्ति गया तजि रीश जी ॥ प्र० ॥ ६५ ॥ सुमुख दुर्मुख वली उवय कुवर, दारुग, अनाधिष्ठ जाण जी ॥ जाली मयाली उवयाली ऋषि, पुरुषसेन वखाण जी ॥ प्र० ॥ ६६ ॥ वारिषेण प्रद्युम्न ऋषि संब, अनिरुद्ध वेदर्मिनदजी ॥ सत्यनेमी दढनेमी प सब, पाम्या शिवसुखकद जी ॥ प्र० ॥ ६७ ॥ पद्मावती गौरी गांधारी, लक्षमणा सुसमा नार जी ॥ जाबुवती सत्यभामा रुक्मिणी, कृष्ण रामा सुविचार जी ॥ प्र० ॥ ६८ ॥ मूलसिरी मूलदत्ता श्रमणी, सावकुमरनी नार जी ॥ प दशे संजम केवल लेई, पहोती मुक्ति मझार जी ॥ प्र० ॥ ६९ ॥ मक्काई किंकम रिख महोटा, धन अर्जुन अणगार जी ॥ सजम लेइ क्षमा हदधारी, छठ छठ तप लियुं धार जी ॥ प्र० ॥ ७० ॥ छ मासामें कम खपाई, मुक्ति गया गुणवत जी ॥ कासव क्षेम धितिधर हिसकर, कैलास हरिचद संत जी ॥ प्र० ॥ ७१ ॥ वारत सुदंसण पूरणभद्र, सुमनभद्र सुप्रतिष्ठ जी ॥ मेघ पेमंता अलख प शोला, पाया पदवी श्रेष्ठ जी ॥ प्र० ॥ ७२ ॥ नदादिक तेरे पट्टराणी, धीर जिनद उपदेश जी ॥ केवल पाइ मुक्ति सिधाइ, पाइ अविचल यश जी ॥ प्र० ॥ ७३ ॥ कालीयादिक दश श्रेणिक राणी, सुणियो पुत्र विजोग जी ॥ माहातपधारी कर्म निवारी, मेट दिया सब रोग जी ॥ प्र० ॥ ७४ ॥ प नेउं सहु अंतगड सिद्धा, अतसमे केवल पाय जी ॥ अंतगडसूत्रमें वर्णव जाणो, जपतां सुख सवाय जी ॥ प्र० ॥ ७५ ॥ श्रेणिकसुत धन जाली मयाली, उवयाली पुरुष

सेन जी ॥ वारीसेण दीर्घसेण लठदंत जी, गूढदंत सव जगसेन जी ॥ प्र० ॥ ७६ ॥ विहल कुमर अभयादिक त्रेविश, श्रेणिकसुत गुणधाम जी ॥ अनुत्तर विमान गया सहुरिखजी, चवि जाशे शिवठाम जी ॥ प्र० ॥ ७७ ॥ वत्रीश रंभा तजि धन कोडी, धन धन्नो अणगार जी ॥ छठ छठ तप निरंतर करणी, आयंविल उच्छित आहार जी ॥ प्र० ॥ ७८ ॥ चौद सहस्र मुनीश्वरमांही, श्रेणिक आगें स्वाम जी ॥ कहे दुक्कर दुक्कर तप धारी, शम दम उपशम धाम जी ॥ प्र० ॥ ७९ ॥ सुनक्षत्र इसीदासजी पेढग, रामपुत चंदिमा नाम जी ॥ मूढमाई पेढाल पुतर रिख, पोटिल विहल अभिराम जी ॥ प्र० ॥ ८० ॥ धन्नानी रीतें ए नवही, करि करणी श्रीकार जी ॥ अनुत्तरोववाई सूत्रके मांही, दाख्यो छे विस्तार जी ॥ प्र० ॥ ८१ ॥ धन सुबाहु भद्र नंदी रिख, सुजात सुवासव धीर जी ॥ जिनदास धनपति माहाबल जी, भद्रनंदी गंभीर जी ॥ प्र० ॥ ८२ ॥ महचंद वरदत्त ए दश मुनिवर, पूरव दान प्रभाव जी ॥ ऋद्धि संपत्ति पाया अति सुंदर, संजम लियो चित्त चाव जी ॥ प्र० ॥ ८३ ॥ केइक तिण भव मुगति सिधाया, केइ पंद्रा भव धार जी ॥ मुगतिसिरी वरशे वडभागी, सुखविपाक अधिकार जी ॥प्र०॥८४॥ पउमादिक दश श्रेणिक पौत्रा, वीर जिनेश्वर पास जी ॥ दीक्षा लेई स्वर्ग सिधाया, पामशे अविचल वास जी ॥ प्र० ॥ ८५ ॥ निखडादिक वलभद्रजीका नंदन, बाराही गुणवंत जी ॥ पचास पचास त्यागि अंतेउर, सर्वार्थसिद्ध पोहत जी ॥ प्र० ॥८६॥ सूत्र निरावलियानीमांही, भांख्या भाव जिनंद जी ॥ एकावतारी छे रिख सारा, टालशें भवदुःख फंद जी ॥ प्र० ॥ ८७ ॥ दो मासा सुवर्णकी इच्छा, आई तृष्णा अपार जी ॥ समताथी केवल पद पाया, धन कपिल अणगारजी ॥ प्र० ॥ ८८ ॥ धन वलि नेमी राजऋषीश्वर, त्यागी रमणी हजार जी ॥ इंदरसूं प्रति उत्तर कीना,

पाया भवजल पार जी ॥ प्र० ॥ ८९ ॥ हरिकेशी चित्तमुनि गुण सागर, सजयति ऋषिराय जी ॥ गर्दभाली क्षत्री राजऋषि धन, दशारण भद्र कहाय जी ॥ प्र० ॥ ९० ॥ करकण्डु दुमुह नमी राजा, निग्गाई एह च्यार जी ॥ एक समय चउ संयम धारयो, एक समे भवपार जी ॥प्र०॥९१॥ महाबल मृगापुत्र मुनीश्वर, मुनि अनाथी जाण जी ॥ समुद्रपाल प्रतिपाल दयानिधि, रहे नेमी उजमाल जी ॥ प्र० ॥ ९२ ॥ केशी गौतम चर्चा कीनी, जय विजय घोष रसाल जी ॥ गर्गाचार्य उत्तराध्ययनें, मेल्यो शिष्य जजाल जी ॥ प्र० ॥ ९३ ॥ धन्ना शालिभद्र रिख जोडी, तडके तोड्यो नेह जी ॥ मास मास तप धारण कीनो, त्यागी ममता देह जी ॥ प्र० ॥ ९४ ॥ आठ अंतेउर रातें परण्या, सोनैया निन्याणुं कोड जी ॥ दिन उगा लियो संजम भावें, पांचशें सत्तावीश जोड जी ॥ प्र० ॥ ९५ ॥ ढढणऋषि लियो अभिग्रह दुष्कर, चूरयां कर्म करूर जी ॥ खंधक ऋषिनी खाल उतारी, क्षमा करी भरपूर जी ॥ प्र० ॥ ९६ ॥ खधक ऋषिना शिष्य पांचशें, पील्या घाणी मांय जी ॥ क्षमा करि केवल पद पाया, मुगति गया मुनिराय जी ॥ प्र० ॥ ९७ ॥ थूलिभद्र अरणिक सिज्जंभव, श्रीजिन आज्ञा माय जी ॥ वरत्या वरते ते सहु मुनिवर, थूणतां पातक जाय जी ॥ प्र ॥ ९८ ॥ मरुदेवी गज होदे पाम्या, निर्मल केवल ज्ञान जी ॥ ब्राह्मी सुदरी चदनबाला, ध्यायुं शूकल ध्यान जी ॥ प्र ॥ ९९ ॥ राजिमती द्रौपदी सुभद्रा, सीता कौशल्या जाण जी ॥ मृगावती अंजना मृगलेखा, मलया शीलनी खाण जी ॥ प्र० ॥ १०० ॥ चेलणा सुज्येष्ठा शिवा कुंती, मयणरेहादिक जेह जी ॥ सकट पडिया शीलज राख्युं, आण्यो संजम नेह जी ॥ प्र० ॥ १०१ ॥ इण चोवीशी मांही जिनना, मुनिवरनो परिवार जी ॥ लाख अट्ठाविश उपर आणो, अडतालीस हजार जी ॥ प्र० ॥ १ २ ॥ श्रीजिनवर ना

शासनमांही, केवली थया अपार जी ॥ साधु साधवी थया असंख्या, नामथकी जयकार जी ॥ प्र० ॥ १०३ ॥ जघन्यपदें दोय सहस्त्र कोडी, उत्कृष्ट पृथक् सहस्त्र कोड जी ॥ वर्तमान जे वर्त्ते मुनिवर, जग माया सब छोड जी ॥ प्र० ॥ १०४ ॥ पंच भरत पंच एरवय जाणो, पंच महाविदेह मझार जी ॥ अढाई द्वीपके मांही वरते, सत्ताविश गुण धार जी ॥ प्र० ॥ १०५ ॥ तप जप साधे धर्म आराधे, बालक वलि वृद्ध संत जी ॥ ममता टाले समता झाले, पाले संजम खंत जी ॥ प्र० ॥ १०६ ॥ एहवा मुनिना जे गुण गावे, मुख जयणा सुविचार जी ॥ पाप पलावे संपत आवे, कटे कर्मको खार जी ॥ प्र० ॥ १०७ ॥ इम जाणी भवियण नित भणजो, थावे शुद्ध परिणाम जी ॥ ओगणीशें सेंतीस माहावदि आठम, तिलोकरिख कीया गुणग्राम जी ॥ प्र० ॥ १०८ ॥ अधिको ओछो जो जोडाणो, मिच्छामि दुक्कडं मोय जी ॥ पंच परमेष्ठी सरणो मुझने, मनवंछित फल जोय जी ॥ प्र० ॥ १०९ ॥ कलश ॥ अरिहंत सिद्ध आचार्य त्रीजा, उपाध्याय अणगार ए ॥ मति श्रुत रिख अवधि ज्ञानी, मनपर्यव सुखकार ए ॥ केवलज्ञानी लब्धि धारक, चारित्र पंच प्रकार ए ॥ तिलोकरिख कहे वर्त्या वर्त्तें, वंदूं वारं वार ए ॥ सदा देजो शिवसुख सार ए ॥ इति श्रीतिलोकरिखजी महाराज कृत मुनि गुण मंगलमाला संपुर्णा ॥

॥ अथ श्रीगौतमस्वामि इंद्रभूतिजीको रास प्रारंभः ॥

॥ सिद्धचक्रजीने पूजो रे भविका, ॥ ए देशी ॥ प्रणमूं श्रीवर्धमान सुहंकर, सतगुरु शीश नमाउं ॥ ज्येष्ठ शिष्य श्रीगौतम स्वामि, शुधभावें गुण गाउं रे ॥ भविका, गोयम गणधर वंदो, भव भव दुःख निकंदो रे ॥ भ० ॥ गो० ॥१॥ गोवर गाम आराम मनोहर, वसुभूति विप्र जाणो ॥ तस घर प्रथ्वी नारि सुलक्षण, शीलगुणें मृदु वाणो रे ॥ भ० ॥ गो० ॥२॥ एकदिन सुखसिज्जामांहे

सुती, इंद्रभवन झलकतो ॥ दीठा स्वप्न हरष अति पामी, कतसु कह्यो विरतनो रे ॥ म० ॥ गो० ॥३॥ सवा नवमास पूरण थया जनम्या, दान मान बहु कीनो ॥ इंद्रभुवन देख्यो तिण कारण, इंद्रभूति नाम दीनो रे ॥ म० ॥ गो० ॥४॥ रूप अनुपम कनकसी काया, झलक झलक तन दमके ॥ पच धावें करि वध्या दिन दिन सो, दुशमन देखीने चमके रे ॥ म० ॥ गो० ॥५॥ चार वेद छ शास्त्र सो भणीया, अरथ तरक विधि सारी ॥ चउदे विद्या निधान सो पडित, विस्तरी महिमा सो भारी र ॥ म० ॥ गो० ॥ ६ ॥ मध्य पापापुर सोमल ब्राह्मण, यज्ञ करण सो बुलाया ॥ अग्निभूति वायुभूति सगें, अति आडबरें आया रे ॥ म० ॥ गो० ॥ ७ ॥ विद्या पात्र छात्र नर सगें, एक एकने लार ॥ पांच पांचसें आया विचक्षण, यज्ञ मांड्यो तिणवारें रे ॥ म० ॥ गो० ॥ ८ ॥ श्री महावीर अति धीर गुणातम, तप किया दुःकर कारी ॥ ऋजुवालुकानदि तीर छठ तपस्या, गाढुज आसण करारी रे ॥ म० ॥ गो० ॥ ९ ॥ वैशाख शुद्ध दशमी दिन जाणो, ध्यान शुक्ल मन ध्यायो ॥ परम नरम पणे करम भरमकू, टालि केवल पद पायो रे ॥ म० ॥ गो० ॥ १० ॥ मध्य पापापुरि बाहिर पधार्‍या, केवल महोत्सव काजें ॥ इंद्र चोसठ मिल आया उमंगसू, त्रिगडा तणी विधि साजे रे ॥ म० ॥ गो० ॥ ११ ॥ तिण अवसर च्यार जातिना आवे, देव देवी केइ कोडी ॥ अमर विमाणसूं अबर छायो, सेवा करे कर जोडी रे ॥ म० ॥ गो० ॥ १२ ॥ यज्ञ उपर थई दवता जावे, इंद्रभूति तब बोले ॥ यज्ञ छोडें आई किहां जावे, किणे पाखडा धुर भोले रे ॥ म० ॥ गो० ॥१३॥ एटले कोई कहे पुर बारे, आया छे दीनदयाळा ॥ त्रिसलानद जिनद दिवाकर, ष्टकाया प्रतिपाळ रे ॥ म ॥ गो ॥ १४ ॥ तहणा दरिसण काजें असुर सुर, आया छे इहां चलाई ॥ इंद्रभूति इम सुणि जन वाणी, आणे मान अकडाई रे ॥

भ० ॥ गो० ॥ १५ ॥ मुझसूं कवण अधिक जगमांडे, विद्यागुण बलधारी ॥ इंद्रजालसूं सुर वश कीधा, आडंबर रच्यो भारी रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ १६ ॥ मुझ आगल सो कदि नही ठेरे, इम सोची तिण वारे ॥ वेठा पालखी मान धरीने, पांचशें छात्र परिवारे रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ १७ ॥ समोसरण तणी देखी रचना, मनमांही ताम विचारे ॥ एसीकलाई नहि मुझमांहि, वश किम आवशे म्हारे रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ १८ ॥ पाछो फिरू तो निंदना थावे, पगपग शोच घणेरो ॥ देख्या श्री जिनराज नयणसूं, विस्मय थया वहुतेरो रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ १९ ॥ हरि हर ब्रह्मा नहिं रवि इंदर, दिखे प्रताप सवायो ॥ इणसूं विवाद करी नहि जीतूं. नाहक मे चल आयो रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ २० ॥ साहामा उभा अणबोला रह्या तव, श्री जगदीश उच्चारे ॥ इंद्रभूति सुखे आया चलाई, तव मनमें सो विचारे रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ २१ ॥ दिनकरने सव जाणे जगतमें, तिम मुझ नाम ए जाणे ॥ पण मुझ मन शंका जो निवारे, तो सवि भाव पिछाणे रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ २२ ॥ परमेश्वर कहे तुझ चित्त शंका, वेदमे तीन दकारो ॥ दया दान दमणो इंद्रिय मन, तत्त्व शुभ एह विचारो रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ २३ ॥ जीव छे निश्चे ए त्रिहुं पदसे, वेद साक्षी इण न्यावे ॥ इम सुणी पंचसयां परिवारे, संजमको पद ठावे रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ २४ ॥ अग्निभूति वायुभूति पण आया, सजम लियो त्रिहुं भाई॥ त्रिपदि ज्ञान लब्धि थइ परगट, गणधर पदवी पाई रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ २५ ॥ छठ छठ तप निरंतर करणी, वरणवी सूत्र मझारो ॥ चार ज्ञान चउदे पूरवधर, उकडु आसण धारो रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ २६ ॥ रात दीवस प्रभु सेवना कीधी, पूछ्या प्रश्न अपारो ॥ चर्चा वाद विषे अति करडा, कीनो अती उपगारो रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ २७ ॥ एक दिवस श्री गोयम शोचे, प्रथम में दिक्षा धारी

॥ मुझने केवल ज्ञान न उपनो, थया चिंतातुर भारी रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ २८ ॥ वीर प्रभु कहे गोयमसेंती, आगें आपण रह्या भेळा ॥ लड्ड वडाइकी रीतज होती, इहां पण थया तुमें चेला रे॥भ०॥गो० ॥ २९ ॥ अब इण भवके आतरे आपण, थास्यां बरोबरी दोई ॥ मोहनी किछो जित लेयो थें, कमी रहे नहि कोइ रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ ३० ॥ एम सुणी हिये हर्ष घणेरो, इद्रभूति मन आयो ॥ धन धन अतरजामी दयानिधि, मुझ पर प्रेम सवायो रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ ३१ ॥ लब्धिनिधि श्री गौतमस्वामी, गृहवासें रह्या पचासो ॥ त्रीस वरस छद्मस्यपणामें, प्रभु सेव्या उल्लासो रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ ३२ ॥ कार्तिक वदि अमावसनी रात्रें, श्री जिन मुक्ति सीधाया ॥ गौतमस्वामीनें, केवल उपनो, इद्र महोत्सव भणी आया रे ॥भ०॥गो० ॥ ३३ ॥ बारा वरष केवल पदमाही, श्री जिनधर्म दीपायो ॥ होइ अजोगी मुक्ति सिधाया, परम मगल पद पायो रे ॥ भ ॥ गो० ॥ ३४ ॥ बाणु वर्षको सर्व आउखो, जगमें कीर्त्ति सवाई ॥ गोतम नामथी रोग न व्यापे, सोग न आवे कदाइ रे ॥ भ० ॥गो०॥ ३५ ॥ वधबधन उच्चाटण कामण, जत्र मत्र नही चाले ॥ अरि करि हरि भय भागे नामथी, दुशमनको गर्व गाले रे ॥भ० ॥ गो० ॥ ३६ ॥ गौतम नामसु विघन विनासे, चोर चरट नहि गंजे ॥ गौतम नामसु ताव तेजारी, दु ख बिमारी सो भजे रे ॥ भ० ॥ गो० ॥३७॥ गौतम नामसु ह्रिरि सिरि सपति, रिद्ध सिध्द बहु आवे ॥ पुत्र परिवार सज्जन सुख शाता, जो समेरे शुध्द भावें रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ ३८ ॥ गग्गा गो कामधेनु सुखदायी, तत्था सुरतरु जाणो ॥ मम्मा माणि चिंतामणिसेंती, गोतम नाम वखाणो रे ॥ भ० ॥ गो० ॥ ३९ ॥ ओगणीशें अठातिश मृगाशिर शुक्लकी, पंचमी तिथि रवि वारो ॥ तिलोक रिखजी कहे गोयम प्रभुने, होजो सदा नमस्कारो रे ॥ भ० ॥ ४० । इति गौतम स्वामीको रास सपूर्ण ॥

॥ अथ चोविश जिनवरका स्तवन प्रारंभः ॥

॥ राग प्रभाती ॥ प्रात उठी चोविश जिनवरको, समरण कीजें भाव धरी ॥ प्रा० ॥ रिखभ आजित संभव अभिनंदन, सुमति कुमति सब दूर हरी ॥ पद्म सुपास चंदा प्रभु ध्यावो, पुष्पदंत हण्या कर्म अरि ॥ प्रा० ॥ १ ॥ शीतल जिन श्रेयांस वासुपूज्य, विमल विमल बुद्धि देत खरी ॥ अनंत धर्म श्री शांति जिनेश्वर, हरियो रोग असाध्य मरी ॥ प्रा० ॥२॥ कुंथु अर मल्लि मुनि सुव्रतजी, नमी नेमि शिव रमणी वरी ॥ पारसनाथ वर्द्धमान जिनेश्वर, केवल लह्यो भव ओघ तरी ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ तुम सम नहिं कोइ तारक दूजो, इम निश्चे मनमांहे धरी ॥ तिलोकरिख कहे जिम तिम करिने, मुक्तिश्री दो प्रभु मेहेर करी ॥ प्रा० ॥ ४ ॥

॥ अथ द्वितीय पद ॥ राग प्रभाती ॥

॥ समर ले श्री आदिनाथ, अजितनाथ भारी ॥ संभव नाथ जगत तात, चरण बलिहारि ॥ उठि प्रभात समरुं नाथ, वंदणा नित ह्यारी ॥ बोधबीज आथ साथ, सेवा दिजो थारी ॥ उ० ॥ स० ॥ १ ॥ अभिनंदन दुःख निकंदन, सुमति सुमति धारी ॥ पदम सुपास चंदा प्रभु, आशा पूरो सारी ॥ उ० ॥ स० ॥ २ ॥ सुविधि शतिल श्रेयांस नाथ, वासुपूज्य जहारी ॥ विमल अनंत धर्म शांति, मेटो सब बिमारी ॥ उ० ॥ स० ॥ ३ ॥ कुंथु अरह मल्लिनाथ, कर्म कियां छारी ॥ मुनिसुव्रत विशमा प्रभु, करुणाके भंडारी ॥ उ० ॥ स० ॥ ४ ॥ एकविशमा नमिनाथ वंदू, सदा सुखकारी ॥ रिष्टनेमी दया काज, तजी राजुल नारी ॥ उ० ॥ स० ॥ ५ ॥ बचाया नाग नागिणी प्रभु, परमेष्टी उच्चारी ॥ परचा पूरण पारसनाथ, परऊपगारी ॥उ०॥स०॥६॥ महावीर धीर धार, कर्मकूं विदारी ॥ केवल ज्ञान भाव भया, थाप्यां तीर्थ चारी ॥उ०॥स०॥ ७ ॥ तारि भव्यजीव गया, मुक्तिके मझारी ॥ तिलोकरिख वीनवे प्रभु, वीनती ल्यो धारी ॥ उ० ॥स०॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ तृतीय पद प्रारंभ ॥

॥ गोतम समुद्र, सागर सुगंभीर ॥ ए देशी ॥ श्री आदिआदी श्वरू, परम परमेश्वरू, नमत सुरेश्वरू, हित धरी ए ॥ अजित रिपुजित ए, जगत आदित ए, प्रसिद्ध जसकीर्त्ति, शिववधु वरी ए ॥ १ ॥ श्री संभव नाम ए, सकलगुणधाम ए, प्रणमु शिर नाम, सेवा करू ए ॥ अभिनंदन ईश ए, जय जगदीश ए, रिपुदल पीस, केवलधरू ए ॥ २ ॥ सुमति कुमति हरो, कोशसुष्ठन भरो, तुम तणो आशरो, मुझ भणी ए ॥ पद्म प्रभु पद्म ए, सुमन सुपद्म ए, द्यो शिव सद्म, प्रभु शिवधणी ए ॥ ३ ॥ वंदु सुपास ए, अनंतगुणरास ए, पूरो प्रभु आश, सेवक तणी ए ॥ चंदप्रभु वदियें, दुष्कृत निकदियें, काटि मोह फंदी, शिरोमणी ए ॥४॥ सुविधि सुबुद्धि धणी, कीर्त्ति जगमें घणी, सेवना तेह तणी, वर सदा ए ॥ दशमा शीतलशिरें, नामथी निस्तरे, हरे संकट, करे संपदा ए ॥५॥ श्रेयांस दयाल ए, परम कृपाल ए, भक्तप्रतिपाल, करुणा करो ए ॥ वासुपूज्य जगतारणा, मंगलकारणा, भविक उद्धारणा, दुःख हरो ए ॥ ६ ॥ विमल विमल मति, करो सुखसंपति, परम पती जती, गुण घणा ए, ॥ अनंत जिनंद ए, अनंतगुण कंद ए, टाल भव फंद, सेवकतणा ए ॥ ७ ॥ धर्म धुरधरा, राजराजेश्वरा, मटा मरण जरा, जगपति ए ॥ शांति शांति करो, रोग दूरित हरो, नाथ था आशरो, सिद्धगति ए ॥८॥ कुंथु कुंथु करी, कर्म कुरंग हरी, जिम थइ शिव वरी, जगगुरु ए॥ अरह गुणसागरू, परम उजागरू, घन करुणागरू, नागरू ए ॥९॥ मल्ली मल्लमारणा, जगतजन तारणा, भक्तसुख कारणा, स्वामीजी ए ॥ मुनिसुव्रत सार ए, करुणाभंडार ए, अमर अविकार, गुण धामजी ए ॥ १० ॥ नमी हित कारणा, अधम उद्धारणा, विघन विदारणा, कर दया ए ॥ रिष्टनेमी पुरा जनी, परमकरुणा मती, त्यागी राजुल सती, शिवगया ए ॥ ११ ॥ पारस स्वारस क्षय, ना

वारस वारसभय, पंचमीगतिगय, जस घणो ए ॥ महावीर गुणधीर ए, जगतजनपीर ए, करो भवतीर, द्यो निजपणो ए ॥ १२ ॥ हुं प्रभुदास ए, करुं अरदास ए, द्यो सिद्धवास, मया करी ए ॥ कहे रिखतिलोक एं, सुदृष्टिविलोक ए, अविचल थोक, द्यो हिरि सिरी ए ॥ १३ ॥ इति संपूर्ण ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ पद प्रारंभः ॥

॥ राग ठुमरी ॥ समर समर जिननाथ समरि ले, भविजन जनम सुधारक हे ॥ वारी स० ॥ १ ॥ रिखभ अजित संभव अभिनंदन, कर्मरिपुके विदारक हे ॥ वारि स० ॥ २ ॥ सुमति पदम सुपास चंदा प्रभु, भवदुःखताप निवारक हे ॥ वारी स० ॥ ३ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, छ कायके जीव उगारक हे ॥ वारी स० ॥ ४ ॥ विमल अनंत धर्म शांति नाथजी, सुखसंपति हितकारक हे ॥ वारी स० ॥ ५ ॥ कुंथु अर मल्लि मुनिसुव्रतजी, धर्मको मार्ग उच्चारक हे ॥ वारी स० ॥ ६ ॥ नमी नेमी पारस महावीरजी, हद्द क्षमा प्रभु धारक हे ॥ वारी स० ॥ ७ ॥ केवल लेइ प्रभु मुक्ति विराज्या, अजर अमर अविकारक हे ॥ वारी स० ॥ ८ ॥ तिलोकरिख कहे तार जगतारक, तुम विना नहिं कोई उवारक हे ॥ वारी स० ॥ ९ ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचम पद प्रारंभः ॥

॥ देशी फागनी ॥ प्रणमो नित नित चोविशजिन सुखदाता ॥ ॥ ए टेक ॥ रिखभ अजित संभव अभिनंदन, तोडदिया मोहनीका ताता ॥ प्र० ॥ १ ॥ सुमति पदम सुपास चंदा प्रभु, विघन टले ज्यांरा गुण गाता ॥ प्र० ॥ २ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, छोड दिया कुटुंबका नाता ॥ प्र० ॥ ३ ॥ विमल अनंत धर्म शांतिनाथ जी, सरिकी मेट दिनी सुखशाता ॥ प्र० ॥ ४ ॥ कुंथु अर मल्लि मुनिसुव्रतजी, जनम मरणका मिटाया खाता ॥ प्र० ॥ ५ ॥

नमी नेमी पारस माहावीरजी, शासननायक जगभ्राता ॥ प्र० ॥६॥ ए चोविश जगदीश दयाला, शिवपुर सुखमें सदाय माता ॥ प्र० ॥ ७ ॥ तिलोकरिख कहे तारो मोय वगसु, अचल भक्ति दिजो एहि चाहता ॥ प्र ॥ ८ ॥ उगणीशे उगणचालीश पोसशुदि चउदश, दियावडीमें गुण किया उलसाता ॥ प्र ॥ ९ ॥ इति ॥ ५ ॥

॥ अथ पष्ठ पद प्रारभ ॥

॥ मानव जनम मानव जनम रतन तेनें पायो रे, सतगुरु सम झायो ॥ मा० ॥ ए देशी ॥ नित वदु नित वदु चोवीश जिन देवा रे, चाहु चरणकी सेवा ॥ नि ॥ ए टेक ॥ रिखम अजित संभव सुखकारी, अभिनदनजी जसधारी रे ॥ प्रभु परम दयाला, काट्या कर्मका जाला, दिया चउगति ताला ॥ नि० ॥ १ ॥ सुमति पदम सुपारस असवता, चद्रवण चदाप्रभु सोहता रे ॥ भवताप निवारी, सब शत्रुविदारी, केवल्पदधारी ॥ नि० ॥ २ ॥ सुविधि शीतल श्रेयास जिनदा, वासुपूज्य मेट्या भवफदा रे ॥ जगजीवन मामी, प्रभु अतरजामी, शिवलक्ष्मी पामी ॥ नि ॥ ३ ॥ विमल अनत धर्म रिद्धि पाई, शांतिनाथजी शाति वरताई रे ॥ भया परम सोभागी, चक्रीपद ऋद्धि त्यागी, शिववधू अनुरागी ॥ नि० ॥ ४ ॥ कुथु अर मल्ली मल धाया, मुनिसुव्रतजी व्रत ठाया रे ॥ भविजन समझाया, त्रिजकका राया, अविचलपद पाया ॥ नि ॥ ५ ॥ नमी नेमी पारस पुरिसादानी, महावीर सासण पति ठानी रे ॥ दद क्षमा प्रभुधारी, घातिकर्म निवारी, थाप्यां तीरथ चारी ॥ नि० ॥ ६ ॥ ए चोविशजगदीश महता, सुण लीजो अरजि कृपावता रे ॥ तुम सरण न आया, तिणथी दुःख पायो, भयो में अति कायो ॥ नि ॥ ७ ॥ निरर्थक काल अनत गमायो, अब हु तुम शरणें आयो रे ॥ सुभन्याए पिछाणी, जगतारक जाणी, दृढता मन आणी ॥ नि ॥ ८ ॥ निलोकरिखजी कहे तिलोकरक्षपद दिजो,

सेवकपर महेर करीजो रे ॥ निजविरुद्विचारो, सुनजर निहालो, भवपार उतारो ॥ नित० ॥ ९ ॥ इति सपूर्ण ॥ ६ ॥

॥ अथ सप्तम पद प्रारंभः ॥

॥ ठाकुर भलें विराज्या जी ॥ ए देशी ॥ आरतिमां छे ॥ साहिब भलें विराज्या जी, चोवीशे महाराज, मुक्तिमें भले विराज्या जी ॥ ए टेक ॥ रिखभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पदम सुपास ॥ चंदा प्रभुजी ने सुविधि जिनेश्वर, शीतल द्यो शिववास ॥ सा० ॥१॥ श्रीश्रेयांस वासुपूज्य समरो, विमल विमल मतिवंत ॥ अनंतनाथ प्रभुधर्म जिनेश्वर, शांति करो श्रीसंत ॥ सा० ॥ २ ॥ कुंथुनाथ प्रभु करुणा सागर, अरहनाथ जगदीश ॥ माल्लिनाथ श्रीमुनिसुव्रतजी, नित्य नमाउं शीश ॥ सा० ॥ ३ ॥ एकविशमा नमिनाथ निरुपम, रिष्टनेमि जगधार ॥ तोरणसे पाछा फिरया प्रभु, शिवरमणी भरतार ॥ सा० ॥ ४ ॥ पारस पारस सरिखा प्रभु, निरधारसका नाथ ॥ वर्धमान सासणका सामी, प्रणमूं जोडी हाथ ॥ सा० ॥ ५ ॥ तुम विन पायो दुःख अनंता, जनम मरण जंजाल ॥ तिलोक रिख कहे जिम तिम करिने तारो दीनदयाल ॥ सा० ॥ ६ ॥ इति संपूर्ण ॥ ७ ॥

॥ अथ अष्टम पद प्रारंभः ॥

॥ राग वसंत ॥ शांति चरणारी जाउं बलिहारी ॥ शां० ॥ ए देशी ॥ झेलो बंदणा नाथ हमारी, तुमारे चरणकी बलिहारी ॥ ए टेक ॥ रिखभ अजित संभव अभिनंदन, ॥ सुमतिपदमसुखकारी ॥ श्रीसुपार्श्व चंदाप्रभु समरो, जगनायक जसधारी, प्रभुजी पूरण उपगारी ॥ झे० ॥ १ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, विमल अनंत धर्म धारी ॥ शांतिजिनंद सुख कंद जगतसे, मेट दीनी सब मारी, हरो मेरी विपत बिमारी ॥ झे० ॥ २ ॥ कुंथू अर माल्लि मुनिसुव्रतजी, नमी नेमी सुविचारी ॥ तोरणसें पाछा फिर आया, छोडिकें राज दुलारी, नाथ तुम करुणाभंडारी ॥ झे० ॥ ३ ॥ बेवारस

के वारस पारस, पचपरमेष्ठी उच्चारी ॥ नागनागिणी जलत बचाया, कीना सुर अवतारी, महिमा जगमें अति भारी ॥ श्रे० ॥ ४ ॥ शासन नायक वीर जिनेश्वर, हृदक्षमाप्रभुधारी ॥ केवल ले प्रभु धर्म बतायो, सूत्र चारित्र सारी, तीरथ थाप्या प्रभु चारी ॥ श्रे ॥ ५ ॥ अण सण लेई प्रभुजोग त्याग कर, पहुता है मुक्तिमझारी ॥ अनंत सुख मांही जाय विराज्याती, नीरजननीराकारी, रह्या लोकालोक निहारी ॥ श्रे० ॥ ६ ॥ मोहमायामांहि उलज रह्यो में, पायो दुःख अपारी ॥ तुम शरणाबिन चउगति भटक्यो, धर्मकी बुद्धि बिसारी, शीख सतगुरुकी न धारी ॥ श्रे० ॥ ७ ॥ अशुभकर्म कछु दूर भयासु, वाणी लगी प्रभु प्यारी ॥ अधम उद्धारण बिरुद सुणिने, सरणो लियो सुविचारी, सार करजो प्रभु म्हारी ॥ श्रे० ॥ ८ ॥ मुझ सरिखो नहिं दीन जगतमें, तुम सरखो दातारी ॥ जिम तिम करि भवपार उतारो, या मांगु रिखधारी, अरज लीजो अवधारी ॥ श्रे० ॥ ९ ॥ ओगणीशें अडतिश माघकृष्ण पक्ष, त्रीज तिथी शनिवारी ॥ देश दक्षिण आवलकोटि पेठमें, जोड करी हितकारी, तिलोक रिख कहे सुविचारी ॥ श्रे० ॥ १० ॥ इति ॥ ९ ॥

॥ अथ चोवीश तीर्थंकर स्तवन प्रारभ ॥

॥ तत्र प्रथम श्री रिखभजिन स्तवन प्रारभ ॥

॥ इण सरवरियारी पाल, उभी दोय नागरी ॥ मारा लाल ॥ उभी दोयनागरी ॥ ए देशी ॥ श्री सतगुरु सुपसाय जाण्या शिव पुर धणी माराराज ॥ जाण्या० ॥ श्री मरुदेवीना नद, नाभि कुल गुणमणी ॥ मा० ॥ ना० ॥ त्रिभुवन नायक देव पायकनी वीनती ॥ मा० ॥ पा० ॥ मोह रिपु भय आण, सरण ग्रह्यो शुभमति ॥ मा० ॥ स० ॥ १ ॥ तार तार मुझ तात, वात कहुं मनतणी ॥ मा० ॥ वा० ॥ जनम मरण अजाल, आवे घबरावणी ॥ मा० ॥ आ० ॥ तारया जीव अनंत, सत सुगुणा घणा ॥ मा० ॥ स० ॥

उद्धरिया अपराधि, महा अवगुण तणा ॥ मा० ॥ मा० ॥ २ ॥ तुम वृद्ध दीन दयाल, हुं वाल दयामणो ॥ मा० ॥ हुं० ॥ क्यों न करो मुझ सार, विसार्यो किम घणो ॥ मा० ॥ वि० ॥ जो तारो गुणवंत, अचरिज छे नही ॥ मा० ॥ अ० ॥ जो मुझ सरिखो दीन, उद्धार्या जस सही ॥ मा० ॥ उ० ॥ ३ ॥ आपद पडियो आज, आयो शरणें वही ॥ मा० ॥ आ० ॥ ओर न तारणहार, ते माटें मे कही ॥ मा० ॥ ते० ॥ मुझ सरिखो कोइ दीन, प्रभु तुझ सारिखो ॥ मा० ॥ प्र० ॥ लाधे नहिं जगमांय , कियो मे पारखो ॥ मा० ॥ कि० ॥ ४ ॥ तुंहिज तारो नेट, पहिला पाछे सही ॥ मा० ॥ प० ॥ सेवक करे पोकार, वाहिर शोभा नहीं ॥ मा० ॥ वा० ॥ समर्थ छो तुमें स्वामि, जगत तारण भणी ॥ मा० ॥ ज० ॥ हवे मुझ वेला केम, आना कानी घणी ॥ मा० ॥ आ० ॥ ५ ॥ भावे तार म तार, महारुं शु जावशे ॥ मा० ॥ म० ॥ पण तुम तारक विरुद, किणी विध आवशे ॥ मा० ॥ कि० ॥ कहेशो ए छे अजाण, आवे नहिं वीनती ॥ मा० ॥ आ० ॥ मावित्र विना कहो कोण, शिखावे ते रीती ॥ मा० ॥ शि० ॥ ६ ॥ शिखावो मुझ सोय, कृपा करि नाथ जी ॥ मा० ॥ कृ० ॥ विण मनाया नही छोडुं, तुमारो साथ जी ॥ मा० ॥ तु० ॥ करुणा करी मुझ काढयो, नरक निगोदशुं ॥ मा० ॥ न० ॥ आव्यो आप हजूर, तारो हवे मोदशुं ॥ मा० ॥ ता० ॥ ७ ॥ गजहोदे निज मात, मुगति मेली खरी ॥ मा० ॥ मु० ॥ भरतने अरिसा भवने, दीनी केवल सिरी ॥ मा० ॥ दि० ॥ अठाणुं निज पुत्र, जूझंता वारिया ॥ मा० ॥ जू० ॥ वाहुवल गजमान, थकी ते ऊतारीया ॥ मा० ॥ थ० ॥ ८ ॥ वीतराग समभाव, छो समतासागरु ॥ मा० ॥ छो० ॥ माहरो थारो नही आप तो, तारो उजागरु ॥ मा० ॥ ता० ॥ मातपिताशी जेम

बालक आडो करे ॥ मा० ॥ बा० ॥ रिखम जिनंदसु तेम, तिलोकरिख उच्चरे ॥ मा० ॥ तिलो० ॥ ९ ॥ इति ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय अजित जिन स्तवन प्रारम ॥

॥ मेरी मेरी करतां जन्म गयो रे ॥ ए देशी ॥ श्री श्री अजित अरज सुणो मेरी, टालो दुखदायक अष्ट वेरी ॥ श्री० ॥ ए आकणी ॥ जिहां आउ तिहा सगज आवे, निज गुण संपति दूर भगावे ॥ श्री० ॥ ज्ञान प्रछू तव आलस आवे, मणीयो सो छिनमें विसरावे ॥ श्री० ॥ १ ॥ नींद् आवे धर्म कारजमांही, सुख दु:ख वेदनासुं दर पाइ ॥ श्री० ॥ देव ग्रुरु शुद्ध दाय न आवे, मिथ्यामोहनी अधिक भमावे ॥ श्री० ॥ २ ॥ आयुष्य बधण छिन छिन छीजे, अटल अवगाहन केम लहीजें ॥ श्री० ॥ किहांइक उच्च नामपद आपे, किहांइक नीच नाम करि थापे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ किहाइक शुभ सोभाग बधावे, किहांइक अपजस नाम फेलावे ॥ श्री० ॥ अमूर्तिक पदकी करे हाणी, विपत्ति इम मुझने अभि काणी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ किहांइक उच्चगोत्रमांही मेले, किहांइक नीच गोत्रबिचे ठेले ॥ श्री० ॥ अगरु अलघु रूप करे दूरो, कायर मोय कियो भरपूरो ॥ श्री० ॥ ५ ॥ दान लाभ अंतराय दे भारी, भो गोपभोग बीरज परिहारी ॥ श्री० ॥ शक्ति अनत सो दीनी लुकाइ, दु:ख देवे मुझ चउगति मांई ॥ श्री० ॥ ६ ॥ जितशत्रुसुत विजया देके नदा, तुम शरणे आयो गुणच्छंदा ॥ श्री ॥ शत्रु सकल सो करियो निकदा, तिलोकरिख भय भव तुम बंदा ॥ श्री० ॥ ७ ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय सभवाजिन स्तवन प्रारभ ॥

॥ श्री सीमधर पाय नमु हो प्रमु जी ॥ ए देशी ॥ सभव जिन सुणो बीनती हो प्रभुजी, उपगारी जगधार ॥ कियो उपगार यें लोकमें हो ॥ प्र ॥ सुखी कियां नर नारि ॥ साहिब मानजो हो, प्रभुजी सेवकनी अरदास ॥ १ ॥ ए टेक ॥ ज्ञान ध्यान तप

जप क्रिया हो ॥ प्र० ॥ संजम मारग बुद्ध ॥ असंभव कर्म काल शुं हो ॥ प्र० ॥ सो करो संभव शुद्ध ॥ सा० ॥ २ ॥ तुम विन संभव कुण करे हो ॥ प्र० ॥ कुण उतारे पार ॥ दीनदयाल दया करो हो ॥ प्र० ॥ तुम छो जगदाधार ॥ सा० ॥ ३ ॥ शरणें आयो आपके हो ॥ प्र० ॥ पतित उद्धारण आप ॥ जाणो घट घट वातडी हो ॥ प्र० ॥ दिजो कर्मबंध काप ॥ सा० ॥ ४ ॥ तुं अंतर धन माहरो हो ॥ प्र० ॥ भव जल तारण जहाज ॥ मुझ अवगुण मत झांखजो हो ॥ प्र० ॥ बांहे ग्रह्याकी लाज ॥ सा० ॥ ५ ॥ एक गामनो अधिपति हो ॥ प्र० ॥ करे प्रजानी सार ॥ तुम त्रीजगना ईश्वरू हो ॥ प्र० ॥ क्यों न करो भवपार ॥ सा० ॥ ६ ॥ नृप जितारथ कुलतिलो हो ॥ प्र० ॥ सेना देवीना नंद ॥ तिलोकरिख करे विनती हो ॥ प्र० ॥ देजो शिव सुख कंद ॥ सा० ॥ ७ ॥ इति ॥३॥

॥ अथ चतुर्थ अभिनंदनजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ कुविसन मारग माथे धिक धिक ॥ ए देशी ॥ अभिनंदन वंदन नित करियें, धरियें आतम ध्यान हो ॥ डरियें मिथ्या देव सकलथी, जे वश पडिया तोफान हो ॥ अ० ॥ १ ॥ शंख चक्र धनुष कर धारी, माता विषय कषाय हो ॥ नित्य रहे राता रामा रमणमें, तस शरणें शुं थाय हो ॥ अ० ॥ २ ॥ कोइक दंड कमंडल धारी, निज धी सुंइ घरवास हो ॥ मृगछाला माला मोजीयुत, ते किम दे शिववास हो ॥ अ० ॥ ३ ॥ हस्त कपाल व्याल भूषण युत, रुंढमाल गलमांय हो ॥ गिरिजा भोग मगन निशिवासर, ते किम आवे दाय हो ॥ अ० ॥ ४ ॥ कोइक महिष अजा भख मागे, कोइक मदिरा पान हो ॥ राग द्वेष मद मोहमें लीना, ते किम दे निर्वाण हो ॥ अ० ॥ ५ ॥ आप तरे नहिं भवसागरथी, ते नहिं तारणहार हो ॥ पाहण नाव तरे किण विध करि, सोचो हिरदे विचार हो ॥ अ० ॥ ६ ॥ संवरराय सिद्धारथ नंदन, परम अदोषी

देव हो ॥ तिलोकरिख अलि गुणरस लीनो, प्रभु चरणांबुज सेव हो ॥ अ० ॥ ७ ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचम सुमतिजिन स्तवन प्रारभ ॥

॥ कुंथु जिनराज तु एसो ॥ ए देशी ॥ रेख्तामें ॥ सुमति जिनराज है प्यारा, सळकर्मा सुर मोहनगारा ॥ एता दिन मर्ममें भूला, चर्तुगति हिंडोलमें झूला ॥ सु० ॥ १ ॥ बावल में बोया आम जानी, काचटुक लिया रत्न मानी ॥ जहेर के पिया अमृत जेसा, रत्नकुं देखा कंकर तेसा ॥ सु० ॥ २ ॥ एसी भर्म बुद्धि रहि मेरी, प्रतित नहिं रखी दिलु तेरी ॥ किया मेने कर्म खुब खोटा, सघा में नर्क बिच सोटा ॥ स० ॥ ३ ॥ चडी मोहे चागीकी मस्ती, उस्सें मेरि रही अकल खस्ती ॥ पस्ती विन पाया में तस्ती, अहान मेरी लही पूर कस्ती ॥ सु० ॥ ४ ॥ मेरा दिल बहोत घबराया, तुमारे आसरे आया ॥ तकसिरी माफ कर दे मेरी, देख तु लायकी तेरी ॥ सु० ॥ ५ ॥ अर्जकी सर्ज तुम जाणो, प्रभु अब कायकुं ताणो ॥ अब तो महेरबानगी करणां, मिटा दो जन्म और मरणां ॥ सु० ॥ ६ ॥ मेघरथ भूप फरजदा, मंगला मातके नंदा ॥ तिलोकरिख सेव बिच चहाता, अचल मोच देनां सुखशाता ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति ॥ ५ ॥

॥ अथ षष्ट पद्मप्रभजिन स्तवन प्रारभ ॥

॥ श्री जिन मुझने पार उतारो ॥ ए देशी ॥ पद्म प्रभु भव जळ पार उतारो, में सरणो लियो चरणारो ॥ ए टेक ॥ पद्म लक्षन प्रभु पगमांहि झलके, उपमा पदम उचारो ॥ उत्पन्न होवे पंकयकी पकज, जळसु लहे विस्तारो ॥ प० ॥ १ ॥ कामभोग सो कादव सरिखा, फरमाया सूत्र मझारो ॥ कर्मजलें वृद्धि पाया प्रभुजी, गोत्रतीर्थकर सारो ॥ प० ॥ २ ॥ दोनुइ छोड तोड सब बंधन, वरी शिवबधू सुखकारो ॥ तिम तुम किंकर पर करो करुणा, जुगमें ए दोइ निवारो ॥ प० ॥ ३ ॥ तुमबिन कोइ दूसरो जगमें, दिसे

नहि तारणहारो ॥ भक्तवत्सल भगवंत दयानिधि, अविनाशी अविकारो ॥ प० ॥ ४ ॥ भूख्याने भोजन जल तरयाने, रोगी औषध उपचारो ॥ तिम मुझ मनमां निश्चें निरंतर, आप तणो आधारो ॥ प० ॥ ५ ॥ आशानिराश करे नहिं दाता, मंगण जो आवे द्वारो ॥ वंछित दायक भक्तसहायक, तुम छो परम दातारो ॥ प० ॥ ६ ॥ श्रीधर नराधिप सुसमा तनय प्रभु, जीवन प्राण आधारो ॥ तिलोकरिख कहे जिम तिम मुझने, द्यो निज पद गुण थारो ॥प०॥७॥इति॥६॥

॥ अथ सप्तम सुपार्श्वजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ बंधव बोल मानो हो ॥ ए देशी ॥ आशा पुरो सुपासजी, नित भावना भाउं हो ॥ चरण कमल सेवा सदा, दरिसण चित्त चाउं हो ॥ सुपारस आश पूरो हो ॥ १ ॥ तुम गुण जो श्रवणे सुणु, तो पण हरखाउं हो ॥ तुम भय भंजन साहेबा, शरणागतमें बोलाउं हो ॥ सु० ॥ २ ॥ पुष्करावर्त घन धार जूं, सुखवेलि बढाउं हो ॥ मोहणी अंधकार अनादिके, रवि तेम नसाउं हो ॥ सु० ॥३॥ शिवपंथ बतावन तुं प्रभु, जिम नेत्र अगाउं हो ॥ कर्म सघन वन काटवा, फरशी जिम घाउं हो ॥ सु० ॥ ४ ॥ संकट शिला भंजन भणी, जिम बज्र सराउं हो ॥ आशा पूरण सुरतरु, चिंतामणि जिम भाउं हो ॥ सु० ॥ ५ ॥ भवजल तारण तुं प्रभु, निर्यामक नाऊं हो ॥ आधि व्याधिने निवारवा, धनंतर तिम गाउं हो ॥ सु० ॥ ६ ॥ विष्णुपिता नंदा मायना, अगजने मनाऊं हो ॥ तिलोकरिख कहे इच्छा पूरजो, नित्य शिश नमाउं हो ॥ सु० ॥ ७ ॥ भखरे ॥ ७ ॥

॥ अथाष्टम चंदप्रभ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ कडखानी देशीमां ॥ वंदुं जिनंद श्री चद प्रा, ते किम अरविंद सुख कंद सेवा ॥ गुण मकरंद मन आगरथी, ते न चरण लखमणा नंद देवाधिदेवा ॥ वं० ॥ १ ॥ छंड जगरंरि, सोचो हिरुगहे, तोड मोह फंद सो केवल पाया ॥ इंद्र नरेंद्र सु न, परम अदोदके, दिक,

आनंदघर सेव करिने उमाया ॥ च० ॥ २ ॥ चद्रपुरी जन्म चद्रलक्षन चरणमें, वरण पण चद्र द्रव्य भाव चंदा ॥ पूरण चद सो वदनं झगमग करे, वाणी शीतल मुख अमृत झरदा ॥ च० ॥ ३ ॥ विपय कपायको ताप मद्दा प्रवलता, उपशमे जो शुद्ध भाव ध्यावे ॥ ऊपमा देश अविशेप पक्ष शोभतां, सपूर्ण उपमा केम आवे ॥ च० ॥ ४ ॥ चद्र सकलक तस राहु प्रति शत्रुसग, दिवसें पलाश दल जेम दीसे ॥ तुम निकलंक कर्म राहु दूरें किया, सदा संक्रांति गुण विश्वावीशे ॥ च० ॥ ५ ॥ भक्तके सहायक घायक कर्मके, त्रिभुवन नायक दुःख हरता ॥ करुणाके सागरु गुण रतना गरु, जगत उजागरु सुख करता ॥ च ॥ ६ ॥ माहासेन राजिंदके नदसू वंदना, तिलोकरिख कहे कर जोडि दोई ॥ एक समे मात्र मुझ मया करी दर्श धो, अपर नहिं वाछना रच कोई ॥ च ॥ ७ ॥

॥ अथ नवम सुविधिजिन स्तवन प्रारभ ॥

॥ सिद्धचक्रजीने पूजो रे भविका ॥ ए देशी ॥ सुविधि जिनंद ने ध्यावो रे भविका, अजर अमर पद पावो ॥ ए आंकणी ॥ करम हणी केवल पद पाया, थाप्या तीरथ चउ खती ॥ सयमेव बोध ते पुरुपमें उत्तम, सिंह पुडरिक गंध दती रे ॥ भ० ॥ १ ॥ ॥ सु ॥ लोक उत्तम नाथ सो हितकारक, दीपक रवि जिम आणो ॥ अभय चक्खु मारग शरण दाता, जितवबोध वखाणु रे ॥ ॥ भ ॥ २ ॥ सु ॥ धर्म अने धर्मदेशना दायक, नायक सारथी सोह ॥ धरम प्रधान धर्म चक्री सम, भवोदधि दीप ज्यु जोइ र ॥ भ ॥ ३ ॥ सु० ॥ शरणागतने राखण समरथ, ज्ञान दरिसण थिर सेरी ॥ नीवरत्या छद्मस्थपणाथी, जीते जीतावे वैरी रे ॥ भ० ॥ ४ ॥ सु० ॥ तरे तरावे समझे समझावे, पापने छोडे छोडावे ॥ पूरण ज्ञान दरिसण शिव अचल, रोगरहित सो कहावे ॥ भ० ॥ ५ ॥ सु ॥ अनंत अक्षय पद बाधा नहिं जिनके, फलि ससारमें

नावे ॥ सिद्धगति नाम शाश्वत स्थानकें, पहूता जिहां मन चावे रे ॥ भ० ॥ ६ ॥ सु० ॥ सुग्रीव तात रंभा देवी जाया, धन धन अंतरजामी ॥ तिलोकरिख पायक तुमें नायक, वंदूं नित शिर नामी रे ॥ भ० ॥ ७ ॥ सु० ॥ इति ॥ ९ ॥

॥ अथ दशम शीतलजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ दयापर दोलत झुक रही ॥ तिजकी ए देशी ॥ शीतलजिन जी शीतल करो, तेरे तन गीयाकी लाय स्वामी ॥ जनम रूपी रूइ विषेजी कांइ, मरणकी आग द्यो बुझाय स्वामी ॥ शी० ॥ १ ॥ संजोगमांहे विजोगनी जी कांइ, संपदामें विपत्ति कहाय ॥ स्वा० ॥ सुखशातामें अशाताकी जी कांइ, अग्नि दियोने मिटाय ॥ स्वा० ॥ शी० ॥ २ ॥ हरख ठिकाणे शोककी जी कांइ, ज्ञानके मांही अज्ञान ॥ स्वा० ॥ सुबुद्धिके कुबुद्धितणी जी कांइ, शीलमें कुशील दुःख-दान ॥ स्वा० ॥ शी० ॥ ३ ॥ संजम सतरा प्रकारको जी कांइ, जिणमें असंजम आग ॥ स्वा० ॥ क्षमा धरम रूइ विषे जी कांइ, मेटो क्रोध तणो दाग ॥ स्वा० ॥ शी० ॥ ४ ॥ विनय कह्यो सुख कारणो जी कांइ, सर्व धर्मको सार ॥ स्वा० ॥ अविनय हुताशनी लोकमें जी कांइ, दीजो एह निवार ॥ स्वा० ॥ शी० ॥ ५ ॥ संतोष विषे तृष्णा तणी जी कांइ, दीजो हुताशन टाल ॥ स्वा० ॥ दीसे नहि त्रिहुं लोकमें जी कांइ, तुम सम शीतल हेमाल ॥ स्वा० ॥ शी० ॥ ६ ॥ दृढसेन भूप नंदा मायना जी कांइ, अंगज सुणो अरदास ॥ स्वा० ॥ तिलोक कहे मुझ भणी जी कांइ, दीजो शिवशीतलवास ॥ स्वा० ॥ शी० ॥ ७ ॥ इति ॥ १० ॥

॥ अथ एकादश श्रेयांसजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ श्रीमहावीर जिनेश्वर, आप विराज्या अमर सहेरमें ॥ ए देशी ॥ श्रेयांस जिनेश्वर, अरज सुनोजी मोरी साहेवा ॥ ए आंकणी ॥ जिम तुम श्रेयपद अंश शुद्ध कर, श्रेय पद नाम प्रसिद्ध ॥ ते

तुम कृपा भावशुजी कांइ, आपो पहज रिद्ध हो ॥ प्रे० ॥ १ ॥ तुम करुणारस सागर नागर, गुण रतनागर ईश ॥ शु तुमने स्वामी पडे सो कांई, क्यों न करो बक्सीस हो ॥प्रे०॥२॥ चाकर चूक पडे कोइ विरियां, गिरुवा ठाकुर जेह ॥ तेह निवाजे पलकमें जी कांइ, गिरुवा एम सनेह हो ॥ प्रे० ॥ ३ ॥ मात पिताशु मूरख बालक, करे कोइक अपराध ॥ निज जाणीने तेह निवाजे, तुम गुण अगम अगाध हो ॥ प्रे० ॥ ४ ॥ हु निगुणो पापी निर्बुद्धि, कूड कपट भंडार ॥ जिम तिम करिने पावन करकें, उतारो भवपार हो ॥ प्रे० ॥ ५ ॥ तुम विना कोई तारणहारो, जगमें दीसे नांहि ॥ विण तार्‍या तुमने नहि छोडु, ए निश्चे मनमाहि हो ॥ प्रे० ॥ ६ ॥ विष्णु पिता विन्हु महतारी, धन धन नदन जेह ॥ तिलोकरिख कहे मुझ शिर टीको, लागो नवल सनेह हो ॥ प्रे० ॥ ७ ॥११॥

॥ अथ द्वादश वासुपूज्यजिन स्तवन प्रारंभ ॥

राग ठुमरी ॥ प्रभु वासुपूज्य जगनाथ निरजन, रोम रोम मेरे मन वसिया, वारी रोम रोम मेरे दिल वसिया ॥ प्र० ॥ ए टेक ॥ चद्र चकोर ओर मोर मेघ मन, मधुकर ज्यों मालति रसिया रे ॥ म० ॥ प्र० ॥ १ ॥ सति भरतार बालक चित्त जननी, कुंजर कजली वन वसीया ॥ कु० ॥ प्र० ॥ अथ कोयल चकवी रवि चाहत, हस सागर जल उल्लसियावारी ॥ ह० ॥ प्र० ॥ २ ॥ तिम तुमसु मुझ प्रीति घणेरी, करम भरममांही में फसिया ॥ क० ॥ प्र० ॥ विषय कषाय माहा मदमातो, राग द्वेष विषधर डसीया ॥ रा० ॥ प्र० ॥ ३ ॥ सुनि जप गरुड शब्द जिम जाणुं, मन शुद्ध नाम लेता नसिया ॥ म० ॥ प्र० ॥ परम गारुडी तुम हो कृपानिधि, सकल जहर दुरा जे चसिया ॥ स० ॥ प्र० ॥ ४ ॥ देवाधिदेव अलेख अगोचर, मिथ्या भर्म सो दुरा खसिया ॥ मि० ॥ प्र० ॥ करमको खार हरयो तप सोगसुं, भाव अगनि करी उज्वसिया ॥ भा० ॥ प्र० ॥ ५ ॥

भवि मन रंजन अलख निरंजन, सिद्धिमे सिद्ध जाय ठसिया ॥ सि० ॥ प्र० ॥ सहज स्वभाव तुंबाको तिरण पण, करम वजन छूटा उकसिया ॥ क० ॥ प्र० ॥ ६ ॥ मेरेसें दुर नहिं प्रभु कछुही, जेसें अग्नि अरणीके घसीया ॥ जे० ॥ प्र० ॥ वासुपूज्य जयादेवी नंदनका, तिलोकरिखजी दरसण त्रसिया ॥ ति० ॥ प्र० ॥ ७ ॥ इति ॥ १२ ॥

॥ अथ त्रयोदश विमलजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ विमल जिनेसर वंदो रे भविका, भव भव सरण सहाई ॥ ए टेक ॥ ज्ञान अनंत पण अलोकको छेडो, कह्यो न आगम माई ॥ दरिसन केवल स्वपन नहिं देखे, ए देखो अधिकाई ॥ वि० ॥ १ ॥ शाता अशाता वेदे नहिं कछु, निराबाध सुखमांइ ॥ त्याग नही पण आश्रव छूटो, अटल अवगहणा अकायी ॥ वि० ॥ २ ॥ आयुष्यविन थिर थित तुम स्वामी, नाम गोत्र क्षय साई ॥ समरे एक भाव शुद्ध करकें, सुख होवत उनतांई ॥ वि० ॥ ३ ॥ अंत राय क्षय करीयो साहिब, नूतन लाभ न कांइ ॥ वीतराग दशा पावत प्रभु में, तारक विरुद कहाइ ॥ वि० ॥४॥ हय गय रथ पायक नहिं ममता, जगतके नाथ कहाइ ॥ नारी नही शिवरमणीके रसिया, प्रसिद्ध कहे जगमांइ ॥ वि० ॥ ५ ॥ क्रोध नहिं अरु करुणासिंधु, शत्रूसों दिया भगाइ ॥ कृतवर्म भूप श्यामा देवी नंदा, जगमें शोभा सवाइ ॥ वि० ॥ ६ ॥ तिलोकरिख कहे मुझ तारणमें, कायकूं जेज लगाइ ॥ तुम जगतारक विरुद विचारी, शिवगढ देओ जिताई ॥ वि० ॥ ७ ॥ इति ॥ १३ ॥

॥ अथ चतुर्दश अनंतनाथजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ नमुं नमुं में वे सुगुरुकुं, वे जिन मुद्रा धारी हे ॥ ए देशी ॥ अनंतनाथ प्रभु नित्य उठि वंदूं, अनंतज्ञान गुणधारी हे ॥ ए टेक ॥ अनंत चारित्र अनंत शक्तिधर, अनंत जीवके हितकारी हे ॥ सचित्त अचित्त अनंत पदारथ, देखे ज्यो दर्पण मझारी हे ॥ अ० ॥ १ ॥

अनंत जीवाके प्रतिपालक साहिब, अनत वर्गणा निवारी हे ॥ द्रव्य गुण पर्याय सकलमें, भिन भिन करकें उचारी हे ॥ अ० ॥ २ ॥ तीन भवन जस उज्वल तेरो, महिमा अपरमपारी हे ॥ वंदनीय पूजनीय सकलकों, चरण शरण बलिहारी हे ॥ अ० ॥ ३ ॥ जगगुरु जगबंधव जगनायक, जगतारक सुखकारी हे ॥ सब विध लायक सत सहा यक, वायक सकल पियारी हे ॥ अ० ॥ ४ ॥ सयम साधी मोक्ष आराधी, उपाधि सकल परिहारी हे ॥ अलख निरंजन शत्रुके गजन, अजर अमर अविकारी हे ॥ अ० ॥ ५ ॥ अवर देव मुझ दाय न आवे, तुमसु प्रीत करारी हे ॥ कल्पवृक्ष सम वंछित दायक, अवि चल भक्ति तुमारी हे ॥ अ० ॥ ६ ॥ सिंहसेन कुल दीपक प्रगट्या, सुजसा प्रभु महतारी हे ॥ तिलोकरिख कहे करुणा सागर, करजो भव जल पारी हे ॥ अ० ॥ ७ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अथ पचदश धर्मनायजिन स्तवन प्रारभ ॥

॥ धन ब्राह्मी ने धन सुदरी जी कांइ, पाल्यु शियल अखड ॥ ए देशी ॥ धर्मजिनद सेव्या विनाजी काइ, इम रूले ससार ॥ ए टेक ॥ भरम भरम करतो फिरयो जी कांइ, भरम न जाणे भेद ॥ रुलियो चउगति जीवडो कांइ, पायो पूरण खेद जी ॥ ध० ॥ १ ॥ वार अनती उपनो जी कांइ, भोगव्यां दु'ख अनत ॥ के तो जाणे आतमा जी कांइ, के जाणे भगवंत जी ॥ ध० ॥ २ ॥ एक मुहूर्त्तमें भव करया जी कांइ, साठी पेंसठ हजार ॥ छत्तिस अधिक निगोदमें जी काइ, काल अनत विचार जी ॥ ध० ॥ ३ ॥ त्रसथावर तिर्यचमें जी काइ, छेदन भेदन त्रास ॥ सही तिहा परवश पणे जी काइ, सची करमनी राश जी ॥ ध० ॥ ४ ॥ जो कदि नरभव पामियो जी काइ, संपदा पायो हीन ॥ पापकम सचय करयाजी कांइ, मिथ्यामतमें लीन जी ॥ ध० ॥ ५ ॥ सुर भयो तो चाकर पणेजी काइ,

राच्यो ख्याल-विनोद ॥ मरणसमे झूरघो घणोजी कांइ, भूल्यो सघली मोद जी ॥ ध० ॥ ६ ॥ पुद्गल नाता सहुग्रह्या जी कांइ, भानु सुत सुव्रताना जात ॥ तिलोकरिखनी ए विनती जी कांइ, आपो धर्म निज वातजी ॥ ध० ॥ ७ ॥ १५ ॥

॥ अथ षोडश शांतिजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ समर ले समर ले राधिका श्री हरि ॥ ए देशी ॥ राग प्रभातीमें ॥ ध्यान धर ध्यान धर शांति जिनराजको, दिन दिन संपत्ति अधिक आवे ॥ सकल संकट हरे ऋद्धि वृद्धि करे, कर्मको भर्म दूरे हठावे ॥ ध्या० ॥ १ ॥ नृप विश्वसेन कुल चंद रवि किरणसा, अचिरा देवी मायने कूखें आवे ॥ मारी निवारी प्रभु देशकी गर्भमें, शांतिकुमार प्रभु नाम ठावे ॥ ध्या० ॥ २ ॥ शांतिजीको नाम सत तंत करी जाणीयें, अरि करी हरि सो दूरा भगावे ॥ ताव तेजा तरो चउधारो वेलांतरो, आधि व्याधि दुःख उपशमावे ॥ ध्या० ॥ ३ ॥ दुर्जन दुष्ट माहा वेरी जे वांकडो, समरता शांति सो लागे पावे ॥ सजन संजोग विजोग दुशमन तणो, अवनिपति मान अधिको वढावे ॥ ध्या० ॥ ४ ॥ डंकणी शंकणी भूत झोटिंग सो, समरतां सकल दूरां पलावे ॥ ऊतरे जहेर भुजंग विंछु तणां, अनल जिननामजलें उपशमावे ॥ ध्या० ॥ ५ ॥ वध बंधन सहु छुटे प्रभु नामशुं, चोर लुंटेरा ठग भागि जावे ॥ ॐ ह्रीं श्री श्री शांति शांती करे, दुष्ट दमण स्वाहा हिरदे ध्यावे ॥ ध्या० ॥ ६ ॥ इह भवें सुख परभवें शिव संपदा, देत जगदीश जो समरे भावें ॥ तिलोकरिख करे अरदास कर जोडिने, द्यो निज नाम गुण प्रेम भावें ॥ ध्या० ॥ ७ ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ अथ सप्तदश कुंथुनाथजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ पवन सुत कोन दिशासें आयो ॥ ए देशी ॥ राग श्याम कल्याण ॥ मेरे प्रभु कुंथु नाथ मन भाया ॥ मे० ॥ ए टेक ॥

सजम करणी भवजल सरणी, धारके कर्म हठाया ॥ ध्यायो शुक्ल ध्यान अनुपम, ज्ञान केवल प्रगटाया ॥ मे० ॥ १ ॥ अशरण शरण अबधव बधव, अनाथके नाथ कहाया ॥ जगजीवन जग वत्सल तारक, हित उपदेश सुनाया ॥ मे० ॥ २ ॥ कोइक राग तानमें मग न है, कोइ फुलेल लगाया ॥ कोइक रूप रंग अग राचे, खट रसभोजन भाया ॥ मे० ॥ ३ ॥ तन धा सज्जन नानाविध नग, ख्याल तमासें लोभाया ॥ निज गुण भुल गे भूल होय कर करमके फंद फदाया ॥ मे० ॥ ४ ॥ प्रभु सरणा विन तरणा न हाव, ज्युं मदिर विन पाया ॥ अंक विना शून्य काम न सारे, जेसें सुपनकी माया ॥ मे० ॥ ५ ॥ चरण सरणकी दरण करणसु, भव अरणव भटकाया ॥ विणजाराका बेल ज्युं जगमें, पच पच जनम गमाया ॥ मे० ॥ ६ ॥ सुरराय श्रीदेवी अगजके, तिलोकरिख सरणे चल आया ॥ जिम तिम कर निज वास बतावो, तो मैं सकल भर पाया ॥ मे० ॥ ७ ॥ इति ॥ १७ ॥

॥ अथ अष्टादश अर जिन स्तवन प्रारभ ॥

॥ कपुर होवे अति उज्जलो रे ॥ ए देशी ॥ श्री अरनाथ अरति हरो रे, बीनती मुझ अवधार ॥ सेवा कठिन प्रभु ताहरी र, सोहली खड्गकी धार ॥ जिनेश्वर अरहनाथ सुखपुर, मुझ राखो चरण हजूर ॥ जि० ॥ १ ॥ लोहचणा दांतें चावणा रे, सागर तरणो अथाह ॥ पवनने भरणो कोथळे रे, इणसुई भक्ति अगाह ॥ जि० ॥ २ ॥ श्वेतांबरी दिगंबरी रे, जैनमें भेद अनेक ॥ निज निज पक्ष थरे खेंचना रे, एकांत नय पक्ष टेक ॥ जि० ॥ ३ ॥ अनकात मत ताहरा रे, हेय ज्ञेय उपादेय ॥ सप्तभगी स्याद्वाद ना रे, समजणा दुष्कर अग ॥ जि० ॥ ४ ॥ अतर तेरे प्रकारका र, किम करि दीजे ठेल ॥ कांस्यपात्र सिंहणी क्षीरने रे, किम करि राखे झेल ॥ जि० ॥ ५ ॥ देव अदोषी गुरु सजमी रे, धरम दयामाही सार ॥ निरवद्य

वाणी ताहरी रे, मानुं शरण आधार ॥ जि० ॥ ६ ॥ श्रीधर नृप देवी नंदना रे, वंदणा झेलो दयाल ॥ तिलोक आश सफल करो रे, तुमे छो परम कृपाल ॥ जिनेश्वर ॥ अ० ॥ ७ ॥ इति ॥ १८ ॥

॥ अथ एकोनविंशति मल्लिजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ सुण चेतन रे तुम गुणवंत मुनिकों सेवो ॥ ए देशी ॥ सुण चेतन रे तुं मल्ली जिनंद समर ले ॥ कर धर्मध्यान गुणग्राम भवोदधि तर ले ॥ ए टेक ॥ एक विदेह देशमे, मथुरा नगरी सोहे ॥ जहां प्रजापाल भूपाल, कुंभ मन मोहे ॥ राणी प्रभावति नाम, शीयल गुणधारी ॥ जिन कूखें लियो अवतार, मल्लि जिन जहारी ॥ सु० ॥ १ ॥ या हुंडासर्पिणीकाल, अछेरो जाणो ॥ भयो प्रथम वेद अवतार, प्रभुको वखाणो ॥ दोयसे नन्याणव वर्ष, उमरमे आया ॥ छ भूप पूरव भव मित्र, परणन ऊमाया ॥ सु० ॥ २ ॥ प्रभुसुं मोहन घरके मांहि, छहुं वुलवाया ॥ पूतलिको उघाड्यो ढक, दुर्गंधसुं घबराया ॥ तव प्रभुजी दे उपदेश, सुणो रे शाणा ॥ ए देह अशुचि भंडार, अंत तज जाणां ॥ सु० ॥ ३ ॥ ए भोग रोगको मूल, सोगको घर हे ॥ ए फल किंपाक समान, दुःख आगर हे ॥ श्रवणवश अरणमें हरिण, प्राण निज खोवे ॥ दीपकसें पतंग निज अंग, नयनसें विगोवे ॥ सु० ॥ ४ ॥ भमर फूल के मांहिं, घ्राणवशे हाणी ॥ रसना वश मच्छ मरे, फरसे गज जाणी ॥ एक एक इंद्रियके, वशे प्राण गमावे ॥ जे पांचुके वश होय, कवण गति थावे ॥ सु० ॥ ५ ॥ पूरव भव तप कपट, तणे परभावें ॥ तुम हम अंतर जाणो, प्रभुजी दरसावे ॥ जातीस्मरण पाय, सकल शिव जावे ॥ प्रभु तार्यां वहु नर नारि, अमर पद पावे ॥ सु० ॥ ६ ॥ अशरण शरण कृपाल, दयानिधि स्वामी ॥ प्रभु अधम उद्धारण विरुद, थे अंतरजामी ॥ तिलोकरिख कर जोडि, नमे शिर नामी ॥ तुम चरण शरणको वास, किजो शिवधामी ॥ सु० ॥७॥ इति ॥१९॥

॥ अथ विंशति मुनिसुव्रत जिन स्तवन प्रारभ ॥

॥ स्वामी सुणने सुदरी भाखे ॥ ए देशी ॥ श्री मुनिसुव्रत साहिब साचो, रोम रोम मांहि राच्यो रे ॥ जबलग में तुझ जाणियो काचो, नट जिम चउगति नाच्यो रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ तु अविनाशी गुणधनराशि, निरजन निराकारी रे ॥ जैसी सिद्ध अवस्था सुमारी, तैसी मुझमें विचारी रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ द्वैत कल्पना ते सहु छोडी, भर्मकी टाटी तोडी रे ॥ प्रीत पुराणी तुमशु जोडी, आउ में किम करि दोडी र ॥ श्री० ॥ ३ ॥ काम क्रोध मद मोहणी नाता, लागा निपट यह ताता र ॥ क्षण भर लन देत नहिं शाता, चउगतिमें अकुलाता रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ काल अनत में एम गमायो, पारो ज्यु बुटो मूछाया रे ॥ तिम मिथ्या मोहनी कर्म धधायो, मुनिसुव्रत पद नहिं भायो रे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ हेय ज्ञेय उपादेय नयरस केली आणी में किंचित शेलि रे ॥ हवे मत तोडो प्रीत ए पहेली, विनती ल्यो प्रभु झेली रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ सुमित्र नृप पद्मावती जाया, अबके ता दुर्लभ पाया रे ॥ तिलोकरिख शरणागत आया, तार तार माहाराया रे ॥ श्री० ॥ ७ ॥ इति ॥ २० ॥

॥ अथैकविंशति नमि जिन स्तवन प्रारभ ॥

॥ नहिं ह सदेह लगार निरुपम, ॥ ए देशी ॥ एकविशमा नमि नाथ निरुपम, उपमा कही नहिं जावे ॥ तेज रविसम ज्यों कहु प्रभुन, सो पर प्रलें दझाव ॥ एक० ॥ १ ॥ बाल तरुण वृद्ध तीन अवस्था, नित नित उदय अस्तावे ॥ वादलपी मद अरुमसे तस केतु, असभव इण न्यावे ॥ एक० ॥ २ ॥ जो कहु चद्र सरिखा जिनेश्वर, सो तो कलंकी जनावे ॥ नित नित हानि वृद्धि तस दीसे, रवि उदय मद थावे ॥ ए० ॥ ३ ॥ जो सागर सम कहु जगतारक, आर पार दोइ पावे ॥ खारापणमें कवण बडाइ, जंतु अनेक डुबावे ॥ ए० ॥ ४ ॥ पारस सम कहेतां पण शक,

लोहने हेम बणावे ॥ न करे लोहका खंडने सरिखो, गज हरि पशुसे गिणावे ॥ ए० ॥ ५ ॥ मेरु कहुं तो कठिन घणेरो, अग्नि सो लाय लगावे ॥ सुरतरु चिंतामणि आदि पदारथ, परभव काम न आवे ॥ एक० ॥ ६ ॥ विश्वसेन नृप विप्रा अंगजने, तिलोकरिख शीश नमावे ॥ मोय अनुपम करो जगवत्सल, अवर कछू नहिं चावे ॥ एक० ॥ ७ ॥ इति ॥ २१ ॥

॥ अथ द्वाविंशति रिष्टनेमि जिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ गाफल मत रहे रे ॥ ए देशी ॥ जपो नेमिसरजी, मेरी जान, जपो नेमिसरजी ॥ नेमीश्वर बालब्रह्मचारी, वडाई हे जगमें जहारी ॥ जपो० ॥ ए टेक ॥ समुद्रविजय शिवा देवी नंदा, भये जादव कुलसें चंदा, जे भविजनके सुखकंदा ॥ हरिकी शस्त्र शालामांई, मित्र सग गया सो चलाई ॥ ज० ॥ १ ॥ नाक श्वासशुं शंख वजायो, ले धनुष्य टकार सुणायो, हरि सुण मन अचरिज आयो ॥ जाण्या जव नेमकुंवर तांई, कृष्ण मन चिंता अधिकाई ॥ ज० ॥ २ ॥ राज लेशे इम डर आयो, छल करके फाग रचायो, जिम तिम करी व्याह मनायो ॥ उग्रसेन नृपति की बेटी, राजुल रूप गुणोकी पेटी ॥ ज० ॥ ३ ॥ जिणसुं करी हरजीयें सगाई, किनी खुब जान सजाई, जुनेगढ आया चढाई ॥ पशुपर करुणा दिल आणी, तोरणसुं रथ फेरयो जाणी ॥ ज० ॥ ४ ॥ प्रभु वरशी दान नित दीनो, फिर संजम मारग लीनो, तप जप अति दुःकर कीनो ॥ कर्म क्षयकर केवल पाया, प्रीत धर भवजन समझाया ॥ ज० ॥ ५ ॥ सति किनी हे झुरणा भारी, आखर फिर समता धारी, स तशें सखी संग भई त्यारी ॥ चोपन दिन पहेली शिव पाई, पिछेसें मुक्ति गया सांई ॥ ज० ॥ ६ ॥ ज्यूं पशुपर करुणा लाया, तिम महेर करो महाराया, तिलोकरिखजी तुम शरणे आया ॥ प्रभु तकसिर माफ कीजो, अचल शिव भक्ति लाभ दिजो ॥जपो०॥७॥२२॥

॥ अथ त्रयोविंशति पार्श्व जिन स्तवन प्रारंभ ॥

॥ पिले रे प्याला ॥ ए देशी ॥ भजले रे वाला, वामा देवी लाला, भगत रखवाला, जगत प्रतिपाला, रक्षपालक त्रस थावरका रे ॥ ए टक ॥ अश्वसेन कुलदीपक सामी, मरथा मान कमठ सुरका रे ॥ नाग नागणी जलत निकाल्या, करुणावंत साहेब परका रे ॥ भ० ॥ १ ॥ परमेष्ठी नवकार सुणा कर, ठाम दिया धरणी धरका रे ॥ नागणी पद्मावती गती सुरिकी, शासनाधिष्ट श्री जिनवरका रे ॥ भ० ॥ २ ॥ प्रभुजी जगमाया छटकाई, मारग लिना प्रभु मुनिसरका रे ॥ कमठासुर उपसर्गज दीना, सकट सह्यां प्रभु जलधरका रे ॥ भ० ॥ ३ ॥ धरणिंद्र डराया तब नरमाया, गुन्हा माफ करो अनुचरका रे ॥ में मूरख मतिहीन दुरातम, तुम साहेब शिव मंदिरका रे ॥ भ० ॥ ४ ॥ नील वरण तन दमकत काया, चरणमें लक्षन फणिधरका रे ॥ विषय कषायकी लाय बुझाई, नाश किया मोह मच्छरका रे ॥ भ० ॥ ५ ॥ श्री जिन केवलज्ञान जो पाया क्षय किया घनघाति अरिका रे ॥ भव जन तारण तीरथ थाप्यां, उपदेश दिया हित संवरका रे ॥ भ० ॥ ६ ॥ ना वारसके वारस पारस, कुण उपगार चाहे परका रे ॥ तिलोकरिख कहे जिम तिम करिने, वास बतावो प्रभु शिवघर का रे ॥ भ० ॥ ७ ॥ इति ॥ २३ ॥

॥ अथ चतुर्विंशति वर्द्धमान जिन स्तवन प्रारभ ॥

मेरी सुनीयो करुणा नाथ, भवोदधि पार कीजो जी ॥ ए देशी ॥ अर्जि सुणजो त्रिशलानद, भवजल वेग तारो जी ॥ करुणा कीजो ॥ ए टेक ॥ कुडलपुरमें लिया अवतारा, सिद्धारथ नृप कुल सिणगारा ॥ त्रीश वरस गृहवासमें रहिया, जग तज संजम मारग गहिया ॥ तपस्या पूर किनी जी, ममता त्याग दिनीजी ॥ अ० ॥ १ ॥ नर सुर तिर्यच परिसह खमिया, राग द्वेप मोह मत्सर

वामया ॥ घनघातिक शत्रु चउ दमिया, धरम शुकल आराममें रमिया ॥ प्रभु केवलज्ञान पाया जी, सुर नर सेवा उमाया जी ॥ अ० ॥ २ ॥ सूत्र चारित्र दोय प्रकारा, दिया उपदेश ज्यों अमृत धारा ॥ चउदा सहस्र भये अणगारा, माहासातियांजी छत्तिस हजारा ॥ महाव्रत पंच धारी जी, नित धोक महारीजी ॥ अ० ॥ ३ ॥ श्रावक एक लक्ष उगणसाठ हजारा, श्राविका तीन लक्ष सहस्र अठारा ॥ बारा व्रत धारक परकास्या, आज्ञा आराधी स्वर्गमें वासा ॥ जाशे मोक्ष मांईजी, आठूं कर्म घाइ जी ॥ अ० ॥ ४ ॥ संसार सागरमें कर्मको पाणी, भोगको कर्दम महा दुःख दाणी ॥ चार कषाय वडवानल भारी, राग द्वेष माहा मगर करारी ॥ भवि रहे भर्म केरा जी, मिथ्यामोहनी परम अंधेरा जी ॥ अ० ॥ ५ ॥ धर्मको दीवो पाटण शिवपुर हे, सो देखणकी अधिक आतुर हे ॥ अधम उद्धारण विरुद विचारो, सरणे आयाने पार उतारो ॥ तुम प्रभु जहाज थावो जी, सुखें सुख ठेठ पहोंचावोजी ॥ अ० ॥ ६ ॥ इंद्रभूति अभिमानज कीनो, तिणने शिष्य करि शिवपुर दीनो ॥ चंडकोशे डंक दीनो हे आई, मेल्यो तेहि स्वर्ग आठमा मांइं ॥ अपराधी अनेक तारया जी, दुर्गति में पडता वारया जी ॥ अ० ॥ ७ ॥ अनादि कालको दुष्ट अधर्मी, चउगति दुःख हुं पायो कुकर्मी ॥ तुम बिन और उद्धारणहारो, दीसे नही कोई इण संसारो ॥ सरणो तुमारो शोध आयो जी, भयो मे पूरणकायोजी ॥ अ० ॥ ८ ॥ अरोग बोध समाधि संयुक्ति, दीजो करुणानिधि वर मुक्ति ॥ इणभवे हिरि सिरि रिधी निधि वृध्धि, मन इच्छा करजो सब सिद्धि ॥ तिलोकरिखजी आश पूरो जी, राखो नित आप हजूरो जी ॥ अ० ॥ ९ ॥ इति ॥ २४ ॥

॥ कलश ॥

॥ चोवीश जिनवर, परम सुखकर, भावशं स्तवना करी ॥ उग-

णीशें अठातिस, ज्येष्ठ वदि पक्ष, वार रवी नव तिथि खरी ॥ माहा राज अयवता, रिखजी प्रसादें, तिलोकरिख, विनवे सदा ॥ आरोग घाधि, समाधि शाता, दिजा ह्रींश्री, सपदा ॥ प्रभु दिजो अविचल, सपदा ॥ इति चोवीश जिनस्तवनानि संपूर्णानि ॥

॥ अथ जिनेश्वरजीकी आरति प्रारभ ॥

॥ ऐसे जिन ऐसे जिन ऐसे जिन हे ॥ ए देशी ॥ जय जय जय जय बोलो जिनवरकी, जो हैं आशा अमर शिवघरकी ॥ज० ॥ ए टेक ॥ १ ॥ जैसी काति शशी दिनकरकी, काया दमके सकल हितकरकी ॥ जय० ॥ २ ॥ ज्यु खसबोइ अगर तगरकी, जिणसू श्वास सुगंध मनोहरकी ॥ जय० ॥ ३ ॥ जैसी मीठी डली हे सक्करकी, वाणी अनत गुणी सुमधुरकी ॥ जय० ॥ ४ ॥ काया सोहे सुर अनुत्तरकी, सोभा अनुपम प्रभुजीका नुरकी ॥ जय० ॥ ५ ॥ जैसी चाल मराल गजवरकी, तिणसु गमनगति सुदरकी ॥ ज० ॥ ६ ॥ चिंता आणी हे भव सागरकी, सवत्सरी दान इच्छ उजागरकी ॥ ज० ॥ ७ ॥ घात करवा करम रूप अरिकी, क्रियाधारी सजम संवरकी ॥ ज० ॥ ८ ॥ केवल ज्ञान दिशा जव फरकी, जब त्रिगडाकी रचना अमर की ॥ ज० ॥ ९ ॥ करुणा आणी हे जीव अपरकी, दी उपदेशना पापका ढरकी ॥ ज० ॥ १० ॥ काया माया अथिर हे सुरकी, तिण आगें कहा ऋद्धि नरकी ॥ ज० ॥ ११ ॥ परथम थापना करी गणधरकी, पिछें चार तीरथ गुणिवरकी ॥ ज० ॥ १२ ॥ जे गति पाये मोक्ष नगरकी, पदवी सिद्ध अमर अजर की ॥ ज० ॥ १३ ॥ होड कुण करि शके उण नगरकी, गिणती सागर आगें क्या छिल्लरकी ॥ ज० ॥ १४ ॥ महिमा अपरमपार गुणागरकी, कहेवा शक्ति नहिं सुरगुरुकी ॥ ज० ॥ १५ ॥ अयवतारिखजी महाराज महेरकी, कीर्त्ति दाखी देश अघहरकी ॥ ज० ॥ १६ ॥ तिलोकरिख कहे धन जिनवरकी, भाव भक्ति करे तीर्थंकरकी ॥ ज०

॥ १७ ॥ इति चतुर्विंशति जिनस्तवनानि संपूर्णानि ॥

॥ अथ श्रीपंचपरमेष्ठीका प्रत्येक स्तवन लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम श्री अरिहंत स्तवन प्रारंभः ॥

॥ सिद्धचक्र जिन पूजो रे भविका ॥ ए देशी ॥ श्रीअरिहंतजी वंदो रे भविका, दुःष्कृत दूर निकंदो रे ॥ भ० ॥ श्रीअरिहंतजी वंदो ॥ ए आंकणी ॥ वीश बोल सेवन करी स्वामी, तिसरा भवके मांही ॥ गोत्र तीर्थंकर बंधन कीयो, चउद स्वपन दिया माईरे ॥ भ० ॥ १ ॥ शुभ विरियां मांही जन्म भयो हे, इंद्र सकल हरखाया ॥ मंदर गिरिपर महोत्सव करकें, माता पास पोढाया रे ॥ भ० ॥ २ ॥ भोगावली कर्म भोगवियांसु, वरसीदान दे करकें ॥ संजम ले कर कर्मक्षय कीनां, केवल पद अनुसरके रे ॥ भ० ॥ ३ ॥ पेंतिस वाणी निरवद्य जाणी, भव्य प्राणी सुखदाणी ॥ अमृत जिम उपदेश देइने, तीरथ चउ दिया ठाणी रे ॥ भ० ॥ ४ ॥ प्रथम संघयण संठाण प्रभुके, रोग रहित वर काया ॥ प्रभुको रूप देखीने सुर नर, रोम रोम उल्हसाया रे ॥ भ० ॥ ५ ॥ एक सहस्र अष्ट लक्षन स्वच्छन, जहां विचरे जिन राया ॥ सात ईति सो शोक न थावे, अशोक तरु करे छाया रे ॥ भ० ॥ ६ ॥ देवदुंदुभि बाजे गगनमें, इंद्रध्वजा लहकावे ॥ चोसठ जोडा बिंजाय चमरनां, तीनछत्र शिर थावे रे ॥ भ० ॥ ७ ॥ योजन मंडल वायु सुगंधी, अचित्तजल बरसावे ॥ कुसुम पंच वर्णा जल थल सरखां, ढंग अधिक महकावे रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ८ ॥ विषम पंथ सो पाधरो होवे, कंटक अणी अधो थावे ॥ वैरभाव नाहिं जागे जोजनमें, सिंह अजा सम भावे रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ९ ॥ आभ कागल लेखण बनराइ, श्याही सागर जल लावे ॥ कोडाकोडि सागर सुरगुरु जो, लिखे तो पार नहिं पावे रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ १० ॥

अनत गुणातम आतम प्रभुकी, मूलका गुण कह्या बारा ॥ तिलो कारिख अनुरागी प्रभुको, चाहे भवजलपारा रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ११ ॥ इति ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय सिद्धस्तवन प्रारभ ॥

॥ शांति चरणारी जाउ बलिहारी ॥ ए देशी ॥ वंदूं सिद्ध सदा अविकारी, पूरो प्रभु आश हमारी ॥ ए आंकणी ॥ शुक्लध्यान शैलेशी परिणामें, तिनही जोग निवारी ॥ एक समयमाही जाय विराज्या तो, सिद्धक्षेत्र सुखकारी, कर्मकी लगे न कारी ॥ व० ॥ ॥ १ ॥ सर्वार्थसिद्धसु जोजन बारा, ऊर्ध्व दिशाके मझारी ॥ लाख पेंतालीस जोजन पहोली, चितो छत्र आकारी, जोजन दल आठ उधारी ॥ व० ॥ २ ॥ छेहडे माखीकी पांखसु झीणी, सुहाली घ ठारी मठारी ॥ अर्जुन सुवर्णमांही मनोहर, छबि लागे अतिप्यारी, दोष नहिं दीसे लगारी ॥ व० ॥ ३ ॥ जोजनको उपरलो गाउ, भाग छट्ठो सुविचारी ॥ सहजानद आतम अवगाहना, परमानंद पद भारी, नहिं जहा दु:ख बिमारी ॥ व० ॥ ४ ॥ पच वर्णमें वर्ण नहिं हे, वासना दोय प्रकारी ॥ पचरस अठ फरस न जिनके, तीनही वेद विकारी, विषयकी लाय निवारी ॥ व० ॥ ५ ॥ पच प्रमाद उपाधि नही हे, चार कषायक टारी ॥ अजर अमर अवि नाशी अखडित, निरजन निराकारी सदा तृपत निराहारी ॥ व० ॥ ६ ॥ जाणत देखत सर्व पदारथ, निराबाध सुखधारी ॥ सम कित क्षायिक अटल अवगाहन, अमूर्त्तिक गुणधारी, अलख अस ज्योति अपारी ॥ वं० ॥ ७ ॥ अगुरुलघु परजाय सदा थिर, नहिं जिहां तात महेतारी ॥ सुत सहादर सज्जन दुशमन, नहिं सगपण व्यवहारी, जात कुल वर्ण न चारी ॥ वं० ॥ ८ ॥ शिष्य गुरु नहि पायक नायक, रूप अनूपम भारी ॥ पन्नर भेदें अगम अगोचर, नहिं उष्ण नहिं ठारी, नहिं कोइ वस्ति उजारी ॥ व० ॥ ९ ॥

जावे पण आवे नही पाछा, पंचमी गति सुखकारी ॥ तिलोकरिख कहे तुम स्थान बतावो, एमागुं रिझ थारी, वारीमे जाउं वलिहारी ॥ वं० ॥ १० ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय आचारज स्तवन प्रारंभः ॥

॥ सुगुरु पिछाणो इण आचारें ॥ ए देशी ॥ आचारज प्रणमुं पद त्रीजे, अष्ट संपदाधार जी ॥ चार तीरथके दे सुख शाता, आदेय वचनका धार जी ॥ आ० ॥ १ ॥ पंच महाव्रत पूरण पाले, पंच सुमतिका धार जी ॥ तीन गुप्ति सो दृढ करी राखे, निर्मल पंच आचार जी ॥ आ० ॥ २ ॥ नव वाड शुद्ध ब्रह्मचर्य धारी, जीत्या चार कषाय जी ॥ पांच इंद्रिय गणी वश करी राखे, निरवद्य वाणी न्याय जी ॥ आ० ॥ ३ ॥ श्रीजिनधर्मने खूब दीपावे, मिथ्या खंडनहार जी ॥ वादी जनसूं हार न पावे, बुध्दि प्रबल नय सार जी ॥ आ० ॥ ४ ॥ शूरा मन वचन कायाना, झलके नांहिं लवलेश जी ॥ भव्य जीव तारनके कारण, साचो दे उपदेश जी ॥ आ० ॥ ५ ॥ क्लेश होवे जो चार तीरथमें, देवे आप मिटाय जी ॥ संतोशे अमृतवाणीशुं, दिन दिन पुण्य सवाय जी ॥ आ० ॥ ६ ॥ शम दम उपशम तप जप राता, ध्याता निर्मल ध्यानजी ॥ नाता ताता तोड दिया सव, करता जिनगुणगान जी ॥ आ० ॥ ७ ॥ पंच आचार जे पाले पलावे, टाले टलावे दोष जी ॥ पर उपगारी झाझ सरीखा, नाने राग ने रोष जी ॥ आ० ॥ ८ ॥ तिलोकरिख कहे छत्तिस गुण गणी, गुण गावो नरनार जी ॥ अशुभ कर्मका बंधन छूटे, थावे सफल जमार जी ॥ आ० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ चतुर्थ उवज्झाय स्तवन प्रारंभः ॥

॥ सुणो चंदाजी, सीमंधर परमातम पासे जाजो ॥ ए देशी ॥ सुणो भवियण जी, चउथे पद उवझाय नमो सुख कारणा ॥ शुध्द

भक्ता जी, बोध देइनें मिथ्या भरम निवारणा ॥ ए आकणी ॥ जे अग इग्यारका धारक छे, चउदा पूरव सुविचारक छे, शुद्ध पाठ अर्थ उच्चारक छे ॥ सु० ॥ १ ॥ जे सातुइ नयका जाणक छे, निश्चय व्यवहार वखाणक छे, जे शुद्ध अशुद्ध पहिचाणक छे ॥ सु० ॥ २ ॥ जे नीति वात बतावे छे, सब मिथ्या भम उडावे छे, भिन्न भिन्न करकें समझावे छे ॥ सु० ॥ ३ ॥ जे ज्ञान ग्रहणनें आवे छे, शुद्ध पात्र देखिने पढाव छे, अज्ञानपणु तस डावे छे ॥ सु० ॥ ४ ॥ जे उपशम रसना सागर छे तप सजम गुण रतनागर छे, उत्पात माहाबुद्धि नागर छ ॥ सु० ॥ ५ ॥ जे चर्चा करवा आवे छे, सत्य न्याय बताई हरावे छे, फिटा हुइ करकें जावे छे ॥ सु ॥ ६ ॥ जिन नहिं पण जे जिन जेवा छ, वाणी सत्य निरवद्य मेवा छे, हितकारी जेहनी सेवा छे, ॥ सु० ॥ ७ ॥ तिलोकरिख कहे जे गुण गावे छ, ज्ञानावरणीने ख्पावे छ, अनुक्रमें मुक्ति सिधावे छे ॥ सु ॥ ८ ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ अथ पचम साधु स्तवन प्रारभ ॥

॥ निर्मल शुद्ध समकित जिनपाई, जिणरे कमी रहे नही काई ॥ ए देशी ॥ वंदो साधु सदा सुणो ज्ञाता, जिणसु भवभवमें सुख शाता ॥ ए आंकणी ॥ ए ससार असार जानिकें, लीनो संजम भारो ॥ तप जपकी खप करता विचर, निरवद्य वेण उच्चारो ॥ ॥ वं० ॥ १ ॥ एक विचारे एक निवारे, दो पाले दो टाले ॥ तीनकु अराधे तीनके साधे, त्रिहु गाले चिहु टाले ॥ व० ॥ २ ॥ चार करे नही चार धरे चित्त, पच पाल पच लाडे ॥ छ प्रतिपालन छ प्रतिपाले, छ में तीनके मोडे ॥ व० ॥ ३ ॥ छ आणे अरु छके त्यागे, सात विशुद्धि लवे ॥ सात सासके दूर निवारे, तजे आठ आठ चावे ॥ व० ॥ ४ ॥ पाले नव टाले नव जाणे, दमण करे दश सेवे ॥ दश दशसो बोले नहिं मुखसें, दश धारासो कहेवे

॥ वं० ॥ ५ ॥ हत्या करण करावण कामी, झूठ कहे जे जाणी ॥ अदत्त हेरे परको हित आणी, पराधि प्रेमज ठाणी ॥ वं० ॥ ॥ ६ ॥ धन अखूट अधर्मसा ध्यानी, महासानी निर्मानी ॥ मांस भखे नित्य मांस भखे नहीं, स्वयथी तृपति आणी ॥ वं० ॥ ७ ॥ हय गय रथ पायक तज दीना, लीनासो सहु पासे ॥ मात पिता नारी सुत त्यागी, अनुरागी नित्य भासे ॥ व० ॥ ८ ॥ पर दुःख देखी शाता चावे, इत्यादिक गुणधारी ॥ तिलोक रिख अनुभवरस शैली, समझ कही सुविचारी ॥ वं० ॥ ९ ॥ सुगुणा समझी शशि नमावे, निगुणाने मन हांसी ॥ एसा मुनिवर जो कोइ सेवे, सो होशे शिववासी ॥ व० ॥ १० ॥ इति ॥

॥ कलश ॥ एम पंच नाम, नवकार जगमें, सार इण सम, को नही ॥ जे समरे भावे, सुख पावे, विघन सव, नासे सही ॥ उगणीशें सेंतिस, विजय दशमी, तिलोक रिख, स्तवना करी ॥ भव भव सरणुं, होजो मुजने, अधिक दिन दिन हिरी सिरी ॥ प्रभु अधि० ॥ १ ॥ इती पंच परमेष्टिस्तवनानि संपूर्णानि ॥ सर्वगाथा ॥ ४९ ॥

॥ साधु स्तवनकी दुसरी गाथासूं नवमी गाथासूधीको कठिणअर्थ होवाथी ते कहे छे ॥

एकविचारे-एकतत्त्व विचारे **एकनिवारे** एकदोष निवारे **दोसयमपाले** तप अने संजम पाले **दोटाले**-राग अने द्वेषने टाले **तीनहुआराधे**-ज्ञान दर्शन चारित्र ए त्रणने आराधे **तीनकेसाधे**-मन वचनकायाकों साधे **त्रिहुगाले**- तिन गर्व गाले **चिहुं ढाले**-चारकषाय गिरावे ॥ २ ॥ **चारकरेनहि**-चार विकथा न करे **चारधरे चित्त**-चार सरणा प्रत्ये चित्तमे धारे **पचपाले**-पचमहाव्रत पाले **पचलांडे**-पचेंद्रीयने पीले **छप्रतिपालन**-छव्रत पालक मुनिराज ते छ प्रतिपाले-छ कायनी दयापाले **छमेंतीनकुमोडे**-छ लेश्यामेंसूं तीन अधर्मलेश्याने वरजे, ॥ ३ ॥ **छजाणे**-षट्द्रव्य भेद जाणे **अरु छके त्यागे**-वली छ अव्रत त्यागे **सातविशुद्धिलावे**-सात पिंडेशणा विशुद्ध आहार लावे **सातसातके दूरनिवारे**-सात भय सात व्यसन वेगला करे **तजेआठ**-आठ मद छोडे **आठचावे** आठप्रवचन पाचसमिति तीन गुप्ति, ए आठकी वंछना करे ॥ ४ ॥ **पालेनव**-नववाड ब्रह्मचर्य पाले **टाले नव**-नवनियाणां टाले **जाणे**-

मनतस्व आण दमन कर दश—पांच इंद्रियो, चार कषाय, एक मन ए दशने दमे दश सेवे—दशप्रकारें श्रमण धर्म सेवे दशदशसोबाले नहि मुखसें—दश प्रकारें असत्य दश प्रकारें मिश्र, ए भाषा न बोले दश बार सो कहवे—दश प्रकारें सत्य, चार प्रकारी व्यवहार भाषा काज ॥ ५ ॥ हत्याकरण—आठ कर्म रूप शत्रुने घात करे कराषण कार्मा—कर्मरूपी शत्रुना नाश करावण कामे मूठ कहे से आर्पा जे पर्यायने मृषा जाणे तने मूठे कहे अदत्तहरे परको हित आर्मा—परकाया जीव अन्य ग्रहण करे ते अकाले तथा पुद्गल चोरी छ इम मटे परघो प्रमत्त ठाणी—पौद्गलिक कर्णी रूपथी मेद्युदि तेथी प्रेम आण ॥ ६ ॥ घन असुर—रूप धर रूप घन मंदार युक्त छ अधर्मसाध्यानी—अधर्मास्तिना गुण थिर छे तेम त स्थिर ध्यानना करणहार छ माहामानी—श्रीजिननी आज्ञा माने छे निमानी—अहंकार रहित ए मांसभखे नित्य—मास तप करी शरीरनो मांस निरंतर खासे मांसमख नहि—मांसदुगंछनक तथा चार भाव भखे नहि मदपी—आठ मदपरी रुचि आणी स्पृष्य नहि ॥ ७ ॥ हय गय रथपायकतमदीना—मौतिक हाथी, घोडा, रथ, पायक, ए चार दल छोड्या छ जेणें एवा छानासामहुपासे—ध्यानेश्वर चार ते मनरूप घोडो धैरज रूप हाथी, शीलरूप रथ, भावरूप पदल भला राखे छ मातापेता नारी सुतस्यागी—सांसारिक मात पिता नारी पुत्र तेनो त्याग कीधो छ अने एवा अनुरागी नित्यभासे—अनुरागी ते दया रूप माता धर्म रूप पिता, सुमति रूप नारी सुबुद्धि रूप पुत्र तेथी राग राखे ॥८॥ परदुःख देइ शाता चावे—कर्मक्षयना कर्मचेतना दुःख देवे अने जीव चेतनाने शाता करे, इत्यादिक गुणना धारक छ त्रिलोकरिख अनुभव रसभेटि त्रिलोकरिख नाम कवि कहे छे, के अनुभवरस अध्यात्मनी शैली जे निश्चकता तनी समस्त कही शाविचार' समकित वेषधरि करिने कही विस्तारी छ ॥ ९ ॥

॥ अथ चोवीशजिन स्तवन मारभ ॥

॥ राग प्रभाती ॥ श्रीअरिहत गुण गावो रे भविका, चोवीश जिन गुण गावो रे ॥ श्री अ० ॥ ए आंकणी ॥ ऋषभ अजित सभव अभिनदन, सुमति पद्म प्रभु ध्यावा र॥ श्री सुपार्श्व चद प्रभु समरो, नित नित शीश नमावो रे ॥ श्री अ० ॥ १ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, विमल विमल चित ठावो रे ॥ अनत धम श्रीशांति जिनेसर, शांतिकरण जग चावो र ॥ श्री अ० ॥॥ २ ॥ कुंथु अर मल्ली मुनिसुव्रत जी, सुमत करण उमावो रे ॥ नमी नेम पारस माहावीर जी, सासणपति जिम नावो रे ॥ श्री अ० ॥ ३ ॥ ए चोवशि जिन सजम भारी, दियो करमके घावो रे ॥

केवल लेईने तीरथ थाप्यां, भवजल तारण नावो रे ॥ श्री अ० ॥ ४ ॥ होय अजोगी मुक्ति सिधाया, फिर न रह्यो इहां आवो रे ॥ अजर अमर अविनाशी निरंजन, सकल जगतका रावो रे ॥ श्री अ० ॥ ५ ॥ नाम लिया सब विघन विनासे, न रहे दुःखको दावो रे ॥ शत्रु सो मित्र सम वरते, जो सुमरन मन ल्यावो रे ॥ श्री अ० ॥ ६ ॥ सवत् उगणिश आडतीस शाले, विजयदशमी दिन ठावो रे ॥ दिन दिन विजय होवे प्रभु नामे, भव भवमे सुख पावो रे ॥ श्री अ० ॥ ७ ॥ तिलोकरिख कहे प्रभु तुम सरणो, भव भवमें मुझ थावो रे ॥ शिवसंपत अरु द्यो तुम दरिसण, नित नित मंगल वधावो रे ॥ श्री अ० ॥ ८ ॥ १ ॥

॥ अथ चोवशिजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ मेरी मेरी करतां जन्म गयो रे ॥ ए देशी ॥ भजो रे भविक जिन चोवीश विख्याता, तजो रे आलस गुणिजन गुण गाता ॥ भ० ॥ १ ॥ ऋषभ अजित संभव जगताता, अभिनंदनजी आनंदके दाता ॥ भ० ॥ २ ॥ सुमति पदम पदम रंग राता, सुपार्श्व चंदाप्रभु सबकुं सुहाता ॥ भ० ॥ ३ ॥ सुविधि शतिल श्रेयांस जो भ्राता, वासुपूज्य तोड्या हे जगनाता ॥ भ० ॥ ४ ॥ विमल अनंत धर्मधन माता, शांति जिनंद करी हे सुखशाता ॥ भ० ॥५॥ कुंथु अर मल्लि मलघाता, मुनिसुव्रत व्रतमे रंग राता ॥ भ० ॥ ६ ॥ नामि नेमी पारस चित भाता, महावीर रह्या पाप पलाता ॥ भ० ॥ ७ ॥ विहरमान गुणधर गुरु ज्ञाता, साधि सकल बधु सति माता ॥ भ० ॥ ८ ॥ इनके चरण सरण चित्त चाता, तिलोकरिख ताकुं शशि नमाता ॥ भ० ॥ ९ ॥ २ ॥

॥ अथ ऋषभ जिन स्तवन ॥

॥ जे गणेश जे गणेश जे गणेश देवा ॥ ए देशी ॥ जे जिणंद जे जिणंद जे जिणंद देवा ॥ उठि प्रभात समर नाथ, श्रीऋषभ देवा

॥ ए टेक ॥ पिता तेरे नाभिराजा, जननी हे मरुदेवा ॥ देही कंचन वृषभ लछन, तजें रतिपति जेहवा ॥ जे० ॥ १ ॥ जुगला धर्म निवार किया प्रभु, छे कुलगरकी टेवा ॥ सजम लीधो श्रीजिन भावें, कर्म अरिने हणेवा ॥ जे० ॥ २ ॥ केवल ले प्रभु देशना दीधी, वाणी ज्यु अमृत मेवा ॥ चार तीरथकी स्थापना कीनी, भव जल पार करेवा ॥ जे० ॥ ३ ॥ दश सहस्र मुनि संगें अष्टापद, चढीया अणसण लेवा ॥ छ दिन सयारे मुक्ति विराज्या, सुखि अनत नितमेवा ॥ जे० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे में तुम चाकर, हुं चरणारज सेवा ॥ जिम तिम करि भव पार उतारो, दिजो अविचल सेवा ॥ जे० ॥ ५ ॥ इति ॥ १ ॥

॥ पद बीजुं ॥

॥ श्रीगौतम स्वामीम गुण घणा ॥ ए देशी ॥

॥ प्रणमु आदिजिनेश्वरजी, भयभंजण जगभाण ॥ गोत्रतीर्थंकर बांधिने, उपना सर्वार्थ सिध्दाविमाण जी ॥ अषाढ विदि चोथ तिथि जाण जी, थयो प्रभुको चवण कल्याण जी, नाभि नामें नृपति कुल आणजी, माता मरुदेवजी वखाणजी ॥ श्रीऋषभ जिणद जीसु वंदणा ॥ ए टेक ॥ चैत्र विदि तिथि अष्टमीजी, शुभवेला शुभ वार ॥ जनम थयो जगदीशको, छपनकुमारी आइ तिणवार जी, जन्मकारज कियो सुविचार जी, आया इंद्र हरषें अपार जी, कियो मोछव मरुमझार जी, सर्गे गया साधि व्यवहारजी ॥ श्री० ॥ १ ॥ वृषभ स्वपनलच्छनथकी जी, ऋषभ कुमर दियो नाम ॥ पंचसें धनुष उचापणे प्रभु, तन कंचन अभिरामजी, विश लख पूरव कुंवर पदठाम जी, राज कीयो त्रेशठ लख स्वामजी, जुगलधर्म निवार्‍यो तमाम जी, वसाया नगर पुर गाम जी, ॥ श्री० ॥ २ ॥ कला बहुत्तर पुरुषनी जी, चोशठकला वली नार ॥ वरन चार थापन किया प्रभु, सीखायो रुजगार जी, चैत्रवदि नौमी तिथि

सारजी, छठ तपस्या लिवि धार जी, चार सहस्त्र पुरुष परिवार जी, लीनो प्रभु संजम भार जी ॥ श्री० ॥ ३ ॥ वरस दिवसने पारणे जी, लियो इक्षुरस आहार ॥ छद्मस्थपणे परिसा सह्या प्रभु, संवच्छर एक हजार जी, फागुन वदी ग्यारस जहार जी, घनघातिक हण्यां कर्म चार जी, थया प्रभु केवल धारजी, उपदेश दीयो हितकार जी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ चार तीरथ प्रभु थापीयां जी, तान्यां बहु नर नार ॥ अष्टापद अणसण कन्या, साथे दश सहस्त्र अणगार जी, छ दिनको आयो संथारजी, माघकृष्ण तेरस जगधार जी, प्रभु पहुता मुक्ति मझार जी, पाट असंखे वरी शिवनार जी ॥ श्री० ॥ ५ ॥ गजहोदे मातेश्वरी जी, पामी मोक्ष दुवार ॥ भरत आरिसा भवनमें, लहि केवल कमला सारजी, सो पुत्र दो पुत्री विचारजी, सहु शालि रूख परिवारजी, तिलोक रिख कहे वारोवार जी, महारी वीनतडी अवधार जी, प्रभु करो मुझ भवोदधि पारजी ॥ श्रीऋषभजी० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पद त्रीजुं ॥

॥ श्री वीरजिणंद सासन धणी, जिन त्रिभुवनसामी ॥ ए देशी ॥

॥ प्रणमुं आदिजिणंद, युग्मचरणांबुज सरणो ॥ मनमधुकर मोही रह्यो, गुणवास आचरणो ॥ पूरवभवे भए पांच, पूर्वचक्रीपद त्याग कीना ॥ गोत्रतीर्थंकर बांध, चवी सर्वार्थ सिद्धलीना ॥ आषाढ बिदि तिथि चोथमें ए, आधिरेण मझार ॥ चवणकल्याण प्रभुजीतणुं, भांख्युं सूत्र मझार ॥ भां० ॥ १ ॥ नाभिरायकुलनंद, मात मरुदेवी जाणी ॥ तिणकूखें अवतार लियो, अध्दरयणी ठानी ॥ कृष्ण अष्टमी चैत्र, मास शुभवेलामांई ॥ जनम्याऋषभ जिणंद, छपन कुमारी आईं ॥ जनमकारज तिने सहुकियो ए, आसण चल्यो तिनवार ॥ शक्रइंद्र चल आईया, आणी हरष अपार ॥ श० ॥ २ ॥ मूकी निद्रा मातवैक्रिये, निजरूपज धारिया ॥ पंच रूप

करी इन्द्र प्रभु, लेई प्रभु परवरीया ॥ गिरि सुदरसण जाइ, इन्द्र कन्यो मोच्छव हरखे ॥ प्रभुको रूप अनूप नेत्र अनिमेषित निरखे ॥ प्रभुके मेल्या फिर मातपें, रवि वनिता पुरसाज ॥ इन्द्र गया निज स्थानकें, करि मोच्छव सब साज ॥ क० ॥ ३ ॥ चउदे सपनोंमें प्रथम, वृषभवर उज्ज्वल दीठा ॥ तहना फल एह पुत्र, महासुखका रक मीठा ॥ तिणकारण करि नाम, दिया प्रभु ऋषभ कुमार ॥ कचन वरण शरीर, वृषभ लछन पग धार ॥ पांचसें धनुप उंचापणे, देह मान जिनराज ॥ बीश लाख कुवर पदें, रह्या श्री गरिब नि वाज ॥ र० ॥ ४ ॥ पूव त्रशठ लाख राज, जुगल धर्म दूरो कीनो ॥ लिखतगिणतादिक बहोंतर, कला सस बोधज दीनो ॥ महिला गुण जे चासठ, शिल्प कर्म सब विध स्थापी ॥ भरतादिक सो नद, राजश्री सहुने आपी ॥ चैत्र कृष्ण नौमी दिन ए, चार सहस्र नर लार ॥ छठ तप धारी निकल्या, लीनो संजम भार ॥ ली० ॥ ५ ॥ चउ मुष्टी कर लोच, पंच महाव्रत उच्चरिया ॥ सह्या परिसह सर्व, पाली शुध्द मनसु किरिया ॥ प्रथम पारणें इस कुंवर, इक्षु रस वहोराया ॥ सहस्र वरस छद्मस्थ, करणी करी मन वच काया ॥ चंद्र जेम शीतल कह्या ए, सागर जेम गभीर ॥ अधिक तेज रवि किरणथी, मरु अचल गज धीर ॥ मे० ॥ ६ ॥ ध्यावता निर्मल ध्यान, विचऱ्या श्रीजिनवर राया ॥ पुरिमताल पुर बाहिर, अष्टम तप करक आया ॥ शकटमुख उद्यान, वृक्ष वड हठे विराज्या ॥ ध्यायो शुक्ल ध्यान पाय तिज शुभ साजा ॥ फागण कृष्ण एकादशी ए, ...त समयम ज्ञान ॥ आदेजिनश्वर पामिया, केवल दरिसन ज्ञान ॥ क० ॥ ७ ॥ लोकालोक स्वरूप, जाण्या जिनवर जिन ज्ञान ॥ दीनो तब उपदेश, चतुर्विध तीरथ ठाने ॥ ऋषभ सेणादिक जाण, चोराशी गणधर भारी ॥ चाराशी सहस्र मुनिराज, मांह दीपे अधिकारी ॥ ब्राह्मी सुदरी धन साधवी ए, सब सतिया

शिरदार ॥ तीन लक्ष थई साहुणी, श्रीजिन आज्ञाकार ॥ श्री० ॥ ८ ॥ च्चार सहस्र साडी सातशे चउदे पूरवधारी ॥ अवधिज्ञानी मुनिराज सहस्र नव सोहत भारी ॥ वैक्रिय लब्धिका धार, छशे विश सहस्र कहीजे ॥ मनःपरजव वारे सहस्र, छशे पचास लहीजें ॥ केवल नाणी मुनिवरु ए, वीश सहस्र परिमाण ॥ ते वंदूं नित भावशुं, पाया पद निर्वाण ॥ पा० ॥ ९ ॥ चर्चावादी सहस्र, वारे साडी छसें कहीये ॥ नवशे वाविश हजार, अनुत्तर वैमानिक गहीयें ॥ साधवी चालिश सहस्र, केवल ले मुगति विराजी ॥ अवर वहु गुण धार, मुनि निज आतम साजी ॥ ते प्रणमुं सहु भावशु ए, जिनवर आज्ञाधार ॥ साथे रह्या जिनराजने, करता उग्र विहार ॥ क० ॥ १० ॥ वाराव्रतका धार, सिज्जंसादिक श्रावक भारी ॥ पांच सहस्र तिन लक्ष, सवे इकविश गुणधारी ॥ सुभद्रादिक पंच लाख, श्राविका चौपन हजारी ॥ श्रीजिन आज्ञामांहि, कही गुणवंती नारी ॥ करी करणी शुद्ध भावशुं ए, पाई अमर विमाण ॥ ए संख्या तीरथ तणी, आगममांहि प्रमाण ॥ आ० ॥ ११ ॥ एक लख पूरव सर्व, संजम केवलपद पाली ॥ भव्य जीव उपदेश, दियो कुगति सत टाली ॥ दश सहस्र मुनि साथ, अष्टापद चढीया जाइ ॥ पल्यंक आसण करी ध्यान, अणसण छ दिनकी आइ ॥ माघ कृष्ण तेरश तिथि ए, प्रभु पहुता निर्वाण ॥ सागर पचास लक्ष कोडीनो, जिनशासन परिमाण ॥ जि० ॥ १२ ॥ कोडाकोडी असंख, पाट केवलपद पाया ॥ गजहोदे प्रभुमात, केवल लेइ मुक्ति सिधाया ॥ श्रीभरतेश्वर भुवन, अरिसे केवल लीधो ॥ वाहुवल प्रभुनंद, सोहि जगमें परसीधो ॥ पुत्र सकल मुक्तें गया, पुत्री पण गुणवंत ॥ प्रणमुं आदि जिनेंद्रजी, भय भंजण भगवंत ॥ भ० ॥ १३ ॥ षटदारिसण सिद्ध आदि, जिणवर सुखकारी ॥ सब देवा सिरमोड, होड कोन करे चरणारी ॥ अरि करी भय दुःख दूर, होय जिण

समरण करतां ॥ प्रभुगुण अनत अपार, पार नहिं आवे उच्चरता ॥ सुगुरु शारदा स्वयमुखें ए, करे प्रभु गुण विस्तार ॥ कोडाकोड सागर लगें, तोहि न आवेजी पार ॥ तो० ॥ १४ ॥ मुझमति छे अति हीन, गुणोदधिपार न आवे ॥ मन समजावा काज, कछा गुण संमित भावें ॥ चदनवृक्ष भुजंग, जीवसग कमज लागे ॥ जिनवर जप छे गरुड, करम अहि दूरा भागे ॥ श्री परमेश्वर एहवा ए, जो समरे शुद्ध भाव ॥ भीम भवोदधि तारवा, परतख जिन जयनाथ ॥ प० ॥ १५ ॥ सवत उगणीसेंत्रीश, मास आषाढ उजारी ॥ तिथि तेरश भोमवार, शहर मदशोर मझारी ॥ अधमउद्धारण विरुद, सुणी प्रभुसरणो लीनो ॥ जन्ममरण रोग सोग, दुःख ससार सुविहीनो ॥ तिलोकरिख कर जोडिने, अरज करे शिर नाम ॥ हवे तारो प्रभु मुझ भणी, आपो अविचल ठाम ॥ आ० ॥ १५ ॥

॥ अथ चतुर्विंशति जिन स्तवन प्रारभ ॥

॥ केरवानी देशी ॥ जय जय रहो प्रभु ताहरी, म्हारी यदणां लीजो स्वीकार मला जी ॥ म्हारी० ॥ १ ॥ ऋषभ अजित सभव अभिनदन, अधम उद्धारणहार ॥ भ० ॥ अ० ॥ जय० ॥ २ ॥ सुमति पदम सुपास चदा प्रभु, अष्ट कर्म कियां छार ॥ भ० ॥ अ० ॥ जय० ॥ ३ ॥ सुविधि शीतल श्रेयास वासुपूज्य, जगनायक जयकार ॥ भ० ॥ ज० ॥ जय ॥ ४ ॥ विमल अनत श्रीधम शांतीश्वर, शांति करि छ संसार ॥ भ० ॥ शां० ॥ जय० ॥ ५ ॥ कुंथु अर मल्लि मुनिसुव्रत, करुणानिधी किरतार ॥ भ० ॥ क० ॥ जय० ॥ ६ ॥ नमी नेम पारस महावीरजी, सासणका सिरदार ॥ भ० ॥ सा० ॥ जय० ॥ ७ ॥ कर्म खपाइ केवल पाया, शुक्लध्यान मझार ॥ भ० ॥ शु० ॥ जय० ॥ ८ ॥ ए चोवीश जिनवर जगराया, त्याग दियो छे ससार ॥ भ० ॥ त्या० ॥ जय० ॥ ९ ॥ सजम करणी भवजल तरणी, करि अति दुःकरकार ॥ भ० ॥ क० ॥ जय० ॥ १० ।

भविजनने उपदेश सुणायो, वाणी ज्यो अमृतधार ॥ भ० ॥ वा० ॥ जय० ॥ ११ ॥ सूत्र चरित्र धर्म प्ररुप्यो, थाप्या तीरथ चार ॥ भ० ॥ था० ॥ जय० ॥ १२ ॥ होय अजोगी मुगति सिधाया, अजर अमर अविकार ॥ भ० ॥ अ० ॥ जय० ॥ १३ ॥ तिलोकरिख कहे जिम तिम करिने, तारो भवजल पार ॥ भलांजी प्रभु तारो ॥ भ० ॥ ता० ॥ जय० ॥ १४ ॥ इति ॥ १ ॥

॥ पद बीजुं ॥

॥ सुण सुण रे सयण सयाणां ॥ ए देशी ॥ ऋषभ अजित संभव सुखकारी, अभिनंदनकी वलिहारी ॥ सुमति पदम प्रभु जग राया, जाये आठु कर्मकूं घाया ॥ १ ॥ सुपारस चदा प्रभु देवा, चाहु भव भवमे तुम सेवा ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस दयाला, वासुपूज्य जगतप्रतिपाला ॥ २ ॥ विमल अनंत धर्म धन दाता, शांति नाथजी करो सुखशाता ॥ कुंथु अर मल्लिजी महाराया, प्रभु आठ करम रिपु घाया ॥ ३ ॥ विशमा श्रीमुनिसुव्रत वंदूं, भव भव दुःख दूर निकंदूं ॥ नमी नेम पारस जसवंता, महावीर प्रभु सासण कंता ॥ ४ ॥ प्रभु थाप्या हे तीरथ चारी, प्रभु परमपति उपगारी ॥ प्रभु तुम विन अति दुःख पायो, चारुगतिमे घभरायो ॥ ५ ॥ अब जाण्या मे साहिब साचा, सब देव जाण्या अन्य काचा ॥ इम जाणी तुम सरणमे आयो, तिलोक वंदे मन वच कायो ॥ ६ ॥ इति ॥ २ ॥

॥ पद त्रीजुं ॥

॥ मल्लिनाथ मन मोह्यो रे, खटराजिंद केरो ॥ ए देशी ॥ प्रणमुं नित पाया, तारो तारो जिनराया रे ॥ प्र० ॥ ऋषभ अजित संभव अभिनंदन, भविजनने सुखदाया रे ॥ प्र० ॥ ॥ १ ॥ सुमति पदम सुपार्श्व चदा प्रभु, आठ कर्म रिपू घाया जी ॥ प्र० ॥ २ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, राग द्वेषकू हठाया जी ॥ प्र० ॥

॥ ३ ॥ विमल अनत धर्मनाथ शाति जी, मरकी रोग उपशमाया जी ॥ प्र० ॥ ४ ॥ कुथु अर मल्लि मुनिसुव्रत जी, चोतिस अतिशे दिपाया जी ॥ प्र० ॥ ५ ॥ नमी नेप पारस महावीर जी, सासण पति मन भाया जी ॥ प्र० ॥ ६ ॥ ए चोवीश जिन कर्म निवारी, ज्ञान केवल प्रभु पाया जी ॥ प्र० ॥ ७ ॥ चार तीरथकी किनी थापना, ज्ञान केवल प्रभु पाया जी ॥ प्र० ॥ ८ ॥ तिलोकरिख कहे नित नित प्रभुकू, वदू मन वच काया जी ॥ प्र० ॥ ९ ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ पद चोथु ॥

॥ मेरी मेरी करतां जनम गयो रे ॥ ए देशी ॥ जय जय जिनदा जय जय जिनदा, टाल चउगति भव भव फंदा ॥ ज० ॥ ॥ १ ॥ रिषभ अजित सभव सुखकारी, अभिनदण चरणन बलिहारी ॥ ज० ॥ २ ॥ सुमति पदम सुपारस सामी, चंदा प्रभु घन अंतरजामी ॥ ज० ॥ ॥ ३ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस दयाला, वासुपूज्य प्रणमु किरपाला ॥ ज० ॥ ४ ॥ विमल अनंत धरम धनदाता, शांतिजिनद करि हे सुखशाता ॥ ज० ॥ ५ ॥ कूथु अर मल्ली गुणवंता, श्रीमुनिसुव्रत शिवपुर कंता ॥ ज० ॥ ६ ॥ नमी नेमी पारस मन भाया, महावीरपति शासनराया ॥ ज० ॥ ॥ ७ ॥ ए चोविश जिन जग छटकाई, लियो सजम तन मन उलसाइ ॥ ज ॥ ८ ॥ जप तप किरिया करि अति भारी, कर्म-शत्रु सब दिया निवारी ॥ ज ॥ ९ ॥ केवलज्ञान प्रगट्यो जिण वारी, देइ उपदेशना भवि हितकारी ॥ ज ॥ १० ॥ मन वचन तन जोग निवारी, शिवगढ राज लियो तिन वारी ॥ ज० ॥ ११ ॥ तिलोकरिख कहे सरणो तुमारो, जिम तिम करि भव पार उतारो ॥ ज० ॥ १२ ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ पद पांचमुं ॥

॥ शांति चरणारी जाउं बलिहारी ॥ ए देशी ॥ झेलो वंदना स्वामि हमारी, तुमारे चरण बलिहारी ॥ ए टेक ॥ ऋषभ अजित संभव अभिनदन, सुमति पदम सुखकारी ॥ श्रीसुपार्श्व चंदा प्रभु समरो, जगनायक जसधारी ॥ प्रभुजी पूर्ण ऊपगारी ॥ झे० ॥ १ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, विमल अनत धर्मधारी ॥ शांति जिनद सुखकंद जगतमे, मेट दिनी सव मारी ॥ हरो मेरी विपत्त बिमारी ॥ झे० ॥ २ ॥ कुंथु अर मल्लि मुनिसुव्रतजी, नमी नेमी सुविचारी ॥ तोरणसे पाछा फिर आया, छोडके राजदुलारी ॥ नाथ तुम करुणा भंडारी ॥ झे० ॥ ३ ॥ वे वारसके वारस पारस, पंचपरमेष्टी उच्चारी ॥ नाग नागणी जलत बचाया, किना सुर अवतारी ॥ महिमा जगमें अति थारी ॥ झे० ॥ ४ ॥ शासन-नायक वीर जिनेश्वर, हद क्षमा प्रभु धारी ॥ केवल लई प्रभु धर्म बतायो, सूत्र चारितर सारी ॥ तीरथ थाप्या प्रभु चारी ॥ झे० ॥ ५ ॥ अणसण लेइ प्रभु जोग त्याग कर, पहुता हे मुगति मझारी ॥ अनंत सुखामांही जाइ विराज्या तो, निरजन निराकारी ॥ रह्या लोकालोक निहारी ॥ झे० ॥ ६ ॥ मोह मायामांहि उलज रह्यो मे, पायो हुं दुःख अपारी ॥ तुम सरण विन चउगति भटक्यो, धर्मकी बुद्धि विसारी ॥ शीख सतगुरुकी न धारी ॥ झे० ॥ ७ ॥ अशुभ करम कछु दूर भयासुं, वाणी लगी प्रभु प्यारी ॥ अधम उद्धारण बिरुद सुणीने, सरणो लियो सुविचारी ॥ सार करजो प्रभु ह्मारी ॥ झे० ॥ ८ ॥ मुझ सरिखो नहि दीन जग-तमें, तुम सरिखो दातारी ॥ जिम तिम करि भव पार उतारो, या मांगु रिझवारी ॥ अरज लीजो अवधारी ॥ झे० ॥ ९ ॥ ओगणीशें अडातिस माघ कृष्ण पक्ष, तीज तिथि शनिवारी ॥ देश दक्षिण आवलकोटि पेटमे, जोड करी हितकारी ॥ तिलोकरिख

कहे सुविचारी ॥ ज्ञे० ॥ १० ॥ इति ॥ ५ ॥

॥ पद छट्ठ ॥

॥ पणीयारीकी दशी ॥ जय जय आदि जिनेश्वरु ॥ माहाराया रे ॥ भव भव दुःख निकंद ॥ तार माहाराया रे॥ अजित जीत करी कर्मसु ॥ मा० ॥ प्रभु भविजनके सुखकंद ॥ ता० ॥ १ ॥ संभव स्वामी सुहामणा ॥ मा० ॥ करुणानिधि किरतार ॥ ता० ॥ अभिनंदन हितकारीया ॥मा०॥ सुमति सुमति दातार॥ ता ॥ २ ॥ पदम कदमका आसरो ॥ मा० ॥ सूपारस जसवंत ॥ ता० ॥ चंद आनंद सदा करो ॥ मा० ॥ शिवरमणीका कंत ॥ ता० ॥ ३ ॥ सुविधिनाथ बुद्धि दीजीये ॥ मा० ॥ शीतल दीन दयाल ॥ ता० ॥ श्रीश्रेयांस कृपा करा ॥ मा० ॥ प्रभु वासुपूज्य कृपाल ॥ मा० ॥ ४ ॥ विमल विमल मति दीजीयें ॥ मा० ॥ अनंत अनंत गुणधार ॥ ता० ॥ धर्म धर्म दाता सदा ॥ मा० ॥ शांति शांति दातार ॥ ता० ॥ ५ ॥ कुंथुनाथ करुणानिधि ॥ मा० ॥ अरनाथजी जगभाण ॥ ता० ॥ मल्लि नाथ मनमोहियो ॥ मा० ॥ मुनिसुव्रत पद निरवाण ॥ मा० ॥ ६ ॥ नमु नमी रिष्ट नेमजी ॥ मा० ॥ पशुकी सुणी हे पुकार ॥ ता० ॥ तोरणसु पाछा फिर्या ॥ मा० ॥ जाय चढ्या गिरनार ॥ ता० ॥ ७ ॥ नावारस वारस प्रभु ॥ मा० ॥ पारस जिन जयकार ॥ ता० ॥ माहावीर जगधीरजी ॥ मा० ॥ शासनका शिरदार ॥ ता० ॥ ८ ॥ असरण शरण दयानिधि ॥ मा० ॥ तुम विन नहीं को आधार ॥ ता० ॥ तिलोक रिख अरजी करे ॥ मा० ॥ तार तार प्रभु तार ॥ तार माहाराया रे ॥ ९ ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ पद सातमु

॥ देशी वणझारीकी ॥ जिन राया रे ॥ श्रीमरुदेवी नंद, प्रणमु आदि जिणंदजी ॥ जि० ॥ जि० ॥ अजित संभव हितकार,

अभिनंदन सुखकंद जी ॥ जि० ॥ १ ॥ जि० ॥ सुमतिपदम सुपास, चंदा प्रभु हितकारिया ॥ जि० ॥ जि० ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस, वासुपूज्य उपगारीया ॥ जि० ॥ २ ॥ जि० ॥ विमल अनंत धर्म नाथ, शांति जिनंद शाता करो ॥ जि० ॥ कुंथु अर मल्लीनाथ, मुनिसुव्रत आरति हरो ॥ जि० ॥ ३ ॥ जि० ॥ नमी नेमी जिनराज, पारसनाथ करुणा घणी ॥ जि० ॥ जि० ॥ वर्द्धमान सुखकार, जय जय जय सासणधणी ॥ जि० ॥ ४ ॥ जि० ॥ घनघातिक चउ कर्म, हणी केवल पद पामिया ॥ जि० ॥ जि० ॥ दीनो धर्म उपदेश, चार तीरथ थापन किया ॥ जि० ॥ ५ ॥ जि० ॥ थया निरंजन निराकार, शिवरमणी प्रभुजी वरी ॥ जि० ॥ जि० ॥ तिलोकरिख कहे एम, तारजो मोहि कृपा करी ॥ जि० ॥ ६ ॥ जि० ॥ इति ॥ ७ ॥

॥ पद आठमुं ॥

॥ तुं धन तुं धन तुं धन तुं धन, शांति जिनेसर स्वामी ॥ ए देशी ॥ राग प्रभाती ॥ प्रात उठी चोविश जिनवरको, समरण कीजें भावधरी ॥ प्रा० ॥ ध्रु० ॥ ऋषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति कुमति सब दूर हरी ॥ पद्म सुपारस चंदा प्रभु ध्यावो, पुष्पदंत हणया कर्म अरि ॥ प्रा० ॥ १ ॥ शीतल जिन श्रेयांस वासुपूज्य, विमल विमल बुद्धि देत खरी ॥ अनंत धर्म श्रीशांति जिनेश्वर, हरियो रोग असाध्य मरी ॥ प्रा० ॥ २ ॥ कुथु अर मल्लि मुनिसुव्रत जी, नमी नेमी शिवरमणी वरी ॥ पारसनाथ वर्धमान जिनेश्वर, केवल लह्यो भवओघ तरी ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ तुम सम नहि कोइ तारक दूजो, इम निश्चे मनमांहे धरी ॥ तिलोकरिख कहे जिम तिम करिने, मुक्ति श्री द्यो महेर करी ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ इति ॥ ८ ॥

॥ पद नवमुं ॥

॥ पारस जिनेश्वर रे स्वामी ॥ ए देशी ॥ श्रीजिन समरो रे भाइ, दिन दिन सपति पामो सवाइ ॥ भय सब जावे रे भागी, महा दुशमन होवे अनुरागी ॥ श्री० ॥ १ ॥ ऋषभ जिनेश्वर रे पहेला, अजित जिनंद नमु अलबेला ॥ संभव स्वामी रे गावो, अभि नदनके चरण चित्त लावो ॥ श्री० ॥ २ ॥ सुमति पदम प्रभु रे वंदो, सुपार्श्व नाम सदा सुखकंदो ॥ चदा प्रभु पुष्पदंत रे स्वामी, शीतल श्रेयांस नमु शिर नामी ॥ श्री० ॥ ३ ॥ वासुपूज्य जगना रे ताता, विमल अनत धम शिवदाता ॥ शाति कुथु अर मल्लि रे देवा, मुनिसुव्रतजीनी करो नित्य सेवा ॥ श्री० ॥ ४ ॥ नमी नेमी पारस रे प्यारा, वर्धमान शासन शणगारा ॥ प्रभु तुम शिवपुर रे वसिया, तुम दरिसण नामें निशिदिन ससीया ॥ श्री ॥ ५ ॥ अधम उद्धारण रे जाणी, चरण शरण इम हिर्देमें थाणी ॥ तिलो करिख वंदे रे पाया, तार तार कृपा करि माहाराया ॥ श्री° ॥ ६ ॥ इति ॥ ९ ॥

॥ पद दशमुं ॥

॥ माधवका दोहाकी देशी ॥ प्रणमु आदि जिनंदने जी काइ, अजित नाथ महाराज ॥ संभवगुण संभव करोजी काइ, अभिनदन जिनराज हो ॥ चोविशे जिनराया, पस बतावो मुगति महेलकी ॥ सुमति सुमति दातार दयानिधि, पद्मप्रभ जगदीश ॥ श्रीसुपास चदा प्रभुसु, नित्य नमाउं शीस हो ॥ चो ॥ १ ॥ सुविधि शीतळ श्रेयांस वासुपूज्य, विमळ अनत धर्मनाथ ॥ शाति कुंथु अर मल्लि मुनिसुव्रत, वदू में जोडी हाथ हो ॥ चो० ॥ २ ॥ एकविशमा नमिनाथ निरुपम, बाविशमा रिष्टनेम ॥ ना वारसके वारस पारस, दीजो अविचल खेम हो ॥ चो० ॥ ३ ॥ वर्द्धमान शासनका साहेब, हण्या घनघातिक कर्म ॥ केवल लक्ष्मी पायनेजी काइ. टाळ्यो

श्रीजिनधर्म हो ॥ चो० ॥ ४ ॥ तीरथ थापी मिथ्या उथापी, किनो परम उपगार ॥ होय अजोगी मुगति बिराज्या, अजर अमर अविकार हो ॥ चो० ॥ ५ ॥ अलख निरंजन भवदुःख भंजन, सिद्धपद लियो सार ॥ तिलोकरिख कहे अहो जगवत्सल, जिम तिम करो भवपार हो ॥ चो० ॥ ६ ॥ इति ॥ १० ॥

॥ पद अग्यारसुं ॥ चोपाइनी देशीमां ॥

॥ ऋषभ अजित संभव सुखकार, अभिनंदन प्रभु जग आधार ॥ सुमति पद्म प्रभु तारण जहाज, प्रणमुं चोवीशे जिनराज ॥ १ ॥ सुपारस चंद्रप्रभ स्वाम, सुविधि शीतल जिन करूं प्रणाम ॥ श्रेयांस वासुपुज्य सारो काज ॥ प्र० ॥ २ ॥ विमल विमलमति दायक देव, अनंत धर्म जिन करीयें सेव ॥ शांति करो श्रीशांति महाराज ॥प्र० ॥ ३ ॥ कुंथु अर मल्लि जिन जाण, श्रीमुनिसुव्रत त्रिजग भाण ॥ नमी नेम राखो मुझ लाज ॥ प्र० ॥ ४ ॥ पारसनाथ महावीर दयाल, भवदुःख भंजन परम कृपाल ॥ मुक्ति नगर को लीनो राज ॥ प्र० ॥ ५ ॥ तुम बिन नहिं कोई तारणहार, तिलोकरिख इम निश्चें धार ॥ अरज करे द्यो शिवपुरसाज ॥ प्र० ॥ ६ ॥

॥ पद बारसुं ॥

॥ देशी न्यालदेमें ॥ ऋषभ अजित संभव नमुं संभव नमुं जी कांई, अभिनंदन जस धार ॥ सुमति पद्म प्रभु वंदीयें वंदियें जी कांई, सुपारस जिन हितकार ॥ करुणा सागर तारजो तारजो जी प्रभु, भक्तवत्सल भगवंत ॥ क० ॥ १ ॥ चंदा प्रभु सुविधिशिरे सुविधिशिरे जी कांइ, शीतल जिन श्रेयांस ॥ वासुपूज्य विमल नमुं विमल नमुं जी कांइ, अनंतनाथ अवतंस ॥ क० ॥ २ ॥ धर्म शांति कुंथु नमु कुंथु नमुं जी कांइ, अरनाथजी जगतात ॥ मल्लिनाथ ओगणीशमा ओगणीशमा जी कांइ, प्रभावतीना अंगजात ॥ क० ॥ ३ ॥ मुनिसुव्रत मुनिसुव्रत धणी जी कांइ, नमि-

नाथ जस धार ॥ रिष्टि नेमी करुणा धणी करुणा धणी जी कांइ, पशुवाकी सुणिहे पुकार ॥ क० ॥ ४ ॥ पारस पारस सारीखा सा रिखा जी कांइ, बलता नागिणी नाग ॥ परमष्ठी सुणाइ सुरपद दीयो सुरपद दीयो जी कांइ, कीना तिण महाभाग ॥ क० ॥ ५ ॥ महा वीर शासन धणी शासन धणी जी कांइ, हद क्षमा प्रभु धार ॥ केवल लेइ मुगतें गया मुगतें गया जी कांइ, पाया पद अविकार ॥ क० ॥ ६ ॥ तुम शरणा विनु हु भम्यो हु भम्योजी कांइ, पायो दुःख अपार॥ तिलाकरिख कहे में लियो में लियो जी प्रभु, चरण शरणको आधार ॥ क० ॥ ७ ॥ इति॥ १२ ॥

॥ पद तेरमु ॥

॥ सुमति सदा दिलमें धरो ॥ ए देशी ॥ ऋषभ अजित संभव नमु, अभिनंदन श्रीकंत ॥ जिनेश्वर ॥ सुमति पदम सुपास जी, कीधो करमको अंत ॥ जि० ॥ मोय तारो किरपा करी ॥ १ ॥ ए आकणी ॥ चंदा प्रभु सुविधि वली, शीतल टालो संताप ।॥जि०॥ श्रेयांस वासुपूज्य विमल जी, अनंतजीको करो जाप ॥ जि० ॥ मो० ॥ २ ॥ धर्म शांति कुंथु अर, मल्ली मुनिसुव्रत श्याम ॥ जि० ॥ नमियें नमी रिठनेम जी, पारस प्रभु गुणधाम ॥ जि० ॥ मो० ॥ ३ ॥ वर्द्धमान शासन धणी, कर्म भर्म किया छार ॥ जि० ॥ केवल ज्ञान दीवाकरु, थाप्यां तीरथ चार ॥ जि० ॥ मो० ॥ ४ ॥ कियो उपगार दया निधि, पहुता मुक्तिमझार ॥ जि० ॥ तिलोक कहे जिम तिम करी, कीजो भवजल पार ॥ जि० ॥ मो० ॥ ५ ॥ इति ॥ १३ ॥

॥ पद चौदमु ॥

॥ च्यार पहेरको दिन होवे रे ॥ ए देशी ॥ ऋषभ आजत जिन वंदियें रें, संभव जिन सुखकार हो ॥ भविक जन ॥ अभिनंदन करुणानिधि रे, सुमति सुमति दातार हो ॥ भ० ॥ वंदो चोविश

जिन भावशुं रे ॥ १ ॥ पदम सुपारस चंदा प्रभु रे, सुविधि शीतल कृपाल हो ॥ भ० ॥ श्रेयांस वासुपूज्य ध्याइये रे, विमल अनत सुविशाल हो ॥ भ० ॥ वं० ॥ २ ॥ धर्मनाथ शांतीश्वरू रे, कुंथु अर मल्लि जाण हो ॥ भ० ॥ श्री मुनिसुव्रत साहिवा रे, नमी नेम गुण खाण हो ॥ भ० ॥ वं० ॥ ३ ॥ पारस प्रभु महावीरजी रे, शासनका शिरदार हो ॥ भ० ॥ राग द्वेष मल जीतिने रे, पहोता मुगति मझार हो ॥ भ० ॥ वं० ॥ ४ ॥ अहो अविनाशी साहिवा रे, जगवत्सल जगदीश हो ॥ जि० ॥ तिलोकरिख करे विनति रे, कीजो भव निस्तार हो ॥ भ० ॥ वंदो० ॥ ५ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ पद पन्नरसं ॥

॥ पद शोलमु ॥

॥ श्रीमुनिसुव्रत साहेबा ॥ अथवा अंजणाना रासना कडखामां ॥ प्रणमुं जिनेश्वर जगपति, परमदयाल करुणाना भंडार तो ॥ जुगला रे धर्म निवारीया, ऋषभ जिनंद नृप नाभिकुमार तो ॥ प्र० ॥ १ ॥ अजित कंदर्प दल जीतिया, संभवनाथ गुणसंभव जाण तो ॥ अभिनंदण वंदण करु भावशुं, सुमति पदम प्रभु त्रिजगमाण तो ॥ प्र० ॥ २ ॥ श्रीसुपार्श्व जस घणो, चंदा प्रभुजीने सुविधि जिनंद तो ॥ शीतल श्रेयांस गुणधारणा, वासुपूज्य जगगुरु टाल्या भवफंद तो ॥ प्र० ॥ ३ ॥ विमल विमल मति धर्दियें, अनंत अनंत गुण सुखनी राश तो ॥ धर्म श्री शांति कुंथु अर, मल्ली जिनंद कियो शिववास ता ॥ प्र० ॥ ४ ॥ श्रीमुनिसुव्रत नमी प्रभु, रिष्टनेमी दयासिंधु दातार ता ॥ पशुअकी पुकार सुणी साहीवा, तोरणसुं फिर गया मोक्ष मझार ता ॥ प्र० ॥ ५ ॥ पारस पारस सारिखा, जगत धारस प्रभु परम दयाल तो ॥ श्रीवर्धमान शासन धनी, भक्त तारक प्रभु जग प्रतिपाल तो ॥ प्र० ॥ ६ ॥ अधम उद्धारण बिरुद आपको, जाणिने शरण लियो जगदीश तो ॥ जिम तिम तारो प्रभु मुझ भणी, तिलोकरिख वीनवे पूरा जगीश ता ॥ ७ ॥ प्र० ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ पद सत्तरमु ॥

॥ गाफल मत रहे रे, मेरी जान ॥ गा ॥ ए देशी ॥ जपो जिनवर रे मेरि जान, जपो जिनवर रे ॥ जिनवर जप जगतमे सुखदाता, झूठा है सब जगका नाता ॥ ज० ॥ ऋषभ अजित संभव सुखकारी, अभिनंदन जग जसधारी, सुमतिनाथ सुमति दातारी ॥ पद्मप्रभु सब अचल पाया, भया तीन भवन अचल राया ॥ ज० ॥ १ ॥ सुपास आश सब पूरे, चंदा प्रभु संकट चूरे, सुविधि शीतल मोह कियो दूरे ॥ इग्यारमा श्रेयांसनाथ स्वामी

वासुपूज्य वंदूं मे शिर नामी ॥ ज० ॥ २ ॥ श्रीविमल विमल मतिवंता, श्रीअनंत धर्म शिवकंता, शांति करो शांति महंता ॥ कुंथु अर किया कर्म घाणो, केवल लइ पाया निर्वाणो ॥ ज० ॥ ३ ॥ मल्लिनाथ अनत वालिराया, छहूं नृपतिकूं प्रभु समझाया, मुनिसुव्रत व्रत सुहाया ॥ एकविंशमा नमिनाथ म्होटा, नमतां मिटे जन्म मरण दोटा ॥ ज० ॥ ४ ॥ रिष्टनेमी शिवादेवी नदा, जादव कुल-दीपक चंदा, चढ्या व्याहन भ्रातके छंदा ॥ पशुकी पुकार अवधा-री, त्यागी प्रभु राजुलसी नारी ॥ ज० ॥ ५ ॥ पारस करुणाके भंडारी, नागनागिणी जलत उगारी, परमेष्ठीको शरण उच्चारी ॥ कमठमद भंजण निःशंका, दिया प्रभु मुक्तिमांहे डंका ॥ ज० ॥ ६ ॥ वर्द्धमान शासन पति सच्चा, जग जान लिया प्रभु कच्चा, संजम करणी मांही राच्या, केवल लेइ थाप्यां तीरथ चारी, मुलकमे कीर्त्ति अपरम पारी॥ ज० ॥ ७ ॥प्रभु असरण सरण कहाया, जगवत्सल नाम धराया, तिलोकरिख सरण तुम आया ॥ नाथजी में भवभव तुम वंदा, मेटो मेरा जनम मरण फंदा ॥ ज० ॥ ८ ॥ इति ॥ १७ ॥

॥ पद अढारमुं ॥

॥ कुंथु जिनराज तुं ऐसो ॥ रेखताकी देशीमे ॥ समर जिन नामकूं प्यारा, मिटे सब कर्मका भारा ॥ ध्रु० ॥ ऋषभ जिन-नाम सुख दाता, दरिसण षटमांही विख्याता ॥ स० ॥ १ ॥ अजित जिनराज गुणवंता, संभव जगदीश शिवकता ॥ जय जय जय अभिनंदन स्वामी, सुमति पद्मप्रभजी अतरजामी ॥ स० ॥ २ ॥ सुपारस नाथ जसधारी, जिनोंके चरण बलिहारी ॥ चंदा प्रभु वंदूं चंद्रबरणा, भवो भव चरणका सरणा ॥ स० ॥ ३ ॥ शीतल श्रेयांस जगदीशा, नमूं नित्य वासुपूज्य ईशा ॥ विमलमति विमल प्रभु कीजो, अनंत सुख अनंत नाथ दीजो ॥ स० ॥ ४ ॥ धरम धन धरमनाथ धरता, शांतिप्रभु शांतिके करता ॥ कुथु अर मल्लि

मल घाया, मेरे प्रभु मुनिसुव्रत भाया ॥ स० ॥ ५ ॥ एकविशमा नमिनाथ ध्याउ, चरण पे शिश नमाउ ॥ बावीशमा रिष्टनेमी सांई, तारिफ मामुरमुलक ठाई ॥ स० ॥ ६ ॥ त्रेवीशमा पारस्नाथ सचा, जिनोका प्रगट ह परचा ॥ सासणपति महावीर चका, बजे हे आज उनका डका ॥ स० ॥ ७ ॥ करी प्रभु जबरदस्त करणी, लीनी हे अचल शिवधरणी ॥ प्रभुजी मेरी अर्ज मान लीजो, तिलोकरिख पदवी मोय दीजो ॥ स० ॥ ८ ॥ इति ॥ १८ ॥

॥ पद ओगणीशमु ॥

॥ कडखाकीदेशी ॥ वदू चोवीश, जिनद आनदसुं, तारो कृपाल, करुणा भडारी ॥ तुम सम और नहिं, ठोर त्रिहुं भुवनमें, जाणी ने सरण, लीयो विचारी ॥ व० ॥ १ ॥ ऋषभ अजित संभव अभिनदन, सुमतिपदम, सुपार्श्व देवा ॥ चद्रलच्छन चद्रवर्ण चंदा प्रभु, भवभव दिजो प्रभु, अचल सेवा ॥ व० ॥ २ ॥ प्रणमुं पुप्प दत, शीतल श्रेयांसजिन, वासुपूज्य पूजनिक, जगजन सुहाया ॥ विमल अनत धर्म, शातिशाति करो, जक्तनायक जगगुरु कहाया ॥ वं० ॥ ३ ॥ श्रीकुंथु अर मल्लि, श्री मुनिसुव्रत, सुकृत करणी सरल भावें ॥ नमी नेमी श्री पार्श्व महावीरजी, नाम लियां सकल, विघन जावे ॥ व० ॥ ४ ॥ ईशका ईश, जगदीश चोविस प्रभु, कर्मकाटी काटी, सिवमुक्ति पाया ॥ तिलोकरिख वीनती, दरिसण दीजीयें, अचलभक्ति अरु, चरण छाया ॥ व० ॥ ५ ॥ इति ॥ १९ ॥

॥ पद वीशमु ॥

॥ प्रभु थारा गुण अनंत अपारा ॥ ए देशी ॥ प्रभुजी थारा चरणको आधार, प्रभुजी थारा धर्मको आधार ॥ध्रु०॥ ऋषभ अजित समव अभिनदन, सुमति सुमतिदातार ॥ प्र० ॥ १ ॥ पद्म सुपास चदा प्रभु समरो, सुचद्रवदन सुखकार ॥ प्र० ॥ २ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपुज्य, जगमें कीर्ति अपार ॥ प्र० ॥ ३ ॥ विमल अनंत

धर्म शांतीश्वर, शांतिकरण संसार ॥ प्र० ॥ ४ ॥ कुंथु अर मल्ली मुनिसुव्रतजी, सुव्रतपद दातार ॥ प्र० ॥ ५ ॥ नमी नेमि पारस महावीरजी, सासणपति शिरदार ॥ प्र० ॥ ६ ॥ मुझ सम दीन नहीं कोइ जगमे, तुम सम नहिं को दातार ॥ प्र० ॥ ७ ॥ अधम उद्धारण बिरुद विचारो, करुणानिधि किरतार ॥ प्र० ॥ ८ ॥ तिलोकरिख कहे जिम तिम करिने, कीजो भवजल पार ॥ प्र० ॥ ९ ॥ इति ॥२०॥

॥ पद एकवीशमु ॥

॥ आज भलो दिन उगो जी ॥ भटीयाणीनी देशी ॥ प्रात उठ नित भावेंजी, प्रणमुं चोविश जिनंदजी, प्रभु करजो भवजल पार ॥ ध्रु० ॥ ऋषभ अजित सुखदाई हो, संभवजगमांइ दीपता, प्रभु अभिनंदन हितकार ॥ सुमति सुमतिके दातार हो, जगत्राता पद्म सुपासजी कांइ, वंछित पूरणहार ॥ प्रा० ॥१॥ चंद्रा प्रभु चंदवरणा हो सुखकरणा सुविधि जिनेश्वरू, प्रभु शीतल शिवदातार ॥ श्रेयांस वासुपूज्य ध्याउं हो, मनाउं विमल जिनंद जी प्रभु, अनंत अनंत गुणधार ॥ प्रा० ॥ २ ॥ धर्मधर्म धननायक हो, दायक शांति दया करुं प्रभु, शांति करी संसार ॥ कुंथु अर मल्ली वंदूं हो, निकंदूं पातक माहेरां प्रभु, मुनिसुव्रत व्रतधार ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ नमि नेमी जिनराया हो, मनभाया पारसनाथजी, प्रभु परचा पूरणहार ॥ महावीर जग डाह्या हो, तजि माया ममता मोहनी, प्रभु कर्म भर्म किया छार ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ केवलज्ञानज पाया हो, जब आया इंद्र उमावसुं, कियो मोच्छव हर्ष अपार ॥ हितउपदेश सुणायाजी, जगराया पर उपगारीया, प्रभु, थाप्यां तीरथ चार ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ मुगतिनगर सीधाया जी कांई, पाया शिव सुखसासतां, प्रभु अजर अमर अविकार ॥ तिलोकरिख इम बोले हो, प्रभु खोले आयो आपके, मुझ द्यो अविचल सुखसार ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ इति ॥ २१ ॥

॥ पद बाविशमु ॥

॥ सद्गुरुजी कहे जग सपनों ए ॥ ए देशी ॥ जपो जपो भविक जिन राया, कर्म काटके अमर पदपाया रे ॥ ज० ॥ १ ॥ ऋषभ अजित संभव मन भाया, अभिनंदन वंदूं ननकाया रे ॥ ज० ॥२॥ सुमति पद्म सुपास सुखदाया, चंदाप्रभु पद धरन सोहाया रे ॥ ज० ॥३॥ सुविधि शीतल श्रेयांस अति डाया, वासुपूज्य कर्मरिपु घाया रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ विमल अनत धर्मधन पाया, शांतिनाथ भविक सम माया रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ कुंथु अर मल्लि मलहठाया, मुनिसुव्रत व्रत दृढ ठाया रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ नमी नेमी पारस सरसाया, महावीर त्रिशलादेवी जाया रे ॥ज०॥७॥ तिलोकरिख प्रभुसरणे चल आया, जिम तिम करि तार महाराया रे ॥ ज० ॥ ८ ॥ इति ॥ २२ ॥

॥ पद तेवीशमु ॥

॥ कपूर होवे अतिउजलो जी ॥ ए देशी ॥ प्रणमु आदिजिनेश्वरू जी, भयभंजण भगवंत ॥ अजितनाथ जीत्या अरि जी, संभव गुण अनंत ॥ जिनेश्वर आपतणो छे आधार ॥ ध्रु० ॥ १ ॥ अभिनंदन आनंदकरो जी, सुमति सुमतिदातार ॥ पद्मप्रभु करुणा निधि जी, सुपारस सुखकार ॥ जि० ॥ २ ॥ चंद्रप्रभ चंद्र ऊच्छना जी, चंदरवरण शरीर ॥ पुष्पदंत शीतल नमू जी, श्रेयांस श्रेयास गुणधीर ॥ जि ॥ ३ ॥ वासुपूज्य विमल नमूं जी, अनंत अनंत सुखलीन, धर्मनाथ शांतीश्वरू जी, मरीनो रोग शांतिकीन ॥ जि ॥ ४ ॥ कुंथु अरजिनवर जपो जी, मल्ली मलमद मार ॥ केवलकमला पाईया जी, मुनिसुव्रत व्रतधार ॥ जि० ॥ ५ ॥ नमी नमी पारस नमु जी, चोविशमा वर्धमान ॥ ए चोविशजिन जगगुरु जी, पाम्या अविचल थान ॥ जि० ॥ ६ ॥ तिलोकरिख कर जोडिने जी, वंदे वारम वार ॥ अरज सुतिक अवधारजो जी, कीजो भवजल पार ॥जि० ॥ ७ ॥ इति ॥ २३ ॥

॥ पद चोवीशमुं ॥

॥ श्रीमुनिसुव्रत साहिव साचो ॥ ए देशी ॥ वंदूं चोविश जगदीश दयाला, गुणरतनाकर माला रे ॥ जग उद्धारण जगरच्छ पाला, काट्या कर्मका जाला रे॥ व०॥ १ ॥ ऋषभ अजित संभव सुखकारी, अभिनंदन जसधारी रे ॥ सुमति पदम प्रभुजी उपगारी, चरणसरण वलिहारी रे ॥ वं० ॥ २ ॥ सुपारस चंदा प्रभु स्वामी, सुविधि शीतल गुणधामी रे ॥ श्रीश्रेयांस नमूं शिवगामी, जय जय अंतरजामी रे ॥ वं ० ॥ ३ ॥ वासुपूज्य श्रीविमल महंता अनंत धरम शिवकता रे ॥ शांतिजिनेश्वर शांति करंता, किना करम रिपुअंता रे ॥ वं० ॥ ४ ॥ कुंथु अर मल्ली मल घाया, मुनिसुव्रत व्रत डाया रे ॥ नमी नेमी पारस भाया, भक्तवत्सल पद पाया रे ॥ वं० ॥ ५ ॥ श्रीमहावीर सासणपति साचा, भव दुःख भंजन जाचा रे ॥ रोम रोममें मन तन राचा, खोटा जगका लाचा रे ॥ वं० ॥ ६ ॥ तिलोकरिख कहे अहो जगराया, दुर्लभ दुर्लभ पायारे ॥ कुदेव त्यागी तुम शरणे आया, तार तार माहारायारे ॥ वं० ॥ ७ ॥ इति ॥ २४ ॥

॥ अथ देवगुणस्तवन प्रारंभः ॥

॥ देशी बाबा आदमकी ॥ ऐसा जिन ऐसा जिन ऐसा जिन है, लालि लालि वदु सदा निश दिन है ॥ ऐ० ॥ १ ॥ एक सहस्र अष्ट लक्षण है, तनकांति झलक ज्यो रतन है ॥ ऐ० ॥ २ ॥ जाके परथम संठाण संघयण है, उत्कृष्ट रूप सुवर्ण है ॥ ऐ० ॥ ३ ॥ जाण्यो सब अथिर तन धन है, कियो सजम लेवनको मन है ॥ ऐ० ॥ ४ ॥ एक कोड अठ लख दिन दीन है, देई दान महा तप कीन है ॥ ऐ० ॥ ५ ॥ शुकल ध्यानविषे लय लीन है, घनघातिक कर्म कीने छिन है ॥ ए० ॥ ६ ॥ केवल ज्ञान प्रगट्यो तत्क्षण है, सब द्रव्य जाणे भिन्न भिन्न है ॥ ऐ० ॥ ७ ॥ चोतिस अतिशय पेंतिस

वचन है, उपदेश देसे भविजन है ॥ पे० ॥ ८ ॥ नारी पुत्र जण स कोटीन है, स्वामी सरिखो न और नवीन है ॥ प ० ॥ ९ ॥ कर्म बधनकी ज्याकू धीन है, परमपात्र परम प्रवीन है ॥ पे ॥ ॥ १० ॥ तीर्थ थाप कापे कर्मवन है, प्रभु पहुचे अचल भवन है ॥ पे० ॥ ११ ॥ अजर अमर अविनाशी पद लीन है, जन्म मरण किया पर क्षीन है ॥ पे० ॥ १२ ॥ अयवता रिखजि महाराज मया कीन है, एसा देव लिया मेनें चिन है ॥ पे ॥ १३ ॥ तिलोक रिख कहे प्रभु धन धन है, पेसा देव वस मरे मन है ॥ पे० ॥ १४ ॥ इति ॥२५॥

अथ गुरुगुण स्तवन प्रारभ ॥

॥ देशी पहीज ॥ पेसा गुरु पेसा गुरु पेसा गुरु है, रहे कनक कामिनीसे दूर है ॥ ए० ॥ ॥ ज्ञान ध्यानमें रहे भरपूर है, वीतराग शरण सदा उर है ॥ पे० ॥ २ ॥ आठु कर्मकी फौज करूर है, सो तप जपसें करे चक चूर है ॥ पे० ॥ ३ ॥ नहिं क्रोध कपट मगरूर है, विषय मदन किया चक चूर है ॥ पे० ॥ ४ ॥ त्यागे पाप अठारा जे क्रूर है, बोले निरवद्य वचन मधुर है ॥ पे० ॥ ५ ॥ नर पशु और सुर असुर है, सहे परिसह सकल सवा शूर है ॥ पे० ॥ ६ ॥ शील समकित धन भरया भूर है, दूर होत कर्मरूपी धूर है ॥ पे० ॥ ७ ॥ सझाय रूप बजे रणतूर है, कीर्त्तिरूप नोवत रही धूर है ॥ पे० ॥ ८ ॥ नही माने विकथा मजकूर है, जे जिनागमकु करे मंजूर है ॥ पे० ॥ ९ ॥ ससार माने सो क्षणभंगूर है, जाणे धर्म थिर सदा मशहूर है ॥ पे० ॥ १० ॥ मिथ्यामत माने फितूर है, नय तत्त्व पेछाने चतुर है ॥ पे० ॥ ११ ॥ भविजन मन माथे जरूर है, नहिं मदे सोई बे शहूर है ॥ पे० ॥ १२ ॥ अयवतारिखजी महाराज हजूर है मैनें जाण्यो धर्मको अकुर है ॥ पे० ॥ १३ ॥ तिलोकरिख कहे जे

सतगुरु है, सदा वंदणा उगंतां सूर हे ॥ ऐ० ॥ १४ ॥ इति ॥२६॥

॥ अथ धर्मवर्णन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ देशी एहीज ॥ ऐसा धर्म ऐसा धर्म ऐसा धर्म हे, जिणसे मिटत सकल भयभर्म हे ॥ ऐ० ॥ १ ॥ सब जीव चाहे शाता परम हे, नहिं दे परकुं परिश्रम हे ॥ ऐ० ॥ २ ॥ नहि भाखे मृषा को मरम है, टाले चोरी पाले व्रत ब्रह्म है ॥ ऐ० ॥ ३ ॥ टाले ममता छल रहे नरम है, नही राग द्वेष नहिं गरम हे ॥ ऐ० ॥ ४ ॥ कलहो कलंक चाडिअणुबंधे कर्म है, परिहरे सुगुणी राखे शरम हे ॥ ऐ० ॥ ५ ॥ श्रीजिन आज्ञाके मांही धर्म हे, कोइ बुध जनकुं महेरम हे ॥ ऐ० ॥ ६ ॥ पाले धर्म होवे अकरम है, केवल लेई भया भव चरम हे ॥ ऐ० ॥ ७ ॥ तिलोकरिख कहे सिद्ध परिब्रह्म है, गुरु महेरसुं हुवो महेरम हे ॥ ऐ० ॥ ८ ॥ ॥ इति ॥२७॥

॥ अथ जिनगुणविस्मयस्तवन प्रारंभः ॥

॥ मेरी मेरी करतां जनम गयो रे ॥ ए देशी ॥ अहो प्रभु तुम गुण अचरिज आवे, कहेता सुरगुरु पार न पावे ॥ अ० ॥ १ ॥ तुम सहु जाण कहे जग मांइ ॥ जीवकी आदि सो कछु न बताई ॥ अ० ॥ २ ॥ जगत कहे देखे सब स्वामी, स्वपनु नहि देखो शिवगामी ॥ अ० ॥ ३ ॥ वेदो नहिं सुख दुःख जग जाणे, सुख अनंत सिद्धांत वखाणे ॥ अ० ॥ ४ ॥ तुम वीतराग दशा सदा पावे, आराध्या विण कोइ मोक्ष न जावे ॥ अ० ॥ ५ ॥ निगुणा पर नहि द्वेष तुमारो, आज्ञा नही माने तो भमत संसारो ॥ अ० ॥ ६ ॥ पच्चक्खाण तो प्रभु एक न कांइ, आश्रव नहिं लागे तुम तांइ ॥ अ० ॥ ७ ॥ आउखा कर्मको बधन नांइ, अनंत कालकी थिराथिति पाइ ॥ अ० ॥ ८ ॥ नाम करम क्षय करि शिववासो, नाम लिया सब विघन विनासो ॥ अ० ॥ ९ ॥ गोत्र

करम तुमन नहि देवा, गोत्र सभालि करे जन सेवा ॥ अ० ॥ १० ॥ अतराय करि दुरि थां सांइ, नूतन लाभ दिसे नहिं कांइ ॥अ० ॥ ११ ॥ करुणासागर जगमें कहावो, करम रिपु सब दूर भगावो ॥ अ० ॥ १२ ॥ परिग्रह नहिं तुमने जग दाखे, जगनायक कहे आगम सार्खे ॥ अ० ॥ १३ ॥ कामिनी त्रिविध त्रिविध तुम त्यागी, शिवरमणी पति कहे जगरागी ॥ अ० ॥ १४ ॥ तिलोक रिख लियो शरण तुमारा, अधम उद्धारण विरुद विचारो ॥ अ० ॥ १५ ॥ मुझ अवगुण प्रभु दूर निवारो, जेम तेम करि भव पार उतारो ॥ अ० ॥ १६ ॥इति॥२८॥

॥ अथ उपदेश स्तवन पद पहेलु प्रारभ ॥

॥ समज समज गुणवत सयाणा, कर ले सुकृत प्रभुका गुण गाणा ॥ स० ॥ १ ॥ काल अनत भम्यो चउ गतिमें, राच्यो नहिं तु श्रीजिनमतमें ॥ स० ॥ २ ॥ गर्भवासमें बहुत दुःख पायो, नवमास तु उधा लटकायो ॥ स० ॥ ३ ॥ जन्म भयो विसर्‌यो दुःख सारा, खावण पीवण प्रेम अपारा ॥ स० ॥ ४ ॥ बाल्पणु हसि खेल गमायो, धर्म ध्यान कछु दाय न आयो ॥ स० ॥ ५ ॥ जोबन वयमांहि पाप कमायो, भोग विलासविषे लल्चायो ॥ स० ॥ ६ ॥ निशिदिन हाय करे धन केरी, देश विदेश देखे घणि फरी ॥ स० ॥ ७ ॥ भूला कहे माया मेरी या मरी, तेर कहे कछु हात न तेरी ॥ स० ॥ ८ ॥ बाप दादा सबही गये छडी, किसविध आश करे तु धर्मडी ॥ स० ॥ ९ ॥ मुठि बांधके जन्म तु पायो, हाथ पसारके आगें सिधायो ॥ स० ॥ १० ॥ कर कर खोटा धदा धन जोडे, धर्मकरणीसु प्रीती क्यु तोडे ॥ स० ॥ ११ ॥ पिप्पलपान संध्याका उजासा, बादल छाय सुपन धन आशा ॥ स० ॥ १२ ॥ देहसु ममत कर तु घणेरी, होवे घडीकमें राखकी ढेरी ॥ स० ॥ १३ ॥ पल पल आयु घटे नर तेरो, पाप कमायासुं

नरकमे डेरो ॥ स० ॥ १४ ॥ देव निरंजन भक्ति करीजें, गुरु निर्ग्रंथके नित्य नमीजें ॥ स० ॥ १५ ॥ धर्म दयामें हे सुखदानी, ए तीन तत्त्व लो न्याय पीछाणी ॥ स० ॥ १६ ॥ मिथ्या भर्म कर्म सब छडो, छकाय जीव भर्णा मन दडो ॥ स० ॥ १७ ॥ तिलोकरिख कहे सुणो नर नारी, इण भव जस आगे सुख भारि ॥ स० ॥ १८ ॥

॥ पद बीजुं ॥

॥ देशी एहीज ॥ गफलतमे मत रहे रे दिवाना, जीव चिडा यमराज सिचाना ॥ ग० ॥ १ ॥ रात दिवस करता नित धंधा, जाणके होय रह्या कैसे अंधा ॥ २ ॥ ग० ॥ जैसें त्तित्तरकुं बाज झपटे, मुसककोे ज्यों मांजर गटके ॥ ३ ॥ ग० ॥ कुरंगको सिंह ज्यो पकड विदारे, तैसेही प्राणीकु काल प्रहारे ॥ ४ ॥ ग० ॥ मात पिता तिरिया सुत सारा, मरण आया नहिं राखणहारा ॥ ५ ॥ ग० ॥ सात कोट भूतल धसि जावे, जहां पण यम आयके गटकावे ॥ ६ ॥ ग० ॥ हरि हर इंद्र चंद्र नर राया यमकी त्रासमें सब घबराया ॥ ७ ॥ ग० ॥ जिण घर हय गय लक्ष चोराशी, वे पण हो गये मसाणके वासी ॥ ८ ॥ ग० ॥ छप्पन कोडिके नाथ कहाया, पाणी विना वनमे मरण पाया ॥ ९ ॥ ग० ॥ काहेकुं तुं करता अकडाइ, देख तुं दादा पडदादाके तांइ ॥ १० ॥ ग० ॥ केइ चल्या केइ चालणहारा, क्युं न हुशियार होवे तु गमारा ॥ ११ ॥ ग० ॥ दिन दिन चलणो निकट जो आवे, काल अचानक झपट ले जावे ॥ १२ ॥ ग० ॥ धन दौलत और माल खजाना, छेवट छोड अकेला सिधाणां ॥ १३ ॥ ग० ॥ धन कमायो सो पाछला खावे, कर्ममे कोय न पांति पडावे ॥ १४ ॥ ग० ॥ घेवर सो तो जमाइने खाया, केदखानामें मोदी दुःख पाया ॥ १५ ॥ ग० ॥ दो कोसाके आंतरे जावे, तो पण

खरची साथ ले सिधाव ॥ १६ ॥ ग० ॥ परमत्र ता निश्चय तुम जाणो, क्यु नहिं लत्र तु धर्मको नाणो ॥ १७ ॥ ग० ॥ सद्गुरु चोकिदार चमाव, सुकृतसोदा नरे सग आवे ॥ १८ ॥ ग० ॥ ओगणीशें गुणचालिस मझारा, मगशिर शुदि अष्टमी चन्द्र वारो ॥ १९ ॥ ग० ॥ शहेर ससारा दक्षिणमाइ, तिलोकरिख कहे चेतजो भाई ॥ २० ॥ ग ॥

॥ अथ उपदर्शाफटका स्तवन प्रारभ ॥

॥ चाल पहीज ॥ धिक तेरा जीवका, न करता धरमकु ॥ धिक तेरा तन मन, धिक इ जनमकु ॥ धि० ॥ १ ॥ रत्नचिंतामणि जन्म जो नरको, खोय दियो जेसे भव तेने खरका ॥ धि ॥ २ ॥ नीचकु देखिके शिश नमाय, सतकु देखि अधिक अकडावे ॥ धि ॥ ३ ॥ धर्मकथा कछु दाय न आवे, जा सुण सो मुक्क्षुक झोला खाव ॥ धि ॥ ४ ॥ इष्कका ख्याल राग अनुरागें, भक्ष खाय ताहि घस आगें ॥ धि ॥ ५ ॥ नाटकमें उभा रहे रात सारी, मुनिदरसण आलस अति भारी ॥ धि० ॥ ६ ॥ तप जप बातमें पट नट जावे, खाणेमें लाटी लेइ झट जावे ॥ धि ॥ ७ ॥ स्तवन सझाय कहेता शरमावे, लडसी तो कछु दाय न आवे ॥ धि० ॥ ८ ॥ दान देता थरथर कर धूजे, हिंसा करणमें कर अति जूझ ॥ धि ॥ ९ ॥ लोभ कारण करे अति नरमाई, सहधर्मीसु करे गुमराइ ॥ धि ॥ १ ॥ पाप करणीमें मन उल्लसाव, धमक्रियामें न चित्त लगाव ॥ धि० ॥ ११ ॥ क्रोध मान तृष्णा फल भारी, दान शीयल तप भाव विसारी ॥ धि ॥ १२ ॥ पाप करणमें जार जणावे, धर्म उद्यम माहि कायर थाव ॥ धि ॥ १३ ॥ परख नहिं देव गुरु धर्म केरी विणजमें दृष्टि पहोंचावे घणेरी ॥ धि ॥ १४ ॥ अविद्यामें ग्वरचता राय, जस शोभामें नियक धन खोवे ॥ धि० ॥ १५ ॥

निंदा विकथामे निशदिन रातो, गुणिजनका गुण सुणी अकलातो ॥ धि० ॥ १६ ॥ कर्मबंधनकी शिख सुणि राजी, धर्मशिक्षा सुणि अधिक नाराजी ॥ धि० ॥ १७ ॥ पापीकुं आदर देके बिठावे, धर्मीकुं देख अधिक घुररावे ॥ धि० ॥ १८ ॥ पापथी परचो दयाथकी दूरो, धर्ममें पाछो कर्ममांही शूरो ॥ धि० ॥ १९ ॥ परदुःख देखीने अति हरखावे, निज संपत्तसें अधिक पोमावे ॥ धि० ॥ २० ॥ बंबुल बोय आमफल चहावे, विष भक्षण करि जीवणो चहावे ॥ धि० ॥ २१ ॥ पच पच खाय दीयो भव सारो, तेलीका बेल ज्युं हार्यो जमारो ॥ धि० ॥ २२ ॥ निशदिन हाय हाय धन धनकी, लाज नहीं परभव गुरुजनकी ॥ धि० ॥ २३ ॥ धोबीका श्वान ज्युं कहे धन मेरो, सोचे न छेवठ नरकमें डेरो ॥ धि० ॥ २४ ॥ इहां अपजस आगें जस भारी, धर्म बिना भव भवमें खुवारी ॥ धि० ॥ २५ ॥ जैसा जाया तैसा सिधाया, धिक जननी जिणे गोद खिलाया ॥ धि० ॥ २६ ॥ ओगणिशें अडातिस माहावदि जाणो, चौथ तिथि रवि वार वखाणो ॥ धि० ॥ २७ ॥ तिलोकरिख कहे आवलकोटी मांइ, इम सुणी करजो थे धर्म कमाई ॥ धि० ॥ २८ ॥ इति ॥

॥ पद बीजुं ॥

॥ उपदेशमे सुलट ॥ देशी एहीज ॥ धन तेरा जीवडा, नित करता धरमकुं ॥ धन तेरा तन मन, धन हे जनमकुं ॥ १ ॥ रत्न चिंतामणि नरभव पाई, धर्मचिंतामणि ले उलसाई ॥ २ ॥ मिथ्यात्वी नरकुं नहिं सरसावे, धर्मीकुं देख अधिक हरखावे ॥ ३ ॥ धर्मकथा सुणवा चित्त चहावे, सुण कर सार ग्रही उलसावे ॥ ४ ॥ तप जप किरियामें रहे अगवानी, पुद्गल पर कछु ममता न आणी ॥ ५ ॥ ख्याल नाटकमे कबहूं न जावे, मुनि दरिसण आलस नहिं लावे ॥ ६ ॥ प्रभुगुण गावता अधिक गुंजावे, क्रोध कलेश थकी

शरमोव ॥ध०॥७॥ दान देवे नित उलट परिणामें, थर थर भूजे सो हिंसाके कामें ॥ध०॥८॥ पापका काममें डर अति आणे, धर्मको काम सदा भलो जाणे ॥ध०॥९॥ क्रोध मान तृष्णा छल त्यागे, दान शीयल तप भावमें आगे ॥ध०॥१०॥ पापका काममें निर्बल अगे, धर्मका काममें शूरपणु रगे ॥ध०॥११॥ सत्यपक्षकी प्रतीतें जो आणे, झूठको पक्ष रति नहीं ताणे ॥ध०॥१२॥ जीव दया धन खरचण जाणे, लाभ अनत हिये इम ठाणे ॥ध ॥१३॥ न करे निंदा विकथा सुणे नांई, गुणि-जनना गुण सुणि उछलाई ॥ ध० ॥ १४ ॥ कर्मबधणकी शीख न धारे, धर्मशिक्षा सुखदायी विचारे ॥ध०॥१५॥ पापीसु प्रीति न राखे कदाई, धर्मीकु आदर द अधिकाई ॥ध ॥१६॥ धरमसु परचो पापथी दूरो, कर्ममें पाछो सो तप जप शूरो ॥ ध० ॥ १७ ॥ पर दुख दोखि अणुकंपा घणेरी, मगरूरी करे नहीं निज सुख केरी ॥ ध ॥ १८ ॥ आमके बोय आम फल चहावे, ऐसे गुणीसों कदि न ठगावे ॥ध०॥१९॥ निशिदिन बछना धर्म मरम की, लाज घणी परभव गुरुजनकी ॥ध ॥२०॥ धन कुटुब तन नहीं जाणे मेरो, जाणे जैनधर्म सहायक तेरो ॥ध०॥२१॥ इणभव शोभा आगे सुख भारी, कर्मशत्रु हणि वरे शिवनारी ॥ध०॥२२॥ नरभव पायके धर्म कमाया, धन जननी जिणें गोद खिलाया ॥ध ॥२३॥ तिलोकरिख कहे हित उपदेशो, इम सुणि करजो थें धर्म हमेशो ॥ ध ॥ २४ ॥ इति ॥

॥ पद श्रीसु ॥

॥ देशी पहीज ॥ देखि वदन गोरा, क्यों तुं मुलाना, रंग पतग जिम सहा फुलानां ॥ दे० ॥ १ ॥ हाडका पिंजर चाम मढानां, भितर दुर्गधका भरा है खजाना ॥ दे० ॥ २ ॥ कच्चा घडामांहि पानी भराना, टूट अचानक पींपल पाना ॥ दे० ॥ ३ ॥ तैसा वदन तेरा है रे दिवाना, देख दगो यह क्यों तु लुभाणा ॥ दे० ॥ ४ ॥ निशिदिन मांगे यह खानांहि खानां, दत नहिं तब करत हैराना

॥ दे० ॥ ५ ॥ तेने तो इसकू मेरा करी माना, कर कर हिंसा तुं देत हे खाना ॥ दे० ॥ ६ ॥ ए दगादार महा दुःखदाना, छेवट निकाले अकेला ही जानां ॥ दे० ॥ ७ ॥ तिलोकरिख कहे समज सयाणा, तप जप करकें लहे निर्वाणां ॥ दे० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ पद चौथुं ॥

॥ देशी एहीज ॥ एक दिन एसा वीतगा सकलमें, कर ले सुकृत तुं सोच अकलमें ॥ ए० ॥ १ ॥ ककर चुन चुन महेल बनाया, उनका मसाणमें वास वसाया ॥ ए० ॥ २ ॥ जिणके धन होतो केई कोडी, उनके संग गइ नहीं एक कोडी ॥ ए० ॥ ३ ॥ केइ कोडी दल लाखोही हाथी, वे पण नगे गये नहिं साथी ॥ ए० ॥ ४ ॥ हरि हलधर चक्री नर राशी, छेवट सवहीं मसाणके वासी ॥ ए० ॥ ५ ॥ जमका लश्कर जव चाढि आवे, ततक्षण हंस कूच कर जावे ॥ ए० ॥ ६ ॥ श्वास रहे जवही लग आशा, श्वास गया तव होत निराशा ॥ ए० ॥ ७ ॥ मात पिता सुत बंधव नारी, रुदन करे मतलव परिवारि ॥ ए० ॥ ८ ॥ गहेणां आभूषण लेवे उतारी, मतलवकी जगमें सब यारी ॥ ए० ॥ ९ ॥ आठ हाथ को कपडो मंगाई, ओढाय सिढीमें दे पधराई ॥ ए० ॥ १० ॥ चार जणा लेवे खांधे उठाई, कोइ रोवे कोई हरखाई ॥ ए० ॥ ११ ॥ पलंग उपर जे सोते सदाई, उनकुं लकड चुण देवे जलाई ॥ ए० ॥ ॥ १२ ॥ हाड लकडके सज्यो घास पूलो, होवें भस्म तुं कहिपें भूलो ॥ ए० ॥ १३ ॥ स्नान करी सव घर चल आवे, कोई कीसीके संग न जावे ॥ ए० ॥ १४ ॥ दो दिन याद करे उस नरके बरस छः मासमें जाय विसर के ॥ ए० ॥ १५ ॥ पाती करके, सज्जन धन खावे, पाप कमाया तेरे संग आवे ॥ ए० ॥ १६ ॥ ए जगका सब झूटा हे नाता, क्युं तु कमावत कर्मका खाता ॥ ए० ॥ १७ ॥ जो इस जगमे देहज धारी, छेवट जल बल होवेगा

क्षारी ॥ ए० ॥ १८ ॥ ओगणिशें गुणचालिश मागशिर मासो, तिथि इग्यारस पक्ष उजासो ॥ ए० ॥ १९ ॥ तिलोकीरख कहे सतारा मझारो, करी उपदेशी भविक हित कारो ॥ ए० ॥ २ ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ पद पांचमु ॥

॥ देशी पहीज ॥ धर्म कर्मका मर्म न जाणा, जिनका जन्म जैसा पशुके समाना ॥ १ ॥ सुकृत दु कृत भेद न जाना, जीव अजीव कछु न पिछाना ॥ २ ॥ पुण्यपापकी परख न कांई, आश्रव संवर समज न आइ ॥ ३ ॥ निर्जरा बंध मोक्ष पद जाणी, खबर नहिं कछु श्रीजिनवाणी ॥ ४ ॥ कौन है साधु असाधु है कैसा, इह भव परभव नहिं को अदेसा ॥ ५ ॥ निशि दिन पाप करे निःशंका, साधुकु देख होवे वंका वंका ॥ ६ ॥ धर्मकी शिक्षा जो दरसावे, हडकया श्वान ज्यु काटण धावे ॥ ७ ॥ आप बडाई निंदा करे परकी, देखे नही करणी निजघरकी ॥ ८ ॥ हाय हाय करी जन्म गमावे, करके कुकर्म नहिं पछतावे ॥ ९ ॥ ममत करे तन सज्जन धनकी, खबर नाहिं कछु अपने वतनकी ॥ १० ॥ सींग पुछकी रहि हिणताइ, डाढी मूछकी भइ अधिकाइ ॥ ११ ॥ नरभव पायकें दान न दीनो, तप जपको कछु काम न कीनो ॥ १२ ॥ सतकु देखिकें शीश न नमाया, जीभसु प्रभुका गुण नाहिं गाया ॥ १३ ॥ कानसु सूत्रकी सुणि नाउं वाणी, नेत्रसु मुनिदरिसण नाहिं जाणी ॥ १४ ॥ धरणीके भारें मारी अधिकाइ, फिट फिट जननीकी कूख लजाइ ॥ १५ ॥ ऐसा प्राणी चउगतिमांहे भटके, मडवागुल ऊंध मुख लटके ॥ १६ ॥ पावे सो दु ख अनंत आपारा, बांध लिया संग पापका भारा ॥ १७ ॥ तिलोकरिखजी सताराके मांही, धर्म किया होवे सुख सदाइ ॥ १८ ॥

॥ अथ चतुर्विंशतिजिन स्तवन प्रारभ ॥

॥ माजुवध विसर गइ कगनो ॥ ए देशी ॥ नमो नमो रे

भविक प्रभुचरणां, मिट जावे सकल दुःख मरणां रे ॥ न० ॥ १ ॥ आदि अजित सभव हित करणां, अभिनदन सुमति शुद्ध धरणां रे ॥ न० ॥ २ ॥ श्रीपद्म सुपासजी उच्चरणा, चंद्रप्रभजी लंछन चंद्रवरणा रे ॥ न० ॥ ३ ॥ सुविधि शीतल अताप दुःख हरणा, श्रेयांस वासुपूज्य शरणा रे ॥ न० ॥ ४ ॥ होय विमल जपत भय टरणां, अनंत धरम मेटे भवफिरणां रे ॥ न० ॥ ५ ॥ शांति कुंथु अर किया न्याय निरणा, मल्ली मुनिसुव्रतजी स्मरणां रे ॥ न० ॥ ६ ॥ नमि नेमि पारस करि अहि करुणा, महावीरजी चरणे शीश धरणां रे ॥ न० ॥ ७ ॥ तिलोकरिख कहे जो दुःख हरणां, तो समरो प्रभु तारणतरणा रे ॥ न० ॥ ८ ॥ इति स्तवनं ॥

॥ अथ देवआश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ नमो नमो रे देव अरिहंता, प्रभु शिवरमणीके कंता रे ॥ न० ॥ ॥ १ ॥ घनघातिक करम सब हंता, सब जाणत केवल वंतारें ॥ न० ॥ २ ॥ जे अतिशय चोतिस सोहंता, प्रभु तीन भवनमें महंता रे ॥ न० ॥ ३ ॥ एक योजन वाणी वागरंता, चार तीरथ थापना करंता रे ॥ न० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख मन तनसें नमंता, सेवा दीजो सदाई भगवंता रे ॥ न० ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ गुरु आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ सतगुरुजी जपो रे मेरे भैया, जे भवजल पार करैया रे ॥ स० ॥ १ ॥ सतगुरुजी हे नाव खेवैया, परने तारत आप तरैया रे ॥ स० ॥ २ ॥ गुण सत्ताविशके धरैया, सत्यमधुर वाणीके उच्चरैया रे ॥स० ॥ ३ ॥ विषय कषायकी अगन बुझैया, वे तो ज्ञानको जल वरसैया रे ॥ स० ॥ ४ ॥ गुरु जोगें अनंत शिव लैया, सब सूत्रमें न्याव चेतैया रे ॥ स० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख कहे गहि बैयां, सो तो अविचल वास वसैया रे ॥ स० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ धर्म आश्रयी पद प्रारभः ॥

॥ धर्मरूपी बणाय लो नैया मानो मानो रे शीख मेरी भैया रे ॥ ॥ ध० ॥ १ ॥ सतोपका पाटिया जमैया, क्षमाकी मेख लगैया रे ॥ ध० ॥ २ ॥ पच आश्रव द्वार बुरैया, करो चादु वैराग सोहैया रे ॥ ध ॥ ३ ॥ सतगुरुजी है चतुर खेवैया, पर तारे और आप तरैया रे ॥ ध० ॥ ४ ॥ भवोदधिसुं तरणकी जो चैया, तिलोकरिख कहै धर्म गहैया रे ॥ ध० ॥ ५ ॥ इति पद ॥

॥ अथ ज्ञान आश्रयी पद प्रारभः ॥

॥ करो ज्ञान दीपक अजवालो, जिणसु मिटत अज्ञानको काली रे ॥क० ॥ १ ॥ पहेली उघ आलसकु टालो, छोडो विकथा रसको प्यालो रे ॥ क० ॥ २ ॥ करो सुगुरु सेव विशालो, सुत्र संधिसु खोल देवे तालो रे ॥ क० ॥ ३ ॥ कुमति कलेश कषायकु यें वालो जाणपणा विना किरिया वेथालो रे ॥ क ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहै ज्ञान गुणिमालो, वेगी लहेगा मुक्तिको मालो रे ॥क०॥

॥ अथ सम्यक्त्व आश्रयी पद प्रारभ ॥

॥ शुद्ध समकित मत रस राचो, जैन येन विना फेन सब काचो रे ॥ शु० ॥ १ ॥ सच्चा देव गुरु धम परख जाचो, खोटो पक्ष सो मत खाचो रे ॥ शु ॥ २ ॥ निस्यप्रसें जैन शास्त्रकु वाचो, वली सुणके लगावो तन आंचो रे ॥ शु० ॥ ३ ॥ इणसु सिवीर्जि कालको टाचो, छुट अनत भव सरधा साचो रे ॥ शु० ॥ ४ ॥ इण विना चारी गतिमें नाचो, नहीं छुटो कर्मको लाचो रे ॥ शु० ॥५॥ तिलोकरिख कहै समकित साचो, कुमति लता जड टाचो रे॥शु०॥६॥

॥ अथ चारित्र आश्रयी पद प्रारभ ॥

॥ पालो पालो रे सजमकी किरिया, जिणथी जीव अनताहि तिरिया रे ॥ पा ॥ २ ॥ पच माहाव्रत भावें उच्चरियां, रहो पाप कर्मसु टरिया रे ॥पा० ॥ ३ ॥ पच आश्रवद्वारकु धुरिया, राग द्वेष

शत्रु सब चूरिया रे ॥ पा० ॥ ३ ॥ जो संजम करणीथकी डरिया, सो तो चार गतिमांहे फिरिया रे ॥ पा० ॥ ४ ॥ ऐसो जाणके संजम आदरिया, सो तो अनंत गुणाका हे दरिया रे ॥ पा० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख कहे परहित धरिया, पुण्यजोगसु मिलि एह विरियां रे ॥ पा० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ तप आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ तुम तपस्या करो भव प्राणी, शम दम उपशम चित्त आणी रे ॥ तु० ॥ १ ॥ कर्म धान्य पिसणकुं ए घाणी, मोह अटवीकि- आग लगाणी रे ॥ तु० ॥ २ ॥ अहंकार पर्वत दुःखखाणी, तपस्या सो वज्र समाणी रे ॥ तु० ॥ ३ ॥ भव ताप बुझावण पाणी, करे सकल कलेशनी हाणी रे ॥ तु० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे तप सुखदाणी, जो करे सो वरे शिवराणी रे ॥ तु० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ क्रोध आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ मेटो मेटो रे भविक जन लाली, जिनसुं रहोगे सदाइ खुशि- याली रे ॥ मे० ॥ १ ॥ पेली देवें निज आत्मा वाली, पिछें दु- जाने देवे प्रजाली रे ॥ मे० ॥ २ ॥ याता धर्मतरु छेदन वाली, जगमें रोग वडी हे जंजाली रे ॥ मे० ॥ ३ ॥ ऐसी जाणकें देवणी नाहि गाली क्षमा जाणजो सदा हितवाली रे ॥ मे० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे क्षमा धर्म झाली, गया शिवमंदिर सुवि- शाली रे ॥ मे० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ मानआश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ मत करो रे चतुर अभिमानां, अंत दावे तो परभव जानां रे ॥ म० ॥ १ ॥ फूल फूले सो देख कुमलानां, जो वध्या सो तो विखराना रे ॥ म० ॥ २ ॥ थिर नहिं इंद्र चंद्र रवि भाना, थिर नहि हे जगमे राजा राणा रे ॥ म० ॥ ३ ॥ एसी समजकें दिल नरमाना, नित गुणिजनके गुण गानां रे ॥ म० ॥ ४ ॥ तिलो-

करिख कहे सुणजो शहाणा, विनय कियासु पद निर्वाणा रे ॥ म० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ कपट आश्रयी पद प्रारभ ॥

॥ छोडो छोडो रे कपटकी कनरणी या ता धर्म डेराकी छिन करणी रे ॥ छो० ॥ १ ॥ या तो नरकनिगोदकी निसरणी, या तो धूर्त लोभीके घर घरणी रे ॥ छो ॥ २ ॥ या तो अतरका शल्य जैसी वरणी, या तो देय भवोभव दु ख अरणी रे ॥ छो० ॥ ३ ॥ या तो दुःख देवाव वैतरणी, या तो शिवपुर सुखकी हरणी रे ॥ छो ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे कपट न करणी, जा थाने शिववधु वरणी रे ॥ छो ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ मायाआश्रयी पद प्रारभ ॥

॥ मत कहो रे चतुर माया मेरी, या तो पुण्य जिहा लगे ठैरी रे ॥ म० ॥ १ ॥ जब बीत जावे पुण्यकी लहेरी, तब खालि रहेगी नहि तेरी रे ॥ म ॥ २ ॥ या तो साथी नहिं छे किण केरी, भाग्य विना मिले नहिं हेरी रे ॥ म ॥ ३ ॥ चार रोजकी चांदणी गहेरी, छेवट रयण अंधेरी र ॥ म० ॥ ४ ॥ या तो ज्यु ज्यु भेलि होवे गहरी, त्यु त्यु तृष्णा वधे बहु तेरी रे ॥ म ॥ ५ ॥ जाणो नरक निगोदकी या सेरी, ऐसी जाणके त्यो तृष्णा थें केरी रे ॥ म० ॥ ६ ॥ तिलोकरिख कहे उपदेश किया भेरी इसकी संगत जा शिवशेरि रे ॥ म ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ उपदेशआश्रयी पद पहेलु प्रारभ ॥

॥ मानो मानो रे सुगुरुका कहेनां, जिणसें पाओगा अमर सुखचेना रे ॥ मा ॥ १ ॥ मिथ्या धर्म जाणे सब फैना, खोल देखो थें अंतर नैना रे ॥ मा० ॥ २ ॥ करो छकाय जीवकी जयणा, बोले मधुरता निरवद्य वेणा रे ॥ मा ॥ ३ ॥ विनादिया किसीका नहि लणां परस्त्रिया गिणा माइ बना रे ॥ मा० ॥

४ ॥ अति तृष्णा करो मति सेणा, चाडि चुगली आल नहिं देणां रे ॥ मा० ॥ ५ ॥ संजम आदरकें परिसह सहेणां, तिलोकरिख कहे प्रभु सरणे रहेणां रे ॥ मा० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ उपदेशी पद बीजुं ॥

॥ भोर भइ रे बटाउ जागो जागो, थाने जाणो देशावर आघो रे ॥ भो० ॥ चले संग चतुरको सागो, जिणसुं रहे मति पाछे आघो रे ॥ भो० ॥ २ ॥ ले ले खरची आगें नहिं थागो, जिनसें लागें नहिं दुःखदाघो रे ॥ भो० ॥ ३ ॥ पंच ठगाणि सुं मति करे रागो, वश पडियासुं करदेशी नागो रे ॥ भो० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे मोहनिंद त्यागो, उवट छोडकें शिवपंथ लागो रे

॥ का० ॥ ६ ॥

॥ अथ धर्म आश्रयी पद प्रारम ॥

॥ रहो रहो रे धरम धन तसीया, जो में शिवरमणीका रसिया रे ॥ र० ॥ १ ॥ राखजो यें मन तनके कसिया, शुद्ध समकित प्रसमें ठसिया रे ॥ र० ॥ २ ॥ राग द्वेष जगत जन ग्रसिया, भविजन सो सो दूर नसिया रे ॥ र ॥ ३ ॥ काम क्रोध ठगोमें जे फसिया, सो तो अचल दुकानसु चासिया रे ॥ र० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे जे धर्म वसिया, सोवे शिवसेजमें उल्लसिया रे ॥ र० ॥ ५ ॥

॥ अथ उपदेश आश्रयी पद प्रारभः ॥

॥ चेतो चेतो रे कुटुंबके विगारी, जाणो मतलबकी जग यारी र ॥ चे० ॥ १ ॥ मात पिता सुत बधव नारी, तुं जाणी रह्यो दिल धारी रे ॥ चे० ॥ २ ॥ कुटुंबी है कपटके भंडारी, करे खुशामद उपरसु धारी रे ॥ चे० ॥ ३ ॥ ज्यों पखी बेठे तरु डारी, मन मांहि सो गरज विचारी रे ॥ चे० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे स्यो धर्मधारी, जो उतरवा चाहा भवपारी रे ॥ चे० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ शिखामण आश्रयी पद प्रारभ ॥

॥ मानो मानो रे अचल सुख गरजी, मत होवो थे करमका करजी रे ॥ मा० ॥ १ ॥ मत दु:खाना किसीकी मरजी, होणहार टले नहि जो सरजी रे ॥ मा० ॥ २ ॥ कुसगतिको देवो तुम वरजी, पाप त्यागो सयाणे चित्त लरजी रे ॥ मा० ॥ ३ ॥ मत होना जुवेगारका ये दरजी, विषय कषायकु देवो तुम तरजी रे ॥ मा० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे धन जिनवरजी, करे प्रभुजीसु शिव अरजी रे ॥ मा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ उपदेश आश्रयी पद प्रारभ ॥

॥ मानो मानो रे शिखामण मेरी, ज्यों चाहो सुगतिकी शेरी रे ॥ मा० ॥ १ ॥ मात पिता कुटुंब सब वेरी, जिणसु ममता

करद्या दुःख केरी रे ॥ मा० ॥ २ ॥ मायाकी सपना सम लेरी, मत कर तुं ममता बहु तेरी रे ॥ मा० ॥ ३ ॥ काचा कुंभ जैसी कायाकी देहरी, छेवटम होवेगा राख ढेरी रे ॥ मा० ॥ ४ ॥ राग द्वेष सर्प महा जहेरी, ले उपशमकी जडी छेरी रे ॥ मा० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख कहे शिख हेरी, पियांसु अमृता शिव नेरी रे ॥ मा० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ जोवन आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ मत अकडे जोवनके भटके, तेरे शिरपर काल वैरी भटके रे ॥ म० ॥ १ ॥ नित अभक्ष आहारके गटके, वार वार तोय ज्ञानी गुरु हटके रे ॥ म० ॥ २ ॥ ख्याल तमासामें निशिदिन भटके, धरमके काममें दूरो छटके रे ॥ म० ॥ ३ ॥ वे तो नरककुडमांही लटके, ज्यानें पकड पकड जम पटके रे ॥ म० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे कर्म रज फटके, सो तो वेगा अचल सुख सटके रे ॥ म० ॥ ५ ॥

॥ अथ जोवन आश्रयी पद बीजुं ॥

॥ क्यों भूल्यो रे जोबनसें अकडी, नवमास लटक्यो सेरी सकडी रे ॥ क्यो० ॥ १ ॥ बालपणामें रम्यो ख्याल खखडी, रह्यो जोवनवयमें जकडी रे ॥ क्यों० ॥ २ ॥ आयो बुढापो सुझत नहिं अखडी, जोर पडियासुं पकडी लकडी रे ॥ क्यों० ॥ ३ ॥ तिलोकरिख कहे धर्म लेवो पकडी, तो पावोगा सुगति फुल पखडी रे ॥ क्यों० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ ससार आश्रयी पद प्रारभः ॥

॥ सतगुरुजी कहे जग सपनां, करो धर्मध्यान सोहि अपनां रे ॥ स० ॥ १ ॥ ज्ञान ध्यान करत नहिं धपनां, पाप करतां तो दिलमांहे कपनां रे ॥ स० ॥ २ ॥ दान देनां शील पाल तप तपनां, शुद्ध भावनामे दिल थपनां रे ॥ स० ॥ ३ ॥ सजन सनेही नहि है कोइ अपनां, आखर तो जरूर तुझ खपनां रे ॥ स० ॥ ४ ॥

सुगुरु सेवा करत नहिं छिपना, तिलोकरिख कहे प्रभु जपना रे ॥ स० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ शिक्षा आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ वार वार सतगुरु समजावे, क्यों तु कर्म बंध उपावे रे ॥ वा० ॥ १ ॥ जीव हसता हसतां जमावे, छोडतां अति मुशकिल थावे रे ॥ वा० ॥ २ ॥ जो सु आक धतुरा खावे, तो सु आंब कहांसु खावे रे ॥ वा० ॥ ३ ॥ जेहर खायके जिवणो उमावे, तिम पाप करिन सुख चावे रे ॥ वा० ॥ ४ ॥ जेसा बान्ध्या तैसा उदय आवे, चारुं गतिमांहि सो दुःख पावे रे ॥ वा० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख कहे कर्म उडावे, सो तो शिवपुर वेग सिधावे रे ॥ वा० ॥ ६ ॥

॥ अथ कर्म आश्रयी पद प्रारंभ ॥

॥ कर्मगति है अजब जगमांहि, इण सम शत्रु कोइ नांइ रे ॥ क० ॥ १ ॥ कुंडरिक तप करियो उलसाइ, मर गयो नरक सातमी माइ रे ॥ क० ॥ २ ॥ अढीदिन संजम पद पाइ, पुंडरीक सर्वार्थसिद्ध जाइ रे ॥ क० ॥ ३ ॥ प्रभुजी कीकिनी अधिक बुराइ, गोसालक पायो सुर प्रभुताइ रे ॥ क० ॥ ४ ॥ जमाली श्रीवीर का जमाइ, करमासु खोटी सरधा आइ रे ॥ क० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख कहे कर्म कसाइ, इनके कोइको मुलाहजा नाइ रे ॥ क० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ शूरपणा आश्रयी पद प्रारम ॥

॥ करो करो करमसे दंगा, जिणसु पावोगा सुख उचंगा रे ॥ क० ॥ १ ॥ वश कर लो मनकी तरंगा, छोडो विषय कषाय प्रसंगा रे ॥ क० ॥ २ ॥ राखो चित्त निर्मल जिम गंगा, छोडो पंच प्रमाद अडंगा रे ॥ क० ॥ ३ ॥ तप जप करणीमें रहो चंगा, मेटो कर्म बंधनकी उच्छंगा रे ॥ क० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे केवल संगा, तरो भवोदधि तरंग अभंगा रे ॥ क० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ दयाव्रत आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ पालो पालो रे भविक दया माता, इणसु पाओगा अचल सुखशाता रे ॥ पा० ॥ १ ॥ जग प्राणी सब जीवणो चहाता, दुःख मरणसें सब थरराता रे ॥ पा० ॥ २ ॥ ऐसे जाणके होवो- थें अभयदाता, कोइ जीवकुं न देणी अशाता रे ॥ पा० ॥ ३ ॥ टले नरकानिगोदका खाता, जो रहे दयारस रंगराता रे ॥ पा० ॥ ४ ॥ साठ नाम बताया जगत्राता, जो आराधे सो शिवसुख पाता रे ॥ पा० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख कहे आगम वाता, कोइ हलुकर्मी चित चाता रे ॥ पा० ॥ ६ ॥ इति पदम् ॥

॥ अथ सत्यवचन आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ सत्य वचन बोलो रे भविप्राणी, सो तो निरवद्य शिवसुख दाणी रे ॥ स० ॥ १ ॥ सत्य असत्यका भेद पिछाणी, पिछें बोलो वचन शुद्ध छाणी रे ॥ स० ॥ २ ॥ कोमल मृदु अमृतसी वाणी, जिणमें होवे नहिं धर्म हाणी रे ॥ स० ॥ ३ ॥ बोलो शुध्द सत्य मती ठाणी, जिनकी कीर्त्ति अधिक जग जाणी रे ॥ स० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे आगम वाणी, सत्यवादी वरे शिवराणी रे ॥ स० ॥ ५ ॥

॥ अथ अदत्त व्रत आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ मत लेवो रे अदत्त पर भाइ, जिणसुं कमी रहे नहिं कांइ रे ॥ म० ॥ १ ॥ जे चोरी तजेगा चित्त चहाइ, कछु फिकर नहिं उणतांइ रे ॥ म० ॥ २ ॥ रहे जगमें प्रतीत सवाइ, संतोष समान सुख नांइ रे ॥ म० ॥ ३ ॥ जिसके अनेक विघन टल जाइ, मर जावे सुरगतके मांइ रे ॥ म० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे दत्तव्रत की वडाइ, जिनशास्त्रमें प्रभु फरमाइ रे ॥ म० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ शीयलव्रत आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ सदा पालो रे शियल सुखदाइ, दोइ भवमें कीर्त्ति सवाइ रे ॥ स० ॥ १ ॥ चोर शत्रु सो जावे नरमाइ, शीलवंतने नमे सुर

आइ रे ॥ स ०॥ २ ॥ सूत्र प्रश्नव्याकरणके मांइ, बत्तिस ओपमा प्रभु फरमाइ रे ॥ स० ॥ ३ ॥ सोला ओपमा छाटी बताइ, ए अद्भुत व्रत अधिकाइ रे ॥ स० ॥ ४ ॥ विण मनसुद्धि पालो इणताइ, चोसठ सहस्र वर्ष सुर जाइ रे ॥ स० ॥ ५ ॥ तिलो करिख कहै धन उणताइ, शील पाले सदा उल्साइ रे ॥ स० ॥ ६ ॥ इति पद्म् ॥

॥ अथ ममत्व आश्रयी पद प्रारभ ॥

॥ त्यागो ममता परिग्रह दु:खदाइ, ए तो जगतपति फरमाई रे ॥ त्या० ॥ १ ॥ सतोषका सुख अधिकाइ, दवे तृष्णाकी लाय बुझाई रे ॥ त्या० ॥ २ ॥ इणमांही जे रह्या मूच्छाइ, सो तो सचे अति कम कमाइ रे ॥ त्या० ॥ ३ ॥ लोभ गिणे नहिं सयण सगाइ, देखो भरत बाहुबल भाइ रे ॥ त्या० ॥ ४ ॥ जिम जिम वधे धन प्रभुताइ, तिम तिम वधे तृष्णा सवाइ रे ॥ त्या० ॥ ५ ॥ ऐसी समझके टाल मूच्छीताई, तिलोकरिख कहे सो शिव पाई रे ॥ त्या० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ रात्रिभोजनव्रत आश्रयी पद प्रारभ ॥

॥ मत करोरे भोजन निशिमांहि, द्रव्यभाव अणुकपा लाइ रे ॥ म० ॥ १ ॥ त्रस जीव थालीमाहे पडे आइ, सुझे नहिं कछु अंधारामे मांइ रे ॥ म० ॥ २ ॥ जू भक्षणें जलोदर थाइ, विछुथी कपाल सड जाइ रे ॥ म० ॥ ३ ॥ माखी भक्षण वमण दरसाइ, इत्यादिक दु:ख इण भवमाइ रे ॥ म० ॥ ४ ॥ जो त्यागे निशि भोजन साइ, संवच्छरमें छमासी तपसाइ रे ॥ म० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख कहे त्यागो भाइ थाइ, द्रव्यभावे फल अति सुख दाइ र ॥ म० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ दुःकृत आश्रयी पद प्रारभ ॥

॥ छाडो छोडो रे दु:कृत दु:खदानी, इस्कुं कुमति रूप पट्टराणी

॥ छो० ॥ १ ॥ नरक निगोदमें सेज बिछाणी, जिहां न मिले अन्न और पाणी रे ॥ छो० ॥ २ ॥ ...रे सुख संपत्ति जस हाणी, जम देवे अति त्रास पिल घाणी रे ॥ छो० ॥ ३ ॥ दुःख पावे चारी गतमें प्राणी, सो तो जाणत केवल नाणी रे ॥ छो० ॥४॥ तिलोकरिख कहे न्याय पिछाणी, सो तो भविजनके मन मानी रे ॥ छो० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ मन आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ चित्त चंचल चपल थिर करणा, नित धरम शुक्ल ध्यान धरणां रे ॥ चि० ॥ १ ॥ तीन दंड तीन शल्य परिहरनां, पंचपरमेष्ठीका गुण सो उच्चरनां रे ॥ चि० ॥ २ ॥ पंच आश्रव पापसेती डरणां, आठ कर्मशत्रुसेंती लरनां रे ॥ चि० ॥ ३ ॥ ग्रहो मुनिधर्म दश चउ सरणां, बार भावना तप अनुसरणां रे ॥ चि० ॥ ४ ॥ तिलोकरिख कहे भवोदधि तरणां, धारो सुगुरु सुदेवका चरणां रे ॥ चि० ॥ ५ ॥ इति॥

॥ अथ आउखा आश्रयी पद प्रारंभः ॥

॥ दम जमका नहिं विसवासा. क्यो करे मेरी तेरी धन आशा रे ॥ द० ॥ १ ॥ मत समझो इसने कछु हासा, ये आसा हे जब लग सासा रे ॥ द० ॥ २ ॥ जैसा फुले संझाका उजासा, पड्या पाणीके वीच पतासा रे ॥ द० ॥ ३ ॥ जैसा जल मोतीका उकासा, तैसा हे इस तनका तमासा रे ॥ द० ॥ ४ ॥ क्यु चुणे उंचा उचा आवासा, एक दिन होयगा जंगलवासा रे ॥ द० ॥ ५ ॥ काल अहेडीका नहि विश्वासा, एकदिन देगा सब पर फांसा रे ॥ द० ॥ ६ ॥ तजो क्रोध मानका पासा, जिणसु वजत सुजसका त्रांसा रे ॥ द० ॥ ७ ॥ इणसुं नर सुर सवही त्रासा, एक सिद्ध सदा उल्लासा रे ॥ द० ॥ ८ ॥ तिलोकरिख कहे सवकुं खुलासा, करो धर्म ध्यान नित्य खासा रे ॥ द० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ उपदेश आश्चर्यी पद प्रारम ॥

॥ सुण चेतन रे, तुम गुणवत मुनिकों सेवो ॥ ए देशी ॥ सुणो सुगुणा र, तुम धर्म ध्यान नित कर लो ॥ तुम त्यागो पच प्रमाद, भवोदधि तर लो ॥ सु० ॥ यो नरभव लीनो नीठ, आरज देश पायो ॥ या काया निरोगी धार उत्तम कुल जायो ॥ ताय सद्गुरु को मिल्यो जोग, सूत्र सुण कानें ॥ तु मत कर आलस धार, शुद्ध सरधानें ॥ सु० ॥ १ ॥ या देह ओदारिक जाण, उपरसें चगी ॥ या पलमें सुधराकार, पलमें विरंगी ॥ या माया है बादलछाय, सुपन जो जाणा ॥ या जोबन नदीपूर, गरव मत आणो ॥ सु० ॥ २ ॥ ये मात पिता सुत भ्रात, कुटुंब और नारी ॥ सरणागत नहिं कोय, गरजकी यारी ॥ ज्यों तरुवर पर पखरु, आय ले वासो॥ जावे चउ दिशी बिखर, दिवस उजासो ॥ सु ॥ ३ ॥ केइ बाजीगर ज्यों बाद, मचावे आई ॥ छुम छुमीको सुण शब्द, खलक जुड आइ ॥ होय समासो बध, सवि मग जावे ॥ बाजीगर निज ठाम, अकेलो जावे ॥ सु० ॥ ४ ॥ महारु महारु कर रह्यो, जीव अज्ञानी ॥ पण छेवट जावे छोड, अकेलो प्राणी ॥ जगकाल जोरावर निपट ले जावे ताणी ॥ इम जाणीने चेतो चतुर, मानो प्रभु वाणी ॥ सु० ॥ ५॥ ओगणीसें अडतीस जेठ, शुध्द छट जाणो ॥ ए रत्तापुरके मांय, किधा वखाणो ॥ तिलोकरिष्य कहे येसे, सोइ सुख पावे ॥ पावे अमर विमान, मुगति सिधावे ॥ सु० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ उपदेश आश्चर्यी पद प्रारम ॥

॥ फागणकी देशीमें ॥ मत राचे रे, हाँरे मतराचे रे ॥ ससार है सपन माया, मत राच रे ॥ झाडका को पिंजरो ने चामडासु मढियो, काचाकुंभ जैसी तेरी काया ॥ म० ॥ १ ॥ पुण्यजोग धन सपदा रे पायो, विणस जाय जैसी बादल छाया ॥ म० ॥ २ ॥ जोबन रंग पतग नदीपुरसों, ढलती जाणजा दूपेरकी छाया ॥ म० ॥ ३ ॥

आयो बुढापो कुडापो रे आयो, सामा बोलण लागा घरजाया ॥ म० ॥ ४ ॥काल वेताल किया धाक तिहुं लोकमें, इंद्र चद्र सब थरराया ॥ म० ॥ ५ ॥ सुखी दुःखी वाल जुवान वृद्धनरने, छोडे नहिं हरि हर राया ॥ म० ॥ ६ ॥ माता पिता तिरिया सुत बंधव, आदर देवे मतलब आया ॥ म० ॥ ७ ॥ गरजविना कोइ सार नहिं पूछे, मूरखपणे क्यों तुं ललचाया ॥ म० ॥ ८ ॥ अकेलो तुं आयो ने अकेलो रे जावसी, सुकृत का सोदा थें कर लो भाया ॥ म० ॥ ९ ॥ धर्म विना तु भटक्यो चारु गतिमे, जनम मरण बहु दुःख पाया ॥ म० ॥ १० ॥ दान शियल तप भावना रे भावो, तिलोकरिख कहे अवसर आया ॥ म० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ पद वीजु ॥

॥ देशी एहीज ॥ मानो मानो रे, हांरे ॥ मा० ॥ चतुर सद्गुरु वाणी, मानो मानो रे ॥ देव गुरु धर्म साचा रे सरधो, तीन रतन ग्रहो सुखदाणी ॥ मा० ॥ १ ॥ ज्ञान दरिसण चारित्र तप कर लो, आठ करम करो धूल धाणी ॥ मा० ॥ २ ॥ क्रोध कपट अहंकार तज दीजो, तृष्णाकी लाय बुझावो प्राणी ॥ मा० ॥ ३ ॥ प्राणातिपात झूठ चोरी नहिं करिये, पालो शील संजम समता आणी ॥ मा० ॥ ४ ॥ छिन छिनमांहे थारो छीजे रे आउखो, खूट जाय जैसो अंजलीको पाणी ॥ मा० ॥ ५ ॥ तन धन जोबन थिर मत जाणजो, मोह ममता करचा दुःखखाणी ॥ मा० ॥ ६ ॥ ओगणिशें सेंतिस माघशुदि तेरश, तिलोकरिख कहे हित आणी ॥ मा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ धन आश्चर्य पद प्रारंभः ॥

॥ देशी एहीज ॥ करे कायकुं, हांरे ॥ क० ॥ हाय माया नहिं साथी ॥ क० ॥ एकलोही आयो ने एकलोही जावसी, संगे कोडी नहि आवे सुगुणा ॥ क० ॥ १ ॥ दामके काम फिरे देश पर देशमें, पुण्यविना

आवे रीतो सुगुणा ॥ क० ॥ २ ॥ कूड कपटसु तो माया करे पवठी, जिणमांहि सात पांती पडे सुगुणा ॥ ५० ॥ ३ ॥ पाप कमाइने जावे मरी एकिलो, धनको मालक ओर होवे सुगुणा ॥ क० ॥ ४ ॥ नरकमांहे प्राणी दु ख सहे एकिलो, कुटुंबी सो आडा नहिं आवे सुगुणा ॥ क ॥ ५ ॥ तिलोकरिख कहे हाय लाय छोड दो, समतासुं शिवपुर पावे सुगुणा ॥ क ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ उपदेश आश्रयी पद प्रारंभ. ॥

॥ देशी पहीज ॥ जागो जागो रे, हांरे ॥ जा० ॥ विदेशी थाने दूरो जाणो ॥ जा ॥ काल अनतको तु सुतो मोहनिंदमें, कायासा नगरमांहि धण्यो राणो ॥ जा ॥ १ ॥ कामक्रोध मद ठग लारें पडिया, तपसजमनो लूटे छे नाणो ॥ जा ॥ २ ॥ चार तीरथकी सागर मोटकी, धमरूपि मोटी जहाज माणो ॥ जा० ॥३॥ ज्ञान दरिसण चारित्र तप जपको, भर लो हरखसुं करियाणो ॥जा ॥ ४ ॥ सतगुरु खेवटीया मांहि जाणजो, भला परिणामको पवन आणो ॥ जा ॥ ५ ॥ मोक्षरूपी पाटणमें वेगसु सिधावणो, सिद्ध वेपारी ज्याकी सदा थाणो ॥ जा ॥ ६ ॥ तिलोकरिख कहे माल खप जावसी, कर लो हुशियारी पद निर्वाणो ॥ जा ॥ ७ ॥

॥ अथ नरकदु ख वर्णन पद प्रारम ॥

॥ चेतो चेतो रे, हारे चेतो चेतो रे, धरमबिना दु ख पायो ॥ चेतो ॥ पाप करीने जीव नरकमांही उपज्यो, अनत दु·ख देखी घभरायो ॥ चे ॥ १ ॥ जम अरडाट सुणिने चल आवे, लेइ तर धार तिखा झटकायो ॥ चे ॥ २ ॥ भूख लागी जब तिणमांही तनको, मास काट काट कर खवायो ॥ चे ॥ ३ ॥ तृषा लागी जद जम देव आवने, तातो उकाल कर पाणी पायो ॥ चे ॥ ४ ॥ गरमि लागी जब जबरीसु पकडी, कूड सामली तले लटकायो

॥ चे० ॥ ५ ॥ टुट टुट कायापर पडे रे पानडां, टुक टुक हुवो अति घभरायो ॥ चे० ॥ ६ ॥ पाय पकडकें उछाल्यो रे गगनमें, झेल्यो त्रिशूल माहा दुःख आयो ॥ चे० ॥ ७ ॥ अणछाणया जलमांहि घणो रे न्हावतो, नदी वेतरणीमांहि छटकायो ॥ चे० ॥ ८ ॥ पराइ तिरियानें प्यारी करि मानतो, लालथंभो करी चपकायो ॥ चे० ॥ ९ ॥ दारु मांस विनां घडि नहि चालतो, अगनिका कुंडमांहि डुबकायो ॥ चे० ॥ १० ॥ नरकमांहि दुःख सह्या रे अनंत थें, पल सागरथिति थररायो ॥ चे० ॥ ११ ॥ तिहांथी मारिने तिरजंच गति उपज्यो, जन्म मरण भयो दुःख कायो ॥ चे० ॥ १२ ॥ नीठ नीठ कर नर भव पायो, देश आरज उंच कुलें जायो ॥ चे० ॥ १३ ॥ दीर्घ आउखो ने पूरण इंद्री, काया निरोगी पोतें पुण्य लायो ॥ चे० ॥ १४ ॥ सतगुरु जोग मिल्यो सूत्रकी सरधा, जैन धरम सत्य मन भायो ॥ चे० ॥ १५ ॥ बाटी साटें नरभव मतिहारो, बासी टुकडामें क्युं तुं ललचायो ॥ चे० ॥ १६ ॥ तन धन जोबन कुटुंब कबीलो, अथिर सकल प्रभु दरसायो ॥ चे० ॥ १७ ॥ काल बेरी थारी लारां रे पडियो, सकल लोक इणसुं थररायो ॥ चे० ॥ १८ ॥ धर्मध्यान सुकृत कर लीज्यो, जो शिवपुर सुख होवे चहायो ॥ चे० ॥ १९ ॥ उगणिशें सेंतिश माघशुदि तेरश तिलोकरिख या उपदेश गायो ॥ चे० ॥ २० ॥ इति ॥

॥ बीस विहरमान को छद ॥

॥ श्री सिरिमंदर स्वामी । थारो ध्यान धरूं सिर नामी जी । जुगमंदर आंतरज्यामी हो जिणंद जसधारी जसधारी । चरण बलिहारी हो ॥ १ ॥ या टेर ॥ बाहु सुबाहुजी की करूं सेवा ॥ हुंतो च्याहुं नित मेवा जी । धन धन थे देवाधी थे देवाहो ॥ जि० ॥ २ ॥ सुजायत स्वामी प्रभु ध्यावु । रीखभानंदनजी गुण गाऊं । अनंत

वीरजी सीस नमाऊं हो ॥ जि० ॥ ३ ॥ सुर प्रभुजी सुख कंता । विसलधरजी विख्याता । दीजो मुज भव भवमें सुख साता हो ॥ जि० ॥ ४ ॥ वालेसर वज्रधरजी । सुणो चन्द्रानंदन आरजी । म्हारो जनम मरण थो दरजी हो ॥ जि० ॥ ५ ॥ चन्द्रबाहु भुजंग दयाला । छे काय जीवांरा प्रतिपाला । जे रोक दीया आश्रवनाला हो ॥ जि० ॥ ६ ॥ ईश्वर नेमीश्वर राया । वीरसेन सदा सुखदाया । माहाभद्रजी सर्व करम हटाया हो ॥ जि० ॥ ७ ॥ देवजसजी हे जसवंता । अनंतवीरजी सुखकंता । दु ख जावे ध्यान धरंता हो ॥ जि० ॥ ८ ॥ विचरे महाविदेह क्षेत्रके माया । प्रभुजीरी पांचसे धनुष्यें नी काया जुगमे सवाया हो ॥ जि० ॥ ९ ॥ प्रभुजी की कंचन वरणी काया । भवि जीवंकि मन भाया । तिलोकरीख गुण गाया हो ॥ जि० ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ वीश विहरमाननी लावणी ॥

॥ दीनदयाल कृपाल, करुणा भंडारी ॥ क० ॥ जय विहरमान जिन वीश, धर्म अधिकारी ॥ श्री सीमधर स्वामि, सदा सुखकारी ॥ स ॥ जय युग्मधर जसवंत, चरण बलिहारी ॥ बाहुजिणंद कृपाल, करुणा भंडारी ॥ क ॥ श्री सुबाहु जगदीश, परम पद धारी ॥ सुजात प्रभु घनघाती, कर्म कीया छारी ॥ क ॥ स्वयं प्रभ वीतराग, ममता विडारी ॥ रिखभानन आनद, करे नर नारी ॥ क० ॥ जय विहरमान माहाराज, धर्मअधिकारी ॥ १ ॥ अनंत वीरज जगनाथ, तज्या जगनाता ॥ त० ॥ श्री सुर प्रभु सुविख्यात, करो सुखशाता ॥ विशाल प्रभु सुविशाळ, त्रिजगके त्राता ॥ त्रि० ॥ श्री वज्रधर तप वज्र, कर्मके घाता ॥ चन्द्रानन सुखकंद, दर्शे चित्त चाता ॥ दर्श० ॥ चन्द्रबाहु कमराहु, मिटाया खाता ॥ कियो कर्मसें जंग, भुजंग प्रभु भारी ॥ भु० ॥ ज० ॥ २ ॥ ईश्वर त्रिभग

ईश, मेरे मन भावे ॥ मे० ॥ श्री नेमीश्वराजिन ध्यान, करतां दु:ख जावे ॥ वीरसेन करे केण, अमर पद पावे ॥ अ० ॥ माहाभद्र करे भद्र, विघनकु हठावे ॥ देवजस करे सेव, रिद्ध सिद्ध आवे ॥ रि० ॥ अजित वीरज निजपद, देत भज भावें ॥ जघन्यपदें वर्तमान, जिनंद उपगारी ॥ जि० ॥ ज० ॥ ३ ॥ धनुष्यपांचशें प्रमाण, प्रभुजीकी काया ॥ प्र० ॥ लक्ष चोराशी पूरव, आयु फरमाया ॥ थाप्या हे तीरथ चार, भविक मन भाया ॥ भ० ॥ होय अयोगी मोक्ष, जासि महाराया ॥ मे अधम उद्धारण विरुद, सुणी हरखाया ॥ सु० ॥ तिलोकरिख यों जाण, शरणागत आया ॥ जिम तिम करो भवपार, अरज अवधारी ॥ अ० ॥ ज० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ शांतिनाथ जिन लावणी ॥

॥ अगडदं अगडदं ॥ ए देशी ॥ प्रभु तुम विण में भम्यो जगतमें, अब द्यो सुख संपति स्वामी ॥ शांति जिनेश्वर शांति करो मोय, विघन हरण अतरजामी ॥ पाल्यो पारेवो मेघरथ नृपभव, गोत्र तीर्थंकर बांध्यो जिहां ॥ सर्वार्थ सिद्ध गये संयम लेकर, स्थिति तेत्रिश सागरकी तिहां ॥ हथिणापुर विश्वसेन पट्टराणी, अचिरा कूखें जन्म लियो ॥ छे पदवी उपराजी पुण्यसें, मरकी रोग प्रभु दूर कियो ॥ जस फेल्यो तब सारे देशमे, परजा पण शाता पामी ॥ शां० ॥ १ ॥ पचिश पचिश हजार वर्ष लग, कुंअर राज चक्रवर्त्ती ॥ एक हजार पुरुष संगें प्रभु, संजम लीनो शूभ मती ॥ एक वरस छद्मस्थ पणामे, सह्या परिसह जिनराया ॥ घनघातिक चउ कर्म काटकें, श्रीजिनवर केवल पाया ॥ दियो उपदेश भविक जन तारण, धन जगवत्सल शिवगामी ॥ शां० ॥ २ ॥ पच्चीस सहस्र वर्षमें एक कम, केवल पदवी दीपाई ॥ छत्तिस गणधर हुवे नाथके, बासठ सहस्र भये मुनिराई ॥ एकशठ हजार और छशें आर्जका, एक लक्ष नेवु हजारा ॥ भये श्रावक एकाविश

गुण पूरण, वारामृत धारणहारा ॥ तीन लक्ष त्र्याणु सहस्र श्राविका, करणीमें कुछ नहिं खामी ॥ शा० ॥ ३ ॥ लक्ष वर्षको सर्व आउखो, जिन मारग हद दीपाया ॥ समतशिखर पर्वत पर चढके, जगतारक अणमण ठाया ॥ वदि तेरश नक्षत्र रेवती, ज्येष्ठ मास में मुक्ति लही ॥ अजर अमर अविकार निरजन दुःखभजन विर्द आप सही ॥ तिलोकरिख कहे तारो मुझकु, अर्ज करु नित शिर नामी ॥ शाति० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ उदायिन रिखकी लावणी ॥

॥ देशी तेहीज ॥ नरपति सुरपति नमे जिनोकु, ध्यान धरे है साधु सभी ॥ जग उद्धारण समरो साहिव, महावीर त्रिजगतपति ॥ ए टेक ॥ वीतभय पाटणके अदर, नाम उदायिन था राजा ॥ शूरवीर माहावीर जोरावर, सोला देशका शिरताजा ॥ मुकुट वध दश राजा जिनकी, सेवा करता हय घरी ॥ पद्मावती नामें पट्टराणी, शील रूप गुण प्रेम भरी ॥ परजाकु फरजदसी पाले दिन दिन वढती पुण्यरति ॥ ज ॥ १ ॥ वर्द्धमान जगनाथ पधार, वदन गये राजा चालिकें ॥ धर्मकथा प्रभुजी फरमाइ, दूनीयामें ममत छलक ॥ विन मतलवसें कोइ न किस्का, जग माया है स्वमे ज्यों ॥ इस्कों छोड कर धर्म आराधो, सुणकें लगा नृप कंपनें ज्यों ॥ प्रभुसु कहे मे सजम लेउगा, पुत्रकु दे के राज क्षिति ॥ जग ॥ २ ॥ पीछें जाग में लेउगा तुमपें, जेज करो मत लीगारा ॥ राजमें जाता सोच दिलमें, पर्को पुत्र मुझ अति प्यारा ॥ राज करेगा नरक पडेगा, दुःख पावेगा वहुत सही ॥ इसी सवव भाणेज राज देउ, सला दिलमें यों राजा ठही ॥ केशी नाम भाणेज राज दे, भूप भया निर्ग्रंथ जति ॥ ज० ॥ ३ ॥ पुत्र विचार किया दिल अदर मरेमें क्या पेच भरी ॥ क्यु नहिं दिया राजछत्र मुझ, दिलमें चिंता वहुत करी ॥ रोप भराके गया

सो चंपा, मासी भ्रातके पास चली ॥ बारा व्रत वो पाले निर्मल, सो मुनि उपर द्वेष वली ॥ अब सुण लो सुनिवरकी किरिया, तप संजममें अधिक रति ॥ ज० ॥ ४ ॥ मास मास तप करत निरंतर, अरस निरस तुच्छ आहार करे ॥ अग्यारा अंग कठाग्र करकें, आज्ञा ले जनपद विचरे ॥ विहार करतां आया सोही पुर, केशी राजा दिल वहेम भया ॥ दुआइ फेराइ पुरमें साधुकुं, उतरने मत देनां यहां ॥ जो उतारेगा इनकुं घर अंदर, राजा करेगा घर जपति ॥ ज० ॥ ५ ॥ कुंभकार एक था भवि प्राणी, दिल अंदर विचार कीया ॥ राजा रूठा लेगा गन्धा, भांडा राखका ढंग रीया ॥ मेरे टपरी फुसकी हेगी, क्या कर ले राजा मेरा ॥ ऐसी समज कर दिनि हे आज्ञा, सुनिवर आकर जहा ठहेरा ॥ राजा सुन कर चुप रहा दिल, अच्छि नहि कछु जिनस छती ॥ ज० ॥ ६ ॥ राजहकीमसुं राजा कहे तुम, जहेर देनां ओषध मांइ ॥ दवा लगे नहिं फिर जीवणकी, ऐसा काम करो भाइ ॥ ऐसा हुकुम उन मान लिया और, साधुकुं दिया जहेर माहा ॥ दवा लेतही भइ रिख दीकत, रोम रोममें प्रगटी दहा ॥ सुनिवर समता सागर पूरे, निर्मल जिनकी धर्म मति ॥ ज० ॥७॥ लहेने वाला मांग लहेनां, आनाकानी काम नहीं ॥ दे दिल साफी ढील करे मत, ध्याया शुकल ध्यान सही ॥ पाये केवल ज्ञान मुनीश्वर, मुक्ति नगरमे डका दिया ॥ जय जय बोलो उनकी भइया, शमदम रसका प्याला पिया ॥ अजर अमर अविकारी निरंजन,सुख अनंत लहि सिद्धगति ॥ ज० ॥८॥ समकेती सुर दिल घुसे भराणे, बिन तकसीरी हत्यारा ॥ दिया सुनिवरकु जहेर हलाहल,प्रजाप्राण कर दिया न्यारा ॥ धूल वृषा करी दट्टण पट्टण, वदी कीया दुःख पावत हे ॥ एसी दिलमें समजो सुगुणा, तिलोकरिख दरसावत हे॥ धन जिनमारग धन परमेश्वर, धन जो पाले धर्म अति ॥ ज० ॥ ९ ॥ इति उदायिन रिखकी लावणी ॥

॥ अथ धन्नाजीकी लावणी ॥

॥ साल स्वप्नकी लावणीकी देशीमें ॥ श्री वीरजिनेश्वर नमत सुरश्वर, चोतीस अतिशय करि छाजे ॥ सकल कर्म भय भर्म मिटाया, वाणी पेंतिस ज्यों घन गाजे ॥ पाखंडी वंड अकड करे नहिं, भगे शीयाल ज्यों सिंह देखी ॥ अपरंपार महिमा जिनवरकी, होये खुशी भवजन पखी ॥ गाम नगर पुर पाटण फिरते, नगर राजगृहीकु आया ॥ धन धन्नो मुनिराज जहाज सम, सब मुनिवरमें सरसाया ॥ ध० ॥ १ ॥ वागवान दिल हरख आनकें, कहेता श्रेणिक राजनके ॥ पुण्य उदय प्रभु बागमें आये, सग बहुत मुनि है उनके ॥ विदा दे कें चल सज असवारी, वदना कर बेठे सामे ॥ प्रभुजी दे उपदेश सभामें, पूछे श्रेणिक शिर नामे ॥ कहो मुझ दीनदयाल कृपा कर, तुम सब जाणकु जगराया ॥ ध ॥ २ ॥ चउदे सहस्र मुनि सग आपके, शिवपुर आश करे सारा ॥ निजर्मतज है कोन इनोंमें, करणीमें दुःकरकारा ॥ प्रभुजी कहे सब मोतीमाल सम, सजम करणी हुशियारा ॥ दुःकर दुःकर कार सकलमें, धन्नो मुनिवर अधिकारा ॥ नाम ठाम करणीका परस्न, पूछे श्रेणिक ऊमाया ॥ ध ॥ ३ ॥ काकंदी नगरीके अदर, गाथा पतणी भद्रा नामें ॥ धन्नो सुत गुणवंस विचक्षण, बेंतेर कला जोवन पाम ॥ बत्तिस लडकी इभपतियोंकी, बहुत धूमसें परणाइ ॥ बत्तिस बत्तिस जिनसा दायजे, सब एक सो वाणव आइ ॥ पडे नाटक भुकार महेलमें, भोग भोगवे मन चाया ॥ ॥ ध ॥ ४ ॥ एक दिन त्रिशलानद दिवाकर, काकन्दी नगरी आया ॥ जितशत्रु नृप प्रजा लाक सब, श्री जिन दरिसणकु धाया ॥ धन्ना शेठ पण आया उलट धर, वदणा कर बेठे आइ ॥ फरमाया उपदेश धरमका, धिग धिग धिग है जगताइ ॥ राच रह्या जग जीव अज्ञानी, माने मेरी सपत माया ॥ ध० ॥ ५ ॥

तन धन जोवन सर्व अथिर हे, पुद्गल सोभा हे सारी ॥ मात पिता ओर कुंटुब कबीला, मतलबकी जगसे यारी ॥ त्राण शरण नहिं मरण रोगसे, इसमे कुछ नहिं ह शंका ॥ काचकी शीशी फूटे पलकमें, मत मगरूर करे अंगका ॥ धरम ध्यान दोइ हे तुझ संगी, जग सब सुपनेकी माया ॥ ध० ॥ ६ ॥ काम क्रोध मद राग द्वेष छल, सकल करमके बंधन हे ॥ चेतनकु वेहाल करे है, चार गति दुःख फंदन हे ॥ जवलों जरा व्याधि नहि आवे, इंद्रियका वल घटे तेरा ॥ जिस पहले हुशियार होय कर, धरम ध्यान करलो गहेरा ॥ शिवसुखकी जो चहाय तुमारे, ए कहेणी मानो भाया ॥ ध० ॥ ७ ॥ धन्नो शेठ वैराग आणदिल, कहे साहिबसुं शिर नामी ॥ आप कही सो हे सब सच्ची, मे सजम लेवणकामी ॥ जननीकी आज्ञा ले आउ, प्रभु कहे ज्यो सुख तुम तांइ ॥ जेज करो मत धर्म कामसे, गइ पल सो आवे नांहि ॥ बंदणां कर चल आया मातपे, आज्ञा मागे उलसाया ॥ ध० ॥ ८ ॥ पुत्र सवाल सुणी ततक्षण सा, मूर्च्छा खाय पडी धरती ॥ दासी मिल कर करी सचेतन, आंखो बुंदनसे झरती ॥ कहे पुत्रकुं संजम क्रिरिया, दुर्लभ हे तुझकुं भाइ ॥ बत्तिस तरुणी लघु वयें सारी, हाल जाये मत छटकाइ ॥ मेरे पीछे तुझ वृद्ध वय आयां, फिर संजम लीजे जाया ॥ ध० ॥ ९ ॥ खड्ग धार और छुरी पान पर, चलणां दुष्कर अधिकाइ ॥ लोह चणा मोम दांतें चावणां, वेलुकवल नहिं सरसाइ ॥ पवनसु कोथलो भरणो जैसें, मेरु तोलणो कठिणाइ ॥ गंगा नदीकी धार पकड कर, चढनां जेसें गगनमांइ ॥ ऐसे संजम दुःकर दुःकर, तेरी हे कोमल काया ॥ ध० ॥ १० ॥ जननीका सवाल समज कर, धन्नो कहे सुणरी माइ ॥ नारी क्यारी नरक कुंडकी, फल किंपाकसी दरसाइ ॥ काल जोरावर तीन लोकमे, छोडे नही ए किसतांइ ॥

कौण वखत ओर कौण योगसें, पहेला पीछें खबर नाइ ॥ मेरेताइ झट दे दे आज्ञा, जनम मरणसें घभराया ॥ ध० ॥ ११ ॥ सजम मारग वु कर वु'कर, इसमें फरक नहिं माता ॥ कायर कृपण निर्बल नर ओर, इण भवकी चाहत शाता ॥ परभवकी नहिं चाहत जिसके, सो सजमसु धरराता ॥ शूरवीरकु सहज हे संयम, जगका झूठा हे नाता ॥ जो पल जावे सो नहिं आवे, जगनायकने दर साया ॥ ध० ॥ १२ ॥ सवाल जवाब भये मा बेटाके, अधिक भकी आज्ञा दीनी ॥ बहुत मोच्छव ओर उलट भावसें, धन्नाने दीक्षा लीनी ॥ हाथ जोड कर कहे प्रभुजीसु, जावजीव छठ तप धारु ॥ पारणे आंबिल आहार नाखतो, मिले तो छठ पारणा सारु ॥ भगवत कहे तुम सुख होय सो, करो देवाणुप्रिय डाया ॥ ध० ॥ १३ ॥ चढते भाव और सम परिणाम, तप धार्यो दुक्करकारी ॥ कोई दिन आहार मिले नहिं मुनिकु, कोई दिन नहिं मिलतो वारी ॥ सुका लूखा तन भया भूखसें, लोही मास सब सूकाणो ॥ काचा सुधा सो शीस मुनिको, नेत्र प्रात तारा जाणो ॥ उंडा कडेला सो पेट ज्यु दीख, रसना पान जा सूकाया ॥ ध ॥ १४ ॥ अघपेसी ज्युं नासिका रिखकी, काचरी छाल ज्यु कान कया ॥ ढींक पखी ज्यु जंघा दरसे, सुका सरप ज्यों वदन भया ॥ काक पाव ज्यु पावकी पिंडी, आंगळी सूकी ज्यों मुगफली ॥ न्यारा न्यारा हाड दीसे सब, मलग अलग सोळ पसली ॥ सकल खुलासा हे शास्तरमें, श्री मुख साहेब फरमाया ॥ ध ॥ १५ ॥ कोयलातिक ओर एरड लक्कडको, चलतो गाडो धज जैसें ॥ उठता बेठतां हालता चलता, मुनिके हाड बजे तेसें॥तप तेजस पुष्ट भया मुनि, नियळ बहुत भये तन में ॥ हिरते फिरते शद्ब बाल्ने, सुणत खेद पावे मनमें ॥ आयुष्य बलसें काम करे सब, भाव सजम निश्चल ठाया ॥ ध ॥ १६ ॥ श्रेणिक सुणी हवाल मुनिका, प्रभुकु वद शिर नामी ॥ धन्ना मुनिके पास

जायके, कहे तुम धन अंतरयामी ॥ सफल कियो तुम मनुष्य जनमको, करणीसें कुछ नहिं खामी ॥ छता भोग छटकाय दिया सब, दुःकर तप किरिया कामी ॥ तुम हो गरीबानिवाज दयानिधि, चरण शरण मुझ मन भाया ॥ ध० ॥ १७ ॥ मुनिका करि गुणग्राम भूपति, प्रभु प्रणमी गये निज ठामे ॥ दिन कित्ता रहि विहार कीयो प्रभु, विचरे पुर पाटण ग्रामे ॥ कोई दिन राजगृही नगरमे, समो· सर्या फिर जिनराया ॥ धर्मजागरणामे मुनि चिंत्यो, शक्ति नहिं किंचित् काया ॥ दिन उगा प्रभु आज्ञा ले कर, साध साधवी खमाया ॥ ध० ॥ १८ ॥ विपुलगिार पर्वत पर चढके, पादोपगमण अणसण कीना ॥ एक मास सथारो आराधि, रिख सर्वार्थसिद्ध लीना ॥ अरथ पाठ पढे अंग ग्यारा, नव महिना दीक्षा पाली ॥ आदि अंत चढते परिणामे, वहोत करम दिया परजाली ॥ सात लवका रह्या कमती आउखा, एकावतारी सो पद पाया ॥ ध० ॥ १९ ॥ कोडी तीन पंच लाखके ऊपर, सहस्र एकसठ तीनसे जाणो ॥ मास नवका सास बताया, सुकृत करणीके मानो ॥ एकसो सीतेर कोडी क ऊपर, लाख सत्ताणु पल कहीये ॥ सहस्र अठाणुं नवसें छन्नु. त्रीजो भाग अधिक लहीये ॥ एक एक दम पर इतनी

मोहकी नींद, खोला अब नयणा ॥ १ ॥ टर ॥ रहो निश्चल समकितव्रत, ध्यान शुद्ध धरणा २॥ एक देव नमो आरिहंत, सुगुरुका सरणा ॥ है धरम केवली भाख्यो दयामें जानो २ ॥ सका कखा दिल माहे, कछु मत आणो ॥ करणी का फल सवेह, आनो मत भाइ २॥ पर पाखंडी परसला करणी कछु नाहीं ॥ सरच्यो परन्यो सब तज्या, भजो एक जैना २॥ क्यों० ॥ तुम० ॥ ॥ २ ॥ मत करो प्राणीकी घात, झूट मत बोलो २॥ मत करो कोइसे कपट, पड़दा मत खालो ॥ मत लवो चोरीका रे माल, चोरी परिहरना २ ॥ करथो परनारीका त्याग, पापसे डरना ॥ अब करो धन मर्याद, लाभकु छोडो २ ॥ तृष्णा है दु खको मूळ, काहेकु जोडो ॥ करो दिलमें सतोष, परम सुख चेना २ ॥ क्यों० ॥ तुम० ॥ ३ ॥ अब करो दिशाकी मर्याद, अधिक नहीं जाना २ ॥ ए पंदरा करमादान त्याग देवो शाना ॥ हिंसाकारी उपदेश कूब नहीं लिखना २ ॥ हिंसाकारी अधिकरण, समह नहीं करना ॥ करो सामायिक शुद्ध दोष सब टाली २ ॥ दसमा दीसावगासिक व्रत सुविसाली ॥ सचा है जीनराज, और सब कहना २ ॥ क्यों० ॥ तुम० ॥ ४ ॥ अब करो पोसा उपवास, शक्ति मत गोपो २ ॥ कोइ दवे सुधी सीख, तास मत लोपो ॥ तुम उलट भव दो दान, नेम निस धारो २॥ ए तीन मनोरथ मन माय, सदा चितारो ॥ नवतत्वका निरणा, करो गुरुपास २॥ यासे होय अमर विमान, फेर शिववास ॥ तिलोकरीख कहे सदा सुखसे तुम रहेना ॥ क्यों० ॥ तुम० ॥ ५ ॥ इति ॥ संपूण ॥

॥ अथ श्रावक उपर लावणी ॥

॥ चेत चेत रे चेतन सयाणा, दुर्लभ नर अवतार ॥ धरम करी उतरो भव जल पार ॥ आरज देश उत्तम कुल जनम्यो, देह निरोगी धार ॥ आउखो इन्द्रिय पूरण सार ॥ सतगुरु जोग शास्त्रकी

जायके, कहे तुम धन अंतरयामी ॥ सफल कियो तुम मनुष्य जनमको, करणीसें कुछ नहिं खामी ॥ छता भोग छटकाय दिया सब, दुःकर तप किरिया कामी ॥ तुम हो गरीबनिवाज दयानिधि, चरण शरण मुझ मन भाया ॥ ध० ॥ १७ ॥ मुनिका करि गुणग्राम भूपति, प्रभु प्रणमी गये निज ठामे ॥ दिन कित्ता रहि विहार कीयो प्रभु, विचरे पुर पाटण ग्रामें ॥ कोई दिन राजगृही नगरमे, समोसर्या फिर जिनराया ॥ धर्मजागरणामे मुनि चिंत्यो, शक्ति नहिं किंचित् काया ॥ दिन उगा प्रभु आज्ञा ले कर, साध साधवी खमाया ॥ ध० ॥ १८ ॥ विपुलगिार पर्वत पर चढके, पादोपगमण अणसण कीना ॥ एक मास सथारो आराधि, रिख सर्वार्थसिद्ध लीना ॥ अरथ पाठ पढे अंग ग्यारा, नव महिना दीक्षा पाली ॥ आदि अत चढते परिणामे, वहोत करम दिया परजाली ॥ सात लवका रह्या कमती आउखा, एकावतारी सो पद पाया ॥ ध० ॥ १९ ॥ कोडी तीन पंच लाखके ऊपर, सहस्र एकसठ तीनसे जाणो ॥ मास नवका सास बताया, सुकृत करणीके मानो ॥ एकसो सीतेर कोडी क ऊपर, लाख सत्ताणु पल कहीयें ॥ सहस्र अठाणु नवसें छन्नु. त्रीजो भाग अधिक लहीये ॥ एक एक दम पर इतनी पलको, सर्वार्थ सिध्दमे सुख पाया ॥ ध० ॥ २० ॥ संवत ओगणीशें अडतीस शाले, चैत्र शुक्ल ग्यारश आइ ॥ वार चद्र दिन पेठ आंबोरी, ठाइ देश दक्षिण मांइ ॥ महाराज अयवता रिखजी प्रसादे, तिलोकारिख लावणी गाइ ॥ गुणी जनकी तारिफ करी यह, अशुभ कर्मके क्षय तांइ ॥ ऐसी समज सब गाना गुणी गुण, काम सिद्धि सुख सवाया ॥ ध० ॥ २१ ॥ इति धन्नाकाकदीजीकी लावणी सपूर्ण ॥

॥ श्रावकके बाराव्रतकी लावणी ॥

॥ तुम सुणो सीख शास्त्रकी मान लो कहेना २॥ क्यो सोते

मोहकी नींद, खोला अब नयणा ॥ १ ॥ टर ॥ रहो निश्चल समकितव्रत, ध्यान शुद्ध धरणा २॥ एक देव नमो आरिहंत, सुगुरुका सरणा ॥ है धरम केवली भाख्या दयामें जानो २ ॥ सका करखा दिल माहे, कछु मत आणो ॥ करणी का फल सदेह, आनो मत भाइ २॥ पर पाखडी परससा करणी कछु नाहीं ॥ सरच्यो परन्यो सब तज्या, भजो एक जैना २॥ क्यों० ॥ तुम० ॥ ॥ २ ॥ मत करो प्राणीकी घात, झुट मत बोलो २ ॥ मत करो काइसे कपट, पड़दा मत खोलो ॥ मत लबा चोरीका रे माल, चोरी परिहरना २ ॥ करथो परनारीका त्याग, पापसे डरना ॥ अब करो धन मर्याद, लाभकु छोडा २ ॥ तृष्णा है दुखका मूळ, काहेकु जोडो ॥ करा दिलमें सतोष, परम सुख चैना २ ॥ क्यों० ॥ सुम० ॥ ३ ॥ अब करो दिशाकी मर्याद, अधिक नहीं आना २ ॥ ए पदरा करमादान त्याग देवो शाना ॥ हिंसाकारी उपदेश कूड नहीं लिखना २ ॥ हिंसाकारी अधिकरण, समह नहीं करना ॥ करो सामायिक शुद्ध दोप सब टाली २ ॥ दसमो दीसावगासिक व्रत सुविसाली ॥ सच्चा है जीनराज, और सब कहना २ ॥ क्यों० ॥ तुम० ॥ ४ ॥ अब करा पोसा उपवास, शक्ति मत गोपो २॥ काइ दबे सूधी सीख, तास मत लोपा ॥ तुम उलट भ ब दो दान, नम नित धारा २॥ ए तीन मनोरथ मन माय, सदा विचारो ॥ नवतत्वका निरणा करा गुरुपास २॥ यासे होय अमर विमान, फेर शिवपास ॥ तिलोकरीख कहे सदा सुखसे तुम रहेना ॥ क्यों० ॥ सुम० ॥ ५ ॥ इति ॥ सपूर्ण ॥

॥ अथ श्रावक उपर लावणी ॥

॥ चेत चेत रे चेत सयाणा दुलभ नर अवतार ॥ धरम करी उतरो भव जल पार ॥ आरज देश उत्तम कुल जनम्यो, देह निरोगी धार ॥ आउखो इंद्रिय पूरण सार ॥ सतगुरु जाग शास्त्रकी

सरध्दा, धारो हिरदा मझार ॥ जगतमें जैनधर्म सुखकार ॥ ज्ञान दर्शन चारितर करणी, तप बारा परकार ॥ धारके तरे अनंत नर नार ॥ झेलो ॥ ऐसो जाणके धरम करीजे, करम बंधणसें अधिक डरीजें ॥ मिथ्या भर्मकुं दूर हरीजे, जप तप संजमसे चित्तदीजें, ॥ ज० ॥ निश्चल समकित धार ॥ होय तेरी आतमको उध्दार ॥ चेत० ॥ १ ॥ मात पिता तिरिया सुत बंधव, सजन स्नेही परिवार ॥ येतो सब हेगा मतलब यार ॥ विन मतलब सब हे दुःखदाइ, नहिं तुझ तारणहार ॥ इसमें शंका नहिं हे लगार ॥ पुत्र अंगकुं भंग किया नृप, कनक रथ दुःखकार ॥ जिनोंका छठे अंग विस्तार ॥ चुलणी राणी ब्रह्मदत्त सुतकुं लाखका महेल मझार ॥ बालवा कियो अगन परिचार ॥ झेलो ॥ सुरिकांता पति जहेर खवायो, श्रेणिकके सुत पिंजरे ठायो ॥ भरत बाहुबलि हाथ उठायो ॥ दुर्योधन महा जंग मचायो ॥ दु० ॥ कीयो कुलको संहार ॥ चे० ॥ २ ॥ काचा कुंभ जैसी काया रे तेरी, छिनमें होय विनास ॥ इसीका झूठा हे विश्वास ॥ खावणां पीणां भोग इंद्रीका, ये सब है दुःखरास ॥ भोगसे होवे नरकको वास ॥ पावे कष्ट अपार जहां सहे, परवश जमकी त्रास ॥ शाता नहिं हे क्षण भरकी तास ॥ वीते काल असंख्य जहां नाहिं, सुख रंच एक सास ॥ बंध रह्यो अष्ट कर्मकी फास ॥ झेलो ॥ भोग हलाहल जहेरसा जाणो, उपमा फल किंपाक वखाणो ॥ अनित्य जाण जगके छिटकाणो, लेलो खरची धर्मको नाणो ॥ ले० ॥ करे सतगुरु हुशियार ॥ अवसर ऐसा नहिं हे वार वार ॥ चे० ॥ ३ ॥ धन संपत सब कारमी जाणो, ज्यों विजली झबकार ॥ कवडी नहिं चलेगा तेरी लार ॥ छिन छिनमांहे छिजे आउखो, ज्यो अंजलीको वार ॥ जोरावर काल लग्यो है तेरी लार ॥ देव दाणव हरि हर और चक्री, इंद्र चंद्र अवतार ॥ छोडे नहिं किसकुं काल करार ॥

सखत सार नहि देखे जोगणी, थाल तरुण सयधार ॥ देखे नहि सुखी दुखी नर नार ॥ झेला ॥ दान शील तप भावना भावो, धरम ध्यानको लीजें लावो ॥ धन सपतमें मत अकडावो, साधु सतकु शीश नमावो ॥ सा० ॥ जो चाहो निस्तार ॥ माया तजि आदरो सजमभार ॥ चे० ॥ ४ ॥ निज आसम सम जीव छकाया, जाणो दया जयकार ॥ दया विन करणी सब वेगार ॥ सत्य वचन निरवद्यसो बोलो, चोरी सर्व निवार ॥ शील नव वाड सहित शुद्ध धार ॥ परिग्रह ममता क्रोध निवारो लोभ कपट अहंकार ॥ राग द्वेष करो सकल सहार ॥ कलह आल पर चुगली निंदा, रत आरत परिहार ॥ माया मृषा मिथ्या तज दुःखकार ॥ झेलो ॥ नरक गति दुखकार ए जाणी, छोडो इनकु भव्य जन प्राणी ॥ इण भव जस परभव सुखदाणी, लावणी श्रीगोंदा में जोडाणी ॥ ला० ॥ ओगणीसें सैंतीस नअसार, तिलोकरिख कहता पर : ॥ चे० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ जीवरक्षा उपदेशनी लावणी ॥

॥ उत्तम कुल अवतार पाय कर, श्रावक करणी धार ॥ पण उतरोगे भवपार ॥ दष नमो अरिहत भावशु, गुरु गुण धार ॥ जिनोक्ती सब क्रिया निस्तार ॥ धर्म केवली स सर्दो, जीव दया ततसार ॥ सकल शास्त्रमें है अधिकार । थावर दो भेद प्ररूप्या, न निभे सब प्रकार ॥ तोहि पण जीव उगार ॥ झला ॥ जाणी देखी निरअपराधी अथवा दे न उपाधी ॥हणवाकी बुद्धि दिलसु साधी, हणो मत जिन आराधी ॥ ह० ॥ निदय छुइ मत मार, शाकिसु अधिक म भार ॥ उत्त० ॥ १ ॥ गाडो धंधण अग छेदना, मद करो म हार ॥ अणुकपा निशदिन दिलमें धार ॥ बापरणो नही अणा जल, निरथक मन करो खुवार ॥ पुज अग्नि मत दो न

वासी लीपण लीपणो टालो, जूं माकड मत मार ॥ मच्छरकुं हण न कुंथुवो निवार ॥ अनंतगुणा पुनि थावरसूं त्रस, पाप तणो नहिं पार ॥ निजातमसम सब जीव उगार ॥ झेलो ॥ तड़को न देणो सल्या धानके, मोल न लेणो पाप जाणके ॥ सेकणो पीसणो नहिं पाप मानके, जीव उगारो दया आनकें ॥ जी० ॥ तरस त्रास दुःखकार, दानमे अभय दान श्रीकार ॥ उ० ॥ २ ॥ कन्या पशु और धरती कारण, झूठ करो परिहार ॥ थापण पर ओलवणी नहि यार ॥ लांच लेइ कूडी साख भरो मत, मत करो मर्म जहार ॥ झूठा खत मांडो मत कुविचार ॥ विना विचारे बोलणो नहिं कुछ, सत्य वडो संसार ॥ सत्यसूं कदी न होवे हार ॥ खातर खाणि धाडां मत पाडो, पडकूंची परिहार ॥ धणियाती पडि वस्तु द्यो टार ॥ झेलो ॥ राज दडे सो काम न कीजे, चोखी बताइ खोटी न दीजें ॥ चोरीकी वस्तु मोल न लीजें, कूड़ा तोला मापा परहरीजे ॥ कू० ॥ चोरी हे दुःखकार, समज कर त्यागो सब नर नार ॥ उ० ॥ ३ ॥ परनारीको पाप बहोत हे, खट मतसें विस्तार ॥ समझ कर ममता दिलकी मार ॥ शीलव्रत सुखदाइ हे सबकु, वंछित पूरणहार ॥ ऊपमा बत्रीश सूत्र मझार ॥ अल्पवयें अणसार्खी पंचकी, सो वरजो निज नार ॥ तीव्र अभिलाषाको अतिचार ॥ धन मरजादा करी हे तिणसु, अधकी ममत निवार ॥ परधन देखी मत मुरझो लगार ॥ झेलो ॥ पुण्य विना दोलत नही पावे, निरर्थक मनमें क्यो मुरझावे ॥ धन संपत छिनमें विरलावे, एकलो आयो एकलो जावे ॥ ए० ॥ पुण्य पाप दो लार, पुण्यसें आश फले संसार ॥ उ० ॥ ४ ॥ ऊर्ध्व अधो तिरछी दिश जावण, मर्यादा लो धार ॥ टले ज्यूं आश्रव पच प्रकार ॥ छवीश बोल मर्यादा कर लो, कंद मूल तुच्छ अहार ॥ कर्मादान पंद्रा तज महा भार ॥ तज प्रमाद ओर निरर्थक आरत, हिंसा दान निवार ॥ खोटा

उपदेश न दीजें लगार ॥ कुचेष्टा विकथा नहिं कीजें, पाप शास्त्र परिहार ॥ एसा है श्रावकका आचार ॥ झेलो ॥ तीन वखत सामायिक कीजें, बत्तीस दूषण दूर हरीजें ॥ शत्रु मित्र समभाव गुणीजें, सावद्य कारज सब तज दीजें ॥ सा० ॥ समता चित्तमें धार ॥ जिसका नफा है अपरमपार ॥ उ० ॥ ५ ॥ देशावगासिक नेम चितारो, खट पौषध व्रत धार ॥ जिसमें वर्जो दोष अढार ॥ तीन मनोरथ नित्य चितारो, धारो सरणा चार ॥ भावशुं प्रतिलाभो अणगार ॥ एकवीश गुण कह्या श्रावकका, सो लीजो हिरदे धार ॥ होय ज्युं आतमको उद्धार ॥ संवत् ओगणीशें साल सेंतिशका, श्री गोंदाके मझार ॥ पोष शुदि अष्टमी शुक्रवार ॥ झेलो ॥ श्रावक करणी करजो भाइ, नरभव चिंतामणी अधिकाइ ॥ वार वार ए अवसर नांइ, चेतो चतुर करो धर्म सवाइ ॥ चे० ॥ कटे करमको खार, तिलोकरिख कहेता पर उपगार ॥ उप० ॥ ६ ॥ इति॥

अथ पुण्यआश्रवी लावणी प्रारभः ॥

॥ धन्नाशेठ भवमांय दान दियो भावे ॥ दा० ॥ जिहां बांध्युं तीर्थंकर गोत्र, ऋषभजिन थावे ॥ खट दरिसण परसिद्ध, ऋद्धि अति पावे ॥ ऋ० ॥ प्रभु भाख्यां तीरथ चार, अचल गति जावे ॥ अजर अमर अधिकार, कमी नही काइ ॥ क० ॥ तुम करो धर्मका काम, सदा सुखदाइ ॥ १ ॥ पारणो पांचशें मुनिकुं, करायो भावे ॥ क० ॥ सो गया सर्वारथ सिद्ध, भरत नृप थावे ॥ छलाख पूरब कीयो राज, छ खडके साइ ॥ छ० ॥ भवन आरिसाके बीच, भावना भाइ ॥ पाया केवल ज्ञान, सुखें शिव पाया ॥ सु० ॥ करी वेयावच्च भावें, बाहुबलि राया ॥ अपरबली जगमांहि, भरतेश्वर भाइ ॥ भ० ॥ सु० ॥ २ ॥ मेघरथ नृप भवमांय, दया दिल आणी ॥ द० ॥ आ राख्यो पारेवो सरण, धुजतो प्राणी ॥ बदनको मांस दियो काट, दियो बचाई ॥ दि० ॥ सर्वार्थसिद्धकें माइ, उत्कृष्ट

स्थिति पाई ॥ शांनि जिनंद सुख कंद, चक्रिपद पाया ॥ च० ॥ दीपायो जिन धर्म, धन्य महाराया ॥ पाया केवल ज्ञान, आठुं कर्म धाइ ॥ आ० ॥ तु० ॥ ३ ॥ दीयो द्राखको पाणी, राजा ओर राणी ॥ रा० ॥ हर्ष भाव शंखराय, कपट नहिं आणी ॥ वांध्युं तीर्थंकर गोत्र, नेमि जिनराया ॥ ने० ॥ समुद्रविजयजी का नंद, जगत मन भाया ॥ तोरणसें फिर आया, पशु दया आणी ॥ प० ॥ प्रभु तज कर राजुल नार, संजम पद ठाणी ॥ जिनकी कीर्ति जगमांहि सदा है सवाइ ॥ स० ॥ तु० ॥ ४ ॥ धर्मरुचि मुनिराज, मास तप ठाया ॥ मा० ॥ वे चंपानगरी वीच, विचरता आया ॥ नागसिरी घर गया, तुवो वोहोरायो ॥ तुं० ॥ गुरु आज्ञाथी जाय, विंदु परठायो ॥ मरती किडियां देख, दया दिल आणी ॥ द० ॥ मुनि जहेर हलाहल पियो, खरि सम जाणी ॥ खी० ॥ तेतीस सागर अमर, सुगति पुरी पाइ ॥ सु० ॥ तु० ॥ ५ ॥ दीयो क्षीरको दान, संगम भव मांइ ॥ स० ॥ शालिभद्र सौभागी, महा ऋद्धि पाइ ॥ सुवाहुदिक दश कुमर, दान परभावें ॥ दा० ॥ पंद्रह भवके मांय, सुगति सव पावे ॥ कृष्ण श्रेणिक नरनाथ, धर्म दलाली ॥ ध० ॥ जिणे वांध्युं तीर्थंकर गोत्र, सूत्रमे चाली ॥ करी क्षमा परदेशी, पाप छिटकाइ ॥ पा० ॥ तु० ॥ ६ ॥ दान शील तप भाव, शुद्ध आराधी ॥ शु० ॥ पाया हे सुख अनत, छोडे उपाधी ॥ ऐसो जाण सुकृत करो, थें नर नारी ॥ थें० ॥ छोडो पाप प्रमाद, महा दुःखकारी ॥ पुण्यानुवंधी पुण्य, जिससें सुख पावे ॥ जि० ॥ तिलोकरिख कहे सत्य, सूत्रक न्योव ॥ शहर पुनाकी मांइ, लावणी वणाइ, लावणी गाइ ॥ तु० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ शील स्वभानी लावणी ॥

॥ दोहा ॥ सासण नायक सुरतरु, भयभंजण भगवंत ॥ त्रिशलानंद

दिनद सम, प्रणमु मन धरि खत ॥ १ ॥ वली प्रणमुं गौतम गुरु, तप सजम दातार ॥ तास प्रसादें वर्णवु, सुपन सोले अधिकार ॥ २ ॥ पाडलिपुर नगरविषे, चद्रगुप्त राजिंद ॥ धारे व्रत धारक गुणी, परजाने सुखकन्द ॥ ३ ॥ चउदे पूरव ज्ञान शुद्ध, भद्रबाहु मुनिराज ॥ समोसरया उद्यानमें, तारण तरण जहाज ॥ ॥ ४ ॥ पक्खी पोसाने विषे, देख्या स्वपना सोल ॥ पूछे नृप कर जोडिने, अर्थ कहो मुनि खोल ॥ ५ ॥

॥ अगडदम अगडदम बजे, चोघडा ॥ ए देशी ॥ कल्पवृक्षकी शाखा तूटी, अर्थ सुणो यह स्वपनेका ॥ अब जो राजा होयगा कोई, सजम वो नहीं लेनका ॥ दूजे अस्त भया सूर्य अकालें, भेद सुणो अब इसका सही ॥ पंचमे आरे जन्म लिया है, उनकु केवलज्ञान नहीं ॥ नहिं मनपरयव अवधि पूरण, ये अधकार भया भारी ॥ भद्रबाहु मुनि कहे भूपसु, पचमो आरो दु:खकारी ॥ १ ॥ चांद देखा तुम चालणी जैसा, तीसरे सपनाके मांई ॥ अलग अलग समाचारी होयगी, बोल फरक कुछ दरसाई ॥ भूत भूतणी नचते हिल मिल, देखा चोथे स्वप्नमांई ॥ देव गुरु धर्म खोटा जिनकु, लोक मानेगा अधिकाई ॥ दया धर्मपर बहोत जलेंगे, थोडे जैनधरमधारी ॥ भ० ॥ २ ॥ पांचमे देखा सर्प भयकर, बारे फणफर फुंकारे ॥ कितेक साल पीछें काल पडेगा, बारे बरस लग भयकारे ॥ उत्तम साधु कर सथारा, आतमकारज सारेगा ॥ का यर साधू सो ढीले पडेंग, हिंसाधम विस्तारेगा ॥ खोटा दे उपदेश लोकोंकु, होवेगा केइ घरबारी ॥ भ० ॥ ३ ॥ छठे स्वपने देवविमाण कु, आता सो देख्या फिरता ॥ जिसका अर्थ सुणो तुम राजिंद, दिल अंदर आणो थिरता ॥ जंघाचारण लब्धि धारक, और विद्याचारण जाणो ॥ ये दो लब्धिके हैं धारक, ऐसे मुनिवरकी हाणो ॥ वैक्रिय और आहारिक की लब्धि, ये भी विछेदगा सारी ॥ भ ॥ ४ ॥

विकसा कमल उकरडी उपर, जिसका भेद सुनो भाई ॥ चार वर्णमें महाजन के घर, धरम रहेगा अधिकाई ॥ शास्त्रकी रुचि रहेगी थोडी, सुणतां निद्रा लेवेगा ॥ स्तवन सझाय और ढाल चौपाइ, जिसमें बहुत खुश रहवेगा ॥ प्रतिवोध पण इसमें पाके, होवेगा संजमधारी ॥ भ० ॥ ५ ॥ आगियाका चमत्कार आठमें, भेद सुणो इसका नीका ॥ उद्योत होयगा जैनधरमका, बाकी मिथ्यातम है फीका ॥ समुद्र सूको तीन दिशा पर, दक्षिणदिश डोलो पाणी ॥ दक्षिण दिशपर धरम रहेगा, तीन दिशा रहेगा हाणी ॥ पंचकल्याणिक भये जिणपुरमें, धरम हानि जहां उच्चारी ॥भ०॥६॥ दशमें सोनेकी थाली जिसमें, कुत्ता देखा खीर खाता॥उत्तमकुलकी दौलत है सो, जावेगी मध्यम हाता॥नट खट सौदा चोर ठगारा, धूर्त होयगा धनवाला॥साहुकार सो झुरेगा दिलमें, कह न सके मनकी ज्वाला ॥ धन संपत सज्जन की हाणी, सत्यवादी कम नर नारी ॥ भ० ॥ ७ ॥ हस्तीके ऊपर ग्यारमे स्वपने, देखा बंदरकुं बैठा ॥ नीच राजा सो मालिक होयगा, उच्च राजा रहेगा हेठा ॥ बारमे स्वपने देखा तुमने, दरिये मर्यादा छोडी ॥ वेटा बेटी मात पिताकी, मर्यादा राखे थोडी ॥ वहू सासू का न करेगी कहेणां, उलटी दुःख देगी भारी ॥ भ० ॥ ८ ॥ लांच ग्राही सो क्षत्री होयगा, वचन देके नट जावेगा ॥ दगादार विश्वासघाती नर, सच्चे नरकुं हटावेगा ॥ भला शक्स का आदर कमती, पापी आदर पावेगा ॥ गुरु गुराणीका चेला चेली, सेवा भक्ति कम चावेगा ॥ अपनी बडाइ करेगा मुखसे, गुरुकुं होयगा दुःखकारी ॥ भ० ॥ ९ ॥ जोत्यां देखी स्वपने तेरमें, वाछरुके महारथ माही ॥ नादान उमरके धरम करेगा, सजम लेगा उलसाइ ॥ लज्जासुं तप सजम पाली, तप जपमें चित्त देवेगा ॥ बुढ्ढा धिठा होयगा धर्ममें, आलस अधिको रेवेगा

॥ सरखा नहिं सव लडका बुढा, समुचय भाव कथा जहारी ॥ भ० ॥ १० ॥ रत्नकी कांति मदी देखी, चउदमा स्वपना में जाणो ॥ भरतक्षेत्रका संत साधके, हेत इकलास थोडो मानो ॥ क्रोधी क्रेपी अरु अभिमानी, अपनी वात जमावेगा ॥ मली सीख जो देगा कोइ, उसका अवगुण बतावेगा ॥ अल्प होयगा समझवता, होयगा बहोतसा लिंगधारी ॥ भद्र० ॥ ११ ॥ राजकुअर सो चढ्या पोठिपर, देखा स्वपने पदरमे ॥ राजा जैनधरम तज दगा, राचेगा मिथ्या करमें ॥ वात कर जा सद्यावट की, उसकी थोडा मानेगा ॥ झूठेकी परतीत करेगा खोटेका पक्ष तानेगा ॥ धर्मी पुरुषकी करेगा ठट्ठा, पापीका आदर भारी ॥ भ० ॥ १२ ॥ लडते हस्ती देखे सोलमे, विन महावत आपस मांहीं ॥ वार वार दुष्काल पडेगा, मन च्छाया वर्षेगा नांहिं ॥ मात पिता गुरु वातके करता, विच विष वात करेगा छोटा ॥ भाइ भाईमें सपत ओछी, बोलेगा निथक खोटा ॥ पिता पक्षको आदर आछो त्रियापक्षसु करेगा यारी ॥ भ० ॥ १३ ॥ कायदावाला प्रामाणिक न्यायी, गुणिजन थोडा होवेगा ॥ झगडा टटा निरथक करके, राजमाही धन खोवेगा ॥ केण न माने भला शख्सकी, फिर पीछे पछतावेगा ॥ एकविश हजार वरस लग राजिंद, ऐसी रीस कर जावेगा ॥ अथ सुणी सोल स्वपनाका, राजा भया दृढ व्रतधारी ॥ भ० ॥ १४ ॥ सवत ओगणीशें साल सेंतिसका, फागण वदि ग्यारस आइ ॥ तिलोकरिख कहे स्वपन लावणी, गाम कडामें बणाई ॥ पचम आरो दुःखम नामें, दुःख है इणमें अधिकाई ॥ धरम ध्यान और समता राखे, उनकु सुख समजो भाई ॥ ऐसा जाणके करजा सुकृत, उतरोगे भवजल पारी ॥ भद्रबाहु० ॥ १५ ॥ इति सोल स्वप्नानी लावणी ॥

॥ अथ कालकी लावणी ॥

॥ साखी ॥ छिन छिनमांहे छीजे आउखो, ज्यूं अजलि जल जाण ॥ ओस बुंद पाणी परपोटो, वार न लागे हाण रे ॥ करलो हुशियारी, धर्म तैयारी डरजो कालसू ॥ १ ॥ जोबन जातां जेज न लागे, ज्युं नदीको पूर ॥ नदी किनारे तरुवर जेसे, कोई दिन जाये जरूर हो ॥ कर लो हुसियारी ॥ ध० ॥ २ ॥ बाल तरुण वृध्द सुखी दुःखी और, राय रंक नर नार ॥ हरि हर इद्र नरेंद्र सुरासुर, छोडे न काल करार रे ॥ करलो हु० ॥ ध० ॥ ३ ॥ वेधरत व्यतिपात जोगिणी, कालवास दिशाशूल ॥ काल न देखे वक्त वारने, छिनसे करेगे सूल हो ॥ करलो० ॥ ध० ॥ ४ ॥ सूतां जागतां खातां पीतां, करतां वात विचार ॥नहीं भरोसो कालदूत को, जबरदस्त संसार हो ॥ करलो० ॥ ध० ॥ ५ ॥ झाड पहाड़ उजाड़गाममें, नदी खाल नवाण ॥ खबर नहिं किण ठामके उपर, काल ले जावे ताण रे ॥ करलो० ॥ ध० ॥ ६ ॥ जल अग्नि और जहर भुजगम, सिंह रीच्छ पशु व्याल ॥ खबर नहिं रोग सोग उपद्रव की, आसी किण जोगें काल रे ॥ करलो० ॥ ध० ॥ ७ ॥ जाया सो तो जरूर जावेगा, फूल्या सो कुम्हलाय ॥ बंधा सो बिखरे इण जगमें, वेहम नहि इणसांय रे ॥ करलो० ॥ ध० ॥ ८ ॥ जो क्षण जावे सो नहिं आवे, करतां कोडि उपाय ॥ आउखु समोलक पायके चेतन, खोवे मत फोकटमांय रे ॥ करलो० ॥ ध० ॥ ९ ॥ ज्ञान ध्यान तप जपको उद्यम, करजो सुगुणा लोक ॥ परभव खरची साधी जीवने, लीजो नाणो रोक रे ॥ करलो० ॥ ध० ॥ १० ॥ ये संसार असार बावले, ममता मोह निवार ॥ कालको डर जो मेटणो तुझने, करले खेवा पार रे ॥ करलो० ॥ ध० ॥ ११ ॥ ओगणीशें अडतीस जेठ कृष्ण पख, तीज तिथि शशिवार ॥ देवटाकली में तिलोकरिख कहे, धर्मसुं

जयजयकार रे ॥ करलो० ॥ ध० ॥ १२ ॥ ५ ॥

॥ अथ पांचमा आरानी लावणी ॥

॥ जमी निरस हो गई, पाणी कम वरसे ॥ पा० ॥ कबही धान्य गल जाय, कबही जन तरसे ॥ कबहिक ओछी थड, लोक विस चहावे ॥ लो० ॥ कबहींक पडती बहात, नाज जल जावे ॥ कबहींक गरमी अल्प, रोग उपजावे ॥ रो ॥ कबहीं गर्म पडे बहोत, आलम घबरावे ॥ करो धर्म ध्यान सतोप, सदा सुख कारी ॥ स ॥ सुणि इस आरेका हाल, करो हुशियारी ॥ प टेक ॥ १ ॥ बस्ती ऊजड होत, नहिं धनवाला ॥ न ॥ जो किसके मिले धन, नहिं रखवाला ॥ होवे सो जीव नाय, सोग मन लावे ॥ सो ॥ जीवे तो निकले कपूत, माया गमावे ॥ अथवा देवे दु:ख झगडा केइ लावे ॥ झ ॥ कोइक कुव्यसनी होय, छाती दझावे ॥ कुलमें लगावे दाग, लजावे भारी ॥ ल ॥ सु० ॥ ॥ २ ॥ बोले बापके साम, देवे तुकारा ॥ दे ॥ साठीमें नाठी अकल, माने कुण थारो ॥ पुत्र पिताकी कहेण, मांहे नहिं रेवे ॥ मा ॥ सासू कु हुकम में राखे, बहु दु:ख दवे ॥ बेटा होवे अलग, परणके नारी ॥ प ॥ करे पिता सु जोरा, माया सब झारी ॥ झगडे राजके मोय, बाले कुविचारी ॥ बो० ॥ सु ॥ ३ ॥ कोईके पूत सपूत, नारी दु:खकारी ॥ ना ॥ दु:ख दव दिन रात, महा कलइकारी ॥ छेडी लकाडी लाय, शरम नहिं तनमें ॥ श ॥ मांहे लोकके बीच, कप दु:खी मनमें ॥ जो नारी सुख होय, त्रास ससावे ॥ त्रा ॥ ये झगडा टंटा करके राजमें जावे ॥ धात धातमें द्वेप करे असि जहारी ॥ क ॥ सु० ॥ ४ ॥ जो होवे बहोत कुटुंब, विटम्ब रहे भारी ॥ वि ॥ घरमें धन होय अल्प, खर्च दु:ख त्यारी ॥ दास सम सब कुटुंब, काम करे सारा ॥ का० ॥ तो पण न भरे पेट, सदा दु:खियारा ॥ कोइ

रुसे कोइ रोवे, कोइ मनावे ॥ को० ॥ निशदिन रहे उद्वेग, कालजो खावे ॥ जो नहीं होवे कुटुंब, तोहि दुःखियारी ॥ तो० ॥ सु० ॥ ५ ॥ भाई गोत्रीसें वैर, हेत करे परसुं ॥ हे० ॥ गुणकी नहीं कछु परख, राजी आडंबरसुं ॥ अल्प संपदामांहे, करे मगरूरी ॥ क० ॥ धर्मी नरपे द्वेष, निंदा करे कूरी ॥ गुमास्ता परपंची, सेठ धन खावे ॥ से० ॥ सेठको काढी दीवालो, आप भग जावे ॥ भली शीख जो देत, देत तस गारी ॥ दे० ॥ सु० ॥ ६ ॥ छोटे वडेकी रीत, कायदो नांही ॥ का० ॥ मनका ठाकर वणे, करे अकडाइ ॥ वीच वीचमे करे वात, जाणे मे श्याणो ॥ जा० ॥ वचन दे के फिर जाय, ज्यो तेली घाणो ॥ मुख मीठो चित धिठो, उससे दिलराजी ॥ उ० ॥ कठण कहे हित वेण, उससें नाराजी ॥ पिता पक्षसु नहिं हेत, नारी पक्ष यारी ॥ ना० ॥ सु० ॥ ७ ॥ दया दानके मांहे, खरचतां रोवे ॥ ख० ॥ ख्याल गांठके मांही, वृथा धन खोवे ॥ साधु संतके पास, जातां दिल शरमे ॥ जा० ॥ सिजलसमें अणतेड्यो, जाय कुकर्मे ॥ धर्म काममें पाछे, पाप अगवानी ॥ पा० ॥ खावणमें तैयार, तपमें करे कानी ॥ प्रभु गुण गातां लाज, ख्याल अधिकारी ॥ ख्या० ॥ सु० ॥ ८ ॥ करके कन्या म्होटी, दाम लिया च्हावे ॥ दा० ॥ माथे देणो कर के, जाति जिमावे ॥ परम देवाधिदेव, जिनकुं नहिं ध्यावे ॥ जि० ॥ भैरव भवानी भूत, पीर मनावे ॥ गुरु गिरुवा निर्ग्रंथ, दाय नहिं आवे ॥ दा० ॥ लोभी ठगारा धूर्त, संत चित्त च्हावे ॥ धारे खोटी शीख, अच्छी लगे खारी ॥ अ० ॥ सु० ॥ ९ ॥ दया धरम पर प्रेम, दिलमें नहिं राखे ॥ दिल० ॥ हिंसा धरम में राचे, कूड मुख भाखे ॥ भरे सायदी झूठ, प्रपंची पापी ॥ प्र० ॥ दगादार कृतघ्न, बहोत परलापी ॥ निंदा विकथा बात, करकें हरखावे ॥ क० ॥ जो

कहे शास्त्र बोल, सो झोका खावे ॥ जप तप करणी बात, लगे नहिं प्यारी ॥ ल ॥ सु ॥ १० ॥ किसके लेणेका दुःख किसके देणेका ॥ कि० ॥ किसके गेणेका सोच, किसके रेणेका ॥ किसके खाणेका दुःख, किसके दाणेका ॥ कि ॥ किसके जाणेका दुःख, किसके लाणेका ॥ किसके पिताका दुःख, किसके माईका ॥ कि० ॥ किसके बहेन सुत दुःख, किसके भाईका ॥ किसके धनकी फिकर, किसके बीमारी ॥ कि ॥ सु० ॥ ११ ॥ कोईके शत्रुका सोच, कोईके साजनका ॥ को० ॥ कोईके परचक्री दुःख, कोईके राजनका ॥ किसके खेतीका दुःख, कोईके वतनका ॥ को० ॥ कोईके चोर हाकम, धाड अगनका ॥ कोईके पडोशी दुःख, दुष्ट जन जलका ॥ दु० ॥ कोइके अकलका दुःख कोईके दल बलका ॥ नहिं सपूरण सुखी, कोइ नर नारी ॥ को० ॥ सु० ॥ १२ ॥ जो कोई माने सुख, सकल मुझ मांई ॥ स० ॥ सांज तलक कोई दुःख, आवे उसताई ॥ जो नहिं मानो बात, देखो अजमाई ॥ दे० ॥ ये शास्त्रकी बात, विचारा भाई ॥ पचम कालका हाल, बडा है वका ॥ ब० ॥ तिलोकरिख कहे साच, इसमें नहिं शका ॥ कलियुगकी निसाणी, कही सुविचारी ॥ क० ॥ सु ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ अथ चेतनकर्मकी अदालत लावणी ॥

॥ दोहा ॥

॥ समरुं शासन स्वामिकु, त्रिकरण शीश नमाय ॥ झगडो चेतनकर्मको, न्याय कहु चित्त चहाय ॥ १ ॥ अथ थोलो ॥ समरुं गुणधर सघपति, जैन शुद्ध अति, शारदा मति, असल थो मति, पुण्यकी रसि, वृद्धि करो अति, करो कर्म कति, देवो सिद्ध गति, चाहु भगति, अनंत शक्ति जी ॥ १ ॥ अथ धन ॥ धर्मकी धनी कचेरी भारी, सिंहासन चौजे रूप धारी ॥ बैठे प्रभु जिस पर हुशियारी, सभामें जुडे तीर्थ धारी ॥ अदालत करे सच जहारी,

खोटकी नहीं है कछु यारी ॥ दंगा जीव चेतनका है वंका, न्याव तुम सुण लो निःशंका जी ॥१॥ अथ लावणी ॥ मेरी धन दौलत जमीन, अचल दिलवाणा ॥ अचल दिलवाणा ॥ तुम करो अदालत मेरी, जगतपति राणा ॥ ए टेक ॥ खुद चेतन मुद्दइ, वणा है जहारी ॥ व० ॥ आठुं कर्म मुद्दायले कपट भंडारी ॥ धीरजका इष्टांप, शोध कर लाया ॥ शो० ॥ सझाय ध्यान मजमून, सच्च वणवाया ॥ अर्जी आन गुजारी, क्षमा तलवाणा ॥ क्ष० ॥ तुम० ॥ १ ॥ मैं जाता शिवपथ, कर्म दिया घेरा ॥ क० ॥ धोका दे मिले संग, लूंटा सव डेरा ॥ लक्ष चोरासीके वीच, मोकुं अटकाया ॥ मो० ॥ फिर राग द्वेष दृढ वंध, मोकुं वंधवाया ॥ मैं पाया दुःख अनंत, भेद नहिं जाणा ॥ भे० ॥ तुम० ॥ २ ॥ ये टंटा है वेपार, वोत है जूना ॥ वो० ॥ मे रहा भोलपके मांहि, माफि करो गूना ॥ कोय मिले नहिं वकील, सचे कानूना ॥ स० ॥ ये झगडा वढा वहोत, दिनो दिन दूना ॥ मैं तो भया वलहीण, वढे कर्म दाणा ॥ व० ॥ तु० ॥ ३ ॥ अव खुली कछु तकदीर, पुण्य परभावे ॥ पु० ॥ जाणा मैं हुं सच्च, हारुं नहिं न्यावें ॥ सत्तावीश गुणधार, वकील कानूना ॥ व० ॥ जाणे अर्जकी मर्ज, वहोत मजमूना ॥ मैं किया जाकें मिलाप, वहुत हरखाणा ॥ व० ॥ तुम० ॥ ४ ॥ उन देख शास्त्रका न्याय, भेद वताया ॥ भे० ॥ मैं जाना कर्मोका जुल्म, मसोदा वनवाया ॥ तुम विन करे कुण न्याय, अर्जी मैं लाया ॥ अ० ॥ सुमति गुप्ति ये आठ, गवाह वुलवाया ॥ शील असेसर चौधरी, उसकुं वुलवाणा ॥ उ० ॥ तु० ॥ ५ ॥ अव अर्जी गुजरी उस वखत, हुकुम फरमाया ॥ हु० ॥ प्रभु ज्ञान चपरासी भेज, मुद्दायले वुलवाया ॥ सो वोले हम संग, कछु नही दावा ॥ क० ॥ चेतन झगडे झूठ, खलकमें ठावा ॥

॥ पचप्रमाद् विखवाद गवाह सग आणा ॥ ग० ॥ तु० ॥ ६ ॥ हम घर आया यह, उपत चलाई ॥ उप० ॥ खाया है कर्जा वहोत, हमसे उमाई ॥ राचा भोग विलास, मन वच काया ॥ म० ॥ घाटा नफा नहिं जाना, कर्जा चढाया ॥ जब हम मगण गय, तबे घबराणा ॥ त ॥ तु ॥ ७ ॥ हाजर खडे गवाही, हाल सुणाया ॥ हा० ॥ तव चेतन दे उत्तर, सुणो जी महाराया ॥ इमानदार है सचे, मेरे गवाही ॥ मे० ॥ जाणत सबे जहान, झूठ कछु नाही ॥ छुडा दीनी मेरी वतन, अखुट धन नाणा ॥ अ ॥ तु० ॥ ८ ॥ करम फरेवोदार, वहोत दु खदाना ॥ व ॥ लूट मचाई वहुत, किया हैराना ॥ लक्ष चौरासी माहि, वहोत भमाया ॥ व० ॥ वहोत कराया स्वाग, किया मुझ काया ॥ लूट हरि हर इद्र चक्र नरराणा ॥ च० ॥ तु० ॥ ९ ॥ लूटे केई विद्वान, वडे पडितकु ॥ व० ॥ मेले नरकके वीच, वहात से नितकु ॥ कहा पुण्यका नाम, पाप करवाया ॥ पा० ॥ कर कर हिंसा काम, धम वतलाया ॥ वहोत फलाया जाल, जिससे ललचाणा ॥ जि० ॥ तुम० ॥ १० ॥ एसा करो इन्साफ, चेतन दरसावे ॥ चे० ॥ अब करमों की अपाल, हाणे नहिं पावे ॥ जन्म मरण दु ख रोग शोक मिट जावे ॥ शा० ॥ ज्ञान दरसण मुनसफी, करके समझावे ॥ चेतनका कजा करा अदा, भया फरमाणा ॥ भ० ॥ तुम० ॥ ११ ॥ असल कज जो दना, होता कर्मोका ॥ हो० ॥ चेतन से दिल्वा दो मिटे सब धोका ॥ तपका नाणा रोक, दिल्वाया जहारी ॥ दि० ॥ शुद्ध संजम अमानत, करी है नब सारी ॥ भया कजासे अगा, सदा सुखियाणा ॥ स० ॥ तु ॥ १२ ॥ अदल न्याय किया नाथ, हटाया तस्कर ॥ ह ॥ चेतनकु मिली फारगती, रहा दिल हसकर ॥ उगणीशें अडतीस साल, घोडनदी लश्कर ॥ घा० ॥

खोटकी नहीं है कछु यारी ॥ दंगा जीव चेतनका है वंका, न्याव तुम सुण लो निःशंका जी ॥१॥ अथ लावणी ॥ मेरी धन दौलत जमीन, अचल दिलवाणा ॥ अचल दिलवाणा ॥ तुम करो अदालत मेरी, जगतपति राणा ॥ ए टेक ॥ खुद चेतन मुद्दइ, वणा हे जहारी ॥ ब० ॥ आठुं कर्म मुद्दायले कपट भंडारी ॥ धीरजका इष्टांप, शोध कर लाया ॥ शो० ॥ सझाय ध्यान मजमून, सच्च बणवाया ॥ अर्जी आन गुजारी, क्षमा तलवाणा ॥ क्ष० ॥ तुम० ॥ १ ॥ मैं जाता शिवपथ, कर्म दिया घेरा ॥ क० ॥ धोका दे मिले संग, लूंटा सव डेरा ॥ लक्ष चोरासीके वीच, मोकुं अटकाया ॥ मो० ॥ फिर राग द्वेष दृढ वंध, मोकुं वंधवाया ॥ मे पाया दुःख अनंत, भेद नहिं जाणा ॥ भे० ॥ तुम० ॥ २ ॥ ये टंटा है बेपार, बोत है जूना ॥ बो० ॥ में रहा भोलपके मांहि, माफि करो गूना ॥ सोय मिले नहिं वकील, सच्चे कानूना ॥ स० ॥ ये झगडा बढा वहोत, दिनो दिन दूना ॥ मैं तो भया बलहीण, बढे कर्म दाणा ॥ व० ॥ तु० ॥ ३ ॥ अब खुली कछु तकदीर, पुण्य परभावे ॥ पु० ॥ जाणा मैं हुं सच्च, हारुं नहिं न्यावें ॥ सत्तावीश गुणधार, वकील कानूना ॥ व० ॥ जाणे अर्जकी मर्ज, बहोत मजमूना ॥ मैं किया जाके मिलाप, बहुत हरखाणा ॥ ब० ॥ तुम० ॥ ४ ॥ उन देख शास्त्रका न्याय, भेद बताया ॥ भे० ॥ मैं जाना कर्मोका जुल्म, मसोदा बनवाया ॥ तुम विन करे कुण न्याय, अर्जी मैं लाया ॥ अ० ॥ सुमति गुप्ति ये आठ, गवाह बुलवाया ॥ शील असेसर चौधरी, उसकुं बुलवाणा ॥ उ० ॥ तु० ॥ ५ ॥ अब अर्जी गुजरी उस वखत, हुकुम फरमाया ॥ हु० ॥ प्रभु ज्ञान चपरासी भेज, मुद्दायले बुलवाया ॥ सो बोले हम संग, कछु नही दावा ॥ क० ॥ चेतन झगडे झूठ, खलकमें ठावा ॥

॥ पञ्चप्रमाद् मिसवाद गवाह सग आणा ॥ ग० ॥ तु० ॥ ६ ॥ हम घर आया यह, उपत चलाई ॥ उप० ॥ खाया है कर्जा बहोत, हमसे उमाई ॥ राचा भोग विलास, मन वच काया ॥ म० ॥ घाटा नफा नहिं जाना, कर्जा चढाया ॥ जब हम मगण गये, तवे घबराणा ॥ त० ॥ तु० ॥ ७ ॥ हाजर खडे गवाही, हाल सुणाया ॥ हा० ॥ तब चेतन दे उत्तर, सुणो जी महाराया ॥ इमानदार है सबे, मेरे गवाही ॥ मे० ॥ जाणत सबे जहान, झूठ कछु नांही ॥ छुडा दीनी मेरी वतन, अखुट धन नाणां ॥ अ ॥ तु० ॥ ८ ॥ करम फरेबोदार, बहोत वु खदाना ॥ व ॥ लूट मचाई बहुत, किया हैराना ॥ लक्ष चौरासी मांहि, बहोत भमाया ॥ ब० ॥ बहोत कराया स्वाग, किया मुझ काया ॥ लूटे हरि हर इन्द्र चक्र नरराणा ॥ च० ॥ तु० ॥ ९ ॥ लूटे केई विद्वान, बडे पंडितकु ॥ ब० ॥ मेले नरकके बीच, बहोत से नितकु ॥ कहा पुण्यका नाम, पाप करवाया ॥ पा० ॥ कर कर हिंसा काम, धम बतलाया ॥ बहोत फैलाया जाल, जिससे ललचाणा ॥ जि० ॥ तुम० ॥ १० ॥ एसा करो इन्साफ, चेतन दरसावे ॥ चे० ॥ अब करमो की अपील, हाणे नहिं पावे ॥ जन्म मरण दुःख रोग शोक मिट जावे ॥ शा० ॥ ज्ञान दरसण मुनसफी, करके समझावे ॥ चेतनका फजा करा अदा, भया फरमाणा ॥ भ० ॥ तुम० ॥ ११ ॥ असल कर्ज जो देना, होता कर्मोंका ॥ हो ॥ चेतन मे दिलवा दा मिटे सब धाका ॥ तपका नाणा राक, दिलवाया जहारी ॥ टि ॥ शुद्ध सजम जमानत, करी है सब सारी ॥ भया फजासे अदा, सदा सुखियाणा ॥ स ॥ तु ॥ १२ ॥ अदल न्याय किया नाथ, हटाया तस्कर ॥ ह ॥ चेतनकु मिली पारगती, रमा दिल हसकर ॥ उगणीश अडतीस साल, घोडनदी लश्कर ॥ घो० ॥

कीनी लावणी एह, समज दिल ठसकर ॥ तिलोकरिख कहे सार, समझो कछु स्याणा ॥ स० ॥ तु ॥१२॥ इति॥

॥ अथ कर्मपच्चीसीकी लावणी ॥

॥ चेत पिछले पाग्व, रामनवमीको जन्म लियो रे ॥ ए देशी ॥ करमकुं रत वांधे भाई रे ॥ क० ॥ करम रेख नां टले करो कोई, लाखो चतुराई ॥ ए टेक ॥ श्रीआदीश्वर अंतरायसुं, वर्षे अहार पाया ॥ वर्द्धमान प्रभु कर्म जोगसु, ब्राह्मणी कुखे आया ॥ वात यह इंद्र जब जाणी ॥ वा० ॥ हरण कराय मेल्या क्षत्री कुलमें, त्रसलादे राणी ॥ भयो ये अचरज जगमांही रे ॥ भ० ॥ क० ॥ १ ॥ वारा वर्ष छमास सजममें, करि दुक्कर करणी ॥ नर सुर तिर्यंच दिया परीसा, वेदना हद वरणी ॥ उपसर्ग गोसालक दिया रे ॥ उ० ॥ लोहीठाण छ मास प्रभुके, केवल मांहे रह्या ॥ खुलासा सूत्र के मांही रे ॥ खु० ॥ क० ॥ २ ॥ कपट प्रभावे मल्लिजिनेश्वर, वेद धर्यो नारी ॥ सागरचक्री के साठ सहस्र सुत, गगा लावण धारी ॥ काठादेवीने तोड नाख्यो रे ॥ का० ॥ सवही मरण पाया इक साथें, वाकी नहीं राख्यो ॥ नृप सुण चिंता अति आई रे ॥ नृ० ॥ क० ॥ ३ ॥ सनतकुमार चक्रीके तनमे, रगतपित्ती छाई ॥ संजमले कियो मास मास तप, सातसे वर्ष तांई ॥ आठमो चक्री मान लायो रे ॥ आ० ॥ सातमो खड साधवा चडियो, करम उदय आयो ॥ मर्यो सो सागरमे जाई रे ॥ म० ॥ क० ॥ ४ ॥ राम लक्ष्मण सीता सतिसंगे, विपत सही वनमे ॥ संबुक सूर्य हंस खड्ग साध्यो, मार्यो गयो छिनमे ॥ बाप चढ आयो हरि सामे रे ॥ बा० ॥ खर दूषण त्रिशिर रण लडतां, तीनूं मरण पामे ॥ कुमतमति ऐसी बण आई रे ॥ कु० ॥ क० ॥ ५ ॥ साहसक्त तारासुं मुरछो, विद्या मौत लीवी ॥ लंकपति महाबक कर्मसें, सीताहरण

कीधी ॥ रामजी लंका चढ आया रे ॥ रा० ॥ लक्ष्मणवीर महाबलवता, दश मस्तक घाया ॥ विभीषण राजगादी पाई रे ॥ वि० ॥ क ॥ ६ ॥ श्रीमुनिसुव्रत शिष्य आज्ञा विन, खंधकादिकजाणी ॥ पांचस रिख गया दंडक देशमें, पीलाणा घाणी खंधकजीके आयो क्रोध भारी रे ॥ ख ॥ डंडकी देशके बाल्यो असुर भव, विराधिक पद धारी ॥ बारमा चक्री नरक जाइ रे ॥ बा ॥ क ॥ ७ ॥ पांडव पांच महा बलवंता, हारी द्रोपदी नारी ॥ बारे बष रुग बन बन भटक्या, विपमा सहि भारी ॥ कीचकको कीचा कर नाम्या रे ॥ की ॥ कौरवसु कियो युद्ध जोरावर, आपणो राज राख्यो ॥ द्रोपदी लेगया सुर आइ रे ॥ द्रो० ॥ क ॥ ८ ॥ पांडव कृष्ण गया खंड धातकी, पद्मोत्तर आया सामे ॥ कमजाग पांडव महाबलिया, रणमें हार पाम ॥ नृसिंह रूप धारया गिरिधारी रे ॥ नृ ॥ द्रोपदी लाया गंगा उतरिया, रुस्या हे मुरारी ॥ दिसाटो दिया पांडव सारू रे ॥ दि० ॥ क० ॥ ९ ॥ कैद क माहि आया कृष्णजी बध्या गोकुल गामें ॥ कंस पछाड सौरिपुर छोडी, रह्या द्वारकाठामें ॥ जरासंघ मारया हे महाबलका रे ॥ ज ॥ तीन खंडमें आण मनाइ, दिया जीत डंका ॥ द्विपायण रीसज मराई रे ॥ द्वि ॥ क ॥ १ ॥ द्वारकानगरीमें दाहज दीना, मात पिता ताई ॥ रथमें बैठाय चल्या हरि हलधर, द्वार पडयो आइ ॥ गया चल कसबी बन दोइ रे ॥ ग ॥ मृग भरोसे जरा कुमरके, बाण मारयो आइ ॥ पानी विन हरि मृत्यु पाई रे ॥ पा ॥ क ॥ ११ ॥ नल राजा दमयती राणी, पाई दुःख भारी ॥ हरिश्चंदराय तारादे नीच घर, माथेमरयो वारी॥ कुकडो चदराजा कियो ॥ कु ॥ रायचंद फिर वीरमती को, रणमें प्राण लिया ॥ करणी फल छूटे नहिं काई रे ॥ क० ॥ क० ॥ १२ ॥ नागश्री धर्मरुचि मुनिकु, कडवा तुंबो

दीयो ॥ हुई फजीती नरक सिधाई. अनन दुःख लियो ॥ भई सुकुमालिका सानारी रे ॥ भ० ॥ पच भरतारी हुई कर्मसुं, लियो अपयश भारी ॥ समझो ये मतलब मनमाही रे ॥ स० ॥ क० ॥ १३ ॥ काचराकी खाल उतारी पूरवभव, हर्ष धरयो मनमे ॥ तेरह क्रोड भव पाछे खंधकजीकी, खाल उतारी वनमे ॥ पुंडरिक शेष वर्ष संजम पाली रे ॥ पुं० ॥ डागियो तीन दिवस मे मर कर, नरक गयो चाली ॥ कर्मको ख्याल अजब भाईरे ॥ क० ॥ क० ॥ १४ ॥ महापातकी राय प्रदेशी, संच्या नरक खाता ॥ केशी मुनि उपदेश सुणीने, श्रावक व्रत राता ॥ तपस्या वेले वेले कीवी रे ॥ त० ॥ दिन गुणचालीस मांही सुकृत कर, सुरगति जिण लीवी ॥ विचित्रगति कर्माकी गाई ॥ वि० ॥ क० ॥१५॥ वीरप्रभुको कुशिष्य, कहिये गोसालक जाणो ॥ अष्टांग निमित्त छै बोल प्ररूप्या, जिन ज्यौं सो युं जाणो ॥वड़ाई करी मुखसे भारी रे ॥ व० ॥ मरणसमे जिण कर्मजोगसु, आतमा धिक्कारी ॥ बारमे स्वर्गे उपज्यो जाई रे ॥ बा० ॥ क० ॥ १६ ॥ महावैराग्य परिणामें संजम, लीधो उ‌छसाई ॥ क्षत्री राजकुमर जमाली, वीरजीको जमाई ॥ करम वस कुमरधा राच्यो रे ॥ क० ॥ श्रीजिनवचन उत्थापन कर कें, खोटो मत खांच्यो ॥ समझायो समझ्यो कछु नांई रे ॥ स० ॥ क० ॥ १७ ॥ वसुदेव सरखे जो पिता और, देवकी जैसी माता ॥ नेम प्रभु शिष्य गजमुनिवरके, हरि हलधर भ्राता ॥ देख सुसराकुं रीश आई रे ॥ दे० ॥ सिरपर बांधी पाल माटीकी, खीरा दिया ठाई ॥ भुगत्यां बिन छूटे कछु नांई रे ॥ भु० ॥ क० ॥ १८ ॥ चदनराय मलयागिरि राणी, सायर नीर भाई ॥ चोर ज्यों छाने निकल्या घरसे, दिक्कत बहु पाई ॥ कर्मबस चारूंही बिछडीया रे ॥ क० ॥ राते चोर आय धन हरियो, वन वन रडवड़िया ॥ वणझारो ले गयो माई रे

॥ व ॥ क० ॥ १९ ॥ जातिमदसू मेहतरके घर, जन्म लियो जाई ॥ पुत्रपणे रह्या साहुकार घर, आठ कन्या व्याही ॥ परण्या फिर श्रेणिकको बेटी रे ॥ प० ॥ सुनार घरे मेतारज रिख शिर, बांध बांधी सेंठी ॥ वेदना पाई अधिकाइ रे ॥ वे ॥ क० ॥ २० ॥ मयणरेहा वश मोह्यो मणिरथ, छलपणो विचारयो ॥ रण जीती आया सुण पापी, जुगवाहु मारयो ॥ आधिनिश निकल्यो दर आणी रे ॥ आ० ॥ सर्प डस्यो मरियो वनमाही, नरकगति ठाणी ॥ मयणरेहा वनमें पुत्र जाई रे ॥ म० ॥ क० ॥ २१ ॥ भगवत भक्त श्रेणिक के कोणिक, पिंजरामें दीयो ॥ तालपूट खाईने मरिया, नरकवास किया ॥ कोणिक लेणे हार हाथी ताई ॥ को० ॥ एक क्रोड ने असमी लाख नर, मारिया रणमांइ ॥ सार पण निकल्यो फलु नांइ रे ॥ सा ॥ क ॥ २२ ॥ मृगापुत्र सगड अभग सेण, चिलाती चोर जाण्यो ॥ दु ख अनता पाया कर्मसु, सूत्रमें बखाण्यो ॥ केई तो कथामहि जहारी रे ॥ के० ॥ जिनचक्री हरि हर इंद्रादिक, कोइसु नहिं पारी ॥ छोटा तो किशी गिणत माई रे ॥ छो ॥ क० ॥ २३ ॥ चार ज्ञान चउदे पूरवधर, छेला चारित्र पाई ॥ पद कर सो गया नरक अनता कह्यो सूत्रमाहि ॥ इव जीव उपज थावर जाई रे ॥ इ ॥ ऐसी समज कर भूजो कर्मसु, शंका कछु नांही ॥ बात य जिनवर फरमाई रे ॥ बा० ॥ क० ॥ २४ ॥ उगणीसें अडतीस वैशाख शुदि छठ, दक्षिण देश जाणी ॥ सेका काळ रह्या मिरिगाममें, भविजन हित आणी ॥ कर्मफल दृष्टांत बताया रे ॥ क० ॥ तिलोकरिख कहे तोड्या कर्म सव, सा शिवसुख पाया ॥ धर्म है सदाहि सुखदाई रे ॥ ध० ॥ क० ॥ २५ ॥

॥ अथ मूर्ख ऊपर लावणी ॥

॥ बालक सगत करे सो मूरख, काम विना पर घर जावे ॥ मात पितादिक बडे जो उनके, देत गालि नहिं शरमावे ॥ विना

कामे सो वडेके सामे, वार वार इत उत फिरता ॥ विना हुंकारे बात करे शठ, परकुं दान ना करता ॥ प्रच्छन्न बात कहे त्रिया के आगे, नीच निगुणा नरनु यारी ॥ ऐसे मूरखसे दूर रहो तुम, जो चाहो शोभा सारी ॥ ए टेक ॥ १ ॥ धर्मकथामें चित्त न राखे, के ऊंचे के बात करे ॥ आपसे अधिक उससे अकडाइ, नरपतिका विश्वास धरे ॥ डरके ठिकाने जावे अकेला, गुरुका अवगुण वाद कहे ॥ अपणी पहुच न देखे जराभर, वडे वडेकी होड चहे ॥ सहज बात पर हाथ चलावे. विन मतलव देवे गाली ॥ ऐ० ॥ २ ॥ विण जाणेसे करे मस्करी. दिन लन घर साथ करे ॥ शुकन वर्जता जावे अगाडी, वदल जाय जब गरज सरे ॥ भरी सभामें मीसर दाखे, विना दोष कडवु बोले ॥ परनुकसानी देखि आणंद, सत्य झूट पक्ष नहिं ठोले ॥ अपनी वडाई करे पंडित विच, भली शिक्षा लागे खारी ॥ ए० ॥ ३ ॥ अजीरण पर जमे रसोई, लकड फाडे जहां खडा रहे ॥ चाडि चूगल अहि सोनीका दिल, विश्वास धरि मन मांहे चहे ॥ धर्मी पुरुष की करे निंदना, सज्जन स्यो नहिं मनावे ॥ पाणी पीतां हसे मूढ नर, रस्ते चलतां रोटी खावे ॥ लडका चेला रखे लाडोमें, निरर्थक तोडे तरु डारी ॥ ए० ॥ ४ ॥ दान दे के मगरुरी करे और किया उपगार न माने रती ॥ हलकी बोली बोले परकुं, संतापे दुखी साधु सती ॥ सुलटी कहेतां उलटी माने, हांसी की बात पर रीश भरे ॥ छती शक्ति उपगार करे नहिं, दया दानमे शर्मे मरे ॥ विनां सुहातो गायन गावे, बात करे विन विचारी ॥ ए० ॥ ५ ॥ विश्वास दे के वदल जावे और, झूठा झूठा सोगन खावे ॥ अपना धर्म की करे हीनता, पाप कर के दिल पोसावे ॥ दो नर बात करे उासे ठामे, कान त्रीजो नर लगावे ॥ प्रच्छन्न बात करे प्रगट परकी, त्रिया पर हाथज ऊठावे ॥ रांड भांडसुं करे अडी और, बद परेजी करे बिमारी ॥

पे० ॥ ६ ॥ गव्र कर तन धन जोवन का, बुद्धि भली नहिं पैलावे ॥ ज्ञान ध्यान को करे न उद्यम, विकथामें दिल रमावे ॥ तप जप करतां आलस अधिको, पाप कर्ममें अगवानी ॥ नर भव रतन फोकटमें खावे, ये सब है मूरख प्राणी ॥ तिलोकरिख कहे सत सगतसु, धर्मे तरो भवजल पारी ॥ पे० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ कक्का वर्त्तासी ऊपर लावणी ॥

॥ कक्का कमकी अजब गती है, मत करनां तुम नर नारी ॥ हसते हसते बांध जीवडा, भुगत नव मुशकिल भारी ॥ छिनमें रावका रक बणावे, छिनमें रकका राय करे ॥ लक्ष चौराशी चार गतीमें, नाना विध जीव रूप धरे ॥ इद्र चद्र नरेंद्र सुरासुर, किस सुं नहिं रख्ख यारी ॥ क ॥ १ ॥ ग्वख्खा खजाना सगी धर्मका, आगेकु सुखदायक है ॥ धर्म मूल क्षमा अगवानी, जगतपतिका वायक है ॥ गग्गा गर्व मत करो सयाना, गुरु कहेणी करो नि शका ॥ गर्व किया राजा रावणने, खोय दीनी दम में लंका ॥ गर्व रहा नहिं किसका जगमें, मगरूरी है दु ख्वकारी ॥ क ॥ २ ॥ घध्धा तु घर जो मानत मेरा, सो नहिं है सगी तेरा ॥ तु परदेशी च्यार दिनों का, क्यों, फरता मेरा मेरा ॥ नन्ना नरमाई रखनादिलमें, नरमाई जगमें प्यारी ॥ करडा निसरडा वाजे जगमें, पाव भव भव दु ग्व भारी ॥ परड वृक्ष फल उपमा उसके, धर्मी शख्स सु नहिं यारी ॥ क ॥ ३ ॥ चच्चा चचा तुम कर लो धर्मकी, कर्म मर्मकी खबर पडे ॥ मूढसु बात करो मत धंदे, राग द्वेष और क्लेश धंडे ॥ छच्छा छिन छिन छीजे उमर सब, किसके भरोसें तू अकडे ॥ काल अचानक एकदम अदर जैसे बाज तितर पकडे ॥ ऐसी समझक छोड दे ममता, सतगुरु कहे रख हुशियारी ॥ क ॥ ४ ॥ जज्जा जरासी कहु हकीगत, जरा आया जोवन जावे ॥ जोर झुठे जर जोरु जमी जन, तेरे सग कोई नहिं आवे ॥ ऐसी जाण

करो जैनधर्मकुं, जीवजला विन है ख्वारी ॥ झझ्झा झूठ मत वोलो वंदे, झूठी हे ममता माया ॥ झूठा लेणां झूठा देणां, झूठा झूठमें ललचाया ॥ आगे का डर रख कर भैया, झूठ वात दे नीवारी ॥ क० ॥ ५ ॥ नन्ना नियम व्रत कर लो पहले, जव लग बुढापा नहिं आवे ॥ रोग वदन मे आवे नहिं ओर इंद्रिका पूरण वल पावे ॥ टट्टा टेक तुम रखो धर्मकी, जव लग जीव रहे तनमे ॥ पापकी टेक करो मत कवहुं, मिले वदनामी जगजनमे ॥ सुभूमचक्री रावण चक्री, खोटी टेक लह्यो दुःख भारी ॥ क० ॥ ६ ॥ ठठ्ठा ठाठ दुनीयां का वंदे, इद्र धनुप वादल जैसा ॥ ठग पांचोंका संग न करनां, परभवका रख अंदेशा ॥ डड्डा डंक मत रखो दिलमें, साफी की सुधरे करणी ॥ जिसकी वुराई जिसकुं पछाडे, जाय पडेगा नर्क वैतरणी ॥ वाप मारणकी दिलमें विचारी, नंदिवर्धन कुमर गयो मारी ॥ क० ॥ ७ ॥ ढढ्ढा ढूंढ ले सार वस्तुकुं, देव निरंजन जसवंता ॥ गुरु निर्ग्रंथ ओर धर्म दयामें, तीन रत्न ये शिव कंता ॥ नन्ना नमो नित अरिहंत सिद्धकुं, आचारज उवज्झाय सदा ॥ साधु साध्वी सजमी सरणो, लेतां दुःख नहिं आवे कदा ॥ इनसुं जो रख्खे करडाई, वे दुःख पाते गति चारी ॥ क० ॥ ८ ॥ तत्ता तत्त्व नवका करो निर्णय, त्रणकु जाणो त्रणकुं छंडो ॥ संवर निर्जरा मोक्ष ये तीनुं, इनकुं शुद्ध मनसुं मंडो ॥ थथ्था थिर नहिं सुर्य चंद्र,अरु अस्थिर ग्रह नक्षत्र तारा ॥ थिर नहिं इंद्र चंद्र हरि चक्री, सकल चराचर संसारा ॥ जन्मे सो मरे फूले सो कुह्मलावे, रखो धर्मकी हुशियारी ॥ क० ॥ ९ ॥ दद्दा दया नित पालो सयाना, दान देना दिल हरखाई ॥ विषय कषाय इंद्रीकुं दमन कर, ये करणी है सुखदाई ॥ धध्धा धर्मका सौदा कर लो, ज्ञान ध्यान तप जप सच्चा ॥ ये करणी है स्वर्ग मोक्षकी, इस विन सब सौदा कच्चा ॥ नन्ना नाम लो प्रभुका हरदम, जो चहाते

आतमा तारी ॥ क० ॥ १० ॥ पप्पा पुण्यसें पाया नर भव, आर जदेश उत्तम कुलमें ॥ ल्यो आउखो जोग मुनिको, क्यों तु पडा है जग भुलमें ॥ फफ्फा फूल मत तन धन देखी, प्यार रोज चटको मटको ॥ आखरमें सब जाना छोड के, ऐसी समझके दिल हटको ॥ बब्बा बडाई जिनकी खलमें, रखे धर्मकी तैय्यारी ॥ क० ॥ ११ ॥ भभ्भा भलाई कर ले भैया, पुण्य पाप संग आवेगा ॥ धरा रहेगा माल खजाना, जस अपजस रह जावेगा ॥ मम्मा मान ले मुनिवर कहेणी, मन बंदर कु कर वशमें ॥ मान माया मोह ममत मेट दे, आयु छीजे ज्यों जल पसमें ॥ मित्रपणुं कर छःकायासु, अभयदान है सुखकारी ॥ क ॥ १२ ॥ यय्या याद रख चर्चा धमकी, या देही मुश्कल पाया ॥ ऐसी वखतमें धर्म किया नहिं सो भव भवमें पछताया ॥ ररो रोष मत करो किसीकुं, रोष किया तप फल हारे ॥ खधक द्वीपायन रोष कियासुं, अनेक कोटि प्राणी मारे ॥ जन्म मरण दु:ख लहेगा जगमें, तपकरणी सो गया हारी ॥ क० ॥ १३ ॥ लल्ला लोभकी लाय बुरी है, लालच वश दुष्कृत करते ॥ हत्या करे चाले मुख झूठा, धापण दावे परधन हरते ॥ वव्वा वाणी वीतराग प्ररूपी, सम्वि जाणि भ्रस आदरमा ॥ विनय धर्मको मूल जमा कर, आठ कर्म वशमें करना ॥ शश्शा सत्य है सार सकलमें, सावकुं आंच न लगारी ॥ क० ॥ १४ ॥ षष्पा करो षट् कायकी रक्षा, निज आतम सम सब प्राणी ॥ दु:ख मरण सा कोई न चहाते, दया भगवती सुखदाणी ॥ सस्सा ये ससार समुदर, विषय भोग कीचड आणी ॥ अष्ट थव आठ कर्मका इसमें, अनत वगणाका पाणी ॥ धर्म जहाजमें बेठ सयाना, उतर आओ भवजल पारी ॥ क० ॥ १५ ॥ हहा हाल ये सुन के हियामें, हरदम श्रीजिनकु भजना ॥ हेत रखो छःकाय जीवस, हाय हरामी हट तजना ॥ हरो क्रोध

पाया मद तृष्णा, पाप करनां दिलमे लजनां ॥ दया दान सत्य-शील असरु, धर्म क्रिया करतां गजनां ॥ इण भव में तन धन जन संपति, परभव से लहा जयकारी ॥ क० ॥ १६ ॥ उगनीशें अडतीस वैशाख उज्वल पक्ष, तिथि वारस दिन बुधवारे ॥ तिलोकरिख कहे कक्काबत्तीसी, सुणके भविजन अवधारे ॥ तो उनकुं सुमति शुद्ध आवे, मिथ्या भर्म सो भग जावे ॥ जाने अथिर संसारकी रचना, जैनधर्म शरणो चहावे ॥ कर्म भर्मको मर्म विचारी, परम पद होय अविकारी ॥ क० ॥ १७ ॥ इति ॥

॥ कैदी ऊपर भावदृष्टांतनी लावणी ॥

॥ दोहा ॥

॥ इस दुनियामे जीव सो, भूल रेह भर्ममांय ॥ समझानेके वास्ते, कहु दृष्टांत वणाय ॥ १ ॥ प्रथम नमुं जिनराज चरणकुं, ए देशीमे छे ॥ इस दुनियाके अंदर भैया, कैदी खाना भयंकार ॥ जिसमे कैदी पडे अपार ॥ एक रोजका जिक्र सुनो सव, सफील गीरी सहाभार ॥ कैदी कोई जागे सो उसवार ॥ उसी वखतमें विजली चमकी, देखे दृष्टि पसार ॥ पहेरायत सोते नींद मझार ॥ दोहा ॥ कैदी कहे सुणो यार, अव वखत मिला श्रीकार ॥ जेज करो मत पलकभी, निकलो तुरगके वहार ॥ गफलत से होवेंगे खूव खुवार, समझके निकल चलो हुशियार ॥ ए टेक ॥ १ ॥ कोई कहे तव तनक नींद ले, फेर चलेगे यार ॥ इरादा हैगा हमारा सार ॥ लेट रहे सो रहे कैदमे, पछतावे दिल सोय ॥ गुजारे रोज सवे रोय रोय ॥ जो निकले सो पहोचे घरकुं, माने मौज अपार ॥ मिला जिनकुं अपना परिवार ॥ दोहा ॥ इस दृष्टांतें पड रहे, मोह तुरंगके मांय ॥ जगतवासी सव दुःख सहे, लक्ष चौराशी मांय ॥ रस्ता है जैनधर्म सुखकार ॥ स० ॥ २ ॥ मोह कर्मकी

भींत पडे कमी, विजली दमक अवसार ॥ इसीमें चेते भवि नर नार ॥ छूटे मोहके कैद खानासे, जावे मुक्ति मझार ॥ मिले निज गुण संपत परिवार ॥ अजर अमर अविनाशी निरजन, सिद्ध सदा जयकार ॥ जिनोंके नाम लियां निस्तार ॥ दोहा ॥ कर्म भर्म दूरे रहे, परम पद निराकार ॥ धर्मपथ साधन किया, वरते मगलाचार ॥ आराधो समदृष्टि नर नार ॥स० ॥ ३ ॥ विषय कषायमें मस्त रहे कई, दिलमें रखे अहकार ॥ नहीं है हमसो कोई सरदार ॥ टेडी टडी पगडी रक्खे, चले निरखतो छाय ॥ मरोडे मूछ रहे अकडाय ॥ कर्मगतिका अजब तमासा, छिनकमांहि विरलाय ॥ कोटिध्वज भीख माग कर खाय ॥ दोहा ॥ गर्व करो मत चातुरा, हरि हर चक्री राय ॥ मर कर उपजे नरकमें, पडया पडया विललाय ॥ मुक्त थे परवश जमकी मार ॥ स० ॥ ४ ॥ मेरी मेरी करे दिवाना, जर जोरु जमी परिवार ॥ सगा नहिं है कोई तेरे यार ॥ ऐसी साइत फिर मिलणी मुश्किल, उत्तम कुल अवतार ॥ कठिण है तरणा भव जलधि पार ॥ चेत चेत रे चेत सयाना, धर्म दया दिलधार ॥ सवो गुरु पच महाव्रत धार ॥ दोहा ॥ सुगुरु शीख माने हिये, सुधरे सघला काज ॥ इस भवमें शोभा लहे, परभव अविचल राज ॥ सिलाकरिख कहेता पर उपगार ॥ समझ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ लावणी मराठी भाषामा ॥

॥ येउ द याच नाम देवाच, अष्टो प्रहरा जप जिनवर ॥ टे टाकुनि हे धंद धावुगे, फद विषयेंची काय मजा प्रभु नामाची लावी ध्वजा, असार हा ससार त्यजा, शाति गुणाला दवरजा, रजकर्माची दूर भजा, भाव विमलची करी पूजा, क्षमा शांति मन धरी सजा ॥ पच महाव्रत सुमति गुप्ति, भिक्षा माग घर घर घर ॥ येउ द० ॥ १ ॥ परापकारा शरीर झिजावे, जैसा मल्यागिरी

चंदन, करी सज्जन चरणी वंदन, काम शत्रुचे निकंदन, गृह वैभव वाजी स्यंदन, अशाश्वती ह्माहो धुंदन, आठवी मनी सिद्धारथ नंदन, तिलोक ह्मणे धर्म करुनी भविका ॥ लवकर शिव सुंदर वर वर वर ॥ येउं दे वाचे० ॥ २ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ गणधर सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ धन धन आज दिवस भलो ऊग्यो ॥ ए देशी ॥ चउदासें बावन गणधर वंदो, भवदुःख दूर निकंदो रे ॥ निज आतम अवगुण ते निंदो, मोहजाल मत फदो रे ॥ च० ॥ १ ॥ ऋषभ जिणंदजी के पुंडरीक आदि, चौराशी गणधर जाणो रे ॥ अजितनाथजी के सिंहसेन धुर, कह्यो पच्चाणु परमाणो रे ॥ च० ॥ २ ॥ एक सो दोय संभव जिनवरके, चारुजी मुख्य कहीजे रे ॥ अभिनंदनजी के वज्रनामादिक, एकसो सोला लहिजे रे ॥ च० ॥ ३ ॥ सुमतिप्रभुजी के, चरम नाम धुर, एक सो पूरा कहिया रे ॥ प्रद्योतन पहला पद्मप्रभुजी के, एक सो सात सब गहिया रे ॥ च० ॥ ४ ॥ विदार्भ नाम सुपारसजी के, पंच्चाणुं गुणवंता रे ॥ दिन आदिक श्रीचंदाप्रभुजी के, त्राणु थया शिवकंता रे ॥ च० ॥ ५ ॥ वराहक आदि सुविधिनाथजी के, गणधर कह्या अठ्याशी रे ॥ नंद आदिक शीतल जिनवर के, जाणो सर्व इक्याशी रे ॥ च० ॥ ६ ॥ कच्छप्पादिक श्रेयांसप्रभु के, छिहोंतर गुणराशी रे ॥ सुभूमादिक छासठ वासुपूज्य के, पाया पद अविनाशी रे ॥ च० ॥ ७ ॥ सत्तावन श्रीविमलप्रभुजी के, मंदिर रिख धुर नामो रे ॥ अनंतजी के पचास जस आदिक, पाया शिवपुर ठामो रे ॥ च० ॥ ८ ॥ तीन चालिश श्रीधर्मप्रभु के, अरिष्ट नाम जस धारी रे ॥ शांतिजिनद के चक्रायुधादिक, छत्रिशें वरी शिवनारी रे ॥ च० ॥ ९ ॥ सांब आदिक पैंतीस कुंथुजिन के, आगममें दरसाया रे ॥ कुंभ प्रमुख तेतीस अर प्रभु के, सर्वही मोक्ष सिधाया रे ॥ च० ॥ १० ॥ मल्लिनाथजी

के अभिक्षे आदि, अठाविश फरमाया रे ॥ अठारा मुनिसुव्रतस्वामी, मल्लि आदिक शिव पाया रे ॥ च० ॥ ११ ॥ नमिनाथजी के गणधर सतरा, शुभ नामें शुभकारी रे ॥ रिष्टनेमजी के वरदत्त आदि, इग्यारा सुविचारी रे ॥ च० ॥ १२ ॥ आर्यदिन्नादिक पार्श्व प्रभु के, दस कह्या सुत्र मझारो रे ॥ महावीरजी के इन्द्रभूति प्रमुख, इग्यारा गणधारो र ॥ च० ॥ १३ ॥ त्रिपदी ज्ञान पुर्वधर सारा सिद्ध पदवी सहु पाई रे ॥ तिलोकरिख कहे मन वचन तन, वदना होजो सदाई रे ॥ च० ॥ १४ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ सोधर्म स्वामीनी सज्झाय प्रारम ॥

॥ जमीकद में रे जीव जाइ उपनो ॥ ए देशी ॥ वीर जिनेश्वर पट्टोधर नमु, श्री श्री सोधर्मा स्वामी ॥ मगध देश रे को राखी पुर भलो, सोहे सुरतरु आराम ॥ वी० ॥ १ ॥ पिता धार्मिल रे माता धारिणी, रूपें काम कुमार ॥ चारु बुद्धि रे धीरजता घणी, पूरण भण्या वेद चार ॥ वी० ॥ २ ॥ पुराण अढार छे शास्त्र वली, चवदे विद्या निधान ॥ सोमल ब्राम्हण यज्ञके कारणें, बुलाया देई सन्मान ॥ वी० ॥ ३ ॥ तिण अवसरमें रे त्रशलानदजी घनघातिक कर्म टाल ॥ केवल पाया रे आया तिणपूरें, जग नायक जगपाल ॥ वी० ॥ ४ ॥ चोसठ इन्द्र आया तिणपुरमें, वली सुर सुरि अपार ॥ रच्या त्रिगडो रे महिमा विस्तरी, आण्यो सो महकार ॥ वी० ॥ ५ ॥ चचा करवा रे गया उमगशु, रचना देखी सो नयण ॥ गर्वज उतरयो रे सशय टालियो, प्रभुनां अमृत वयण ॥ वी० ॥ ६ ॥ दीक्षा धारी र परम वैरागशु, पचसया परिवार ॥ त्रिपदी ज्ञानें रे लब्धि ऊपनी, चोंदे पूरव धार ॥ वी० ॥ ७ ॥ मति श्रुति अवधि र मन परयव वली, उपनां ज्ञान ए चार ॥ निशिदिन उद्यम रे करे तप जप तणो भावना भावे सो वार ॥ वी० ॥ ८ ॥ वर्ष पचासें रे रह्या गृहवासमें,

त्रीश वर्ष लग जाण ॥ सेवा कीनी रे जगनायक तणी, प्रभु पहुंता निर्वाण ॥ वी० ॥ ९ ॥ आचारज पद बारा वर्ष लगें, दीपायो जैनधर्म ॥ अपूर्व करण शुक्ल ध्यानथी, हणियां घातिक कर्म ॥ वी० ॥ १० ॥ केवल पाया रे सोहम स्वामीजी, रचना जाणी रे सर्व ॥ शिष्य थया बीजा रे जंबु सारिखा, नन्याणुं कोड़ी रे द्रव्य ॥ वी० ॥ ११ ॥ रातें परण्या रे आठ कामिनी, पांचशें सत्तावीश लार ॥ दिन उगंता रे संजम आदर्यो, धन धन तस अवतार ॥ वी० ॥ १२ ॥ आठ वर्ष लग रे केवल पद रह्या, पहोता मुगति मझार ॥ अजर अमर सुख रे पाया सासतां, नामथकी निस्तार ॥ वी० ॥ १३ ॥ संवत् ऊगणीशें रे उगणचालीस का, पौष शुद्ध आठम जाण ॥ केलपिप्पल गाम में रे कीधी सज्झाय एह, दक्षिण देश वखाण ॥ वी० ॥ १४ ॥ तिलोकरिख दाखे रे पाटवी शिष्यना, चरण शरणना आधार ॥ जिम तिम करिने रे पार उतारजो, विनंति ए अवधार ॥ वी० ॥ १५ ॥

॥ अथ ग्यारा गणधर की सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ पास जिनेश्वर रे सामी ॥ ए देशी ॥ गणधर समरो रे भाई ॥ दिनादिन अधिक संपत सुखदाई ॥ विघन न व्यापे रे कोइ, ॅह्री श्री मनवंछित लहे सोई ॥ ग० ॥ १ ॥ वीरप्रभु केवलरे पाया, वादकरणने अधिक उमाया ॥ भर्म निवार्यो रे स्वामी, संजम प्रभुपे लियो शिर नामी ॥ ग० ॥ २ ॥ छठ छठ तपस्या रे कीनी, तेजो लेश्या सो वश कर लीनी ॥ सब शिष्य मांही रे पहिला, इंद्रभूति प्रणमूं अलबेला ॥ ग० ॥ ३ ॥ अग्नीभूति रे बीजा, वायुभूति प्रणमूं नित्य त्रीजा ॥ ए त्रिहूं सगा रे भ्राता, तोड़ दिया मोहनी दुःख ताता ॥ ग० ॥ ४ ॥ वसुभूति चौथा रे जाणो, पंचमा सुधर्मास्वामी वखाणो ॥ वीरजीके पाटे रे सोहे, निरखत भविजननां मन मोहे ॥ ग० ॥ ५ ॥ जंबू जैसा चेला रे थया, कोड़ि नन्याणुं त्याग

सोनैया ॥ रातें परण्या रे नारी, दिन उगां लियो सजम धारी ॥ ग० ॥ ६ ॥ मंडितपुत्र छट्ठा रे कहिये, मौर्यपुत्रजी जपतां सुख लहियें ॥ अकपित आठमा रे वदो, भव भव दु कृत दूर निकन्दो ॥ ग० ॥ ७ ॥ नवमा अचलजी रे गावो, भव भव दुःकृत दूर नसावो ॥ मेतारज दशमा रे ध्यावो, कर्म भर्म भय दूर पलावो ॥ ग० ॥ ८ ॥ प्रभासजी इग्यारमा रे सेवो, प्रात उठी नित नामज लेवो ॥ चउदे पूरव रे धारी, पूछ्या प्रश्न विविध प्रकारी ॥ ग० ॥ ९ ॥ तप किया दुःकर रे कारी ॥ तारया बहु भवियण नर नारी ॥ समता सागर रे पूरा, कर्मरिपुना करया चकचूरा ॥ ग० ॥ १ ॥ सहु जण केवल रे पाया, होय अजोगी मुक्ति सिधांया ॥ ते सब प्रणमू रे भावे, जनम मरण भय जिम मिट जावे ॥ ग ॥ ११ ॥ उगणीसें छाविस रे साल, चोमासें रह्या घोरनदी बरसाल ॥ गणधर मुनिवर रे गाया, तिलोकरिख प्रणमे नित पाया ॥ ग० ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय सज्झाय प्रारभ ॥

॥ देशी करयामें ॥ गणधर ग्यारा वदियेजी, जिनने कीनो महा उपगार ॥ भला रे मुनि कीनो० ॥ ग० ॥ १ ॥ मान धरी गया वाद करणकू, दियो है भर्म निवार ॥ भ० ॥ दि० ॥ ग ॥ २ ॥ इंद्रभूतिजी लियो सजम प्रभुपे, छठ छठ तप लियो धार ॥ भ० ॥ छ० ॥ ग० ॥ ३ ॥ तेजोलेश्या वश कर लीनी, भाणिया अंगप्रभु चार ॥ भ ॥ भ० ॥ ग० ॥ ४ ॥ अग्निभूति वायुभूति श्रीजाजी, ए तीनु बंधव विचार ॥ भ ॥ ए० ॥ ग० ॥ ५ ॥ वसुभूति चौथा नित्य प्रणमु, शूरवीर सरदार ॥ भ० ॥ शू० ॥ ग० ॥ ६ ॥ वीर पटोधर स्वामी सुधर्मा, रूप अनूप उदार ॥ भ ॥ रू० ॥ ग० ॥ ७ ॥ मंडितपुत्रजी ने मोयपुत्र, अकपित सुखकार ॥ भ० ॥

त्रीश वर्ष लग जाण ॥ सेवा कीनी रे जगनायक तणी, प्रभु पहुंता निर्वाण ॥ वी० ॥ ९ ॥ आचारज पद बारा वर्ष लगें, दीपायो जैनधर्म ॥ अपूर्व करण शुक्ल ध्यानथी, हणियां घातिक कर्म ॥ वी० ॥ १० ॥ केवल पाया रे सोहम स्वामीजी, रचना जाणी रे सर्व ॥ शिष्य थया बीजा रे जंबु सारिखा, नन्याणुं कोड़ी रे द्रव्य ॥ वी० ॥ ११ ॥ रातें परण्या रे आठ कामिनी, पांचशें सत्तावीश लार ॥ दिन उगंता रे संजम आदर्यो, धन धन तस अवतार ॥ वी० ॥ १२ ॥ आठ वर्ष लग रे केवल पद रह्या, पहोता मुगति मझार ॥ अजर अमर सुख रे पाया सासतां, नामथकी निस्तार ॥ वी० ॥ १३ ॥ संवत् ऊगणीशें रे उगणचालीस का, पैाष शुद्ध आठम जाण ॥ केलपिप्पल गाम में रे कीधी सज्झाय एह, दक्षिण देश वखाण ॥ वी० ॥ १४ ॥ तिलोकरिख दाखे रे पाटवी शिष्यना, चरण शरणना आधार ॥ जिम तिम करिने रे पार उतारजो, विनंति ए अवधार ॥ वी० ॥ १५ ॥

॥ अथ ग्यारा गणधर की सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ पास जिनेश्वर रे सामी ॥ ए देशी ॥ गणधर समरो रे भाई ॥ दिनादिन अधिक संपत सुखदाई ॥ विघन न व्यापे रे कोइ, ॅह्री ॅश्री मनवंछित लहे सोई ॥ ग० ॥ १ ॥ वीरप्रभु केवलरे पाया, वादकरणने अधिक उमाया ॥ भर्म निवार्यो रे स्वामी, संजम प्रभुपे लियो शिर नामी ॥ ग० ॥ २ ॥ छठ छठ तपस्या रे कीनी, तेजो लेश्या सो वश कर लीनी ॥ सब शिष्य मांही रे पहिला, इंद्रभूति प्रणमूं अलवेला ॥ ग० ॥ ३ ॥ अग्नीभूति रे बीजा, वायुभूति प्रणमूं नित्य त्रीजा ॥ ए त्रिहूं सगा रे भ्राता, तोड़ दिया मोहनी दुःख ताता ॥ ग० ॥ ४ ॥ वसुभूति चौथा रे जाणो, पंचमा सुधर्मास्वामी वखाणो ॥ वीरजीके पाटे रे सोहे, निरखत भविजननां मन मोहे ॥ ग० ॥ ५ ॥ जंबू जैसा चेला रे थया, कोड़ि नन्याणुं त्याग

सोनैया ॥ रातें परण्या रे नारी, दिन उगां लियो सजम धारी ॥ ग० ॥ ६ ॥ मडितपुत्र छट्ठा रे कहिये, मौर्यपुत्रजी जपतां सुख लहियें ॥ अकपित आठमा रे वदो, भव भव दु ष्क्रत दूर निकदो ॥ ग० ॥ ७ ॥ नवमा अचलजी रे गावो, भव भव दु कृत दूर नसावो ॥ मेतारज दशमा रे ध्यावो, कर्म भ्रम भय दूर पलावो ॥ ग० ॥ ८ ॥ प्रभासजी ग्यारमा रे सेवो, प्रात उठी नित नामज लेवो ॥ चउदे पूरव रे धारी, पूछ्या प्रश्न विविध प्रकारी ॥ ग० ॥ ९ ॥ तप किया दुःकर रे कारी ॥ तारघा बहु भवियण नर नारी ॥ समता सागर रे पूरा, कर्मरिपुना करया चकचूरा ॥ ग० ॥ १० ॥ सहु जण केवल रे पाया, होय अजोगी मुक्ति सिधाया ॥ ते सव प्रणमू रे भावे, जनम मरण भय जिम मिट जावे ॥ ग ॥ ११ ॥ उगणीसें छवीस रे साल, चोमासें रह्या घोडनदी वरसाल ॥ गणधर मुनिवर रे गाया, तिलोकरिख प्रणमे नित पाया ॥ ग० ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय सज्झाय प्रारभ ॥

॥ देशी करयामें ॥ गणधर ग्यारा वदियेजी, जिनने कीनो महा उपगार ॥ भला रे मुनि कीनो० ॥ ग० ॥ १ ॥ मान धरी गया वाद करणकू, दियो है भर्म निवार ॥ भ० ॥ दि० ॥ ग ॥ २ ॥ इंद्रभूतिजी लियो सजम प्रभुपे, छठ छठ तप लियो धार ॥ भ० ॥ छ० ॥ ग ॥ ३ ॥ तेजोलेश्या वश कर लीनी, भाणिया अंगप्रभु धार ॥ भ० ॥ भ० ॥ ग ॥ ४ ॥ अग्निभूति वायुभूति श्रीजाजी, ए तीनु बंधव विचार ॥ भ ॥ ए ॥ ग० ॥ ५ ॥ वसुभूति चोथा नित्य प्रणमु, शूरवीर सरदार ॥ भ० ॥ शू० ॥ ग० ॥ ६ ॥ वीर पट्टोधर स्वामी सुधर्मा, रूप अनूप उदार ॥ भ ॥ रू० ॥ ग० ॥ ७ ॥ मडितपुत्रजी ने मौर्यपुत्र, अकंपित सुखकार ॥ भ० ॥

अ० ॥ ग० ॥ ८ ॥ अचल वली प्रणमूं मेतारज, सव गया मुक्ति मझार ॥ भ० ॥ स० ॥ ग० ॥ ९ ॥ परभासजी इग्यारमा प्रणमुं, शिवसंपति ना दातार ॥ भ० ॥ शि० ॥ ग० ॥ १० ॥ तिलोकरिख कहे गणधरजी कूं, नित नित होज्यो नमस्कार ॥ भ० ॥ नि० ॥ ग० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ अथ तृतीय सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ देशी प्रभाती ॥ प्रात उठि प्रणमो भवि भावें, नित नित गणधर ग्यारा ॥ ए टेक ॥ इंद्रभूति अग्निभूति वंदूं, वायुभूति सुखकारा ॥ वसुभूति सुधर्मास्वामी, नाम लियां निस्तारा ॥ प्रा० ॥ १ ॥ मंडितपुत्र मौर्यपुत्र अकंपित, अचल अचल अविकारा ॥ मेतारज आरजबुद्धिवंता, प्रभासजी प्राण पियारा ॥ प्रा० ॥ २ ॥ ग्यारा गणधर महा गुणसागर, चम्मालिश सें परिवारा ॥ वीरप्रभु के पासे एक दिन में, व्रत किया अंगिकारा ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ चउदा पूरव धारक तारक, वारक सर्व विकारा ॥ विमल केवल कमलाधारी, करगया सो खेवा पारा ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ इण समरंतां संकट नासे, रहे अखूट भंडारा ॥ तिलोकरिख कहे चरण शरण मुझ, कीजो भव निस्तारा ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ चतुर्थ सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ देशी फागणका ख्यालमें ॥ समरो नित समरो नित, ग्याराई गणधर कूं ॥ स० ॥ इंद्रभूति अग्निभूति वंदो, वायुभूति वंदो जोडी कर कूं ॥ स० ॥ १ ॥ वसुभूति सुधर्मास्वामी वंदो, मंडितपुत्र छोडी जगहर कूं ॥ स० ॥ २ ॥ मौर्यपुत्र अकंपित अचलजी, मेतारजजी छोड्या साते डरकूं ॥ स० ॥ ३ ॥ ग्यारमा श्रीपरभासजीकूं वंदो, छोड दिया है सज्जन घरकूं ॥ स० ॥ ४ ॥ चउदाई पूरव धारक सारा, उपदेश दिया है धर्मका परकूं ॥ स० ॥ ५ ॥ ग्याराई तप संजम

शुद्ध पाली, टाल दिया आठ कम अरिकू ॥ स० ॥ ६ ॥ चम्मालिशशे एकदिनमें दीक्षा धारी, ग्याराई गया शिवमदिर कू ॥ स० ॥ ७ ॥ उगणीशें अडत्तास आयारी पठम, तिलोकरिख प्रणमें सदा मुनिवरकू ॥ स ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ पचम सज्झाय प्रारभ ॥

॥ दया धर्म दिलमाही भाव र ॥ ए दशी ॥ वदो नित गण धर ग्यारा रे, मिटे जिम भम अधारा र ॥ ए टेक ॥ चउदा सहस्र अणगारम जी, ज्यष्ठ शिष्य जशवत ॥ इद्रभूति सुख कारणा जी, रचिया ज्यां सत्र सिद्धात ॥ वं० ॥ १ ॥ अग्निभूति स्वामी दूसरा जी, वायुभूति त्रीजा जाण ॥ य तीनू सगा वधवा जी, गोतम गोत्र वखाण ॥ व० ॥ २ ॥ वसुभूति चोथा मुनिजी, नाम लिया निस्तार ॥ सूत्र भगवतीमे चालिया जी, परशनना अधिकार ॥ व० ॥ ३ ॥ वीरजी रे पाटे दीपता जी, धन धन सुधर्मास्वाम ॥ श्रीजिन धर्म दीपायने जी, सारया वछित काम ॥ व ॥ ४ ॥ शिष्य थया जय सरिखा जी, रात त परण्या नार ॥ कोडि नन्याणु त्यागिन जी, लिधा सजम भार ॥ व ॥ ५ ॥ मडितपुत्र मौर्यपुत्र दीपता जी, अकपित जस धार ॥ अचलभ्राता जपता धर्म जी, तरिये भवजलपार ॥ व० ॥ ६ ॥ मतारज आरजमति जी, निज कारज किया सिद्ध ॥ वदु प्रभासजी ग्यारमा जी, जांका नाम लिया नवनिध्द ॥ व ॥ ७ ॥ ए इग्यारा गणधरू जी, चउदा पूरव धार ॥ शिष्य थया श्रावीरना जी, चम्मालिशश परिवार ॥ व ॥ ८ ॥ इण दु:खम आरा विष जी, सूत्र तणो छे आधार ॥ स सत्र जाणा भविजना जी, गणधरजो उपगार ॥ व ॥ ९ ॥ तिलोकरिख कहे जगतमें जी, श्री जिनमारग सार ॥ गणधर ग्यारा गाइये जी, नित नित जय जयकार ॥ व० ॥ १० ॥

॥ अथ श्री दशवैकालिक सूत्र दश अध्ययन प्रत्येक उद्देशा पीठिका संयुक्त पन्नर सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ तत्र प्रथम पीठिकासज्झाय प्रारंभः ॥

॥ मेरी मेरी करतां जन्म गयो रे ॥ ए देशी ॥ जय जिनराया, जय जिनराया, जय सतगुरु जिन ने धर्म बताया ॥ जय० ॥ १ ॥ भवजन तारक शिवसुख दाणी, प्ररूपी द्वादश अंगकी वाणी ॥ जय० ॥ २ ॥ श्रुति सागर गणधरजी झेली, सूत्ररचना रची नयरस केली ॥ जय० ॥ ३ ॥ सौधर्मास्वामी पट्टोधर पहला, तस शिष्य प्रथम केवली छेहेला ॥ जय० ॥ ४ ॥ श्री श्री जंबू गुणनिधि अंबू, भव ताप हरण दृढ़ स्वच्छ सुतंबू ॥ जय० ॥ ५ ॥ तस शिष्य सफल कियो नर भव जी, पर भव सुधारयो श्री प्रभव जी ॥ जय० ॥ ६ ॥ महागुण संभव सिय्यंभव भारी, तस पुत्र मनक भया अणगारी ॥ जय० ॥ ७ ॥ पूर्वके मांही गणिवरजी विचारी, अवस्था थिति रही खट मासकी सारी ॥ जय० ॥ ८ ॥ तब तिणें मनमांही कियो विचारो, किणविध होयगा भव निस्तारो ॥ जय० ॥ ९ ॥ ग्रथ लघु निर्ग्रंथ महतो, मार्गसिद्धांत रचनेकी करी खंतो ॥ जय० ॥ १० ॥ आतम प्रवाद्थी धर्म पन्नत्ति उच्चारयो, कर्म प्रवाद्थी पिंडेषणा सारयो ॥ जय० ॥ ११ ॥ वचनसुधी सत्य प्रवाद्थी धारो, शेष अध्ययन सात सुविचारो ॥ जय० ॥ १२ ॥ पूर्व नवमो आचार वत्थु त्रीजी जाणो, वेयालु समे सूत्र थया परिमाणो ॥ जय० ॥ १३ ॥ दशवैकालिक दियो नाम उच्चारो, तीन मंगल इणमें सुखकारो ॥ जय० ॥ १४ ॥ आदि मंगल प्रभुने नमस्कारो, निर्विघ्न शास्त्र भणी दूजी धारो ॥ जय० ॥ १५ ॥ अंत मंगलिकथी लहो सुख मुक्ति, शास्त्र मंगल पद सुणो आगे युक्ति ॥ जय० ॥ १६ ॥ धम्मो मंगल मुक्किठं आदि जाणो, नाणं दंसण संपन्नं मध्य ठाणो ॥ जय० ॥ १७ ॥ निक्खम्ममाणाय बुद्धवयणें, अत मंगलिक सोचो दीर्घनयणें ॥

जय० ॥ १८ ॥ प्रथम अध्ययनमें धर्म प्रशसा, द्वितीयाध्ययनें धीरज पर असा ॥ जय० ॥ १९ ॥ अनाचीरन को त्रीजामे विस्तारो, चोथे छकाय तणो हितकारो ॥ जय० ॥ २० ॥ पचमें विशुद्ध भिक्षा शिक्षा आणी, छट्टे मुनिगुण क्रिया वखाणी ॥ जय० ॥ २१ ॥ वचन शुद्धि सातमे परधानो, आठमो विचारो आचार निधानो ॥ जय० ॥ २२ ॥ नवम अध्ययने विनय मूल दाखे, दशमे अध्ययने भिक्खुगुण भाखे ॥ जय० ॥ २३ ॥ समुच्चय नाम कह्या इहा सतो, अनंत नयातम वचन महतो ॥ जय० ॥ २४ ॥ सूत्र समुद्रपारकुण पावे, गगन शशी शिशु देख उमावे ॥ जय० ॥ २५ ॥ तेस हूं आलसी महा अल्पबुद्धि, जिनागमकी नहिं पूरण शुद्धि ॥ जय० ॥ २६ ॥ प्रत्येक अध्ययन उद्देशा विचारो, कहु निज मापामें गुरु उपगारो ॥ जय० ॥ २७ ॥ पाले आराधे भाव शुद्ध आणी, तिलोकरिख कहे सो वरे शिवराणी ॥ जय० ॥ २८ ॥ इति पीठिका सज्झाय ॥

॥ अथ प्रथम द्रुमपुष्फियाध्ययन सज्झाय प्रारंभ ॥

॥ भावपूजा नित कीजीय ॥ ए देशी ॥ धर्म मगल उत्कृष्ट छे, शाश्वतो ए त्रिहु कालो जी ॥ अहिंसा लक्षण धर्मनो, भाख्यो छे दीनदयालो जी ॥ १ ॥ धर्म आराधो जी भावथु, सजम सतरे प्रकारो जी ॥ बारे भेदें तपस्या करे, द्रव्य भाव सुविचारो जी ॥ ध० ॥ २ ॥ चार जातिका देवता, हरि हर चक्री उदारो जी ॥ धर्म विषे सदा मन रहे, तिणने नमे वारंवारो जी ॥ ध० ॥ ३ ॥ जिम तरु फूलें अलि चित्त रली, पीवे सो मकरंदो जी ॥ पीडा नहिं देवे कुसुमने, पोते तृप्ति आणदो जी ॥ ध० ॥ ४ ॥ तिम मुनि लोक विषे कह्या, आरंभ परिग्रह निवारो जी ॥ भ्रमर भिक्षा एषणिक ग्रहे, जो देवे शुद्ध दातारो जी ॥ ध० ॥ ५ ॥ संजम भार निभाववा, छ कारण करे आहारो जी ॥ हर्ष शोक आणे नहिं, छंडे छ प्रकारो

जी ॥ ध० ॥ ६ ॥ दुःख नहिं देवे प्राणीने, नव कोटी सुविचारो जी ॥ गृहस्थ करे निज कारणे, आगार ज्यु अहे अणगारो जी ॥ ध० ॥ ७ ॥ मुनिवर मधुकर सम कह्या, उत्तम अवसर जाणो जी ॥ दुम्मपुष्फिया अध्ययनमें, जगगुरु किया वखाणो जी ॥ ध० ॥ ८ ॥ सूत्र प्रमाणें विधि अहे, शूरवीर सरदारो जी ॥ तिलोकरिख कहे नित जे भणी, प्रणमु सें वारंवारो जी ॥ ध० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय सामान्यपूर्वी अध्ययन सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ मगधाधिप श्रेणिक सुखकारी ॥ ए देशी ॥ ए संसार भयकर जाणी, अहिकंचुक जिम छडो ॥ श्रीजिनधर्म परम सुखदाता, संजम सुं चित मंडो के ॥ सुगुणा, अनुभव ज्ञान विचारो ॥ होवे ज्यूं भव निस्तारो के ॥ सु० ॥ १ ॥ त्रिविधे त्रिविधे त्याग करीने, कामभोग अभिलाषे ॥ पगले पगले विषवाद उपावे, संकल्प वश चित्त राखे के ॥ सु० ॥ २ ॥ वस्त्र भूषण ने भामिनी आदि, नहिं जिणने वशमांही ॥ भोगवे नहि पण सो नहि त्यागी, जगतारक दरसाइ के ॥ सु० ॥ ३ ॥ रिद्ध घणी जिणने वशमांही, पण ते नहिं अनुरागी ॥ ते त्यागी जगदीश पयपे, जाणो महावडभागी के ॥ सु० ॥ ४ ॥ इम सोची ममता करता कदाचित् निकले चित्त संजम घरथी ॥ सोचे वस्तु नहिं हुं एहनो, क्यो करे ममता अपरथी के ॥ सु० ॥ ५ ॥ भोग रोग दुःखदायक जाणी, काया कोमल पणुं छंडो ॥ शीत उष्ण परिसह सब खमिया, शिववधूसु प्रीति मंडो के ॥ सु० ॥ ६॥ राजमती सती रहनेमी नां, विकल वचन सुणि जपे ॥ अति जाज्वल्य धगधगतो अग्नि, सपरिताप तन कंपे के ॥ सु० ॥ ७ ॥ अगंधन कुल जातिनो फणिधर, जाय पडे तिणमांही ॥ वम्यो जहर नहि ते वंछे, समझो न्याय लगाई के ॥ सु० ॥ ८ ॥ धिक्कार हो तुझ अपयश कामी, असयम जीवित चहावे ॥ वम्यो भोग वंछणो नहिं जुगतो, मरण भलो तुझ थावे के ॥ सु०

॥ ९ ॥ जिहां जिहा तु देखिस त्रिया नयण, अथिर भाव तुझ थासी ॥ हडवृक्ष जिम पड़े पवन प्रताप तिम तुझ सजम जासी के ॥ सु० ॥ १० ॥ अकुशथी जिम गज वश थाय, जिम सती महावत जेमो ॥ ज्ञान अकुश करीन वश लाइ, उन्मत्त गज रहनेमो के ॥ सु० ॥ ११ ॥ धम खुट मुनि थिर करि थाप्यो, दोनु लह्यो शिव वासो ॥ इम जाणी मुनि मन वश करि राखे, छूटें तस गर्भवासो के ॥ सु० ॥ १२ ॥ सामान्यपुर्वि अध्ययन छे दूजो, भाख्यो भविजन भावें ॥ निलाकरिख कहे सुज्ञा जिनमारग गो इम मन समझावे के ॥ सु० ॥ १३ ॥ इति सामान्यपूर्वि अध्ययन ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय खुड्डियाराध्ययन सज्झाय प्रारभ ॥

॥ थें करज्या शाणा धम त्योहार आम्वा तीजको ॥ अथवा ॥ आ रस सेलडी आदि जिनश्वर किया पारणो ॥ ए देशी ॥ सजम धारे ममत निवार, छकाया प्रतिपाल ॥ ते थावन अनाचीरण वरजे, जिन आणा उजमाल हा ॥ थें सुणा भवि प्राणी धन जे परमेश्वर वाणी आदर आज्ञा आदर ॥ १ ॥ आरभ करी कियो आहार उद्देशिक माल आण्यो मुनिकाज ॥ नित्य पिंड वली साहामो आण्यो सो नहिं ल रिखराज हा ॥ थें० ॥ २ ॥ रात्रिभोजन स्नान सुगध तन पहरे नहिं वली माल ॥ न करे विंजणो रात्र स्निगध दे गृहस्थ पातर टाल हा ॥थ०॥३॥ दानशाला नो अहार न लेवो मदन नहिं कर तल ॥ दानण मिस्सी गृहस्थर्स शाता तजे चौपड़ादिक खल हा ॥ थें० ॥ ४ ॥ मुख नहिं जोवे दर्पणमाहा छत्र धरे नहिं शीश ॥ सावद्य औषधि वर्जे पगरखी साचा जेह मनीश हा ॥ थं० ॥ ५ ॥ तउ आरभ तजे आहार सिज्यातरी, बेठे न मांचे पलग ॥ विण कारण गृहस्थ घर नहिं बेठे, टाले उवटणो अग हा ॥ थें० ॥ ६ ॥ वैयावच गृहस्थकी

करे न रिखजी, जाति जणाई आहार ॥ मिश्र पाणी वली दुःख आर्यां, सरणो न वंछे परिवार हो ॥ थें० ॥ ७ ॥ मूलो आदुं खंड सेलड़ी, कंद मूल फल बीज ॥ संचलादिक पंच लूण आदि दे, तजे सचेत सब चीज हो ॥ थें० ॥ ८ ॥ शोभा कारण वस्त्र धूप धोवण, वमन वस्तीकर्म जेह ॥ विरेचन अंजण दंत पखालण, शरीर शुश्रूषा तेह हो ॥ थें० ॥ ९ ॥ इत्यादिक अनाचीरण टाले, निर्ग्रंथ संजम धार ॥ उग्रविहारी आश्रव वर्जे, खटकाया सुख कार हो ॥ थें० ॥ १० ॥ उष्ण कालें आतापना लेवे, शीतकालें सहे ठंड ॥ चोमासे थिर तन तप धारे, जैन धर्मका मंड हो ॥ थें० ॥ ११ ॥ सहे परिसह मोह हटावे, दुष्कर किरिया धार ॥ केइक पावे स्वर्ग तणां सुख, केइक मुक्ति मझार हो ॥ थें० ॥ १२ ॥ खुडियार नामाध्ययन तीसरो, दाख्यो मुनि आचार ॥ जे पाले शुद्ध तिलोकरिख तस, प्रणमे वारं वार हो ॥ थें० ॥ १३ ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ छज्जीवणीयाध्ययन सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ मानव जनम, जनम रतन तैंने पायो रे ॥ ए देशी ॥ श्री जिनधर्मको सारो रे, खट काया उगारो ॥ श्री० ॥ ध्रु० ॥ पट्टोधर श्री सुधर्मास्वामी, जंबु पूछे तिणसुं शिर नामी रे ॥ चोथा अध्ययन मझारो, किस्यो छे अधिकारो ॥ कहो तस विस्तारो ॥ श्री० ॥ १ ॥ इम सुणी कहे जिम प्रभु फरमायो, तिम कहूं तुझसुं सुण वायो रे ॥ पृथवी वली पाणी, तेउ वाउ वखाणी ॥ वनस्पति तस ठाणी ॥ श्री० ॥ २ ॥ निज आतम सम कह्या छकाया, सुखवंछक प्रभु दरसाया रे ॥ सब जीवणो चहावे, दुःखसुं थरावे ॥ आगम दरसावे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ इम जाणी त्रिविध त्रिविध भव प्राणी, छकायरक्षा सुखदानी रे ॥ क्रोध लोभ भय हास्या, वश मत बोलो भाषा ॥ सत्यव्रत सुख खासा ॥ श्री० ॥ ४ ॥ ग्राम नगर वन अल्प बहु छोटो मोटो, जाणो अदत्त सब खोटो रे ॥ सुर नर

तिरयचो, मैथुनयकी वचो ॥ त्यागो यह परपचो ॥ श्री० ॥ ५ ॥ अल्पबहु छोटो मोटा सचित्तो, मिश्र वली अचित्तो रे ॥ परिग्रह दुःखकारो, भरमावे ससारो ॥ करियें परिहारो ॥ श्री० ॥ ६ ॥ असणादिक जे कह्या चउ आहारो, निशिभोजन परिहारो रे ॥ एह छटमत सुखकारो, पाल्या भव निस्तारो ॥ इम जाणीने धारो ॥ श्री० ॥ ७ ॥ वस्त्र पात्र उपगरण सारा, ते पूजो पलेवो धार धारा रे ॥ त्रस थावर प्राणी, करो यत्न पहचाणी ॥ इम आगम वाणी ॥ श्री० ॥ ८ ॥ अजयणा सु चाले तथा उभो रहेवे, वेठे सुवे खावे मुख केवे रे ॥ प्राणीनी हिंसा थावे, पापकर्म बधावे ॥ अति कटु फल पावे ॥ श्री० ॥ ९ ॥ शिष्य पूछे तब किणाविध करीये, गुरु कहे जयणा आदरीये रे ॥ पाप कर्म न लागे, रूघे आश्रव सागे ॥ अविचल सुख आगे ॥ श्री० ॥ १० ॥ प्रथम ज्ञान पछे दया थाणी, काई जाणे जे पाप अज्ञानी रे ॥ सूत्र सुण्यां बोध आवे, आश्रव छिटकावे ॥ सजम पद पावे ॥ श्री० ॥ ११ ॥ धारे उत्कृष्ट सजम भारो, कर्म भम करे छारो रे ॥ केवल पद पावे, शिवपुरमें सिधावे ॥ शाश्वता सुख पावे ॥ श्री० ॥ १२ ॥ इम जाणी वृध्द पणे पण किरिया, भारी अनताही तरिया रे ॥ छज्जीवणीया अधिकारो, शुद्ध पाले नर नारो ॥ तिलोकरिख सोही सारो ॥ श्री० ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ अथ पचम पिंडेपणाध्ययनस्य प्रथम उद्देश सज्झाय प्रारभः ॥

॥ सोवन सिंहासण रेवती ॥ ए देशी ॥ शास्त्रविधि किरिया शुद्ध आदरे, द्रव्यक्षेत्र विधि जाण रे ॥ गजगति जिम अति सचरे, देखी धुसरा प्रमाण रे ॥ १ ॥ हु बलिहारि जाउं रिखचरणकी, त्रस थावर प्रतिपाळ रे ॥ कोयला रुख भस्मी पुंजे पर, चाले

नहिं शंका निहाल रे ॥ व० ॥ २ ॥ वेश्यावासमे नहिं संचरे, नवी प्रसूता श्वाननि गाय रे ॥ उन्मत्त बेल हय-गज जिहां लडे, मुनि दूर वर्जीने जाय रे ॥ व० ॥ ३ ॥ धम धम चाल चाले नहिं, हसे बोले नहिं पंथ रे ॥ चाले नहिं महेल देखतो, अंधारु घर ते तजंत रे ॥ व० ॥ ४ ॥ दुगंछनिक अप्रतीति कारीयो कुल, तिहां मुनि नहिं जाय रे ॥ पडदो किवाड आज्ञा विना, खोले नहिं रिखराय रे ॥ व० ॥ ५ ॥ दोष बयालिस टालने, सुझतो ले भिक्षु आहार रे ॥ उपरंत दोष विधि पिंडनो, सुणजो कांईक अधिकार रे ॥ व० ॥ ६ ॥ दो जणा सामिल आहार ते, निमत्रे एक तिन वार रे ॥ ते मुनीसर वर्जे सही, विहरे जुगहासी जेवार रे ॥ व० ॥ ७ ॥ गर्भिणी अर्थे भोजन कियो, जिम्या पाहिली परिहार रे ॥ उठेसरके बेरावण भणी, पूरण मास गर्भयुत नार रे ॥ व० ॥ ८ ॥ बालक धवरावती जुवती, छोडावतां रोवे जे बाल रे ॥ दान पुण्य मंगत अर्थे जे, कियो ए सहु दे रिख टाल रे ॥ व० ॥ ९ ॥ अल्प खाणो बहु नाखनो, मुनिजन ते वर्जत रे ॥ तृषा बुझे नहिं जिन जले, ते नहिं वहोरे गुणवंत रे ॥ व० ॥ १० ॥ उपयोग बिना लेवाणो कदा, परठवे तेह एकंत रे ॥ अणासक्ति स्थानकें आणनी, गृहस्थ घरे आज्ञा ग्रहंत रे ॥ व० ॥ ११ ॥ विधिशुद्ध आहार करतां कदा, काष्ट कांकरो निकलंत रे ॥ हाथमे ग्रही मूके तदा, पण मुखसु नहिं थूकंत रे ॥ व० ॥ १२ ॥ जो निजस्थान आवे मुनि, निस्सही शब्द कहंत रे ॥ करे काउस्सग्ग इरियावही, अतिचार सहु ते चिंतंत रे ॥ व० ॥ १३ ॥ आलोवे शुद्ध विधिगुरु कने, जिणघर जिणविधि आहार रे ॥ सज्झाय करो विश्रामो लेई, आमंत्रे जे अणगार रे ॥ व० ॥ १४ ॥ शाक सहित रहित तथा, अरस विरस जे आहार रे ॥ मधु घृत जिम मुनि भोगवे, स्वाद न करे लगार रे ॥ व० ॥ १५ ॥ दुल्लहा उ मुहा दाई कह्या, मुहा

जीवि इम जाण रे ॥ दोई जावे शुभ गति विषे, अनुक्रमें लहे निर्वाण रे ॥ व० ॥ १६ ॥ पचमु अध्ययन पिंडेषणा, प्रथम उद्देशा मझार रे ॥ तिलोकरिखजी कह वर्णवली, पाले सो धन अणगार रे ॥ व० ॥ १७ ॥ इति पिंडेषणाध्ययन प्रथमउद्देश सज्झाय ॥

॥ अथ पचम पिंडेषणाध्ययन द्वितीयोद्देश सज्झाय प्रारभ ॥

॥ प्राणी आउखो टुट्याने, साधो का नहीं ॥ ए देशी ॥ पात्रा विषे जे मुनि वहारीया र, दुर्गंध सुगध जे कोइ आहार रे ॥ भोगवे जिम भुजंग बिलम पसे र, पण परठव नहिं सो लगार रे ॥ प्रभु आज्ञा आराधो गुनिषर भावशु रे ॥ १ ॥ जो चाहा भवोदधि पार रे ॥ अल्पकाळ छे दु ख देहाने रे, सुख अनत अपार रे ॥ प्र० ॥ २ ॥ कालाकाल सुक्रिया विधि साचवो रे, अणमिलिया थी शोच न कोय रे ॥ चुगो जा लेय जिहां पक्षीया रे, वळी भिक्षुक मांगता होय र ॥ प्र० ॥ ३ ॥ ते दखी मुनि नहिं सचरे रे, जिहां परप्राणी नहिं दुहवाय र ॥ जो करे गृहस्थी आदर वदणा रे, वलि गालि निन घर नहिं जाय र ॥ प्र० ॥ ४ ॥ वदे तो हर्ष आणे नहिं र, निन वद्यासु नहिं कुम्हलाय रे ॥ कठिण वचन रिस वाले नहिं रे, समता सागर मुनिराय रे ॥ प्र० ॥ ५ ॥ विन वनाया गुरुदेवने रे, भोगवे नहिं सो लगार रे ॥ किंचित छाना सो राखे नहिं रे, कपट न करे अणगार रे ॥ प्र० ॥ ६ ॥ नशा सहित अहार नहिं भोगवे रे, जिणथकी सजम हाण रे ॥ परमगुरु दोष म्होटो कह्यो रे, त्याग्याथी होय कल्याण रे ॥ प्र० ॥ ७ ॥ तप वय रूप आचार वालि भावना रे, घोर कह्या पच प्रकार रे ॥ ते थावे किल्विषी देवता रे, कह्यो दुर्गति अवतार रे ॥ प्र० ॥ ८ ॥ एलक मूकपणे होवे ति हांती मरी रे, नरक तिरयच गति जाय र ॥ समकित धर्म दुर्लभ

कह्यो रे, इम जाणी छोडे मुनिराय रे ॥ प्र० ॥ ९ ॥ शिक्षा भिक्षा शुद्ध ग्रहणनी रे, दूजा उद्देशानी मांय रे ॥ तिलोकरिख कहे जे व्रतें क्रिया रे, तिणाने हुं वंदूं शीश नमाय रे ॥ प्र० ॥ १० ॥

॥ अथ षष्ठ धर्मार्थकामाध्ययन सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ आज भलो दिन उग्यो जी, श्रीसीमंधर स्वामी जिन वंदस्यां ॥ ए देशी ॥ ज्ञान दरसणे सपूर्ण छे हो कर्मगिरि चूरण कारणें, मुनि तप संजम वज्रधार ॥ ध्रु० ॥ एहवा गुणमणि गणिवर हो मुनिसर आइ समोसर्‍या, कांई कोइक उद्यान मझार ॥ राय प्रधान जो आवे हो उमावे क्षत्री माहणा, कांई पुछे प्रश्न विचार ॥ ज्ञा० ॥ १ ॥ जगतारक सुखकारक हो उद्धारक धर्म किस्यो कह्यो, कांई सो दाखो अणगार ॥ सो मुनिसुणी इम बोले हो कांई खोले हो आगम संघने, कांई भिन्न भिन्न करि विस्तार ॥ ज्ञा० ॥ २ ॥ जे धर्मार्थ कामी हो शिवगामी वामी भोगने, मुनि वर्जे स्थानक अढार ॥ परथम थानक दाखे हो अभिलाखे जीवदया भली, मुनी सव जीवां हितकार ॥ ज्ञा० ॥ ३ ॥ सहु जीव जीवणो चहावे हो थरर विमरण विमासिने, कांई प्राणवध भयंकार ॥ इम जाणी मुनिराया हो मन काया वचन जोगथी, त्रिकरण हिंसा परिहार ॥ ज्ञा० ॥ ४ ॥ निजपर अर्थे सावद्य हो क्रोधादिक वश मृषा गिरा, कांई निंदीसहू अणगार ॥ अविश्वासनुं कारण झूठज हो ते ओंठ समुं जाणी करी, करो अलिक भाषा परिहार ॥ ज्ञा० ॥ ५ ॥ तुष तरणादिक चोरी हो दुःख ओरी दोरी नरकनी, करे स्वर्ग सुख सहार ॥ प्रमाद तणी या हेतु हो कांइ केतु अपकीर्त्ति तणी, कांइ कुशील दुःशील आचार ॥ ज्ञा० ॥ ६ ॥ लुण वली विगय पांची हो जाची नहिं राखे रेणमे, कांइ ए आज्ञा जगतार ॥

मस्त्र पात्र भारे हो ते सजम लज्जा कारणें, रिम्व करे मच्छी परि हार ॥ ज्ञा० ॥ ७ ॥ अहानिश तप ज कहीय हा कांइ हियि समता भाषने, कांइ एक भक्त परिहार ॥ पृथवी पाणी तेउ वाउ हो वनस्पति त्रस आणिय, काइ छ काया जीव उगार ॥ ज्ञा० ॥ ८ ॥ एकेकी काय नथाव हो हणाव तिहा प्राणी घणा, कांइ गोचर अगाम्बर धार ॥ दु स्व दुर्गति वधारण हा भवारण्य कारण आणिने, कांइ हिंसा सत्र नियार ॥ ज्ञा० ॥ ९ ॥ छ व्रत यली छका या हो पाल त्रिकरण जागसु कांइ ए थया स्यानक वार ॥ पिंड शैय्या वस्त्र पात्रा हा चतुर मुनि स्व सुझता काइ दाप न कर अगीकार ॥ ज्ञा० ॥ १० ॥ कास्यादिक पात्रमाही हा नहिं भोगवे आहार पाणी कदा, काइ भ्रष्ट थाय आचार ॥ पलग मांचादि आसण हो सिंहासण पर वस नहिं, काइ पडिलेहण दु'करकार ॥ ज्ञा० ॥ ११ ॥ जावे गोचरी काज हा विराज नहिं एहस्थी घरे, कांइ उपज दाप अपार ॥ वृद्ध रोगी तपसी राया हो जस कायामें शक्ति नहि, काइ कल्पे त्रिहु अणगार ॥ ज्ञा० ॥ १२ ॥ स्नान वर्ज्यो जिनराया हा वहु काया थाय विराधना, काइ व्रतमें लाग अतिचार ॥ सुगधादिक चदन कशर हो परमेश्वर वर्ज्या साधने, काइ न्ढ कम वधणहार ॥ ज्ञा० ॥ १३ ॥ ज शम दम उपशम सागर हा रतनागर रिख बहु गुण तणा, काइ कम खपावण हार ॥ पापपुज खपाव हा तन तात्र तप अप साधणा, करे कपट क्रोध परिहार ॥ ज्ञा० ॥ १४ ॥ ज्ञान ध्यान रग राता हा जगना नाता ताहणों, काइ शशिसम जस निमल धार ॥ तिलोकरिम्व कह धमाय मिद्धा हा आराधा मोधी काइ स्वगम, काइ उपज त्रायी अणगार ॥ ज्ञा० ॥ १५ ॥ इति धमार्थाध्ययनं ॥

॥ अथ सप्तम वाक्यशुद्धयध्ययन सज्झाय प्रारभ ॥

॥ धधव मोल माना हा ॥ ए देशी ॥ चउभाषा जिनवर कही,

जाणे रिख बुध बुद्धिवता हो ॥ दो सीग्वे दो वार्जित कर, जे चतुर महंता हो के ॥ १ ॥ मुनिवर वस चाले हो, जिहां सावद्य तिहां सत्य नहीं, इस अनुभव तोले हो के ॥ मु० ॥ २ ॥ सत्य विहार समाचरे, झूठ मिश्र टाले हो ॥ निरवद्य अकर्कश असंदेह सो, बुद्धिवत गिरा भ्राले हो के ॥ मु० ॥ ३ ॥ अतीत अनागत वर्तमानमे, एकांत नहि ताणे हो ॥ निःसंदेह निश्चय तजे, जे अवसरे जाणे हो के ॥ मु० ॥ ४ ॥ निःसंदेह साची वली, जिणथी जीवणा हो ॥ ते पण रिख वर्जे सही, जिहां पाप सधावे हो के ॥ मु० ॥ ५ ॥ काणो न कहे एकनेत्रीने, पंडग पंडगरोगी हो ॥ चोरने चोर कहे नहिं, जे मुनि उपयोगी हो के ॥ मु० ॥ ६ ॥ मूरख गोलो कूतरो, क्रोधी कपटी भिखारी हो ॥ वर्जे इत्यादिक भाषा जे, लागे परने खारी हो के ॥ मु० ॥ ७ ॥ दादी पडदादी माता, धुया सखी चोरी ठकुराणी हो ॥ इत्यादिक शोले प्रकारनी, वर्जे रिख वाणी हो के ॥ मु० ॥ ८ ॥ नाम गोत्र जिम तेहनां, तिमहीज बतलावे हो ॥ तिमही पुरुष नाता सहू, वर्जे बतलावे हो के ॥ मु० ॥ ९ ॥ मनुष्य पशु पंखी अही, गाय बैल तरु खेती हो ॥ भोजनादिकये सहू, देखी बोले सो चेती हो के ॥ मु० ॥ १० ॥ रुडो विवाह किधो इण, भली निपजी रसोई हो ॥ वारु छेद्यो शाक भलो मखो, दाखे नहि रिख जोई हो के ॥ मु० ॥ ११ ॥ भलु हराणुं द्रव्य सुजीनुं, भलुं गयु धन एहनो हो ॥ ए कन्या सुंदर सीरे, इम वचन न केहणो हो के ॥ मु० ॥ १२ ॥ रूडो कीधो तप परिपक्वशीलें, छेद्यो मोहनो तांतो हो ॥ पंडित मरण क्रोधादिक हर्यो, भलो कह्यो तिण वातो हो के ॥ मु० ॥ १३ ॥ भलो थयो कर्म खाली थयो, साधुकिरिया भलेरी हो ॥ इत्यादिक भाषा वदे वली, जिणमे बुद्धि गहरी हो के ॥ मु० ॥ १४ ॥ आवो जावो तेडी लावो, उठो बेठो खावो पीवो हो ॥ इत्यादिक मुनि

जंपे नहिं, जाके अनुभव दीवो हो के ॥ मु० ॥ १५ ॥ करजो सामायिक पडिक्कमणा, सुणजो सूत्र प्राणी हो ॥ पालो दया देवाणुप्रिया बोलो मृदु सत्यवाणी हो के ॥ मु० ॥ १६ ॥ देव मनुष्य तिर्यचमें होवे क्लेश लडाइ हो ॥ हार जीत अमुक तणी, चिंते नहिं मनमाई हो के ॥ मु० ॥ १७ ॥ वायु वर्षा शीत उष्णता, थाओ नहिं श्रुद्धि हाणी हो ॥ क्रोध लोभ भय हास्य कारिणी, रिख बोले न वाणी हो के ॥ मु० ॥ १८ ॥ सुवाक्य सूधी विचारीने, भाषा दोष निवारे हो ॥ कषाय टाल पाले दया, कर्मशत्रु प्रहारे हो के ॥ मु० ॥ १९ ॥ केवल लइ शिवपुर लहे, सुवाक्य शुद्धि प्रभावे हो ॥ तिलोकरिख कहे आराधिक, सदा तस शीश नमावे हो के ॥ मु० ॥ २० ॥ इति सुवाक्यशुद्धिअध्ययनं ॥

॥ अथ अष्टमाचाराध्ययन सज्झाय प्रारंभ ॥

॥ दया धर्म दिलमांही भाव रे ॥ ए देशी ॥ मुनिजन आज्ञा आराधो रे निजातम कारज साधो रे ॥ ध्रु० ॥ आचार निधान ने पामीने जी, वरत जिम अणगार ॥ सुण जंबु क्रिया भली जी, जपी परम दातार ॥ मु० ॥ १ ॥ पृथवी पाणी तेउ वायरो जी, वनस्पति त्रसकाय ॥ तीन करण तीन जोगसु जी, हिंसा वर्जे मुनिराय ॥ मु० ॥ २ ॥ सूक्ष्म धुवर फुल कथुवा जी, किडी नांगरा दिक उत्तग ॥ फूलण खसखसादिक बीज सो जी, उगता अंकुर अंग ॥ मु० ॥ ३ ॥ इडा कोडादिकना कह्या जी, ए अष्ट सूक्ष्म आण ॥ दया पालो गाढा उपयोग सु जी, पडिलेहणा परिमाण ॥ मु० ॥ ४ ॥ घर घर फिर रिख गोचरी जी, देखे सुणे बहु कान ॥ थिर राखे निज आतमा जी, तप संजम सावधान ॥ मु० ॥ ५ ॥ थोडो थोडो मह आहार सो जी, लूख वृत्ति अणगार ॥ ऊणोदरी आहार तृप्ता रहे जी, क्रोध न करे लगार ॥ मु० ॥ ६ ॥ टर्हे दुःख

दीधां संपजे जी, महासुख कह्यो वीतराग ॥ चंचल नहिं तीन जोगसुं जी, निर्मल चित्त महाभाग ॥ मु० ॥ ७ ॥ अथिर जिवित जाणिने जी, धर्म धारे तजि भोग ॥ अवसर जाणि मुनीश्वरु जी, संजम मांही आयोग ॥ मु० ॥ ८ ॥ जिहां लगें जरा पीडे नहिं जी, व्याधि न अग वढ़त ॥ इंद्रिय वलहीण होवे नहि जी, तिण पहेली धर्म चढ़ंत ॥ मु० ॥ ९ ॥ क्रोधसु नाश प्रीति तणो जी, मानथी विनय गुण जाण ॥ मायाथी नाश मित्राइनो जी, लोभें सकलगुण हाण ॥ मु० ॥ १० ॥ क्षमाथी क्रोध जावे सही जी, विनयथी मान हणाय ॥ कपटाई सरल स्वभावशुं जी, लोभ संतोषथी जाय ॥ मु० ॥ ११ ॥ चउगति वृक्ष पुष्टि होवे जी, कषा-यको जल सिंचाय ॥ इम जाणी चारे निवारजो जी, श्री गुरुभक्त मनाय ॥ मु० ॥ १२ ॥ निंदा हास्य विकथा तजो जी, सज्झाय ध्यान धरंत ॥ बहुसूत्री सेवा करो जी, गुरुविनय अधिक साधंत ॥ मु० ॥ १३ ॥ निंदा करे नहिं कोइनी जी, बोले विचारी बोल ॥ द्वादश अगी खल विकदाई जी, नहिं करे हास्य कुतोल ॥ मु० ॥ १४ ॥ ज्योतिष निमित्त भाखे नही जी, रहेवे निरवद्य स्थान ॥ स्त्री पशु वर्जित सहीजी, नारीकथा सुणे नहिं कान ॥ मु० ॥ १५ ॥ कुकड़ीका वाल विलायशुं जी, डरे जिम नारीथी संत ॥ चित्राम न देखे तेह तणुं जी, ब्रह्मचारी गुणवंत ॥ मु० ॥ १६ ॥ हस्त पाय कर्ण नासिका जी, छेदाणां वृद्ध नार ॥ तेहवी पण ब्रह्मचारी तजे जी, वली शोभा सरस आहार ॥ मु० ॥ १७ ॥ जिन सरधायें निकले जी, पाले निम जावजीव ॥ साहसिंघ सिंह जेहवा जी, कर्मासु जूझे अतीव ॥ मु० ॥ १८ ॥ अग्निसुं धमी निर्मल करे जी, रूपाने जिम सोनार ॥ तिम कर्म खार करे वेगलो जी, त-पस्या अग्नि प्रचार ॥ मु० ॥ १९ ॥ केवल लइ शिवपद ग्रहे जी, चंद्र ज्युं सोहे आकाश ॥ आचार निधान अध्ययनमें जी, तिलोक-

रिख कहे खुलास ॥ मु० ॥ २० ॥ इति आचाराध्ययन ॥ ८ ॥

॥ अथ नवम विनयसमाधिअध्ययनस्य प्रथम उद्देशक सज्झाय प्रारभ ॥

॥ श्रीजिन मुझने पार उतारा ॥ ए देशी ॥ रे भाई विनय धर्म सुखदाई ॥ तिणसु कमी रहे नहिं काई रे भाई ॥ विन मान क्रोध छल लाभसु प्राणी, विनयनहिं सीखे गुरु पासें ॥ ज्ञान भणे तोई विपत सवाई फल आया वास विनासें रे भाई ॥ वि० ॥ १ ॥ मद प्रकृति अल्पश्रुत वय छोटा, हिलणार्थ आशातना लागे ॥ आचारवत वर श्रुतगुण सागर, तिणनाहीं विनय कोइ त्यागे रे भाइ ॥ वि० ॥ २ ॥ तिणने जिम अग्नि भस्म करे वस्तु, तिम ज्ञानादिक गुण नासे ॥ सर्प छोटो तोइ डस्या प्राण खोवे, अविनीत दुर्गति दुखि पासें रे भाइ ॥ वि० ॥ ३ ॥ आशीविष प्राण लेवे एक भवमें, गुरु आशातना भव भवमें ॥ दु ख देवे बोधवीज नहिं आवे, जाय पड दु खदवम रे भाइ ॥ वि० ॥ ४ ॥ अग्निने पग करीने जा चाहे, सर्पने कोप चढाय ॥ जीवितअर्थ खावे जहर हलाहल, पर्वत शिरथी ढहाव रे भाइ ॥ वि० ॥ ५ ॥ सूतो सिंह जगावे भाला कर बरछी पर हथली प्रहार ॥ इण दृष्टांतें अशातना करे गुरुनी, वली मुख चित्त विचार रे भाइ ॥ वि० ॥ ६ ॥ देवजागें जा धरत सुखदायी, अशातना फल टल नांई ॥ विनयविमोखो गुरुहिलणिया, जगतारक फरमाइ रे भाइ ॥ वि० ॥ ७ ॥ तिण कारण शिवसुखना अर्थी, अग्नि जिम गुरु न सरजि ॥ धमपद एक शास्त्र जिण पासें, तिणना पण विनय करीजे रे भाई ॥ वि० ॥ ८ ॥ लज्जा दया सजम शील ए चारु, अर्थी पुरुष शिवगामी ॥ कर गुरुभक्ति तो मम पुलावे, तम हरे ज्यु दिनस्वामी रे ॥ वि० ॥ ९ ॥ जिम शशी सोह ग्रहगण माही, तिम आचारज पण

छाजे ॥ विनीत शिष्य रत्नाकर जेहवो, सुक्तिके मांही विराजे रे भाई ॥ वि० ॥ १० ॥ विनयसमाधि प्रथम उद्देशामे, एह वर्णन कह्यो सारो ॥ तिलोकरिख कहे विनय जो आराधे, सोही लहे भवपारो रे भाई ॥ वि० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ अथ नवम विनयसमाधिअध्ययनस्य द्वितीय उद्देशक सज्झाय प्रारभः ॥

॥ देशी केरवामें छे ॥ जिम वृक्षने मूल खंद पछे शाखा, पान फूल विस्तार ॥ भलां रे ज्ञानी ॥ पा० ॥ विनयवर धर्म आराध जो कांइ, जो चाहो भवनिस्तार ॥ भलां रे ज्ञानी ॥ जो० ॥ विन० ॥ १ ॥ तिम धर्म तरु विनय मूल पयंप्यो, जगतारक जसधार ॥ भ० ॥ ज० ॥ वि० ॥ २ ॥ क्रोधी अज्ञानी मानी दुष्ट भापक, कपटी धूर्त नर नार ॥ भ० ॥ क० ॥ वि० ॥ ३ ॥ संसार सागरमें तणावे ऐसा दुष्टी, काठ नदीपूर मझार ॥ भ० ॥ का० ॥ वि० ॥ ४ ॥ भली शीख देतां उलटी धारे ज्यूं, शिरे अति दंड प्रहार ॥ भ० ॥ शि० ॥ वि० ॥ ५ ॥ अविनीत भवदुइ दुःख पावे, सदा दारिद्र घर वार ॥ भ० ॥ स० ॥ वि० ॥ ६ ॥ विनीत नर नारीने इण भव सुखसंपत, परभवसे जय जयकार ॥ भ० ॥ प० ॥ वि० ॥ ७ ॥ सुर भवपद विचार कर होवे, अविनीतपणुं दुःखकार ॥ भ० ॥ अ० ॥ वि० ॥ ८ ॥ विनीत गुरु अभिप्रायनो जाणक, नमन करे वारंवार ॥ भ० ॥ न० ॥ वि० ॥ ९ ॥ शीखे सूत्र अर्थ धर्म धन धारक, उतरे भवजल पार ॥ भ० ॥ उ० ॥ वि० ॥ १० ॥ तिलोकरिख कहे अध्ययन नवमामें, दूजे उद्देशे अधिकार ॥ भ० ॥ दू० ॥ वि० ॥ ११ ॥ इति द्वितीय उद्देश सज्झाय ॥

॥ अथ नवम विनय समाधि अध्ययनस्य तृतीय उद्देशक सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ सुमति सदा दिलमे धरो ॥ ए देशी ॥ श्री गुरु आज्ञा शिर

धरो, ओ गुरुपदकी चहाय ॥ विवेकी ॥ अग्निहोत्री जिम अग्निनें, सेवे तिम सेवो पाय ॥ वि० ॥ श्री० ॥ १ ॥ अगचेष्टा जाणे गुरु तणी, करो शुश्रूषा वारवार ॥ वि० ॥ वय छोटा दीक्षा करि वडो, साचो तस विनय व्यवहार ॥ वि० ॥ श्री० ॥ २ ॥ दोष बयालीस टालने, लेवतो सुझनो आहार ॥ वि० ॥ सथारो शय्यासन भोगवो, हर्ष शोक परिहार ॥ वि० ॥ श्री० ॥ ३ ॥ वचन कांटा दुर्धर कह्या, खमे मुनि समताधार ॥ वि० ॥ पर अवगुण वैरीपणुं, अप्रिय वचन परिहार ॥ वि० ॥ श्री० ॥ ४ ॥ लोलुपी कौतुकी माई पणो, वर्जे विनीत अणगार ॥ वि० ॥ चुगल नहिं दीनवृत्ति नही, निजप्रशस्ता निवार ॥ वि० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ ज्ञानादिक गुणें साधु हुवे, कामाथी गुणथी असंत ॥ वि० ॥ इम जाणी गुण सग्रह करो, राग द्वेष दोइ हणंत ॥ वि० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ जिम कन्या मणी तात देवे, देखी पर वर ठाम ॥ वि० ॥ तिम गुरु सुशिष्यने भली, शिक्षा देई देवे शिवधाम ॥ वि० ॥ श्री० ॥ ७ ॥ सुशिष्य माने गुरु आज्ञा, जावे मुक्तिने मांय ॥ वि० ॥ त्रीजो उद्देशो नवमा ध्ययननो, तिलोकरिख कहे वखाय ॥ वि० ॥ श्री० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ नवमविनय समाधि अध्ययनस्य चतुर्थ उद्देशक सज्झाय प्रारम ॥

॥ चार पहेरका दिन हावे र ॥ ए देशी ॥ सौधर्मास्वामी कही रीतसु रे, आर्य जंबू सुं कहे एम रे ॥ चतुर मुनि ॥ जिम श्रीजिन मुखशु कह्यो रे, दासू हु तुमथकी तेम रे ॥ च० ॥ चार समाधि चित्त धरो रे ॥ १ ॥ प्रथम विनय विचार रे ॥ च० ॥ गुरुशिक्षा सुणो खतसू रे, वरता सम व्यवहार रे ॥ च० ॥ चा० ॥ २ ॥ सूत्रमें क्रिया करणी कही र, साचवो कालो काल रे ॥ च० ॥ मन अ भिमान आणा मति र, हुइ सुविनीत विशाळ रे ॥ च० ॥ चा०

॥ ३ ॥ सूत्र समाधि दूजी चिंतवे रे, जाणसुं सूत्र विचार रे॥ च० ॥ सूत्र शिख्याथकी माहेरो रे, रहेशे चित्त थिरकार रे ॥ च० ॥ चा० ॥ ४ ॥ थापसुं आतमा धर्मसे रे, समझावसुं भवि लोक रे ॥ च० ॥ मान वरजी चिहुं कारणे रे, संग्रह करे सूत्र थोक रे ॥ च० ॥ चा० ॥ ५ ॥ त्रीजी समाधि तपस्या तणी रे इह लोक लब्धि आदिक काज रे ॥ च० ॥ परलोक सुर सुख कारणें रे, नहिं करे तप मुनिराज रे ॥ च० ॥ चा० ॥ ६ ॥ सर्व दिशा कीर्त्ति भणी रे, भली मानसी घणा जन रे ॥ च० ॥ एस उवर्जी निर्जरा भणी रे, मुनि धारे तपस्या रतन रे ॥ च० ॥ चा० ॥ ७ ॥ चौथी आचार समाधि सी रे, तप कारण जे कह्या चार रे ॥ च० ॥ ते वर्जी शिवकारणे रे, पाले क्रिया आचार रे ॥ च० ॥ चा० ॥ ८ ॥ चौथो उद्देशो विनय समाधिनो रे, दाख्यो वीर जिणंद रे ॥ च० ॥ तिलोकरिख कहे तिम आदरे रे, पामे परमानंद रे ॥ च० ॥ चा० ॥ ९ ॥ इति नवम विनय समाधि अध्ययनस्य चतुर्थोद्देशकः ॥४॥

॥ अथ दशम भिक्खुनामाध्ययन सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ कुविश्न मारगमाथे धिकधिक ॥ ए देशी ॥ तजत आश्रव घर, भजत संवर वर, श्रीजिनवाणी धार हो ॥ चित्त समाधि, नित्य आराधी, त्रिया वशमें न लगार हो ॥ १ ॥ धन ऐसा संत करुणा रस सागर, गुणरतनागर पूर हो ॥ ज्ञान उजागर नागर पंडित, संजम क्रियामें शूर हो ॥ ध० ॥ २ ॥ पृथ्वी न खणे न खणावे ऋषिश्वर, पीये न पावे सचित्त नीर हो ॥ जलन जलावे, तेउ महा शस्तर, विंजणे न करे समीर हो ॥ ध० ॥ ३ ॥ छेदे न छेदावे वनस्पतिने, न करे सचित आहार हो ॥ नव कोटि शुद्ध ग्रहे रिख भिक्षा, प्रभु वाणी अवधार हो ॥ ध० ॥ ४ ॥ आतमा सम जाणे छइकाया, पंच महाव्रतवंत हो ॥ आश्रव रुंधे कषाय

के टाले, ध्रुवजोगी धनवत हो ॥ ध० ॥ ५ ॥ वर्जे जोग सावद्य समदृष्टि, अर्थिज्ञान तप चरण हो ॥ पाप प्रहारे थिर जोग धारे, जे मुनि तारण तरण हो ॥ ध० ॥ ६ ॥ च्यार आहार वासी नहिं राखे, भोगवे साधर्मिकी आमत्र हो ॥ सज्झाय ध्यान मेली नहिं रहे नित आतमा, निज राखे स्वतत्र हो ॥ ध० ॥ ७ ॥ विग्रहकारिणी दु:ख वधारणी, न करे विकथा प्रबध हो ॥ न करे राग द्वेष क्षमा धारक, सजम तप ध्रुव बध हो ॥ ध० ॥ ८ ॥ पच इद्रीने कटक सम लागे, अक्रोश वचन परिहार हो ॥ अट्टट्ट हास्य शद्ध परम भयंकर, सम सुख विचार हो ॥ ध० ॥ ९ ॥ पडिमाधारक सात भय वारक, ममता नहिं तन तुष तोल हो ॥ पृथवी समान उप धान आराधे, वर्जे नियाणो किलोल हो ॥ ध० ॥ १० ॥ सहत परिसह लडत अरिसें, कुगतिसें आतम टालत हो ॥ जनम मरण भव वर्जण कारण, सजम तपस्या साधत हो ॥ ध० ॥ ११ ॥ हाथ पाय वांह इद्रिय सजय, सज्झायरक्त सूत्र जाण हो ॥ भड उपकरण मूर्च्छा नहिं राखे जे भिक्खु चाहे कल्याण हो ॥ ध० ॥ १२ ॥ अज्ञात कुलें एहे अल्प आहार रिख, न करे विणज वेपार हो ॥ छोडे कुसग मूर्छे नही भोजन, नहिं वछे पूजा सत्कार हो ॥ ध० ॥ १३ ॥ कोप वर्जे कुभाषा न जपे, छडे छल अभिमान हो ॥ पुण्य पाप फल प्रत्यें विचारे, जे भिक्खुआगम जाण हो ॥ ध० ॥ १४ ॥ धर्मदेव धर्मदेशना दायक, नायक या एक जेम हो ॥ श्रीजैन धर्मने धीरे प्रभावे वरज कुशील लिंग प्रेम हो ॥ ध० ॥ १५ ॥ देहको वास अशुचि दुर्वासक, अशाश्वतो विपुसंज्ञावान हो ॥ ममता त्यागी अनुरागी मुक्तिका, निजपर आतम सुखदान हो ॥ ध० ॥ १६ ॥ जनम मरण रण हरण मिटाइ, चरण करण उद्धार हो ॥ चरण सरण धर तरण तारण को, केवल कमला भरतार हो ॥ ध० ॥ १७ ॥ मुक्ति महेलकी महेल अचल पद, अजर अमर

अविकार हो ॥अलख निरंजन भविमन रंजन, वरते जय जय कार हो ॥ ध० ॥ १८ ॥ दशमु अध्ययन भिक्खु मारगनुं, जे कर्मभेदनहार हो ॥ आराधना करे शम दम परिणामे, पावे भव निस्तार हो ॥ ध० ॥ १९ ॥ संवत् पदरशे एकातिस संवत्सर, उतर्यो भसमग्रह कूर हो ॥ श्रीजिनसासण उदे पूजा प्रगटी, समकित जोत सनूर हो ॥ ध० ॥ २० ॥ गुर्जर देश विशेष प्रसिद्धता, अहमदावाद मज्झार हो ॥ शुद्ध श्रद्धाधारक श्रावक लुकाजी, किनो ज्ञान उपगार हो ॥ ध० ॥ २१ ॥ ततदशना सुणि एकादिनमांही, मुख्य भाणो जी वखाण हो ॥ पेतालिस जणा संगे संजम धार्यो, चित्त दृढता अति आण हो ॥ ध० ॥ २२ ॥ दुःकर दुःकर करणी धारी, दयाधरम थयो परकाश हो ॥ सातमे पाटे सत्तरेसें पूज, पद धारक विमास हो ॥ ध० ॥ २३ ॥ श्री श्री कहानजी रिख महाराया, दीपायो जैनधर्म हो ॥ चालीस सहस्र ग्रंथ आगम कठागर, टाल्यो अज्ञान को भर्म हो ॥ ध० ॥ २४ ॥ तत् पाटोधर पूज्य तारारिखजी, काला-रिखजी गुणवंत हो ॥ बगसू रिखजी तस पाट विराज्या, शूरवीर महमंत हो ॥ ध० ॥ २५ ॥ तत् अंतवासी पूज्य धनजी, शम दम उपशम धार हो ॥ तत् शिष्य श्रीअयवता रिखजी, चरण करण दातार हो ॥ ध० ॥ २६ ॥ चरण सरण तस ग्रहण करीने, बाल ख्याल जिम जाण हो ॥ प्रत्येक अध्ययन उद्देशाकी किंचित, रची रचना हित आण हो ॥ ध० ॥ २७ ॥ हाण अधिक पद अर्थ जो दीसे, बुध जनसुं अरदास हो ॥ शुद्ध करि लीजो हास्य न कीजो, जयणा शुद्ध भणजो उल्लास हो ॥ ध० ॥२८॥ सवत् उगणीसें चालीस संवत्सर, चैत्र शुक्ल बीज जाण हो ॥ वार चद्र देश दक्षिणमांही, अहमद-नगर प्रमाण हो ॥ ध० ॥ २९ ॥ तिलोकरिख कहे धन जिनागम, सर्धे जो भाविक मन खंत हो ॥ अनत संसार परित कर देवे, पाले सो होय शिव कंत हो ॥ ध० ॥ ३० ॥ हीण अधिक जे आज्ञानों

बाहिर, जो कोइ जोडाणो होय हो ॥ देव गुरु धर्म आतमा साखे, मिच्छामि दुक्कड मोय हो ॥ ध० ॥ ३१ ॥ अरिहंत सिद्ध धर्म ए चारी, होजो सदा शरण चार हो ॥ रिद्धि सिद्धि सुख संपत अविचल, दीजो परम दातार हो ॥ ध० ॥ ३२ ॥ कलश ॥ जिनराज वाणी, सुखदाणी, भविक प्राणी, सुख भणी ॥ सत्त भगी, कही चंगी, भविक रंगी, रुचि घणी॥जे पाले भावें कर्म घावे केवल पावे, सार ए ॥तिलोक रिख इम, सीख गुरुगम, ए रचि सज्झाय, सुखकार ए ॥ ध० ॥ ३३॥ इति भिक्खुअध्ययनम् ॥ इति दशवैकालिकसूत्रजी की पीठिका सहित अध्ययन उद्देशा प्रत्येक पन्नर सज्झाय सपूर्ण ॥ सव गाथा ॥२३२॥

॥ अथ गुरुगुण सज्झाय प्रारभ ॥

॥ देशी केरवामें छ ॥ प्रणमुं गुरु गुणवंत नगीना, रिद्ध सिद्ध दातार ॥ भलां रे ज्ञानी ॥ रिद्ध० ॥ गुरुगुण हिरदे बस रह्या, म्हारे जीवन प्राण आधार ॥ गु० ॥ १ ॥ गुरुगुण सागर परम उजागर, नागर नवल व्रतधार ॥ भ० ॥ ना० ॥ गु० ॥ २ ॥ ज्ञान को अंजण दे मनरजण भजण भम अधार ॥ भ० ॥ मं० ॥ गु० ॥ ३ ॥ धीरज मंदिर सोम ज्यु चन्द्र धरम धुरधर धार ॥ भ० ॥ ध० ॥ गु० ॥ ४ ॥ कर्मके गंजन अलख निरंजन, शिवपदके दातार ॥ भ० ॥ शि० ॥ गु० ॥ ५ ॥ आप तरे पर तारण हारा, राग द्वेष परिहार ॥ भ० ॥ रा० ॥ गु० ॥ ६ ॥ मात तात सुत भ्रात कामिनी, सगपण सर्व असार ॥ भ० ॥ स० ॥ गु० ॥ ७ ॥ गुरु सम नहिं को हित कारक छे विपत विडारणहार ॥ भ० ॥ वि० ॥ गु० ॥ ८ ॥ चित्रवेल चिंतामणी पारस, इण भवमें सुखकार ॥ भ० ॥ इ० ॥ गु० ॥ ९ ॥ सतगुरु इणभव परभवमांही, दे सुखसंपत सार ॥ भ० ॥ दे० ॥ गु ॥ १० ॥ मोतिसा भलीने खांडसा खारा, आतमा समअपियार ॥ भ० ॥ आ० ॥ गु० ॥ ११ ॥ गुरु कृपासें रायसंमेती, लीयो संजम भार ॥ भ० ॥ ली० ॥ गु० ॥ १२ ॥

पापी पूरो परदेशी राजा, दीयो सुर अवतार ॥ भ० ॥ दी० ॥ गु० ॥ १३ ॥ चार हत्या करी दृढ़ प्रहारी, पायो मोक्ष द्वार ॥ भ० ॥ पा० ॥ गु० ॥ १४ ॥ गुरु विण जुगत मुक्ति नहिं पावे, गुरु बिन घोर अंधार ॥ भ० ॥ गु० ॥ गु० ॥ १५ ॥ इत्यादिक अनंत हि तरिया, कियो सतगुरु उपगार ॥ भ० ॥ कि० ॥ गु० ॥ १६ ॥ पुज्य कहानजी रिखजी वरतायो, दयाधरम विस्तार ॥ भ० ॥ द० ॥ गु० ॥ १७ ॥ पूज्यतारा रिखजी तस पाटे, कालाजी रिख गुणधार ॥ भ० ॥ का० ॥ गु० ॥ १८ ॥ तस पाटे श्रीविगसू रिखजी, धनजी रिख हितकार ॥ भ० ॥ ध० ॥ गु० ॥ १९ ॥ तस शिष्य श्रीअयवंता रिखजी, बाल जति ब्रह्मचार ॥ भ० ॥ बा० ॥ गु० ॥ २० ॥ श्रीगुरु मुझ पर परम मया कर, दीना संजम भार ॥ भ० ॥ दि० ॥ गु० ॥ २१ ॥ तिलोकरिख गुरुगुणकी महिमा, सरस्वती पावे नहिं पार ॥ भ० ॥ स० ॥ गु० ॥ २२ ॥ गुरुगुण गावे मन शुद्ध करिने, वरते मंगल चार ॥ भ० ॥ व० ॥ गु० ॥ २३ ॥

॥ अथ बार भावनागर्भित उपदेशछत्रीशी सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ प्राणी कर्म समो नहिं कोइ ॥ ए देशी ॥ रे प्राणी जगमायां सब काची ॥ थे किम करी मानी छे साची रे ॥ प्राणी० ॥ ए टेक ॥ श्रीजगदीश के शीश नमाइ, कहु उपदेशी रसालो ॥ भवि प्राणी सुणो थिर चित्त करिने, मिथ्या भर्म थें टालो रे ॥ प्रा० ॥ १ ॥ गढ मढ मंदिर हाट हवेली, बाग बगीचा निवाणो ॥ दुपद चउपद वस्तर गहेणां, हिरण्य सुवर्णादिक नाणो रे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ देहसुं नेह करे किम विरथा, पुद्गल शोभा छे सारी ॥ पर वस्तु विना लागे भयंकर, देखो ज्ञान विचारी रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ मात पिता सुत नारी सहोदर, स्वजन कौटुंबिक सारा ॥ अनंत वार सगपण सब जोड्या, तोड्या अनंतही वारा रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ दुश्मन मर कर सज्जन होवे, सज्जन दुश्मन थावे ॥ राग द्वेष

करमाको बधण, क्यों निज माल गमावे रे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ मरण रोग दुःख आवे जो तनमें शरणागत नहिं कोइ ॥ तेरो सहायक जैन धर्म है, इण भव पर भव जोइ रे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ प्रभु स्मरणा विना चउगति भटक्यो पायो दुःख अनंता ॥ ते वेदना निज आतमा जाणे, के जाणे भगवंता रे ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ जन्म लियो जब कोइ न साथी मरतां पण नहिं लारी ॥ बंधी मुठीयें जन्मज लीनो, जवे हाथ पसारी र ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ जायो आयो कहे जनमता, बाहर पडियो रोव ॥ जन्मतांही अपशकुन ओ लीधा रेणो किस विध होवे रे ॥ प्रा० ॥ ९ ॥ सुख दुःख करता आतमा जाणो, भुगत आप अकेलो ॥ इम जाणी दुःकृत परिहरिये, सुकृत क्रिया सा भेला रे ॥ प्रा० ॥ १० ॥ धन कुटुंब रिद्ध संपत पाइ, सा निज पुण्य प्रभावें ॥ जिण समे पुण्यको छेहोज आवे, देखतमें बिरलावे रे ॥ प्रा० ॥ ११ ॥ जिम तरुवर पर आवे पखरु, निज निज स्वारथ कामें ॥ पान झडे पंखी उड जावे, बैठे हरया वृक्षठामें रे ॥ प्रा० ॥ १२ ॥ बाजीगर जब ख्याल रचावे, लोक होवे बहु भला ॥ बाजी भयासुं सब भग जावे, जैसा जीव अकेला रे ॥ प्रा० ॥ १३ ॥ ग्वालके सगें गायको टोलो, कहे धेनु सब म्हारी ॥ जब आवे सो अपने घरमें रहे अकेलो दंडधारी रे ॥ प्रा० ॥ १४ ॥ देह अपावन परम घिनापन मल मूत्रकी या क्यारी ॥ अशुचि आहार करी ए तन निपज्यो चमकी शोभा छे जहारी रे ॥ प्रा० ॥ १५ ॥ सागर जल करी जो नित धोवे, तो पण शुचि नहिं थावे ॥ हाड करंडिया भद्द मट्टीकी, इणिपर क्यों तु पोमावे रे ॥ प्रा० ॥ १६ ॥ सहस्र दिनारको एक कवो लेत्रो, जीमे एम सदाही ॥ सो पण दे दगो एक पलमें, काढे जीवनें साही रे ॥ प्रा० ॥ १७ ॥ रोग सोग भय दुःख उच्चाटण, जनम मरण घर काया ॥ क्रोड जतन करता पण आवे, इण पर क्यों तुं लोभाया रे ॥

प्रा० ॥ १८ ॥ दिन दिन चलनो नेडोज आवे, शंका नहिं छे लगारो ॥ श्वासोश्वासें ए तन छीजे, अंतमें होसी या छारो रे ॥ प्रा० ॥ ॥ १९ ॥ उंडी उंडी नींव लगावे, उंची मजला चढावे ॥ साड़ा तीन कर है घर तेरो, क्यों तुं पाप कमावे रे ॥ प्रा० ॥ २० ॥ हरि हर इंद्र सुर असुर नर, जे जगमें देह धारी ॥ काल व्याल सबी ने गटकावे, चेतो चेतो नर नारी रे ॥ प्रा० ॥ २१ ॥ कुरंग पतंग भ्रमर मत्स्य मरे, एक इंद्रिय वशें प्राणी ॥ जे पांचु इंद्रिय वश पड़िया, तेणें दुर्गति खाणी रे ॥ प्रा० ॥ २२ ॥ ए तन पाय महा तप कीजें, लीजें श्रीजिन नामो ॥ दीजे अभय दान सकलने, सीझे वंछित कामो रे ॥ प्रा० ॥ २३ ॥ भोग हलाहल जहरसुं जादा, फल किंपाक समानो ॥ भोगवतां लागे मन गमता, पाछें महा दुःख दानो रे ॥ प्रा० ॥ २४ ॥ सवर मारग तारक सांचो, नवा कर्म सब टाले ॥ हाट कपाट समान ए जाणो, आगम साख देखाले रे ॥ प्रा० ॥ २५ ॥ गया कालमें कर्मज कीनां, तेह हठावण कामें ॥ तपस्या द्वादश भेद करीजें, राखी सम परिणामें रे ॥ प्रा० ॥ ॥ २६ ॥ अनंत अनंत मेरु परिमाणे, मिश्रीदिक वस्तु सारी ॥ अनंत वार इण भक्षण कीनी, दीजें ममत सब मारी रे ॥ प्रा० ॥ २७ ॥ जननी दूध पियो इण चेतन, सब सागर जल वारी ॥ तो पण तृष्णा रंच न बुझी, समझो सुगुणा नर नारी रे ॥ प्रा० ॥ २८ ॥ लोक स्वरूप संठाण विचारो, पुण्य पाप फल देखो ॥ करमवशें पड़िया सब जगमें, ज्ञानी बतायो छे लेखो रे ॥ प्रा० ॥ २९ ॥ देव निरंजन गुरु निर्लोभी, धर्म दयामांही जाणो ॥ ए तीनुं तत्त्व सार पदारथ, निश्चल श्रद्धा ठाणो रे ॥ प्रा० ॥ ३० ॥ जिहां लंगे नहिं आवे वृद्धपणुं तन, रोग सोग नहिं आवे ॥ इंद्रिय पंच सो हाणी न होवे, उद्यम पहेली सरावे रे ॥ प्रा० ॥ ३१ ॥ धरम ध्यान करो एक चित्तें, कीजो सफल जमारो ॥ इण बिन चउगतिमें

दुःख पायो, आगममें विस्तारो र ॥ प्रा० ॥ ३२ ॥ रत्न चिंतामणी नरमव पायो, उत्तम कुल अवतारो ॥ तप जप सुकृत उद्यम कर लो, बाटी साठे मत हारो र ॥ प्रा० ॥ ३३ ॥ अनत जीव तरया धर्म प्रभावें, वली अनंताही तरसी ॥ इम जाणी प्रभु आज्ञा आराधे, सो शिव सुदर वरसी र ॥ प्रा० ॥ ३४ ॥ सतगुरु तो कहेणका है गरजी, परउपगारी यें जानो ॥ जो नहिं मानो तो मरजी तुम्हारी, ये घोडा ये मेंदानो रे ॥ प्रा० ॥ ३५ ॥ उगणीशें अट्ठतिश जेठ शुद्ध सातम, गाम खरोंडीके माही ॥ तिलोकरिख उपदेश छत्तीसी, भावना शुद्ध थणाइ र ॥ प्रा० ॥ ३६ ॥ इति ॥

॥ अथ अनित्य भावना सज्झाय प्रारभ ॥

॥ सत चरणारी जाउ बलिहारी ॥ ए देशी ॥ ए ससार अनित्य भयकारी, नित्य जैनधर्म लो धारी ॥ ए० ॥ ए टेक ॥ गढ मढ मदिर हाट हवेली, जाली झरोंका तिवारी ॥ जो बंध्या सो सकल ढल जाय, महेल गवाक्ष अटारी ॥ आरभ मत करजो लगारी ॥ ए० ॥ १ ॥ पाट पीतांबर शाल दुशाला, हीर चीर जर तारी ॥ जो वणिया सो सकल विनाशक, रेशमी थान किनारी ॥ करो कोई जतन हजारी ॥ ए० ॥ २ ॥ बाजुबद भुजदंड चोकडा, हार कडा पोंची भारी ॥ घडिया मढिया जडिया सुवर्णसें, हीरा रत्न झलकारी ॥ संग नहिं आवेगा थारी ॥ ए० ॥ ३ ॥ हरि हर इन्द्र चंद्र सुर मानव, बाल तरुण जराधारी ॥ राव रक नीरोगी सरोगी, अथिर सकल ससारी ॥ देखो भवि दृष्टि पसारी ॥ ए० ॥ ४ ॥ कूवा बावडी बाग बगीचा, वृक्ष विचित्र मनोहारी ॥ न रहे वस्तु न रहे करता, करता क्रोड प्रकारी ॥ बात ए जगमांहे जहारी ॥ ए० ॥ ५ ॥ जग पेंदल दल रथ तुरगम, सेना चार प्रकारी ॥ म्याना पालखी अस्तर शस्तर, रहवे नही तस धारी ॥ चराचर है गतचारी ॥ ए० ॥ ६ ॥ मात पिता बधव अरु भगिनी, काका

काकी सुत नारी ॥ न्याती गोती सज्जन सनेही, सबल सकल परि. वारी ॥ मरे जिणे देही जो धारी ॥ ए० ॥ ७ ॥ धरति अकन कुंवारी सदाही, वर किया अनंत अपारी ॥ भूमि भुजंग जो सबी गिलजावे, तो पण कहे रिद्ध म्हारी ॥ देखो ये अचरिज भारी ॥ ए० ॥ ८ ॥ नित्य श्री जैनधर्म निरंतर, दृढमन लो इम धारी ॥ भरत नरिंद्र ज्युं केवल कमला, पावोगा नर नारी ॥ तिलोकरिख कहे सुविचारी ॥ ए० ॥ ९ ॥इति

॥ अथ असरण भावना अधिकार सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ स्वामी सुणे और सुंदरी भांखे ॥ ए देशी ॥ सरणागत नहिं कोई इण जगमें, मात पिता सुत नारी रे ॥ न्याती गोती मित्र सनेही, है सब स्वार्थकी यारी रे ॥ स० ॥ १ ॥ हीरा माणक माल खजाना, रथ पैदल गज घोड़ा रे ॥ काल रिपु जब आवे चलाई, धरया रहे सब तोड़ा रे ॥ स० ॥ २ ॥ असंख्य कोटि सुर नायक इंद्र, रत्न जड़ित घर जाणो रे ॥ आतमरक्षक सुर सेवे निरंतर, तो पण जम करे घाणो रे ॥ स० ॥ ३ ॥ लक्ष चौरासी हय गय रथ जस, पायदल छन्नवे कोडी रे ॥ नवनिधि चउदे रतन घर पण तस, काल ले जावे दोड़ी रे ॥ स० ॥ ४ ॥ द्वारकानाथ श्रीकृष्ण कहाया, छप्पन कोडी परिवारो रे ॥ दुःख आयां कोइ आड़ो नहिं आयो, अंतर्ज्ञान बिचारो रे ॥ स० ॥ ५ ॥ वज्र कोट डोट परकोटो, कंगुरे कोडि सिपाई रे ॥ सात भुयरामे राखे तोही पण, काल ले जावे सोही रे ॥ स० ॥ ६ ॥ दो दो तरकस तीर जो बांधे, चाल चले अति अकड़ी रे ॥ जाणे मैं न मरशुं कदा पण, काल लेजावे जकड़ी रे ॥ स० ॥७ ॥ धन कुटुब सज्जन जे जगमें, शरणागत मत मानो रे ॥ मृगतृष्णा जिम सत्य न होवे, भांखी है त्रिजगभानी रे ॥ स० ॥ ८ ॥ को नवि सरणं को नवि सरण, रिख

अनाथी इम आणी रे ॥ रिख तिलोक कहे धर्म शरण कर, पाया पद निर्वाणी रे ॥ स० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ ससार भावना सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ सिद्धचक्रजी ने पूजो रे भविका ॥ ए देशी ॥ ए संसार चलाचल इणमें, भमियो चउगति प्राणी ॥ चोविश दंडक लक्ष चौरासी, पायो दु ख अज्ञाणी ॥ ससार महादु ख खाणी रे, भविका, धर्म सदा सुखदाणी ॥ ए टेक ॥ १ ॥ नरक विषे गयो वार अनंती, क्षेत्रवेदना जिहां भारी ॥ परमाधामी महानिर्दयी, मारे विविध प्रकारी रे ॥ भ० ॥ २ ॥ पल सागर थिति भागवे परवश, आरत अधिकी आणे ॥ के तो सिणरो जीवज वेदे, के परमेश्वर जाणे रे ॥ भ० ॥ ३ ॥ तिहांथी मरी तिरयच गतिमें, निगोदपणामें संच रियो ॥ साडी पैंसठ हजार छासिस भव, मुहूर्त्त एकमें मरीयो रे ॥ ॥ भ० ॥ ४ ॥ सत्त्वाविकलेंद्री संज्ञी असज्ञी, ममतां नरभव पायो ॥ देश अनारज नीच उच कुल, दु खमें जन्म गमायो रे ॥ भ० ॥ ५ ॥ अज्ञान कष्ट अंकाम निर्जरासु, सुरगतिमें अवतरीयो ॥ नाटक करकें रीझाया अपरनें, मरण समे दुःख धरीयो रे ॥ भ० ॥ ६ ॥ औदारिक वैक्रिय तैजस कार्मण, सास उसास मन भाषा ॥ पुद्गल परावर्त सातुहिं कीधा, अनत वार इम आखा रे ॥ भ० ॥ ७ ॥ द्रव्य क्षेत्र काल भाव ए चारु, सूक्ष्म बादर कहीयें ॥ ए पण वार अनतही जाणो, सूत्र वचन सर्दहीयें रे ॥ भ० ॥ ८ ॥ रोग सोग सजोग विजोग घली, सुख दु ख अनुभव्या सारा ॥ नाता सब जोड्या वार अनती पण रह्या धर्मसें न्यारा रे ॥ भ० ॥ ९ ॥ खाया पीया पहेरया ओढ्या, सव सणगारज कीना ॥ ठाकर चाकर पद सब पायो, मुनि दरसण नहिं भीना रे ॥ भ० ॥ १० ॥ पाप सूत्र सब भणीयां सो भिन्न भिन्न, कर्म ध्यान सब धाया ॥ पाँच

दान पण दीया वणेरा. सुपात्र दान नहिं चहाया रे ॥ भ० ॥ ११ ॥ तीन वेद पण अनुभविया सारा, सर्व जातिमांही जायो ॥ सर्व पाखडमे मरणज कीनां, जैनधर्म नहिं धायो रे ॥ भ० ॥ १२ ॥ जन्म समे गुल दे वालकने, ते गुल मेरु अनंता ॥ भक्षण कीया एक एक प्राणी, भांखे श्री भगवंता रे ॥ भ० ॥ १३ ॥ जैनधर्म विना संसर्ग करिया, भटक्यो सब कुल कोडी ॥ वालाग्रमात्र भूमि नहिं राखी, मिथ्या संगति जोडी रे ॥ भ० ॥ १४ ॥ धन्ना शालिभद्र भद्र पणासुं, मनमांही एसी विचारी ॥ त्रिलोकरिख कहे जग छटकाई, वेगें वरी शिवनारी रे ॥ भ० ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ अथ एकत्वभावना सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ जमीकंदमे रे जीव जाई उपनो ॥ ए देशी ॥ रे चेतन तुं रे जगमें एकलो, अनुभव दृष्टि विचार ॥ काया माया रे ममता कारमी, कारमो सब परिवार ॥ रे० ॥ १ ॥ वर्णज पाचु रे गंध दोई वली, आठ फरस रस पांच ॥ जोगज तीनु रे आठु करम तिका, जगमें नचावे रे नाच ॥ रे० ॥ २ ॥ कर्मवश कर फस रह्यो प्राणीयो, मोहणी भर्म विशेष ॥ ममता प्रभावें रे चउगतिने विषे, पायो अधिक किलेश ॥ रे० ॥ ३ ॥ जिहां जिहां जायो रे तिहां तिहां एकलो, एकलो परभव जाय ॥ हरि हर इंद्र सुर असुर सहु, मरण समे पछताय ॥ रे० ॥ ४ ॥ रिद्ध नहिं जावे रे साथे प्राणीने, जावे हाथ पसार ॥ निज निज करणी रे फल सब भोगवे, शंका नहिं रे लगार ॥ रे० ॥ ५ ॥ जिम वाजीगर बाजी करे तदा, आवे बहु नर नार ॥ ख्याल भयासूं रे जावे दह दिशे, तिम सहु पुण्य परिवार ॥ रे० ॥ ६ ॥ जिम तरुवर पर आवे पंखीयां, निज निज स्वारथ काम ॥ फल फूल झडीया रे सो सब खेचरु, जावे हरे तरु ठाम ॥ रे० ॥ ७ ॥ पाणी विना जिम माछलो दुःख लहे, धर्म विना

सिम जीव ॥ लक्ष चौरासी र जीवा योनिमें दुःख यों पायो अतीव ॥ रे० ॥ ८ ॥ इणविध हा सोची रे नेमी रायजी, छडी राज भंडार ॥ तिलोकरिख दाखे रे सजम आदरी, पाया भवजल पार ॥ रे० ॥ ९ ॥

॥ अथ अन्यत्व भावना सज्झाय प्रारभ ॥

॥ पास जिनेश्वर रे स्वामी ॥ ए देशी ॥ निज गुण ओलख रे प्राणी, मान मान श्रीजिनजीकी वाणी ॥ निजपणो निजमें र आणो, परद्रव्य सो अपणा मत जाणा ॥ नि० ॥ १ ॥ सिद्ध स्वरूपज रे तेरो, आख मचि क्यों करत अधेरो ॥ कस्तूरी मृगमें रे पावे, दोड दोड निज प्राण गमावे ॥ नि० ॥ २ ॥ तिम मत हावो रे भाई, तु निरजन निराकार सदाई ॥ कमसु काया रे बधी, श्रीजिन आगममें कही सधी ॥ नि० ॥ ३ ॥ क्यों करे तनने र मातो झूठो खोटो ए तन नातो ॥ इणसु ममता र टालो, अनुभव करी आतम अजुवाला ॥ नि० ॥ ४ ॥ ए तन तरो र नाहिं, या तो जब तु चेतन मांई ॥ इणमें शका र नाइ, ममत कियासु अधिक दुःख दाइ ॥ नि० ॥ ५ ॥ नित नित भाडा रे दीजे, नित नित सार सभाल करीजे ॥ साही न हाव र या तेरी, क्यों कहे निरर्थक मेरी या मेरी ॥ नि० ॥ ६ ॥ एकपखी प्रीती र झूठी, या तो तुझ पर भव भव रूठी ॥ कायासु ममता र करणे, क्यों तु दुःख दये जीव अपरणे ॥ नि० ॥ ७ ॥ जा जाण मुझ तणी र काया, सा ता मूढ गमार कहाया ॥ इणसु भव भव र बीती दुश्मन प्रीति अस फजीती ॥ नि० ॥ ८ ॥ मृगापुत्र एह विध रे जाणी, सजम ल गया पद निर्वाणी ॥ तिलाकरिख दाख्न रे आखी, ज्ञान दर्शन किरिया सदा साखी ॥

॥ अथ अशुचि भावना सज्झाय प्रारभ

॥ साधुजी सन्ताहि सुहामणा ॥ ए देशी ॥ देहसु नह न कीजीयें, देह अशुचिनु गह हो ॥ भविपण ॥ मल मूत्र रुधिर भरी,

राचे मूरख जेह हो ॥ भ० ॥ दे० ॥ १ ॥ माता रुधिर पिता शुक्रनो, कीधो प्रथम आहार हो ॥ भ० ॥ गर्भवेदना सही आकरी, ते जाणे किरतार हो ॥ भ० ॥ दे० ॥ २ ॥ मास सवा नव झूलीयो, उंधे मुख गर्भवास हो ॥ भ० ॥ जन्म थयो दुःख वीसरयो, भुलि गयो दुःख राश हो ॥ भ० ॥ दे० ॥ ३ ॥ दिन दिन तन मोटो थयो, करे शुश्रूषा अपार हो ॥ भ० ॥ दुगंच्छा आणे अपर तणी, निज उत्पत्ती तो संभार हो ॥ भ० ॥ दे० ॥ ४ ॥ सात धातु इण देहीमे, सात कही उपधात हो ॥ भ० ॥ सातुं मिल निशिदिन झरे, तन ऊपर त्वचा कही सात हो ॥ भ० ॥ दे० ॥ ५ ॥ सातशें सर इणमे सही, तीनसें हाड करंड हो ॥ भ० ॥ वात पित्त कफ दोष जो, अधिक घिनापन भंड हो ॥ भ० ॥ दे० ॥ ६ ॥ सागरजलसु पखालीयें, तोहि विमल नहिं थाय हो ॥ भ० ॥ मान करणे किण कारणें, चर्मकी शोभा देखाय हो ॥ भ० ॥ दे० ॥ ७ ॥ काचा कुंभ तणी ऊपमा, संझा फूलवो जेम हो ॥ भ० ॥ इंद्र धनुष जल मोतिको, नास होणेको नहिं नेम हो ॥ भ० ॥ दे० ॥ ८ ॥ आहार आधार ए रहे, रोग तणो भंडार हो ॥ भ० ॥ तप जप रत्न संग्रह करो, इणमें एहीज सार हो ॥ भ० ॥ दे० ॥ ९ ॥ जो जाणे शुचि कायने, ते तो मूढ़ गंवार हो ॥ भ० ॥ चिंतामणि भवहारणो, खावे नरकमांही मार हो ॥ भ० ॥ दे० ॥ १० ॥ चक्री सनतकुमार जी, जाणी काया असार हो ॥ भ० ॥ तिलोकरिख कहे तप करी, पाया भवजल पार हो ॥ भ० ॥ दे० ॥ ११ ॥

॥ अथ आश्रव भावना सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ बंधव बोल मानो हो ॥ ए देशी ॥ आश्रव करमांको बंध छे, जगजीवने जाणो हो ॥ शुभ अशुभ नय भेद दो, सिद्धांत पहचाणो हो के ॥ सुगुणा आश्रव टालो हो ॥ १ ॥ ए टेक ॥

जिम जलभर सरोवर भरे, तिम कर्मज आवे हो ॥ अथवा नावा छिद्रमें, जल भरीया डूबावे हो के ॥ सु० ॥ २ ॥ अधिक आश्रव कर्मबधसु, नरकगति जावे हो ॥ दीर्घस्थितिसु निगोदमें, अनतकाल गमावे हो के ॥ सु० ॥ ३ ॥ इन्द्रिय कषाय अव्रत वली, तीन जोग कहीजें हो ॥ पचीश क्रिया भेद जोडतां, बयालिस लहीजें हो के ॥ सु० ॥ ४ ॥ श्रुतइन्द्री वशें मृगला, वनमें मृत्यु पावे हो ॥ नयन वश पतग सो, निज अंग दझावे हो के ॥ सु० ॥ ५ ॥ घ्राण अली रस माछलो, वश प्राण गमावे हो ॥ स्पर्श वश कुजर मरे, मन माहिप हणावे हो क ॥ सु० ॥ ६ ॥ एक एक इन्द्री वश मरया, जगजीव अनन्ता हो ॥ ज छेहीं वशमें पड्या, भवभवमें मरता हो के ॥ सु० ॥ ७ ॥ होतो सात लव आउस्वो, तो मोक्ष सिधाता हो ॥ अनुत्तरवासी अव्रतवशें, फिर भव दु'ख पाता हो के ॥ सु० ॥ ८ ॥ शुभ आश्रव शुभ जोगथी, पुण्य बधन जाणो हो ॥ पुण्यानुबंधी पुण्यसो, सुकृत सुख दाणो हो के ॥ सु० ॥ ९ ॥ समुद्रपाल इम जाणीने, छडी जगमाया हो के ॥ तिलोकरिख कहे धन सो भवि, आश्रव छिटकाया हो के ॥ सु० ॥ १० ॥इति॥

॥ अथ सवरभावना सज्झाय प्रारभ ॥

॥ सोवन सिंहासन रेवती ॥ ए देशी ॥ सार सवर क्रिया आदरो, दादरो ए शिवघाट रे ॥ हाट कपाट सम जाणीयें, आश्रव रज रोवे हाट रे ॥ सा० ॥ १ ॥ त्याग करी आश्रव नालान, रोकियें मन वच काय र ॥ कर्म आल सो कीये तप करी, धोकियें श्रीजिन राय रे ॥ सा० ॥ २ ॥ अष्ट प्रवचन सत आदरो, जीतो परिसह बावीश रे ॥ धर्म दश विध साधु तणे, भावना धारे जगीश रे ॥ सा० ॥ ३ ॥ पच चारित्र समाचरो, भेद सत्तावन एह रे ॥ अनुभव ज्ञान दिशा करी, जाण सवर सुख

गेह रे ॥ सा० ॥ ४ ॥ संवर अवर ओडिये, सोधीये भवदुःख ताप रे ॥ विषय रूप शीत जो लागे नहिं, चिपके नही आश्रव आप रे ॥ सा० ॥ ५ ॥ जीम तलाव जलकर्म ते, आश्रव नालां करो बंध रे ॥ अध होवो ... मोहसे, ए जिन आगम सध रे ॥ सा० ॥ ६ ॥ वश करो चार कषायने, छांडदो पंच प्रमाद रे ॥ आदरो शुध्द समकित क्रिया, मेटजो भर्म अनाद रे ॥ सा० ॥ ७ ॥ श्रीजिन आज्ञा आराधियें, पालीये संजम भार रे ॥ जन्म मरण विपता टले, उतरो भवजल पार रे ॥ सा० ॥ ८ ॥ ऐसी भावना मनमें ग्रही, धन हरिकेशी अणगार रे ॥ रिख तिलोक कहे धन जिका धारे संवर सुखकार रे ॥ सा० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ निर्जराभावना सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ सुरीजन सांभलिजो सब कोय ॥ ए देशी ॥ श्रीजिन मारग ओलखो, कांई निर्जरा भाव विचार ॥ शुके सर जल तापथी, कांइ तिम छिजे कर्मको वार ॥ चतुर नर ॥ अनुभव दृष्टि निहार ॥ ए टेक ॥ १ ॥ देही भाजन जीव घृत छे, कांइ कर्म ते छाछ समान ॥ तप हुताशन भिन्न करे, कांइ हेम कीट इम जाण ॥ च० ॥ २ ॥ ते तप बारे प्रकारनुं, कांई अणसण ऊणोदरी नाम ॥ भिक्षाचरी रस त्यागणो, कांई जाणी निर्जरा ठाम ॥ च० ॥ ३ ॥ काय क्लेश संलीनता, कांई बाह्य तप खट प्रकार ॥ प्रथम प्रायश्चित तप कह्यो, कांई विनय वेयावच्च धार ॥ च० ॥ ४ ॥ सज्झाय ध्यान काउसग्ग भलो, कांई ए अभयतर सुविचार ॥ इह लोक पर-लोक किर्ति बिना, कांई सो निर्जरा तप सार ॥ च० ॥ ५ ॥ कर्म पहाड भेदण भणी कांई करणी या वज्र समान ॥ पुद्गल ममता त्यागीये, कांई शुद्ध भाव सुख दान ॥ च० ॥ ६ ॥ क्षण अगनि क्षण नीरमें लुहार साणसी जेम ॥ पुण्य पाप

फल भोगव, काई दोनुइ षचन तेम ॥ च० ॥ ७ ॥ जिहा लगें मोक्ष न सर्वथा काई तिहां लगें निर्जरा जाण ॥ सर्वथा निर्जरा होय सदा, कांई लहीयें पद निर्वाण ॥ च० ॥ ८ ॥ इम जाणी शम दम भावसु, काइ करी अर्जुन अणगार ॥ तिलोकरिख कहे छमास में, कांई पाया भवजलपार ॥ च० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ लोक स्वभाव तथा लोक सठाण भावना सज्झाय प्रारभ ॥

॥ सुमति सदाई दिलमें भरो ॥ ए देशी ॥ लोक स्वरूप विचारीयें, मूल भेद कह्या तीन ॥ सुग्यानी ॥ उर्द्ध अधो तियग् सही, व्यवहार नयें इम चीन ॥ सु० ॥ लो० ॥ १ ॥ उर्द्ध शनीचर उपरें, मृदगके सठाण ॥ सु० ॥ कांईक कम सात राजुनो, दाखीयो त्रिजगमाण ॥ सु० ॥ लो० ॥ २ ॥ तिणमें कल्प द्वादश कह्या, नव लोकांतिक जाण ॥ सु० ॥ नवग्रिवेक तिण उपरें, पच छे अनुत्तर विमाण ॥ सु० ॥ लो० ॥ ३ ॥ तीन किल्विषी वली तहमें, बासठ प्रतर ठाण ॥ सु० ॥ लक्ष चौरासीके उपरें सत्ताणु सहस्र विमाण ॥ सु० ॥ लो० ॥ ४ ॥ तेवीश वली अधिका कह्या, रत्न जडित झलकत ॥ सु० ॥ तप सजम जिणें आदर्यो, सो सुरगति उपजत ॥ सु० ॥ लो० ॥ ५ ॥ सर्वार्थसिद्ध विमाणसु, बारा योजन प्रमाण ॥ सु० ॥ सिद्ध शिला चित्ता छत्र ज्यों, पूरण चद्र संठाण ॥ सु० ॥ लो० ॥ ॥ ६ ॥ पैंतालिस लक्ष योजन कही, लंबी पहोली सो जाण ॥ सु० ॥ अष्ट योजन जाडी विच, अर्जुन सुवर्णमय वखाण ॥ सु० ॥ लो० ॥ ७ ॥ योजन भाग चोविशमो, उपरें सिद्ध अनत ॥ सु० ॥ अनतसुखा मांही झिल रह्या अष्ट कर्म करी अंत ॥ सु० ॥ लो० ॥ ८ ॥ नीचें शनिचर विमाणसु, अठारेंसें योजन जाण ॥ सु० ॥ तिर्छो लोक श्री जिन कह्यो,

झलरीके संठाण ॥ सु० ॥ लो० ॥ ९ ॥ समय क्षेत्र अछे सासतो, लक्ष पैंतालीश मांय ॥ सु० ॥ दीप अढाइ समुद्रसों, भाख्या श्री-जिनराय ॥ सु० ॥ लो० ॥ १० ॥ पंच महाविदेह मांही शाश्वतां, जघन्यपदें जिन वीश ॥ सु० ॥ दोय कोडी केवली कह्या, दोय कोड़ी सहस्र मुनीश ॥ सु० ॥ लो० ॥ ११ ॥ ते सब प्रणमुं भावसुं, थापे तीरथ चार ॥ सु० ॥ भरत इरवत दश क्षेत्रमें, छ आरानो व्यवहार ॥ सु० ॥ लो० ॥ १२ ॥ अकर्मभूमिनां वली, क्षेत्र कह्या प्रभु त्रीश ॥ सु० ॥ अंतर द्वीप छप्पन अछे, भोगवे पुण्य जगीश ॥ सु० ॥ लो० ॥ १३ ॥ द्वीप असंख्याता बाहिरे, सागर पण सुविचार ॥ सु० ॥ जबूद्वीप पूर्ण चंद्रसो, अवर सो वलयाकार ॥ सु० ॥ लो० ॥ १४ ॥ अधोलोक व्यंतर तलें, वेत्रासन सात राज ॥ सु० ॥ सात नरक दुःख दोहिलुं, पाप तणो एह साज ॥ सु० ॥ लो० ॥ १५ ॥ ओगणपचास छे पाथड़ा, सातुंही नरक मिलाय ॥ सु० ॥ नरकवास गिणतां थकां, लाख चौराशी सो थाय ॥ सु० ॥ लो० ॥ १६ ॥ परथम नरक बारे अंतरा, खाली छे उप-रला दोय ॥ सु० ॥ दशमांहे दश भवनपति, शंका मत राखजो काय ॥ सु० ॥ लो० ॥ १७ ॥ सात क्रोड भवन तेहमें, अधिक बोहोंत्तर लाख ॥ सु० ॥ देव असंख्याता छे तेहमें, छे सूत्र तणी साख ॥ सु० ॥ लो० ॥ १८ ॥ धर्माधर्म आकाशास्ति, पुद्गल जीव अने काल ॥ सु० ॥ ए खट द्रव्य सदा लोकमे, दाखी दीन दयाल ॥ सु० ॥ लो० ॥ १९ ॥ जिण सुकृत करणी करी, ते उपन्या शुभठाम ॥ सु० ॥ जिणें दुःकृतपणुं आदर्युं, ते पाया दुःख धाम ॥ सु० ॥ लो० ॥ २० ॥ शिवराज रखि इम भावना, भव्या श्रीवर्द्धमान ॥ सु० ॥ तिलोकरिख कहे ध्येयध्यानसुं, लहीयें शिव-पुर थान ॥ सु० ॥ लोक सरूप विचारीयें ॥ इति लोक स्वभाव तथा लोक संठाण भावना सज्झाय ॥

॥ अथ बोधवीज भावना सज्झाय प्रारभ ॥

॥ सीमंधर साहिब, दिल वसो ॥ ए देशी ॥ समकित रत्न चिंतामणि, वछित सुखनी दातारो जी ॥ जतन करी अति राख जो, टालो पच अतिचारो जी ॥ स० ॥ १ ॥ पुण्यजोगें मानव भव लह्यो, उत्तम कुलमें अवतारो जी ॥ समकित सरधा छे दोहली, कोथले भरणो वायरो जी ॥ स० ॥ २ ॥ अनतानुबधि की चोकडी, मोहणी तीन प्रकारो जी ॥ सातु प्रकृति उपशमे सदा, उपशम समकित धारो जी ॥ स० ॥ ३ ॥ कांइक क्षय काइक उपशमे, क्षयोपशम कहे जगभाणो जी ॥ सास्वादन पडताथकाकी, वेदे सो वेदक जाणो जी ॥ स० ॥ ४ ॥ सातु क्षयथी क्षायिक होवे, दाखी श्रीजिनराया जी ॥ क्षायिक आइ जावे नही आगम भेद बताया जी ॥ स० ॥ ५ ॥ ए निश्चे समकित तीका, ते तो केवली जाणे जी ॥ छद्मस्थ तो व्यवहारथी, द्रव्य क्रियासु पहचाणें जी ॥ स० ॥ ६ ॥ देव अरिहत निर्ग्रंथ गुरु, धर्मजिन आज्ञा प्रमाणो जी ॥ ए तिहु तत्त्व समाचरे, सो व्यवहार वखाणो जी ॥ स० ॥ ७ ॥ छे आवलिका प्रमाणही, फरसे समकित प्राणी जी ॥ अर्ध पुद्गलमें सो शिव लहे, भांखी केवल नाणी जी ॥ स० ॥ ८ ॥ समकित समकित सब कहे, कठिन छे समकित भावो जी ॥ निश्चय व्यवहार ने ओलखे, तारक भवजल नावो जी ॥ स० ॥ ९ ॥ तप संजम किरिया करे, जो समकित विना कोइ जी ॥ छार उपर लिम लीपणु, अक विना शून्य होइ जी ॥ स० ॥ १० ॥ इण कारण सुणो बुध जना, समकित दृढ करी राखो जी ॥ मिथ्या भ्रम निवारियें, जो शिवसुख अभिलाखो जी ॥ स० ॥ ११ ॥ मास मास तपस्या करे, कुस अगर जल आहारो जी ॥ समकित सहित नोकारसी, तुल्य न आवे लगारा जी ॥ स० ॥ १२ ॥ श्रणिक

कृष्ण नरेश्वरु, ऋषभ जिनंदजीका नंदो जी ॥ समकित विशुद्ध प्रभावना, टाल्या भवदुःख फंदो जी ॥ स० ॥ १३ ॥ समकित क्रिया बिना जगतमे, नहिं कोई तारणहारी जी ॥ तिलोकरिख कहे इम सर्दहो, जे सुगुणां नर नारी जी ॥ स० ॥ १४ ॥ इति ॥

॥ अथ धर्म भावना सज्झाय प्रारंभः ॥

॥ देशी कडखामे ॥ सेव नित्यमेव, जैनधर्म सुरतरु सदा, धीरजकी धरणी, सतोष पाणी ॥ ज्ञानको बीज, तस मूल समकित क्रिया, कद विनय खद, दया वखाणी ॥ से० ॥ १ ॥ सत्य शाखा महा, भेद प्रतिशाख तस, मधुर वचन दल, अधिक सोहे ॥ कुसुम शुभध्यानके, कीर्त्तिसौरभ्य अति, मोक्ष फल मधुर सुख, स्वाद मोहे ॥ से० ॥ २ ॥ चिदानद पथी, सुखानंद छायमें, निजानद पणेथिर, भाव सेरी ॥ कषाय भव ताप, संताप दूरे हठे, बलिहारी ए कल्पतरु, धर्म केरी ॥ से० ॥ ३ ॥ एह संसारमे, धर्म आधारथी, रिद्ध सिद्ध संपदा, अनंत पाया ॥ बापड़ा जीव केइ, भर्म कर्मावशें, कल्पवृक्ष छोड़ी, बांबुल लोभाया ॥ से० ॥ ४ ॥ केइ हिंसा करे, पाप पिंडज भरे, दयाधर्म उपरें, द्वेष राखे ॥ भर्मिष्ट कुगुरु तणा, कर्म बांधे घणां, गज परें निजशिरे धूल नाखे ॥ से० ॥ ५ ॥ हार नर भव करे, छार चिंतामाणि, सो सहे परवशें, खड्ग धारा ॥ विभ्रमे चउगति, जीव जे दुर्मति, धार नहि धर्मके, धिट्ट गिमारा ॥ से० ॥ ६ ॥ धर्म विन सरण नहिं, धर्म विन तरण नहि, धर्म बिना नहिं कछु, सुखदाता ॥ मात पिता सुत, भ्रात धन धान वित्त, मरण वेदनी समे, नहिं है त्राता ॥ से० ॥ ७ ॥ दौड़ रे दौड, जैनधर्म तरु ग्रहणकु, छोड रे छोड, भवताप तांई ॥ पोढ़ रे पोढ तुं, उपशम छायमे, ठोड रे ठोड ए सुख दाई ॥ से० ॥ ८ ॥ झटक दे झटक दे, कर्मकी रेणुका, पटक दे पटक दे, पाप भारो ॥

हटक दे हटक द, जोग विपरीत पण, गटक ले धर्म, अमृत आहारा ॥ से० ॥ ९ ॥ गाल र गाल, अष्टमद मिथ्रुगर्वन, गाल रे टाल, प्रमादघाटी ॥ पाल रे पाल, छकाय प्रतिपाल तु घाल रे घाल कर्मम टाटी ॥ से० ॥ १० ॥ दया उपरात नहिं, धम कोई जगत में, ग्यानको सार एहीज वखाणी ॥ दया रुचि विना, सर्व किरिया वृथा, कन विन कामा ज्यों वेल्ह घाणी ॥ से० ॥ ११ ॥ साठ नामें करी, सूत्रमें वर्णवी दया भगवती अति, सुख ठाणी ॥ धम रुची मुनि, देह ममता तजी, किडिया परें करुणा सा, अधिक आणी ॥ से० ॥ १२ ॥ कडुवा तुवा तणो, आहार अमृत समा, कर लिया सम, परिणाम स्वामा ॥ तीक्षण वदना, खेद नहिं आण मना, सर्वाथ सिद्ध लही माक्ष पामी ॥ से० ॥ १३ ॥ मात मरुदेवी, सवो जिन धमक, भाव चारित्र करी, कम घाया ॥ ध्यान शुकल धरयो, ज्ञान केवल वरयो, हाय अजागी, मुक्ति सिधाया ॥ स० ॥ १४ ॥ धम परमातना, जो काइ धारेगा पावेगा सो शिव गढ निःशका ॥ रिखतिलाक कहे धर्म परभावथा, इह भवें परभव, जीत डका ॥ स० ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ अथ तर काठियानी सज्झाय लिख्यत ॥

॥ श्रीजिनमारग पाइजी कमाइ कीजा धमनी, कांइ तेर काटीया टाल ॥ ए आंकणी ॥ प्रथम आलस जाणोजी दारिद्र मूल पिछाणिय, काइ धरम करणकी अज ॥ हाल धमत छ नाहिं जी सामायिक पोसा वखाणकी कांइ काल गमाव सज ॥ श्री० ॥ १ ॥ मात पिता सुत भाइजी कायान माया कारमी कांइ भाखी छ जिनराय ॥ तिणसु ममता माधजी नहीं साध आतम कामने काइ मोह काठिया दुःखदाय ॥ श्री० ॥ २ ॥ देव गुरु धम माइजी करहाइ रामे जीवडा, काइ लोक घटाइ रीत ॥ तडक ताइ थालजी नहिं

तोले हिरदे न्यावने, कांइ अविनय विपरीत ॥ श्री० ॥ ३ ॥ जाणे मैं हुं शाहाणो जी अकल बलरूपें जातिमें, कांइ सघलामें शिरदार ॥ परनी करे बुराईजी बडाई करे आपनी, कांइ राखे मन अहंकार ॥ श्री० ॥ ४ ॥ कोइक देवे तुंकारोजी देवे शिक्षाधर्मनी, कांइ आणे अधिको क्रोध ॥ लालनेत्र करी बोले जी वली बोले मर्मज पारका, कांइ होवे धर्मविरोध ॥ श्री० ॥ ५ ॥ प्रमाद घणो अंग छावे जी नहिं भावे धर्मनी वातड़ी, कांइ समरे नहिं नवकार ॥ नरभव एल गमावे जी नहिं चहावे जप तप साधना, कांइ धिक तिणरो अवतार ॥ श्री० ॥ ६ ॥ पाप करी धन जोड़े जी जीव दोड़े देश प्रदेशमें, कांइ तृष्णा अपरंपार ॥ घर छोड़्यो नहिं जावे जी किम थावे धर्म जिण जीवसुं, कांइ लोभ महादुःखकार ॥ श्री० ॥ ७ ॥ सिंह सर्प सुर दणो जी वली घरको खर्च निभावणो, कांइ डर आणे मनमांय ॥ धर्म किसबिध थाये जी नहिं लावे धीरजता हिये, कांइ सोचो ज्ञान लगाय ॥ श्री० ॥ ८ ॥ इष्ट तणो सजोगो जी विजोगज होवे इष्टनो, कांइ रोगादिक तनमांय ॥ शोक घणेरो लावे जी घबरावे निशदिन प्राणियो, कांइ पामे धर्म अंतराय ॥ श्री० ॥ ९ ॥ जीव अजीव नहिं जाणे जी वली समझे नहिं पुण्यपापमें, कांइ लीनो श्रीजिनधर्म ॥ अज्ञान पणामें राचे जी वली खांचे खोटी रूढीने, कांइ अधिका बांधे कर्म ॥ श्री० ॥ १० ॥ विकथा करे पराई जी कमाइ टोटा खरचकी, कांइ काम भोग अधिकार ॥ हाथ कांइ नहिं आवे जी गमावे निजगुण जीवड़ा, कांइ भटके अनंत संसार ॥ श्री० ॥ ११ ॥ देखे ख्याल तमाशाजी वली बोले भाषा हांसीनी, कांइ करे कुतूहल बात ॥ लाखिणी घड़ी खोवेजी विगोवे भव चिंतामणे, कांइ होवे धर्मकी घात ॥ श्री० ॥ १२ ॥ निशिदिन निशिदिन खाणोजी बजाणो ताणो खेलणो, कांइ नहाणो धोणो अंग ॥ तिणमें काल गमावेजी

नहिं ध्यावे श्री जगदीशनें, कांइ होय धर्ममे भंग ॥ श्री० ॥ १३ ॥ काठीया ए दुःखदायी जी लागा छे सग अनादिका, काइ धर्म रतनका चोर ॥ इणसुं बहु दुःख पायो जी नहिं आयो नेडो धर्मने, काइ कीधो कर्म कठोर ॥ श्री० ॥ १४ ॥ उगणीसें गुण चालिशजी वदि मास आसाडतिथि चोथमें, कांइ पूना शहेर मझार ॥ तिलोकरिख कहे टालो जी ए काठिया तेरे भावशु, कांइ उतरो भवजल पार ॥ श्री० ॥ १५ ॥ सपूर्ण ॥

॥ अथ ग्रथानुसारसें एकसोवभ्रीशबोल अथवा

कर्मविपाक माला सज्झाय प्रारभ ॥

॥ देशी चलत चालमें ॥ चिंतामणि सम नर भव पाइ, निरर्थक जनम गमावेगा ॥ नानाविध जीव करम करीने, नानाविध दुःख ठावेगा ॥ सुण भाइ रे उदे भयां पछतावेगा ॥ सुण भाइरे तेरा किया तुंही पावेगा ॥ १ ॥ फूलबीजके बिंद बिंदकें, गजराहार बणावेगा ॥ इण करणीथी परभवमांइ, एक नेत्र नहिं पावेगा ॥ सु० ॥ २ ॥ त्रस थावर प्राणीने जो तु, जलके मांही डुबावेगा ॥ इण कर तवसें परभवमाइ जनम अंधपण आवेगा ॥ सु० ॥ ३ ॥ माखी माळका छांता तोडे, धूवे करीने धबरावेगा ॥ इण पातक सुं तु परभवमें, आंधा बहेरा थावेगा ॥ सु० ॥ ४ ॥ रूप रग देखी तिरियाको, खोटी दृष्टि लगावेगा ॥ सतगुरु देखी होवे दुमणो, जलमल सो तास देखावेगा ॥ सु० ॥ ५ ॥ एकेंद्रिय जीवांको करे जो चूरण, सलिया धान्य पिसावेगा ॥ इण अनर्थसू परभवमांइ, कूबडा पणो सो पावेगा ॥ सु० ॥ ६ ॥ बैल घोडादिक चोपद उपर, अधिको भार भरावेगा ॥ चांदी पडिया पण नहिं छोडे, गर्दनुबंध भग आवेगा ॥ सु० ॥ ७ ॥ पखेरूकी पांख उखाड वृक्षकी डाल कटावेगा ॥ इण करणीसुं परभवमांही, टूटा पग हो आवेगा ॥ सु०

॥ ८ ॥ एकेंद्रियकी जड उखाडे, पशुजीव संतावेगा ॥ छते मारग लीलोतरी चांपे, पंगुला पग हो जावेगा ॥ सु० ॥ ९ ॥ सजमी शीलवंत जन केरी, निंदा कर हरखावेगा ॥ इण करणीसूं परभव मांही, गूंगो बोवडो थावे ॥ सु० ॥ १० ॥ करे वैदक औषध मात्रा, हिंसा करि निपजावेगा ॥ इणकरणीसूं परभवमांइ, खोजापण सो पावेगा ॥ सु० ॥ ११ ॥ वनस्पतिको छेदन भेदन, हाथसूं कर पोसावेगा ॥ इण करणीसूं परभव प्राणी, वहेरो पांगुलो थावेगा ॥ सु० ॥ १२ ॥ साधु साधवी श्रावक श्राविका, जिनका अवगुण गावेगा ॥ इण करणीसूं परभव मांइ, गुगो वहेरो हो जावेगा ॥ सु० ॥ १३ ॥ हिरण्य सुवर्णादिक धातु जे, जिनका आगर खोदावेगा ॥ इण अनरथसूं परभवमांही, गलत कोढ अंग आवेगा ॥ सु० ॥ १४ ॥ सावद्य ओषध भेखज केरो, अधिको संजोग मिलावेगा ॥ तिणसूं जस करतां पर उपर, अपजस कमावेगा ॥ सु० ॥ १५ ॥ खारी लूणका आगर खोदावे, लुणको विणज कमावेगा ॥ इण करणीसू परभवमांहे, आंख बावणी थावेगा ॥ सु० ॥ १६ ॥ सौम्य सुंदर नेत्र जे परनां, द्वेषथी मंद कर देवेगा ॥ तिनकरणसिूं परभवमांहिं, आंख मांजरी रहवेगा ॥ सु० ॥ १७ ॥ म्होटी काया देखि आपणी, अहंकार मन लावेगा ॥ इण करणीसूं परभवमांही, बावनी काया पावेगा ॥ सु० ॥ १८ ॥ डंड आकरो करे औरकू, अधिको त्रास वतावेगा ॥ इण करणीसूं परभव मांहि, रूढ मुंढ अंग थावेगा ॥ सु० ॥ १९ ॥ पंचेद्रिय जीव हणे निज हाथें, सुखसूं अधिक सरावेगा ॥ तिणकरणीसे परभवमांही, रोग भगदर थावेगा ॥ सु० ॥ २० ॥ दूसराके धन आतो देखी, बीच अंतराय लगावेगा ॥ तिण कर्मे धन इच्छा राखे, पण लक्ष्मी नहिं पावेगा ॥ सु० ॥ २१ ॥ तीव्रभावें मैथुन सेव्यां, पथरीका रोगज आवेगा ॥ कांटाने बिंधि माछला मारे, कंठमाल रोग थावेगा

॥ सु० ॥ २२ ॥ धूणी घाली जीव सतावे, हरस रोग दुःख आवेगा ॥ जुवारा बोवे घलडी तोडे, बाल घह पडजावेगा ॥ सु० ॥ २३ ॥ लांच लेइन झूठ बोल, सचाकू घबरावेगा ॥ तिणसू रोग घणो दु ख अगमें, लोकक नहिं दगावेगा ॥ सु० ॥ २४ ॥ कृतघ्न पणु कपट घणेरा, मित्रसू छलपणु लावेगा ॥ तिणसूं सुख सजोग मिलावे, विजाग आय पड जावेगा ॥ सु० ॥ २५ ॥ फल तोडी दोरामें प्रोइ, अधिको रूप दिखावेगा ॥ इण करणीसें परभवमांहि, खोटो वर्णज पावेगा ॥ सु० ॥ २६ ॥ कूवा वावडी सरवर जल का, वणावे पाल फाडावेगा ॥ इण करतव्यसें परभवमांहे, रोग पाठाको आवेगा ॥ सु० ॥ २७ ॥ काटवालको करम करे कोइ, वहोत प्राणी डर पावेगा ॥ तिणसू डरपगपणो घणो अगमें, मार घणेरी पावगा ॥ सु० ॥ २८ ॥ जूं मांकडादिक त्रेंद्रिय प्राणी, तावडे नाखीने भावेगा ॥ तिणसू खाज फूंणी अगमें, पीडा अधिकी पावेगा ॥ सु० ॥ २९ ॥ क्रोध घणरो करे और पर, झूठा आल लगावेगा ॥ तिणस मिथ्या सरधा करकें, झूठी वात जमावेगा ॥ सु० ॥ ३० ॥ घृत तेल मधु आदिकका वासण, उघाडा राखे रखावेगा ॥ सूत्र भणाने करे वेयावच्च, उलटा सो अवगुण गावेगा ॥ सु० ॥ ३१ ॥ कपट करिने परधन लेवे, मागे सव नट जावेगा ॥ तिण करणीसू परभवमाहे, स्त्री नपुसक थावेगा ॥ सु० ॥ ३२ ॥ पृथवीको करे खांडण पीसण, आरम अधिक करावेगा ॥ तिण करणीसू होय कादीयो, भव भव गोता खावेगा ॥ सु० ॥ ३३ ॥ माछलाको करे आहार घणेरो, जुवा अधिक संतावेगा ॥ तप अप मद करे तिण करने, तप अतरायस आवेगा ॥ सु० ॥ ३४ ॥ अविश्वासी कृसघन दुष्टी, मित्रद्रोही पणो लावेगा ॥ ज्ञान ध्यान तप जप करे बहुला, पण परने नहिं सुवावेगा ॥ सु० ३५ ॥ वचन कडा मधुरता बोली, जिणकों गर्भमें लावेगा

॥ तिणसें परभवमांही वचन सो, परकूं नहिं सुहावेगा ॥ सु० ॥ ३६ ॥ रूपको मद करे मनमांही, रूप भयंकर पावेगा ॥ कूड़ो कलंक देवे परजनकूं, खोटा आलज आवेगा ॥ सु० ॥ ३७ ॥ भाइ भोजाइ देराणी जेठाणी, सासूकी इर्ष्या लावेगा ॥ तिण करणी सें परभव मांहे, अणाकिधो अपजस आवेगा ॥ सु० ॥ ३८ ॥ आपणी थापे परकी उथापे,बे भरोसो मन लावेगा ॥ तिण करमें जिहां बेठे रहेवे, अणआदर पणुं आवेगा ॥ सु० ॥ ३९ ॥ लालच लोभ जो राखे घणेरो, क्रोध हिये नहिं मावेगा ॥ परका लाभमें धक्को देवे, अलाभपणो तस थावेगा ॥ सु० ॥ ४० ॥ मुंदो मुंदी फांसी देवे, परप्राणीने धावेगा ॥ हीणो शब्द अटकती बोली बोलतां अति घबरावेगा ॥ सु० ॥ ४१ ॥ सुस्वर कंठको गर्व किया सें, कराइ कररावेगा ॥ निर्वेद मीठी वाणी बोल्यांथी, सुस्वर शब्द सुहावेगा ॥ सु० ॥ ४२ ॥ तीव्रभावें मांस भक्षणथी, इंद्रिय बलहीण पावेगा ॥ तीव्रभावें मद्य पीयांथी, निंद्रा घणी संतावेगा ॥ सु० ॥ ४३ ॥ संजोगतणो विजोग पाड्यांथी, वछित वस्तु न पावेगा ॥ कूकड़ादिक मांस भक्षणसेंती, तनशक्ति घट जावेगा ॥ सु० ॥ ४४ ॥ भाखसीमांही रूंधी प्राणी, उपर खार भुरकावेगा ॥ इण करणीसूं परभवमांही मुको बोलो थावेगा ॥ सु० ॥ ४५ ॥ अनंतकाय कंद मूल भक्षणथी, रोणो घणोज आवेगा ॥ असन्नी पचेंद्रिय जीव हण्यांथी, हांसी नहिं समावेगा ॥ सु० ॥ ४६ ॥ तरुण पंचेंद्रिय मनुष्य घातसें, साधुने नहिं सुहावेगा ॥ विकलेंद्रियकी विराधना कीधां, सज्जनने नहिं सुहावेगा ॥ सु० ॥ ४७ ॥ प्रेम धरीने भोग भोगव्या, जोबनमें नार मर जावेगा ॥ स्त्री पुरुष संजोग मिलायां, नारी पुरुष मर जावेगा ॥ सु० ॥ ४८ ॥ दारु पियांथी दुर्गंध प्रसवे, कुड़ी साख भरावेगा ॥ काम करे सत चित्त लगाई, परने प्रतीत न आवेगा ॥ सु० ॥ ४९ ॥ दान पुण्य

दया नहिं पाले, दारिद्रपणो तस आवेगा ॥ देव गुरु धर्म खोटा सरध्या, प्रिय कुटुंब मरजावेगा ॥ सु० ॥ ५० ॥ गुणसीत्तर कोडा कोडी सागर, मोहणी थिति क्षय जावेगा ॥ तव इण चेतनकूं अंतसमे, धर्म करण मन थावेगा ॥ सु० ॥ ५१ ॥ एक कोडी सागर उपर, मोहणी थिति घट जावेगा ॥ तब उण प्राणीने धर्म ध्यानकी, किंचित्त रुचि नहिं आवेगा ॥ सु० ॥ ५२ ॥ तीव्रभावें कुशील सेवावे, मनमें अधिक हुपावेगा ॥ तिणसूं परधन संपति देखी, निःश्वास नाखि मरजावेगा ॥ सु० ॥ ५३ ॥ निलिका कुंड करावे तिण कर्में, छमोछम थानकमें जावेगा ॥ शिलावट कर्म तिणकर्में, रक्तपित्त कीडा पड आवेगा ॥ सु० ॥ ५४ ॥ खेत्र खेडावे हल हकावे, क्षुधा घणी उपजावेगा ॥ लीला झाडकी डाली कटार्यां, आंगुलि ओछी पावेगा ॥ सु० ॥ ५५ ॥ रगरेज पणाका कर्म किर्यापी, बोलतां जीभ अटक जावेगा ॥ लुहार कर्म पली तीव्र रोपसु, मृगीको झोलो आवेगा ॥ सु० ॥ ५६ ॥ गोबर सडावे उकरडी वधावे, छाणां थापे थपावेगा ॥ थूक लाल चुवे मुखसेंती, मुख दुर्गंध भमकावेगा ॥ सु० ॥ ५७ ॥ मात्रामांही करे मातरो, पायखानामें दिसा जावेगा ॥ तिणसूं नदी समुद्रमांही, सबक नाव डूब जावेगा ॥ सु० ॥ ५८ ॥ पायखानां झाडे तिण कर्में, बाल मरण मन भावेगा ॥ निवाण सुकावे तिणसूं नाकको खेल मूढामें आवेगा ॥ सु० ॥ ५९ ॥ शुल्या धान्य सेकावे भिंजावे लिपणे रोगी थावेगा ॥ झूठा सोगन खाया पृथवीमें, ओछे आउखे जावेगा ॥ सु० ॥ ६० ॥ हांसीमें झूठो वचन बोले, झूठोइम आल लगावेगा ओछे आउखे प्राणीमांही, उपजी बहु दुःख पावेगा ॥ सु० ॥ ६१ ॥ वनकाटी जे करावे प्राणी, कृत नपुंसक थावेगा ॥ कपास लोढावे घाणी करावे, सो वेश्याभव पावेगा ॥ सु० ॥ ६२ ॥ नरम वनस्पति फल फूलादिक, जो कोइ चूंटे

चूंटावेगा ॥ जोबन में धोला केसज आवे दांत दाढ झट जावेगा ॥ सु० ॥ ६३ ॥ फलचीरि मशालो भरिमांइ, भडलीगल गुंबड़ा थावेगा ॥घणा दिवसकी लूणी तपावे, दासी भवमांही सिधावेगा ॥ सु० ॥ ६४ ॥ कसाइपणां कर्म कियांथी नासुर तन पड जावेगा ॥ रसोइदार का पाप प्रभावे, भलु करतां बूराइ थावेगा ॥ सु० ॥ ६५ ॥ थोड़ो अपराधी नर छे तिण पर, खार लूण भुरकावेगा ॥ कीडीनांगरा उपजे तिण करमे, अधिक दुःख घबरावेगा ॥ सु० ॥ ६६ ॥ बाग वाड़ी वगीचा बणाइ फल फुलादिक तोड़ावेगा ॥ स्त्रीपणाका भवके मांहि, योनिशूल अंग थावेगा ॥ सु० ॥ ६७ ॥ फल चीरीने करे अथाणो, फूलण जीव सतावेगा ॥ तपस्या करे घणी दुःकर कारी, लोक प्रतीत न लावेगा ॥ सु० ॥ ६८ ॥ हरिया फल मंगाइने छेदे, दया घटमे नहिं लावेगा ॥ तिणसूं वस्तु चोरीने दूजो, उण उपर आल लगावेगा ॥ सु० ॥ ६९ ॥ सांठा पिलावे नगरने बाले, सोला रोग समकाल आवेगा ॥ कसाइ कर्मका हांसल लेवे, सो गर्भमें आड़े कटावेगा ॥ ॥ सु० ॥ ७० ॥ झूठो आल देवे साधु ने, असूजतो आहार बहोरावेगा ॥ ओछे आउखे नरभव पाइ, गर्भमांही गल जावेगा ॥ सु० ॥ ७१ ॥ आखी रातको मात्रो भेलो, करिने फेर ढोलावेगा ॥ तिणसू छोड़पणे नारीकूखमे, बारा वर्ष रह जावेगा ॥ सु० ॥ ७२ ॥ फुलमाला करावे कोइ, अगपर मर्दन करावेगा ॥ तपत् रोग उपजे तिण कर्मे, बलन बलन उठ जावेगा ॥ सु० ॥ ७३ ॥ किंचित् पुण्यकी करणी धारे, सीसाका आगर करावेगा ॥ धनवंतके घर जनम पायकें, भीख मांग कर खावेगा ॥ सु० ॥ ७४ ॥ तीव्र भावे मैथुन सेवे, दूजाने साह्य लगावेगा ॥ छोड़े मरी ने छोड़में उपजें, चोवीस वर्ष दुःख पावेगा ॥ सु० ॥ ७५ ॥ नानाविधका फूल तोड़्याथी, वंझा नारी थावेगा ॥ उगता अंकुरा जो

परप्राणी संतावेगा ॥ तिणसूं इणभव परभव मांही, अशाता वेदनी आवेगा ॥ सु० ॥ ९० ॥ देव गुरु संघ सूत्र धरमकी, निंदा कर हरखावेगा ॥ दर्शनमोहनी बंधे जिणसें, जैनधर्म नहिं पावेगा ॥ सु० ॥ ९१ ॥ तीव्रकषाय हिंसादिक कर्तव्य, पोतें करिने सो करावेगा ॥ चारित्र मोहणी बध पड्यांथी, संजम पद धसकावेगा ॥ सु० ॥ ९२ ॥ पंचेंद्रिय घात करे आहार मांसको, आरंभ परिग्रह बढ़ावेगा ॥ ए चारों बोल धारीयांथी चेतन, नरकगति दुःख पावेगा ॥ सु० ॥ ९३ ॥ माया गुड माया मृषावाणी, तोला मापा खोटा चलावेगा ॥ ए चारी बोले सो परभवमें, तिर्यंच गति दुःख आवेगा ॥ सु० ॥ ९४ ॥ भद्रिक परिणामी सरल स्वभाविक, विनीतपणे दया लावेगा ॥ ए चारी बोले मनुष्यमें उपजे, पुण्यथकी रिद्धि पावेगा ॥ सु० ॥ ९५ ॥ अज्ञान कष्ट अकाम निर्जरा, साधु श्रावकपणो ठावेगा ॥ ए चारी बोले पुण्य संचके, देवगति में जावेगा ॥ सु० ॥ ९६ ॥ जिनमारग रागी दया परीणामी, शिवपुर पदवी चहावेगा ॥ ए तिहूं बोले नाम कर्मसु, बंधणथी सुख पावेगा ॥ सु० ॥ ९७ ॥ मिथ्या उपदेशें दान न देवे, धर्म दाय नही आवेगा ॥ इत्यादिक अनुभव परिणामें, अशुभ नाम बंध जावेगा ॥ सु० ॥ ९८ ॥ जाति कुलादिक आठ मद कियां, नीचवस्तु सो पावेगा ॥ मद त्यागयांथी ऊंच गोत्रको बंधण ऊंच सो थावेगा ॥ सु० ॥ ९९ ॥ दान लाभ अंतराय पांचसो, दियांथी अंतराय रह जावेगा ॥ अंतराय तोड्यां वस्तु मिले सो, सुख संपत्त रिद्धि आवेगा ॥ सु० ॥ १०० ॥ भाद्रिक भाव वली अल्पआरंभी, माइतकी भक्ति मनावेगा ॥ तिण करमसूं सो नर मरिने, युगलीया मनुष्यमें जावेगा ॥ सु० ॥ १०१ ॥ देव गुरु शुद्ध धर्म आराधी, उत्कृष्ट भाव चढ़ जावेगा ॥ गोत्र तीर्थंकर बंध पड़ियासूं, त्रिजग पूजनिक सो थावेगा ॥ सु० ॥ १०२ ॥ ज्ञान दर्शन चारित्तर तपस्या, करकें

घनघातिक थावेगा ॥ केवलज्ञान ने केवल दरिसण, सब जग जाणक थावेगा ॥ सु० ॥ १०३ ॥ मन वचन काया त्रिजोग रोककें, शैलेशी परिणाम चढावेगा ॥ अजर अमर अविकार, निरजन सिद्धकी पदवी आवेगा ॥ सु० ॥ १०४ ॥ जैसा जैसा कर्म करेगा, तैसा तैसा पावेगा ॥ मात पिता धन कुटुंब कबीला, पात काइ न पढावेगा ॥ सु० ॥ १०५ ॥ हलूकर्मी भवि प्राणी जिन क, जिणवाणी हिए सुहावेगा ॥ भारीकर्मी अनत ससारी, हासीमें वात उडावेगा ॥ सु० ॥ १०६ ॥ कर्मविपाक सुण सरधे कोइ, पाप कर्म घटावगा ॥ तिलोकरिख कहे सो भवि प्राणी, अजर अमर पद पावेगा ॥ सु० ॥ १०७ ॥ कलश ॥ उगणीशें गुण चालीशवेपें माघशुक्ल त्रयोदशी ॥ दश दक्षिण पेठ मनचर, सूत्रवाणी शशितम वसी ॥ एकसो बत्तीस बोले नीरणो, करी तिलोकरिख कहे ॥ धन जिनागम आराधतो लहे, शिवसिरी निँ भी लहे ॥ १ ॥ इति कर्म विपाकमाला सज्झाय सपूर्ण ॥

॥ अथ उपदेश सवैया, गाम उपर लिख्यते ॥

अमदानगर पाई, करज गाम जावे मती, कूडगाम वसियासु, तले गाम जावेगा ॥ रत्नापुर वासी तु तो, हियदामें सोच कर, सो नई विचारेगा तो वलापुर पावेगा ॥ कागुणीके काज तु तो, फिरत लाखण गाम, पुना विना कोरे गाम, छद्दा होय जावेगा ॥ कहत तिलोक सु तो, सदरका पथ धार, बाकी कीओ वाट, रिपा धुळे गाम आवेगा ॥ १ ॥ राय गाम छोड मती, लाम गाम दर राख, भाम गाम लिया विना, घुमरी लगावेगा ॥ देव गढ सहाय करो, छोड दे बावल वाडो, भाण गाम सोध कर, निराळो सिधावेगा ॥ मनवाड कर ले तो, कोळ गाम वास मिले, घाटसरस मिल्यो तोय, जाते पछतावेगा ॥ कहत है तिलोकरिख, सांइ खेडो ध्यान कर, कुदेवाडी छोड कर, रामपुरी पावगा ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ चउद नियम सज्झाय प्रारंभः ॥

श्रीसिद्धचक्रजीने पूजो रे, जिनमारग जाणो ॥ सुधो ज्ञान विचारो, जासूं जनम सुधारो ॥ चउदे नियम चितारो, संवरमारग धारो रे भविका, चउद नियम चितारो ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ श्रीजिनमारग तारक जगमें, अनुभवज्ञान विचारो ॥ जो संयमपदकी नहीं शक्ति, तो निरर्थक पाप निवारो रे भविका ॥ च० ॥ सं० ॥ २ ॥ लूण पाणी हरि बीजादिक वस्तु, सचित्त होवे जो कोइ ॥ तिनरी मर्यादा संख्या करो लीजें, तृष्णा रोक्यां सुख होइ रे ॥ भ० ॥ च० ॥ सं० ॥ ३ ॥ स्वाद वले सो अलग द्रव्य लखो, रोटी पुरीदिक जाणो ॥ सचित्त अचित्त दोइ अणगणतीमें. उपरांतर पच्चक्खाणो रे ॥ भ० ॥ च० ॥ सं० ॥ ४ ॥ दूध दही घी तेल गोल संक्कर, पांच विगय परमाणो ॥ धार विगय खंद दो भेद इणमें, इच्छा रोक व्रत ठाणो रे ॥ भ० ॥ च० ॥ सं० ॥ ५ ॥ पगरखी मोजा पावडी आदिक, नीकी मरजादा कीजें ॥ आपकी परकी गणती करीजें, अधिकी नही पहेरीजे रे ॥ भ० ॥ च० ॥ स० ॥ ६ ॥ लूंग इलाइची पान सुपारी खावे मुख शोधन काजे ॥ तेल तंबोलकी संख्या करीजे, उपरांत नही खाजे रे ॥ भ० ॥ च० ॥ स० ॥ ७ ॥ पहरण ओढन कारण वस्त्र, शिरपाव संख्या करीजे ॥ कारण विशेषें जो संगटो लागे, सोचिने त्याग करीजे रे ॥ भ० ॥ च० ॥ सं० ॥ ८ ॥ जाइ जुइ आदिक फुलसुगंधी, अत्तर विविध प्रकारो ॥ इच्छा उपरांतका त्याग करीजे, भांगा कारण विचारो रे ॥ भ० ॥ च० ॥ स० ॥ ९ ॥ वैल घोडा रथ दंती पालखी, इत्यादिक वाहन काइ ॥ गिणती संख्या करो स्ववश, धारजो व्रतविध जोइ रे ॥ भ० ॥ च० ॥ सं० ॥ १० ॥ खाट पाट पाटला चौकी, सुवो बैठो बीछावो ॥ ते सेज्यानी संख्या करवी मनमें, अधिका ते न लगावो रे ॥ भ० ॥ च० ॥ सं० ॥११॥ केशर चंद्न कुंकु आदिक जे, विलेपणमें गणाइ ॥ गिनती कीजें मन-

तृष्णाको, विरथा अधर टालो रे ॥ भ० ॥ च० ॥ स० ॥ १२ ॥ दिवस तथा निशिपरकी संख्या, त्यागो कुशील नर नारी ॥ औरदिन त्याग करो मन माखे, विरथा पाप टालो रे ॥ भ० ॥ च० ॥ स०॥ १३ ॥ उंची नीची तिरछीदिशि करी, कर परिमाण सीयाणो ॥ पांच आश्रव त्याग कर लीजो, पालो श्रीजिन आणो रे ॥ भ० ॥ च० ॥ स० ॥ १४ ॥ हाथ पाव मुख धोवणता, दश स्नान कहावे ॥ सवस्नान सरब अंगधोवण, त्याग करी सुख होइ रे ॥ भ० ॥ च० ॥ स० ॥ १५ ॥ भोजन पाणीका वजनकी सख्या, उनमानसु त्याग करिये ॥ मनशुद्ध राखो निर्मल पालो, अविरतिशु अति डरीये रे ॥ भ० ॥ च० ॥ स० ॥ १६ ॥ इणविध नित साज सवेरे, आदि करो नित्य त्यागो ॥ नाम नेम प्रमाद छोडीने, मोहनिंद्राथकी जागो रे ॥ भ० ॥ च० ॥ स० ॥ १७ ॥ उगणीसें गुणचालीश फागण, शुकल पख छठ जाणो ॥ तिलोकरिख कहे जिन आण आराधा, लेशो पद निर्वाणो रे ॥ भ० ॥ च० ॥ स० ॥ १८ ॥ इति ॥

॥ अथ धर्मपर्व तथा लौकिक पर्व तथा अध्यात्म स्वाध्याय लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम ॥

॥ पर्युसणपर्व स्वाध्याय प्रारम ॥

॥ सिद्ध चक्रने पूजो ॥ ए देशी ॥ पर्वपजूसण कीजो रे भविका, नर भव सफल करीजें ॥ ए टेक ॥ पजूसण सम परव नहिं दूजो, जैन धरम धंम साचो ॥ इणने जा कोइ सेंधे भावशु, मिटे कषाय की आंचो रे ॥ भ० ॥ प० ॥ १ ॥ आठ करमदल वरण कारण, आठ मदके सब छोडो ॥ अष्ट प्रवचन रचन अष्टसिद्धि, अष्ट गुणातम जोडो रे ॥ भ० ॥ प० ॥ २ ॥ अष्ट दिवस अष्ट जाम निरंतर, धर्मध्यान चित्त ध्यावो ॥ वेर विरोध जो होवे अपरथुं, उपतिने

ज्ञाय खमावो रे ॥ भ० ॥ प० ॥ ३ ॥ क्रोध क्लेश विकथा सव वरजो, डरजो आश्रव करणी ॥ अष्टम तप तो अवश्य करीजे, दुःख टल जाये वेतरणी रे ॥ भ० ॥ प० ॥ ४ ॥ इण दिन त्रस थावर केरी जतना, चार खंध शुद्ध पालो ॥ आश्रव टालि इंद्रिय पंच जीतो, पंच प्रमादके टालो रे ॥ भ० ॥ प० ॥ ५ ॥ विणज व्यापार करो मत तृष्णा, अपर गामें नहीं जाजे ॥ स्नान मंजण हजामत नहिं कीजें, सुकृतमें चित्त लगाजे रे ॥ भ० ॥ प० ॥ ॥ ६ ॥ पर्व निमित्तें लीपण छावण, न्हावण धोवण वरजो ॥ खांडण पीसण रांधण सीधण, हिंसा करतब सुं डरजो रे ॥ भ० ॥ प० ॥ ७ ॥ सामायिक पडिक्कमणो, वखत वखत नित्य साधो ॥ देव गुरु धर्म तत्त्व ए तीनुं, भाव भगतिशुं आराधो रे ॥ भ० ॥ प० ॥ ८ ॥ सहस्रकाम संसारका छोडो, गुरुमुख सुत्र सुणीजे ॥ हिरदा में धारजो एक मने शुद्ध, उंघ आलस सो तजीजे रे ॥ भ० ॥ प० ॥ ॥ ९ ॥ सार पासा चोपड मत खेलो, खेलो धर्म बागमांही ॥ संवत्सरीको उपवास म छोडो, प्राण रहे जब तांई रे ॥भ० ॥ प० ॥ १० ॥ इण विध करणी करजो उछगे, जिन आगममे जो वरणी ॥ तिलोकरिख कहे सुगुणा जनसेंती भवजल तरणी करणी रे ॥ भ० ॥ प० ॥ ११ ॥ इति ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीयअध्यात्मपर्व दशहरा स्वाध्याय प्रारंभः ॥

॥ लावणीकी चालमें, ॥ विजय दशमी दिन विजय करो तुम, ज्ञानदृष्टि करनारी ॥ धर्म दशहरा कर लो उमंगसें, मिथ्यामोह रावण मारी ॥ ए टेक ॥ ए संसार सागरके अंदर, कर्मरूप अब थब पानी ॥ भर्म रूप पडे भरतइर् इसीमें, डूब जाता जहां जग प्राणी ॥ तीन दड त्रीकूट द्वीप है, लालच लंक बंक वणी ॥ महामोह रत्नश्रवा नामक, राक्षस राजा इसमें

धणी ॥ क्लेश केकसी राणी है उसकी, अकलदार समजो जहारी ॥ धर्म० ॥ १ ॥ मिथ्यामोहनी उसका फर्जंद, दश मिथ्या दश आनन है ॥ वीस आश्रवकी भुजा है उसके, कपट विद्या की खानन है ॥ सम्यकत्व मोहनी बिभीषण दूजा, नदन सो कुछ है न्यायी ॥ मिश्रमोहनी कुंभकर्ण ए, लघपिच वातमें अधिकाई ॥ महामोहके ए तिह नदन, समझो सुगुणा नर नारी ॥ धर्म० ॥ २ ॥ परपंच नाम मदोदरी नामें, मिथ्यामोह रावन राणी ॥ विषय इन्द्रजीत अरु मेघवाहन, मिथ्या रावणके सुखदाणी ॥ कुमति नाम चन्द्रनखा बहन है, कठिन क्रोध खरके व्याही ॥ दूषण दूषण तीन शल्य त्रिशिरा, ए दोनुहि उसके भाइ ॥ सज्वलतिक चन्द्रनखा सबुक, कलु एक आयो हुशियारी ॥ धर्म० ॥ ३ ॥ ज्ञानरूप सूर्यहंस खड्गकुं, साधनकी दिलमें आइ ॥ मात पिताका हुक्म न माना, रहा वो उपशम रणमाइ ॥ उसी वखतमें राय राजगृहि, दश लक्षण दशरथ राया ॥ मखर भावना राणी कौशल्या, धर्मराम पुत्र आया ॥ समकित सुमित्रा राणी दूसरी, सत लक्ष्मणकी महतारी ॥ धर्म० ॥ ४ ॥ सुमति सीतासें धर्मरामका, वहोत ठाठसें विवाह भया ॥ एक दिवस वो पिता हुकमसें, तिनुही सजम वनमें गया ॥ सत लक्ष्मण वो खड्ग पकड कर, सजल सबुकका शिर धाया ॥ कुमति चन्द्रनखा कही पतिसु, खर दूषण त्रिशिरा धाया ॥ सतलक्ष्मण तब चढे सामने, उन तीनुकुं लिया मारी ॥ धर्म० ॥ ५ ॥ मिथ्यामोह रावणके पास यो, सुमति सीता की बडाइ ॥ करी वहोत तब लालच वश वहां, चल आया लंका साई ॥ छले विद्याकी नाद सुना कर, सुमति सीताकी किवि है चोरी ॥ राम लक्ष्मण जब जाना भेद ए, सोचे अब लानी है दोरी ॥ मूठ साहसिकके दर्दि है उसकी, सतलक्ष्मणनें करी खुवारी ॥ धर्म० ॥ ६ ॥ संतोषसुग्रीव जब भया पक्षपर, वहोत भूप उसकी संगें ॥ जाम जांबुवाहन नील

नलादिक, सुमन नाम हनुमंत अंगें ॥ खबर लाया वो सुमति सीताकी, वहुत जोरावर दुनियामे ॥ दान शीयल तप भावकी सेना, ले के गया लंका ठामे ॥ मिथ्यारावण सुनी वात ए, किवी आपकी हुशियारी ॥ धर्म० ॥ ७ ॥ चार कषाय राक्षस दल भारी, कुध्यान धजाके फरांवे ॥ अपकीर्त्तिका वंज नगारा, विकथाका कडखा गावे ॥ कुशील रथसे वेठा हुशियारी, सात व्यसन शस्तर धारे ॥ राग द्वेष उमराव जोरावर, सहज सुभटसे नहिं हारे ॥ नय नेजा सझाय घोष दे, राम आय चढ तिनवारी ॥ धर्म० ॥ ८ ॥ सत लक्षमण तव धीरज धनुष ले, वेठे शीलरथके मांइ ॥ अरू वरू जव मिले आन कर, मिथ्यारावणकुं रीस आइ ॥ अज्ञानचक्र मेला लक्षमण पर, जोर चला नहिं लीगारे ॥ ज्ञानचक्र जव मेला हरि ने, एकदम में रावण मारे ॥ राम लक्षमणकी जीत भइ जव, जगमे भया जय जय भारी ॥ धर्म० ॥ ९ ॥ सुमति सीताकु ले कर आये, मुक्ति अयोध्या राज करे ॥ जन्म मरण भय दुःख मिटे जिहां, राम राजा सो जगमे खरे ॥ संवत उगणीसे साल अडातिसका, पेठ आंवोरी दक्षिणमांइ ॥ विजयदशमी दिन कीवि लावणी, समझदारके दिल भाइ ॥ तिलोकरिख कहे सत्यरामायण, धर्म पर्व यों सुखकारी ॥ धर्म० ॥ १० ॥ इति ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय धनतेरश अध्यातमस्वाध्याय प्रारंभः ॥

॥ सुख देख्यो हम पारसको ॥ ए देशी ॥ देशी केरवामें छे ॥ ऐसी धनतेरश कर लीजो, जो चाहो थें धनको भंडार रे ॥ भलां रे ज्ञानी ॥ चा० ॥ ए० ॥ ए टेक ॥ १ ॥ कातक कहे थे कांतक रहिया, धन तेरस सुविचार ॥ भलां रे ज्ञानी, धनतेरश सुविचार रे ॥ ए० ॥ ॥ २ ॥ आहिंसा सत्य दत्त ब्रम्ह अममत्व, पंच माहाव्रत सार ॥ भ० ॥ पं० ॥ ए० ॥ ३ ॥ ईर्जा भाषा एषणा आदिक, समिति छे पंच प्रकार

॥ भ० ॥ स० ॥ ऐ० ॥ ४ ॥ मन वचन काया तीन गुप्ति, ए नेरस सुखकार ॥ भ० ॥ ए० ॥ ऐ० ॥ ५ ॥ खति मुत्ति अज्जव महव, त्रीजे अगे कह्या द्वार ॥ भ० ॥ त्री० ॥ ऐ० ॥ ६ ॥ ए चउ द्वार खुला शिवमदिर शिवलक्ष्मी है तैयार ॥ भ० ॥ शि० ॥ ऐ० ॥ ७ ॥ पाप कीयासु लक्ष्मी जावे, शका नहिं है लगार ॥ भ० ॥ श० ॥ ऐ० ॥ ८ ॥ तिलोकरिख कहे शिवधन थिर है, खरचता आवे नहिं पार ॥ भ० ॥ ख० ॥ ऐ० ॥ ९ ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ रूपचउदश अध्यात्मस्वाध्याय प्रारभ ॥

॥ धन धन आज दिवस भलें उग्यो पर्व दीवाली केरो रे ॥ ए देशी ॥ एसी रूपचउदश नित नित कीजें, निजरूप प्रगट करीजें रे॥ इद्रिय मन मुडन करी लाभें, जप तप स्नान करीजें रे॥ ऐ० ॥१॥ पापको मैल पखालन कीजें, सुमन साबु लगाजें रे ॥ धीरज धोती सुमत घाघो, सवरपाग शिर छाजे रे॥ ऐ० ॥ २ ॥ दया दुप्पटी किरियाको अत्तर, धमध्यान सोला भदो रे ॥ ए सोला शिणगार सजणकी चित्तमें राखा उमेदो रे ॥ ऐ० ॥ ३ ॥ सत्यवचन तबोल सुहावे, तत्त्वको तिलक करीजें र ॥ ज्ञानको दीपक भमकी बाती, कर्मको तल पूरीजें रे ॥ ऐ० ॥ ४ ॥ उगणीसें मडातिश रूप-चउदश दिन, पह सझाय बणाइ रे ॥ तिलोकरिख कहे रूप, जो चाहो, तो इम करो भाइ धाइ रे ॥ ऐ० ॥ ५ ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ अथ पचम दीपमालिका अध्यात्म स्वाध्याय प्रारम ॥

॥ मानवजन्म मानवजन्म रे रतन तेंने पायो रे ॥ए देशी ॥ दीपमाला परव ऐसो करीयें र, सिद्ध लक्ष्मी वरीयें रे ॥ दी० अदर ॥ ए टे० ॥ ग्रन्यातम घर निर्मल करियें कपायकी धूल परहरियें रे ॥ स० ॥ आ० ॥ खाड पूरावो, स्याग लींपण लींपायो गुण रग लगावो ध्यार रे ॥ दी० ॥ पुण्य पापके लेखा लगावो, पापको खातो घटावो। २॥ मर रे ॥ र

गादी बिछावो, गुप्ति तकिया बैठावो, शल्य धूल उडावो रे ॥ दी० ॥ २ ॥ करुणाको दीपक धर्मकी वाती, समकित ज्योति सुहाती रे ॥ कर्मतेल पूरावो, मिथ्यातम सो नसावो, सुज्ञान दीपावो रे ॥ दी० ॥ ३ ॥ सत्यको कुकु विनयकी पिंगाणी, किरियाकी केसर घसाणी रे ॥ पूजो बही जिन वाणी, शुद्ध न्याय बताणी, भविजन सुखदाणी रे ॥ दी० ॥ ४ ॥ क्षमाका खाजा ने प्रेम पतासी, समता का गुंजा विमासी रे ॥ संवर सेरणी बनावो, आश्रव मैल छटावो, अति रुचि करि खावो रे ॥ दी० ॥ ५ ॥ तत्वको तिलक लिलाडें लगावो, सजमको शिरपाव बणावो रे ॥ तप शीयलको गेणो, पान मधुगिरा लेणो, मानो सतगुरु केणो रे ॥ दी० ॥ ६ ॥ उगणीसें अड़तीस साल बखाणो, दीपमालिका दिन जाणो रे ॥ तिलोकरिख दरसावे, भविजन मन भावे, दया धर्म दिढावे रे ॥ दी० ॥७ ॥ इति ॥५॥

॥ अथ पंचम दीपमालिका द्वितीय अध्यात्मस्वाध्याय प्रारंभः ॥

॥ देशी प्रभाती ॥ मंगलमाला पर्व दीवाली, भविजन भावें करजो रे ॥ मंगलमाला० ॥ ए टेक ॥ मोहणीजाला कर्मको कचरो, संवर बुहारीसुं हरजो रे ॥ धर्मकी खाड मिटावो आगमसुं, शुद्ध उत्तर ठस भरजो रे ॥ म० ॥ १ ॥ शुक्ललेश्या खड़ी भावना भींतकें, चित्त लगाई ओसरजो रे ॥ पंच आचारका रंग लगावो, ज्ञानको दीपक करजो रे ॥ मं० ॥ २ ॥ कर्मको तेल कुध्यानकी वाटी, समकित ज्योतिसुं सरजो रे ॥ समताको ढक्कण भावना फाणस, तृष्णा वायुके वरजो रे ॥ मं० ॥ ३ ॥ क्षमाकी गादी सुमतिका तकीया, गुप्ति मिठाई आचरजो रे ॥ धर्मको नाणो जीव कोथली, मिथ्या चोरसुं डरजो रे ॥ मं० ॥ ४ ॥ सतरा संजम पूजा रचावो, मेटो पापको करजो रे ॥मोक्षनगरकी हुंडी चलावो, सदा सरापी गरजो रे ॥ मं० ॥ ५ ॥ तिलोकरिख कहे सुगुणा नरने, पापदीवाली बरजो रे

॥ धर्मदीवाली शिवसुखदाता, सो नित नित आदरजो रे ॥ म० ॥ ६ ॥ इति ॥ ५

॥ अथ षष्ठ अनुभव सक्रांतिपर्व स्वाध्याय प्रारभ ॥

॥ न्यालदेकी देशीमें ॥पर्व सक्रांति मनावियें जी २ कांइ, अनुभव दृष्टि लगाय ॥ जिम सघति लहे शाश्वती जी २ कांइ, कर्मी रहे नहिं कांय ॥ प० ॥ १ ॥ ज्ञानरवि वृद्धि होवे जी २ कांइ, कुमति रयणी घटत ॥ समकित किरण पसरे घणी जी २ कांइ, मिथ्या है मालो गलत ॥ प० ॥ २ ॥ तृष्णाजलहानी होवे जी २ कांइ, सतोप भूमि देखाय ॥ धर्मदिवस म्होटो हुवे जी २ कांइ, भविजनने सुखदाय ॥ प० ॥ ३ ॥ तपस्यातिल संग्रह करो जी २ काइ, समता सक्कर मिलाय ॥ प्रेमकी पापड़ी बणावजो जी २ कांइ, धीरजकी थाली बनाय ॥ प० ॥ ४ ॥ क्षमाको खीच बनावजोजी २ काइ, दयारूपी दूध बनाय ॥ मेवो मिलावो शुभ मन तणो जी २ काइ, हिरदे हांडीके मांय ॥ प० ॥ ५ ॥ तत्त्वका तदुल शुद्ध करो जी २ कांइ, इन्द्रिय मनरूपी दाल ॥ खिचडी इण विध राधजो जी २ काइ, धर्मरुचि घृत डाल ॥ प० ॥ ६ ॥ दान अभय नित दीजीये जी २ काइ, पालो शीयल अखंड ॥ बारेई भावना भावजो जी २ काइ, छोडो मिथ्या अफड ॥ प० ॥ ७ ॥ उगणीसें गुणचालीसकी जी २ काइ, पोप शुध्द पंचमी जाण ॥ तिलोकरिख कहे पूना शहरमें जी २ काइ, धर्म सक्रांति वखाण ॥ प० ॥ ८ ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अथ सप्तम वसतपचमी अध्यात्म स्वाध्याय प्रारभ ॥

॥ देशी वसतमें छे ॥ सदा वसतपचमी ऐसी कर रे ॥ स० ॥ ए टेक ॥ काया नगर मनमहेलके मांही भावनाचित्र अदर रे ॥ केवल भूप सुमति पट्टराणी, धर्म नामें मत्रीसर रे ॥ स० ॥ १ ॥ चोकस चपरासी दान हलकारो समकित कर दलवार रे ॥ साधु साध्वी श्रावक श्राविका, तीर्थसभा रही भर रे ॥ स० ॥ २॥ मन मादल

शुद्धध्यानकी भेरी, सुगुण वाजा विचित्र रे ॥ पंच सज्झाय सूत्र अनुरागें, धर्मकथासुं उच्चर रे ॥ स० ॥ ३ ॥ संवर अंबके ज्ञान मंजरी ले, सत्यवचन पत्तर रे ॥ वंदरमाल कर त्याग डोरमें, बांधले अपने घर रे ॥ स० ॥ ४ ॥ शील शिरपाव शरमको भूषण, सुजस गुलाल प्रवर रे ॥ हिरदेको हौद संतोषको पाणी, शुभ लेश्या रंग धर रे ॥ स० ॥ ५ ॥ साधर्मी अंग रंग छिटकावो, दीजें अति आदर रे ॥ इण भवें शोभा परभव संपत, हिंसापर्व परिहर रे ॥ स० ॥ ६ ॥ उगणीसें अड़तीस बसंत पंचमी दिन, अहमद नाम नगर रे ॥ तिलोकारिख कहे ऐसी करे जो पंचमी, सो बसंतपंचमी गत नर रे ॥ स० ॥ ७ ॥ इति ॥ ७ ॥

॥ अथ अष्टम अध्यातम स्वाध्यायफाग प्रारंभः ॥

॥ देशी फागकी छे ॥ ऐसो खेलजो हांरे ॥ भविका ॥ ऐ० ॥ फाग सदा सुख पावो ॥ ऐसो खेलजो० ॥ ए टेक ॥ धर्म बाग फूली समकित सरध्दा, बिरति कोयलनाद करे ॥ ऐ० ॥ १ ॥ कुमति होलिकाने दीजो मंगलायने, कर्मकी धूल उड़ावो ॥ भ० ॥ ऐ० ॥ २ ॥ समता सरोवरमें स्नान करो सुगुणा, पापको मैल पखालो ॥ भ० ॥ ऐ० ॥ ३ ॥ धीरजको धोतियो थें पहेरो घणा प्रेमसुं, जयणा को जामो थें पहेरो ॥ भ० ॥ ऐ० ॥ ४ ॥ परमारथ पागड़ी अपोगकी उपरणी, शीलको शिरपेच थें बांधो ॥ भ० ॥ ऐ० ॥ ५ ॥ क्षमारूप छोगो मेली धाटो बांधो सांचको, तप रूपी तुर्रो झूकावो ॥ भ० ॥ ऐ० ॥ ६ ॥ करुणाका कुडल चोकसीका चोकडां, भक्तिकी भमरकड़ी पहेरो ॥भ० ॥ ऐ० ॥७॥ दशविध धर्मको हार हिये पहेरजो, दान मान कडा हाथ पहेरो ॥भ०॥ए०॥८॥ वयावच्च विंटी दश आंगुलीमें पहेर लो, किरियाको कंदोरो थें पहेरो ॥ भ० ॥ ऐ० ॥ ९ ॥ भावकी भांगकुं थें घोंट घोंट पीवजो, संतोषकी सक्कर मिलावो ॥

॥ म० ॥ पे० ॥ १० ॥ धरम कुटुंब संग सुमति सोहागण, हिल मिल गेर खूब खेलो ॥ म० ॥ पे० ॥ ११ ॥ सज्झायकी डफ लो ने झांझ लो भजनकी, प्रभुगुणि ख्याल खूब गावो ॥ म० ॥ पे० ॥ १२ ॥ लोभरूप होलीजी महानिर्लज जगमें, जिणके थें खुब निरसावो ॥ म० ॥ पे० ॥ १३ ॥ जिनवाणी पाणी वैराग रंग घोलजो, उपदेशकी पिचरकी भर मारो ॥ म० ॥ पे० ॥ १४ ॥ शुक्कलेश्याकी झोली गुलाल शुभध्यानकी, भर भर मुट्ठा उडावो ॥म० पे० ॥ १५ ॥ विनय विवेकका थें वाजा रे वजावजो, नेमका निसाण थें फर्रावो ॥ म० ॥ पे० ॥ १६ ॥ सवरकी सूखड़ीने गोठ करो ज्ञानकी, गेर काढो च्यार तीरथ ॥ म० ॥ पे० ॥ १७ ॥ तेरे क्रियाको थें न्हावण करजो, दयाकी दुकान मांड बेठो ॥ म० ॥ पे० ॥ ॥ १८ ॥ येसो फाग रमो साल दर साल थें, सिद्धपुर पाटणमें वसो ॥ म० ॥ पे० ॥ १९ ॥ भारी करमा जाके दाय नहिं आवसी, हलुकरमी सो हरखावे ॥ म० ॥ पे० ॥ २० ॥ जो नहिं मानसो तो आगे पछतावसो, सतगुरु ज्ञान बतावा ॥ म० ॥ पे० ॥ २१ ॥ उगणीसें तेतीस फागण वदिमें, बीज बुधवार दिन आयो ॥ म० ॥ पे० ॥ २२ ॥ तिलोकरिख कहे मिरज गाममें, धर्मको फाग सरसायो ॥ म० ॥ पे० ॥ २३ ॥ इति ॥ ८ ॥

॥ अथ नवम श्रीलीलासप्तमी अध्यात्म स्वाध्याय प्रारंभ ॥

॥ भावपूजा नित्य कीजीयें ॥ ए देशी ॥ पूजी जिनवाणी माता शीतला, शीतल चित्त करो भावें जी ॥ संसार दावानल उपशमे, भविजन सुणी उलसावे जी ॥ पू० ॥ १ ॥ चतुराइ चूलो चापजो, कर्म इंधन करो भावे जी ॥ तप अग्नि सें फूंकजो, काया कढाई चढावो जी ॥ पू० ॥ २ ॥ करुणारस घृत पूरजो, निर्ममता करो मेंदो जी ॥ क्षमारूप खाजा करो, सुगुण गुंजा उमेदो जी ॥ पू० ॥ ३ ॥ परमारथ पूडी करो, पुण्य पापड खीच जाणो जी ॥ संतोष

रूप करो लापसी, समता सक्कर वखाणो जी ॥ पू० ॥ ४ ॥ धर्म मोद्ना मोद्क करो, जयणा जलेवी वणावो जी ॥ प्रतीति रूप पेडा करो, प्रेमका घेवर आणो जी ॥ पू० ॥ ५ ॥ दयाको दूध ओटाव जो, दानको दहि जमावो जी ॥ सुबुद्धिरूप वरफी भली, अपोग का ओला वणावो जी ॥ पू० ॥ ६ ॥ वड़ा करो विज्ञानका, गुलगुला गुप्ति रसालो जी ॥ भावना रूप भुजीया करो, हेतु दृष्टांत मसालो जी ॥ पू० ॥ ७ ॥ गुरुसेवा रूप सेवां सीरे, तत्त्वको तेवन टावो जी ॥ भजन पकोड़ी चरपरी, सुकथा कचोरी सरावो जी ॥ पू० ॥ ८ ॥ चोकसी चोखा आणीने, रूप रुचराई करीजो जी ॥ घाट राव करबो करो, हिरदे हांडीमें धरजो जी ॥ पू० ॥ ९ ॥ स्नान करो उपशम जलें, पापको मैल पखालो जो ॥ शीलशणगार सजो शिरें, कषाय अग्निके टालो जी ॥ पू० ॥ १० ॥ सुगुरु केण कलशा विषे, ज्ञानको जल भर लेवो जी ॥ मेदी ग्रहो अनुमोद्ना, सुमति सोपारी सो ठवो जी ॥ पू० ॥ ११ ॥ थिरपरिणाम थाली करो, विवेककी बाटकी जाणो जी ॥ विनय पिंगाणी वणावजो, सत्यको कुंकु घोलाणो जी ॥ पू० ॥ १२ ॥ अक्षय गुण आखा चढ़ाईयें, प्रश्नका पान विचारो जी ॥ कीर्तिफूल शुभ वासना, ध्यानकी धूप उदारो जी ॥ पू० ॥ १३ ॥ शुक्ल लेश्याकी रुइ करो, नेम को नैवेद्य लीजो जी ॥ अव्रतरज परिटालवा, त्यागको गरणो ढांकीजो जी ॥ पू० ॥ १४ ॥ परमेष्ठी गुण शुद्ध दाखिया, गावजो गीत रसालो जी ॥ पूजा करो इम सासती, सकल करम हाय टालो जी ॥ पू० ॥ १५ ॥ धर्म पुत्र चोखो रहे, रिद्धसिद्ध बहु थावे जी ॥ शिवरमणी वरे सासती, दुःख कदे नहिं आवे जी ॥ पू० ॥ १६ ॥ उगणीसें अडतिस शीतला दिने, किधी एह सज्झायो जी ॥ तिलोक-रिख कहे अध्यातमपणो, भविजन के मन भायो जी ॥ पू० ॥ १७ ॥ इति ॥ ९ ॥

॥ अथ दशम अध्यात्मगिणगोर स्वाध्याय प्रारंभ ॥

॥ देशी तीजकीमें छे ॥ शिवरमणीका साहेबा, यें तो देखोने एह गिणगोर ॥ मुगतिका साहेवा थे तो, राखो ने एह गिणगोर ए टेक ॥ धीरजको करो सरावलो जी काइ, क्षमामिटी अनुभव नीर ॥ सत्यको बीज यें बोवजो कांइ, सुख अकूरा श्रुद्धि थोर ॥ शि० ॥ १ ॥ केवलज्ञान सरोवर तणो जी काई, जल हिरदे कलश मांय ॥ श्रद्धा नारी सोहागणी कांइ, तिण सिर दीजा चढाय ॥ शि० ॥ २ ॥ भावना नार सोहासिणी कांइ, भूषण सुभअध्यवसाय ॥ गीत गुणी गुण गावणां कांइ,सुजसका बाजा बजाय ॥ शि० ॥ ३ ॥ इम काढो कलशा भणी काई, नित नित अधिक आणद ॥ धर्म सत्व तीज तिथि दिने कांइ, तीज शणगारा गुणिवृंद ॥शि०॥४॥ सुमति विरति गोर बणाय लो कांइ, द्वादश अग शरीर ॥ उपांग धारेह दीपता कांइ, शीलको ओढावो यें चीर ॥ शि० ॥ ५ ॥ लज्जाको लेंगो पेरावजो कांइ, किरियाकी कचुकी पहेराय ॥ महमदं मारद माया तणो जी कांइ, राखडी रुचिकी बणाय ॥ शि० ॥ ६ ॥ समकितकी बिंदी शिर कही काइ अपोगका ओगन्यां कान ॥ पुण्यकी पानडी झगमगे कांइ, तपस्याको तिलक बखाण ॥ शि० ॥ ७ ॥ विनय को बोर विचारजो कांइ, सत्त्वकी टोटी ने झाल ॥ झूमरा पहेरावो विवेक का कांइ झेलो जयणाका रसाल ॥ शि० ॥ ८ ॥ चोंप जडावो चोखा वचनकी काइ, मिष्ट वचन मसी जान ॥ निरवद्य सत्य वचन तणां कांइ, मुख तबोल बखाण ॥ शि० ॥ ९ ॥ शरमको काजळ आंजवो काई, नेमकी नथ सुखकार ॥ ज्ञानकी गळसीरी कंठ में कांइ, दशविध धर्मको हार ॥ शि० ॥ १० ॥ ठुस्सी संतोषकी जाणजो कांइ, तेवटो परतीतको जाण ॥ तिमणयो देव गुरु धर्मको कांइ, चेतना चपकली ठाण ॥ शि० ॥ ११ ॥ चद्रहार सौम्यता पणो

कांई, वाजूबंध विवेक ॥ लुंबा फूंदा तरंगका कांइ, जवल्यो करो शतटेक ॥ शि० ॥ १२ ॥ करमदी करो शुभ करणकी कांइ, सुकला कंकण सार ॥ चूडो बत्तीस जोग संग्रहको जी कांइ, मणगठा सुमन विचार ॥ शि० ॥ १३ ॥ वेयावच्च वीटी पहेरावजो कांइ, अनु-मोदना मेंदी लाल ॥ सुनय सांकला पायमे कांइ, साहस कडा सुविशाल ॥ शि० ॥ १४ ॥ तोड़ा सज्झायका वाजणा कांइ, नीति नेउर झणकार ॥ हथपान पगपान प्रेमका कांड, विद्याका विंछिया सार ॥ शि० ॥ १५ ॥ ईर्याका अणवट सासता कांड, प्रीतिकी पोलरी जाण ॥ भंग तरंगकी सांकली कांइ, घुघरी प्रश्न वखाण ॥ शि० ॥ १६ ॥ चेतनजी ईश्वर दीपता जी कांइ, चार तीरथ परि-वार ॥ धर्मवाग मांही सचरो कांइ, स्तवन गीत उच्चार ॥ शि० ॥ ॥ १७ ॥ विज्ञानका वाजोठ पर थापिने कांइ, ज्ञानादिक चार प्रकार ॥ फेरा फेरावो तेहशुं कांइ, होसजो कर्मविकार ॥ शि० ॥ ॥ १८ ॥ ध्यानकी धूप लगावजो कांइ, प्रीतिका फूल चढ़ाय ॥ सुकृत नैवेद्य चढ़ावजो कांइ, थापो शिवमंदिर मांय ॥ शि० ॥ १९ ॥ ऐसी तीज मनावसी कांइ, जे भवियण नर नार ॥ ते सुख पावे सासता कांइ, शंका नहि छे लगार ॥ शि० ॥ २० ॥ पाप तहेवार मना-वतां कांड, कर्मको बंधन थाय ॥ रूले चउगतिमे जीवड़ा कांइ, विष ए महा दुःखदाय ॥ शि० ॥ २१ ॥ अनुभव ज्ञान लगावजो कांइ, सुगणा मनावा तहेवार ॥ तिलोकरिख कहे सुख पावशो कांइ, वर्त्तसी जय जयकार ॥ शि० ॥ २२ ॥ इति ॥१० ॥

॥ अथ एकादश आखातीज अध्यात्म स्वाध्याय प्रारंभः ॥

॥ या रस सेलड़ी, आदि जिनेश्वर कियो पारणो ॥ ए देशी ॥ थे कर लो स्याणा, धर्म तहेवार आखातीजको ॥ थें० ॥ ए टेक ॥ आखातीज तहेवार भलेरा, कर लो धर्मविचार ॥ इण

सरखो नहिं और जगतमें, बारा मासको सार रे ॥ यें० ॥ १ ॥ दान पुण्य सुकृतकी करणी, करजो मनशुद्ध चहाय ॥ सदा तृप्त रहो मूख न लागे, मिलसी सुख सवाय रे ॥ यें० ॥ २ ॥ अक्षय गुणको आखा लीजें, ऊखल धीरज धार ॥ मूसल लीजें ज्ञानको सो कांइ, मोहणी तुष निवार हो ॥ यें० ॥ ३ ॥ शुद्धभावको सूपड़ो करिने, झटको पापरज दूर ॥ क्षमा चूल्हे सतोषकी हांडी, कर्म ईंधन भरपूर हो ॥ यें० ॥ ४ ॥ तपकी अगनि सलगावजो जी कांइ, विनयको जल सुविचार ॥ ऊरो आखा खीच वणावो, समता सक्कर रस सार हो ॥ यें० ॥ ५ ॥ करुणा कुडछी थिरमन थाली, जीमो सुगुणा लोक ॥ सदा तृपत रहो सुख अनमा, मिलसी सारो थोक हो ॥ यें० ॥ ६ ॥ ज्ञान दरिसण चारित्र निजगुण, अखे आशा तनमाय ॥ इनमें शका रच न आणो, शोभो श्री जिनराय हो ॥ यें० ॥ ७ ॥ उगणीसें अठातिस आखातीज दिन, मिरी गामके माय ॥ तिलोकरिख कहे सुगुणा नरने, पेसो पर्व सुखदाय हो ॥ यें० ॥ ८ ॥ इति ॥ ११ ॥

॥ अथ द्वादश राखीपर्व अध्यात्म स्वाध्याय प्रारंभ ॥

॥ मेरी मेरी करता जनम गयो रे ॥ ए देशी ॥ राखी सहेवार करो धर्म राखी मिथ्यादुर्मति थो दूर नाखी ॥ रा० ॥ १ ॥ सत धर्मी बधन महासुखकारी सुबुद्धी नाम बहन गुणधारी ॥ रा० ॥ २ ॥ भावकी डोर रक्षा हीर जाणो, मन गुंसिको स्यो मोतिको दाणो ॥ रा० ॥ ३ ॥ भावको भोडल लेश्या शुभरगी, धमरिद्धिकी राखी शुभ चंगी ॥ रा० ॥ ४ ॥ त्यागकी गांठ दे कर मांही बांधो, समताकी सेवा भली विध रांधो ॥ रा० ॥ ५ ॥ करुणा कंसार करो भलि भातें, समताको श्रीफल दखणो हाथे ॥ रा० ॥ ६ ॥ ध्यानको माणो सो राकडा दीजें, किरियाकी कचूकीको खड दीजें ॥

रा० ॥ ७ ॥ समकित कुंकुम ज्ञानको पाणी, घोलो विवेक सुं विनय पिंगाणी ॥ रा० ॥ ८ ॥ तपको तिलक चोकस गुण चोखा, ऐसा तहेवारसुं सुख अनोखा ॥ रा० ॥ ९ ॥ तिलोकरिख कहे राखी पर्व करियें, सुखें सुखे भवजल निधि तरिये ॥रा०॥१०॥इति॥ १२॥

॥ अथ त्रयोदश बारमासनी सज्झाय प्रारंभः ॥

देशी माचका दोहाकी ॥ चेत कहे तु चेत चतुर नर, पायो अवसर सार ॥ सुकृत करणी भवजलतरणी, वरणी शिवदातार रे ॥ या बारे मासकी, शिक्षा थे लीजो हिरदे धारिने ॥ ध्रु० ॥ १ ॥ वैशाख कहे वे साख सुधारो, सूत्र चारितर जाण ॥ दोइ साख जो जासी हातसुं, रेसी मन पछताण रे ॥ या० ॥ २ ॥ ज्येष्ठ कहे करो ज्येष्ठ जो करणी, तो पावो पद ज्येष्ट॥ ज्येष्ट थान पर वास मिलेगा, अजर अमर सुखश्रेष्ठ रे ॥ या० ॥ ३ ॥ आषाढ कहे नसाड़ पापने, करलो श्रीजिनधर्म ॥ तप जप खप कर पावो केवल, तोडो आठों कर्म रे ॥ या० ॥ ४ ॥ श्रावण कहे सुणो सूत्र श्रवणसे, उंघ आलस परिहार ॥ मिथ्या भर्म टले हिरदाको, प्रगटे समकित सार रे ॥ या० ॥ ५ ॥ भाद्रव कहे भाद्रवकी चर्चा, निरणो करो नर नार ॥ निजगुण ओलख परगुण छोडो, तो उतरो भवपार रे ॥ या० ॥ ६ ॥ आसोज कहे नासोज पारका, अवगुण तुं मनमांय ॥ निजगुण खोज सोज ज्ञान उर, कमी रहे नहिं कांय रे ॥ या० ॥ ७ ॥ कातिक कहे थे कहां तक राहेया, धर्म रतन ले संग ॥ अनंत काल गयो तकतां तकतां, सह्या कष्ट अभंग रे ॥ या० ॥ ८ ॥ मृगशीर कहे जो मृग शिर उपर, सिंह तणो भय जाण ॥ तुझ शिरपर ज्यों काल जोरावर, परभवको डर आण रे ॥ या० ॥ ९ ॥ पोष कहे तुं पोष छे काया, तब निज प्राण पोषाय ॥ इनमें शंका रंच न कीजें, श्रीजिन गया फरमाय रे ॥ या० ॥ १० ॥

माहा कहे महा शत्रु कर्म है, इनमें फरक न कोय ॥ धर्म राजा है निपट जोरावर, सरणासु सुख होय रे ॥ या० ॥ ११ ॥ फागण कहे थें खेलजो फागण, कुमति होलिका बाळ ॥ कर्म धूल उडाय दीजीयें, गावो धर्मका ख्याल रे ॥ या० ॥ १२ ॥ बारे मास कहे बारे अव्रत, छोडो सुगुणां लोक ॥ बारे भेदें तप बारे भावना, धारयासु शिवथोक रे ॥ या० ॥ १३ ॥ मधुमास उगणीसें अठतिस पूनमतिथि गुरुवार ॥ तिलोकारिख कहे परउपगारें, पेठ आंबोरी मझार रे ॥ या० ॥ १४ ॥ बारे मास इम सुन कर सरबे, भविजन मन उल्लास ॥ कर्मभर्म सब दूर निवारी, पासी शिवपुर बास रे ॥ या० ॥ १५ ॥ इति ॥ १२ ॥

॥ अथ चतुर्दश पन्नर तिथि अध्यात्म स्वाध्याय प्रारभ ॥

॥ देशी माचका दोहाकी ॥ पड़वा कहे एक निश्चे राखो, धर्मथकी सुख होय ॥ छे आत्मलिका फरस्या मुगति, अर्ध पुद्गलके मांय हो ॥ १ ॥ इम पंदरा तिथिको, अनुभव थें विचारो सूत्र न्यायसुं ॥ इ० ॥ दूज कहे दो विध है बधन, राग द्वेष दुःखकार ॥ तप जप करिने काटो इणने, पामो भवजलपार रे ॥ इ० ॥ २ ॥ तीज कहे तीन तत्त्व आराधो, साधो गुप्ति तीन ॥ तीन शल्य तीन दंड तजीने, अनत प्राणी शिव लीन रे ॥ इ० ॥ ३ ॥ चौथ कहे चौभेद मुगतका, आराधो भविलोक ॥ चार कषायकी लाय बुझाई, लहो अविचल शिवथोक रे ॥ इ० ॥ ४ ॥ पचमी कहे पचमीगति इच्छा, तो पच महाव्रत पाल ॥ पच समिति शुद्ध भाव आराधो, पच प्रमाद यो टाल रे ॥ इ० ॥ ५ ॥ छठ कहे छकाय बंधावे, छे व्रत लीजो धार ॥ बाह्य अभ्यतर छे छे तप कर, उतरो भवजल पार रे ॥ इ० ॥ ६ ॥ सातम कहे नित सात बार थे, सात व्यसन दो छोड ॥ सात भय सब दूर निवारो, पामो अविचल ठोर रे ॥ इ० ॥

॥ ७ ॥ आठम कहे छोड़ो आठूं मदके, आठु प्रवचन आराध ॥ आठुं कर्म सब दूर निवारी, राखो चित्त समाध रे ॥ इ० ॥ ८ ॥ नोमी कहे नव तत्त्वनिरणो, करजो भिन्नभिन्न शोध ॥ नवनियाणां दूर करीजें, नव समकित करो बोध रे ॥ इ० ॥ ९ ॥ दशमी कहे दश भेद धर्मका, पालजो आणी प्रेम ॥ दश प्रकारे सुड थयासूं, पासो अविचल खेम रे ॥ इ० ॥ १० ॥ इग्यारस कहे इग्यारे बोलको, जाणपणो करो सार ॥ ग्यारे पडिमा शुद्ध आराधो, सीखो अंग इग्यार रे ॥ इ० ॥ ११ ॥ बारस कहे बारा व्रत पालो, भावना भावो बार ॥ बारा प्रकारे तप करीने, करो करमकी छार रे ॥ इ० ॥ १२ ॥ तेरस कहे तेरे किरियाको, निरणो करो नर नार ॥ छोड़वा जोग सो छोड़ दीजिये, पामो केवल सार रे ॥ इ० ॥ १३ ॥ चउदस कहे चउदे गुणठाणां, राखो चढता भाव ॥ चउदा भेद कह्या जीवका प्रभुजी, तिणको करो बचाव रे ॥ इ० ॥ १४ ॥ पूनम कहे पूनम ज्यु निर्मल, पंद्रा भेद सिद्ध जाण ॥ जिणने करो नित नित उठ वंदन, पावो पद निर्वाण रे ॥ इ० ॥ १५ ॥ अमावस्या कहे कर्मराहुसू, जे वश पड़िया जीव ॥ पंद्रा परमाधामी जिणने, देवे दुःख अतीव रे ॥ इ० ॥ १६ ॥ पद्रा तिथिको ज्ञान विचारी, जो कोइ होय हुसियार ॥ इणभवमें पासी सुख संपत, परभव जय जयकार रे ॥ इ० ॥ १७ ॥ मधुमास उगणीसें अड़तिस, पेठ आंबोरी मझार ॥ तिलोकरिख ए जोडी जुगतिसुं, करवा परउपगार रे ॥ इ० ॥ १८ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अथ पंचदश सातवार अध्यात्म स्वाध्याय प्रारंभः ॥

॥ देशी माचका दोहाकी ॥ रविवार कहे ज्ञान रवि जिम, जगमें परगट भाण ॥ मिथ्या भर्म हरणनो कारक, सीखो हितगुण जाण रे ॥ शुद्ध सात वारकी, कहेणी परमाणे सुगुणा चालजो ॥ १ ॥

चंद्रवार कहे चन्द्र ज्यों शीतल, राखो सम परिणाम ॥ चार कषाय को ताप निवारो, लहेशो शिवसुख धाम रे ॥ शु० ॥ २॥ मगल-वार कहे मगल चारू, उत्तम सरणा चार ॥ धर्मको मगल हिरदे धारो, जिम होवे भवपार रे ॥ शु० ३ ॥ बुधवार कहे बुद्धि पाय के, खरचो धर्म मझार ॥ पाप घटावो पुण्य वधावो, बुद्धिको प्रहिज सार रे ॥ शु० ॥ ४ ॥ गुरुवार कहे गुरुपद सेवो, जो गुरुपदकी चहाय ॥ गुरुबिन जुगति मुगति न पावे, सेवो श्रीगुरु पाय रे ॥ शु० ॥ ५ ॥ शुक्रवार कहे सुकृत कर ले, ज्ञान ध्यान मनरंग ॥ तप जप साधो धर्म आराधो, करो कर्मसु जग रे ॥ शु० ॥ ६ ॥ स्यावर कहे थिर मन तन करिने, पावो समकित नीव ॥ पाप फराल डाल दे छिनमें, लहेशो सुख अतीव रे ॥ शु० ॥ ७ ॥ सातुवार वार वार चेतावे, वारेई सब कर्म ॥ वार वार नहिं आवे जगतमें, ए जिन आगम मर्म रे ॥ शु० ॥ ८ ॥ उगणिसें अडतिस चैतकी पूनम, पेठ आंबोरीमांय ॥ तिलोकरिख कहे गुरुसुपसायें, आसी भविजन दाय रे ॥ शु० ॥ ९ ॥ इति ॥ १५ ॥

॥ अथ षोडश अध्यात्मबाग स्वाध्याय प्रारंभ. ॥

॥ देशी केरवामें छे ॥ बाग बगीचा देखण किम भटके, कर्म-बंधण दु:खकार ॥ भलां रे ज्ञानी ॥ क० ॥१॥ धर्मका बाग बनाय लेमा, तेरी कायामें गुलजार ॥ भ० ॥ ते० ॥ ध० ॥ २ ॥ मनका रे माली कर ले स्याणा, उपशम सरोवर सार ॥ भ० ॥ उ० ॥ ध० ॥ ३ ॥ ज्ञानको पाणी निर्मल शीतल धीरजकी धरती सुधार ॥ भ० ॥ धी० ॥ ध० ॥ ४ ॥ कपट लोभकी खाड दूर दे, पावडी संतोष समार ॥ भ० ॥ पा० ॥ ध० ॥ ५ ॥ ठूठ उखाड दो क्रोध मानका, क्षमा कुदाली करो त्यार ॥ भ० ॥ क्ष० ॥ ध० ॥ ६ ॥ किरियाकी क्यारो खात क्रोधका, समसकी धोरण धार ॥ भ० ॥ स० ॥ ध० ॥ ७ ॥

निश्चय व्यवहार का वैल जोत दे, उपदेश चडस भर वार ॥ भ० ॥ उ० ॥ ध० ॥ ८ ॥ थिर भावको थालो बांधी, जतन सुपुण्यकी पाल सुधार ॥ भ० ॥ ज० ॥ ध० ॥ ९ ॥ संवरको बंगलो करो मनमोहन, सातूं नय खिड़की बिचार ॥ भ० ॥ सा० ॥ ध० ॥ १० ॥ करुणाकी खुरची मेज मयाका, शुभ मन पखो कर डार ॥ भ० ॥ शु० ॥ ध० ॥ ११ ॥ सरलभावकी सडक बणाय लो, विनयकी वेल्लू तुं संचार रे ॥ भ० ॥ वि० ॥ ध०॥ १२ ॥ वाड़का कोट विवेककी फाटक, प्रेमकी महेंदी परचार ॥ भ० ॥ प्रे० ॥ ध० ॥ १३ ॥ शीयलकी केलि संतोष सीताफल, जयणाका जाम विचार ॥ भ० ॥ ज० ॥ ध० ॥ १४ ॥ दृष्टांत लिंबू चोज आमली, दानको वड़ विस्तार ॥ भ० ॥ दा० ॥ ध० ॥ १५ ॥ आतम अनुभव करो अबराई, गुण गुल विविध प्रकार ॥ भ० ॥ गु० ॥ ध० ॥ १६ ॥ विनयकी वनराई छाई घटमें, सुकृत फल श्रेयकार ॥ भ० ॥ सु० ॥ ध० ॥ १७ ॥ कीर्त्ति सुगंध अधिक महकावे, भविजन भ्रमर गुंजार ॥ भ० ॥ भ० ॥ ध० ॥ १८ ॥ उगणिसें अड़तिस चैत शुक्ल पक्ष, पंचमी तिथि रविवार ॥ भ० ॥ पं० ॥ ध० ॥ १९ ॥ अहमदनगरसुं विहार करी आया, सिद्धेश्वर बाग मझार ॥ भ० ॥ सि० ॥ ध० ॥ २० ॥ तिलोकरिख कहे धर्म बागमे, खेलजो भवि नर नार ॥ भ० ॥ खे० ॥ ध० ॥ २१ ॥ ज्ञानकी गोठ ने सुखडी तप जप, चार तीरथ परिवार ॥ भ० ॥ चा० ॥ ध० ॥ २२ ॥ इणभव रोग सोग नहिं आवे, परभव जय जय कार ॥ भ० ॥ प० ॥ ध० ॥ २३ ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ अथ सप्तदश अनुभव सुखशय्या स्वाध्याय प्रारंभः ॥

॥ देशी गिणगोरका गीतकी॥ऐसी सुखसेजमे सोवजो, मानो मानो रे चतुर आतम ज्ञानी ॥ दान शीयल तप भावना, ए चारु पाया चंग ज्ञानी ॥ उपशम संवर ऊपलां कांइ, तप जपकी इस रंग ज्ञानी ॥ ऐ०

॥ १ ॥ वाण वणावजो ज्ञानको जी कांइ, संतोष सेज रसाल ज्ञानी ॥ संजम दुलाई सुभ पाथरो कांइ, विनय उसीसो लाल ज्ञानी ॥ पे० ॥ २ ॥ समकित गालमशूरीया जी काइ, विंजणो ल्यो व्रत धारे ज्ञानी ॥ क्षमाको खाट पछेवडो कांइ, लेश्या उज्ज्वल सुविचार ज्ञानी ॥ पे० ॥ ३ ॥ धरम सीरख भली ओढजो जी कांइ, पदपाया शुभध्यान ज्ञानी ॥ दश पच्चक्खाणकी दावणी जी कांइ सरधानां वधणां जाण ज्ञानी ॥ पे० ॥ ४ ॥ ज्ञान दीपक रुचि चव्रवो जी कांइ, किरिया कसीदो कढावो ज्ञानी ॥ मच्छरदानी धीरज तणी जी कांइ, मिथ्या मच्छर भगावो ज्ञानी ॥ पे० ॥ ५ ॥ काया नगर मनमहेलमें जी कांइ, ऐसी सेज बिछावो ज्ञानी ॥ विरति किवाड लगावजो जी कांइ, जिनशिक्षा साकल लगावो ज्ञानी ॥ पे० ॥ ६ ॥ समता नींदमें सोवजो जी कांइ, कुमति नार भगावो ज्ञानी ॥ जो चाहो निशदिन संपदा जी कांइ सुमति सुहागण चहावो ज्ञानी ॥ पे० ॥ ७ ॥ ऐसी सुखसेजमें पोढिनेजी कांइ, पाया छे सुख अनंत ज्ञानी ॥ तिलोकरिख कहे ते सही जी कांइ सो होसी भगवंत ज्ञानी ॥ पे० ॥ ८ ॥ इति ॥ १७ ॥

॥ श्री अध्यात्मभवानी स्वध्याय प्रारंभ ॥

॥ देशी भेरूजीका गीतरी ॥ या दया भवानी माता रे, देवे श्री संघने शाता रे ॥ या समता देवल छाजे रे, या विनय सिंहासण राजे ॥ १ ॥ यो सीयलका लेंगो जाणो र, लज्जाको चीर मखाणो ॥ यां क्रियाकंचुकी सोहे रे, शिर तत्त्वतिलक मन मोहे ॥ २ ॥ करुणाका कुंडल झलके रे, संवर मुख अधिका मलके ॥ तीन गुप्ति त्रिशूल ज्युं सोवे रे, या शत्रु सब नमावे ॥ ३ ॥ मूलथानक श्रीजिन भासें रे, स्थापना निजहिरदे भासे रे ॥ जात्री चउ तीरथ आवे रे, सो निरख निरख हरखावे ॥ ४ ॥ नियमव्रत नैवेद्य सो चढावे रे,

तो जात्रा सफल कहावे ॥ रिद्ध सिद्ध सुख संपत देवे रे, जो इणविध माता सेवे ॥ ५ ॥ उगणीशें अडतिस जाणो रे, वैशाख पूनम परमाणो ॥ गाम वामणी दक्षिणमांइ रे, तिलोकरिख दयामाई गाइ ॥ ६ ॥

॥ अथ श्रीदसोट्टण कविता लिख्यते ॥

॥ श्रीवर्द्धमान जिनेश्वर केरो, कहुं दसोटण भाव भलेरो ॥ सिद्धारथ नृपकुलमें आया, त्रिशलादे राणीजी जाया ॥ १ ॥ चैत्र शुदि तेरस तिथि जाया, छप्पनकुमारी मंगल गाया ॥ इंद्र मिल कर मोच्छव कीयो, वीर जिनेश्वर नामज दीयो ॥ २ ॥ दिन उगा नृप मोच्छव कीना, जाचकलोक अजाचक चीना ॥ त्रीजे दिन चंद्र सूरज दिखावे, छट्ठे दिन सो रात जगावे ॥ ३ ॥ ग्यारमे दिन अशुचि टाले, बारमे दिन भोजन उजमाले ॥ भोजनशाला अधिक विशाला, चित्रविचित्र सुरंग रसाला ॥ ४ ॥ जरी जरतार चंद्रवा सोहे, मुक्ताफल जुमणुं मन मोहे ॥ बनात कनात मखमलकी चंगी, सोहत सुंदर नव नव रंगी ॥ ५ ॥ बाजोठ चौकी पाट मंगाया, थाल सुवर्ण रूपाकी लाया ॥ रतनकटोरी वाटकी छाल्या, मांहे भोजन बहुविध घाल्या ॥ ६ ॥ आया क्षत्री राजा ताजा, अति आडंबर बाजां गाजां ॥ केइक हाथी केइक घोड़े, पालखी आगल पैदल दोड़े ॥ ॥ ७ ॥ केइ दुंदाला झाक झमाली, दीसे केश भमरा जिम काली ॥ जिमणने आवे उजमाला, केइक सुसरा ने केइक साला ॥ ८ ॥ केइ जमाई माहाजोधाला, नव नव भूषण रूप रसाला ॥ केईक भाई साढू भासा, मामा दोयती ब्याही खासा ॥९ ॥ छत्तिस कुलका नोत्या क्षत्री, बुलवाया देइ मंगलपत्री ॥ वर्जी मानने अणनोत्या आवे, तेड़्या तो कहो क्यूं नहिं आवे ॥ १० ॥ जीमण खारो किणनें लागे, ले लोटीने आगे भागे ॥ सरसां भोजन आदर सारो, कोण निर्भागी करे नकारो ॥ ११ ॥ जीमण आया अधिक उमाया,

पंक्तिबंध बैठा सब राजा ॥ गंगोदक कंचनकी झारी, बैठा जिमण सब हुशियारी ॥ १२ ॥ जब लग भोजन होवे त्यारी, मेवा परोसे सुंदर नारी ॥ पहली किसमिस द्राख मनुक्का, केला कतली दश कोकनका ॥ १३ ॥ पिंडखजूर गुठली करी न्यारी, काजू कली बदाम सुप्यारी ॥ चिरोंजी अजीर पिस्ता भलेरा, अगूर दाडिम खोपरा गहेरा ॥ १४ ॥ चटका करके सक्कर मिलाइ, भर भर मुट्ठा मेले उमाइ ॥ रूपपाट सोवनकी थाली, पकान्नकी मनवारां चाली ॥ १५ ॥ लाड्डु सिंह केसरिया नीका, मोतिचूर चोगणीका नीका ॥ चुटिया चूरमा लाड्डु दालका, मगद मनोहर राय सालका ॥ १६ ॥ बेसण और बाटीका जाणो, मूग दालका सरस बखाणो ॥ सक्कर चासणी उडद दालका जुवार मकी सो ततकालका ॥ १७ ॥ कसार किटीयां जुवार धाणीका, बत्तीसा सधाणा साणीका ॥ चावळ और झोलाका भारी, राजठारा तिल्लिका जहारी ॥ १८ ॥ सूठ गुंदका और पिस्ताई, बदाम चिरोंजी सक्कर मिलाई ॥ इत्यादिक बावन प्रकारा, कब लग नाम कहुं में न्यारा ॥ १९ ॥ घृतपेवर कुंदाका ताजा, घी सुकोमल खांड ने खाजा ॥ चरपरा गांठिया सक्कर पारा, दुध रावडी मांही छुहारा ॥ २० ॥ बरफी केसरिया पिस्ताई, कोनी मेवा अधिक मिलाई ॥ सरस जलेबी गरमा गरमी, छोडे नहिं कोइ शरमा शरमी ॥ २१ ॥ कलाकन्दमें मवा झाजा, होय खुशी देखी सब राजा ॥ असल चिरोंजी सेव सिंगोडा, छाबां भर भर मेली गोडां ॥ २२ ॥ सूत्तरफेणी और चिरोंजी दाणा, सांपसाई की अधिक रसाना ॥ अकबरी और अदरकमाणा, नुक्तिदाणा मध्य दरसाणा ॥ २३ ॥ घेवर सुरसा खांडका फीका, सुरकी पतासा पेठा मीका ॥ दहिंथरा और सूंठ ने खुर्मा, घी सक्कर मेवाका चुर्मा ॥ २४ ॥ दराबो दोठा पूरी कचोरी, माळपुवा और सेवड़ी सोरी

॥ सीरो साबुणी मीठी सुंवाली, तिलकी पापड़ी सक्कर घाली ॥ ॥ २५ ॥ कुडला पुड़ला और घणाई, कहेतां ढाल अधिक बधि जाई ॥ मुंगफलीका लोट भलेरा, मोण देइने कीना गहेरा ॥ २६ ॥ अंदरसा गुंजा गणी घामें, लूची लापसी चांदसइच्छामें ॥ गुलधाणी गुंदपाक असका, दुध ओटाई मेल्या थका ॥ २७ ॥ खारी सेव और वक्का दाली, गुलगुला वड़ा भुजिया सुविशाली ॥ दहीकी जावणी मेली आई, खाटा मीठाको मेल सदाई ॥ २८ ॥ आंब फलवती साख आमकी, जांबु निंबु कतली जामकी ॥ सीताफल रामफल खड़बूजा, एरंडकाकड़ी और तबूंजा ॥ २९ ॥ खिरणी चकोत अरु देशी केली, जंबीर बिजोरा अकरोट मेली ॥ फूट काचरा काचरी न्यारी, फणस रतालु तलमा त्यारी ॥ ३० ॥ कालो पोड़ाकी साकी गांठा, काट छील कर मेल्या सांठा ॥ टिंबरू करोंदा पाका अलेली, सरस खजूर धामण्या मेली ॥ ३१ ॥ कवीट आंबली पेमली बोरां, श्रीफल काचा मीठा घणेरां ॥ गुंदा फुदा रायण आदी, नानाविध फलबात जांखादी ॥ ३२ ॥ अब भोजन की भई तय्यारी, कछु एक नाम सुणो नर नारी ॥ अतलस गादी बाजोठ सुरंगी, थाल सुवर्ण हीरा जड़ी चंगी ॥ ३३ ॥ रतन कचोला नानी कटोरी, मांजि धोय पूंछी करि कोरी ॥ गहु मैदाकी रोटी धोली, मीठी रोटी पूरणपोली ॥३४॥ काठी कनककी रोटी छोटी, दुपडी सतपुड़ी साठाकी मोटी ॥ बाटी बाफला फलका गोला, रेलसालुचां दशमी औला ॥ ३५ ॥ चरपरी पूरण रोटी खीरकी, गुंदकी रोटी बिना नीरकी ॥ पोटा वामा कोरमाकी पुड़ी, मुंग मोठ हरवरा की रूड़ी ॥ ३६ ॥ लूण मिरच भर गरम मसाला, खाखरा तालमा रोटी रसाला ॥ फीका मीठा चोखा सुगंधी, भात केसरिया अधिक सुगंधी ॥ ३७ ॥ राम खीचड़ी मेवाकी सांधी, मुंग तुवर मिलवा केई रांधी ॥ दूधराबड़ी थूली ढोली, काठी थूली जावरीगी

डीली ॥ ३८ ॥ घृतगायको नयो तपाई, घिरोडी मुख आदि नमाई ॥ त्यो त्यो करता मुहो थाके, कुण जोरावर जो फिर हाक ॥३९॥ सक्कर बूरो गोल ने मिशरी, फाकम मेलन रचन विसरी ॥ सेव रषीच और खीर बणाई, खिचडो घुघरी राव सवाई ॥ ४० ॥ खीचीया पापड मुग उडदका, चणा वटला रुयर त्रिधाविधका ॥ सेक्या सालिया पतला मोटा, थालीपीठ बाजरी मोटा ॥ ४१ ॥ मकी मालक गुनी जब जाणी, रालोथरटी कुलथ बखाणी ॥ जालरो तिवडो सामो जाणो, कादरा वरटी रोट बखाणो ॥४२॥ कर चतुराई भरया मसाला, धान्य चोवीसकी जिनस रसाला ॥ रसोइदार केइ देश देशका, अनेक रसोइ बहुत भेदका ॥४३॥ मिरची पकोडी चरपरी भावे, सलण वडी वडा अरवि आवे ॥ दाल मुग और मोठ मसुरकी, उडद चणा वटला विध तुवरकी ॥ ४४ ॥ पतली काठी सीस बांतलीया, मसाला नानाविध मेलिया ॥ कढी छाछ अमचूरकी जाणो, आंवला भाजीकी पण मानो ॥ ४५ ॥ बेलां इवका रेलमाम्बूरकी, अमटी अमरस्यो भाजी भुरकी ॥ वडी ढोलकी और कोरडी निपजायो अति चतुर गोरनी ॥ ४६ ॥ द्राख वडी भाजीको रायतो अमल-पाणी बघार बायता ॥ ऊनी छाछ बघारी भारी, लूण मिरच राई छमकारी ॥ ४७ ॥ दहिका सीम्बरण मथी दाणा, सक्कर सामल अमल बाणा ॥ खारावडी छाछवडी मलरी, पेडा वडी और चिणी बहुनरी ॥ ४८ ॥ पापडवडी खीचावडी जाणो पतला पताडकी अधिक रसाणो ॥ पाठवडी पतोड कुहलाइ, रसो ठावो दक्षिण माही ॥ ४९ ॥ अमृत्या रसको छमकारयो, मुरंबो अथाको सूधारयो ॥ करपटा नीला चणा करेला, टींडोरी और काचा केला ॥ ५० ॥ नीलो बेर केर खरबूजा, फूट काकडी फोग सरबूजा ॥ कलिंगडा और गिलकी तराइ, वगा काचरी मुदिमातोइ ॥ ५१ ॥ भिंडा ढिंडा कोठकी फोडा, खलरा टिंडसी करमदा ओडा ॥ कोला

चकीआल तुंवडा, सूरजणा कांचरा और झूमड़ा ॥ ५२ ॥ वालोल फल्ली चंवलाकी भारी, गवारफली सांगरी छमकारी ॥ कमलगट्टा बैंगण रताल्लु, सकरकंद मूला पिंडाल्लु ॥ ५३ ॥ सुवो वाथलो खाटी भाजी, मेथी चणा वथुवाकी ताजी ॥ अमलमूला और चंदलोई, पालको ढिमरो पोचो जोई ॥ ५४ ॥ अंवाड़ी करडी अजमाकी, रालरो लुण्यो पुवाड़ समाकी ॥ घोड्या घोल पोकली जाणो, चिपाडी ठाक चुका करिमाणो ॥ ५५ ॥ फांदिसेंपा और परजणकी, सरूखरुड़वा और सिंधवणकी ॥ चिलरी राई राजगरारी, करंजरो और हेसरखारी ॥ ५६ ॥ चणा छोल वाहिंगकी भाजी, जीमे लोक झडा झड़ राजी ॥ कूवी सूवी और घणेरी, कहां लग नाम कहुं में हेरी ॥ ५७ ॥ लोंजी आंव आंवली केरी, गरम मसाले धुंगारी गहेरी ॥ चटणी कोथमीरकी जाणो, कविट आमकी अधिक रसाणो ॥ ५८ ॥ श्रीफल तिल्ली ळूण मिरचकी, हवडीरोड मासरसुंचिंचकी ॥ गरम मसालाकी केइ चटणी, भांत भांतकी वटणी छठणी ॥ ५९ ॥ अथाणो वली आम वखाणो, लिंबु मिरची आदी जाणो ॥ वांसोढा और भिंडी तरोइ, गिलकी वालोल फलीकी जोई ॥ ६० ॥ चंवला वटला मेथी दाणाको, करमदा खारक कैर चणाको ॥ गवारफली सुरजणाकी जाणो, भांत चौरासी अधिक रसाणो ॥ ६१ ॥ पुडियां भर भर आगे मेले, जिमणवाला लेतां ठेले ॥ बालक बूढा तरुणा रोगी, बणी रसोइ सो सबजोगी ॥ ६२ ॥ नाम न आवे पूरा जिणसूं, थोड़िक रचना कहि में तिणसूं ॥ जीमे सघला होंसें होंसें, किंचित मात्र कोई न रोसे ॥ ६३ ॥ हम न पीरसी कोई न बोले, रह्यो नहिं कोई भाले भोले ॥ जीमता जीमता थाक्या पूरा, एक कवो लेवण नहिं सूरा ॥ ६४ ॥ सघला बोले नाजी नांजी, कोई न बोले मेलो हांजी ॥ पीरसणवाला अधिक मनावे, जीमण

वाला करद्दा थाये ॥ ६५ ॥ मेले शुभ सुगाधिक पाणी, हाथ धोया सब हट अधिकाणी ॥ हलवे हलवे पूठे पूठे, गोडे हाथ देईने उठे ॥ ६६ ॥ पेट भराणा तग मतगा, सहु अघाणा छोड उमगा ॥ सघला हलवे हलवे चाले, उतावला फिर कोइ न हाले ॥ ६७ ॥ बोले धीरे धीरे चालो, भोजन जिम तिम बैठा वालो ॥ एसी रीतें चल कर आया, जाजम गादी तकिया बिछाया ॥ ६८ ॥ तीन अहारको कियो वखाणो, मुखशोधन मुखवास सुहाणो ॥ जायपत्री और लौंग सुपारी, दालचिणा इलायचा प्यारा ॥ ६९ ॥ काली मिरच सूठ सवादी, कयाथचीणो पीपर हरे व्याधि ॥ कपूर सुवासिक करयो चूनो, नागरवलीको दल दूनो ॥ ७० ॥ बीड़ा वाल कें देवे आई, लेवे सघला चित्त हरखाई ॥ लिंडीपीपर सरसो अजमो, चूरण सवादी आहार हजमो ॥ ७१ ॥ पहेराई फूलनकी माला, देवे पचरगी जरी दुसाला ॥ केइने दुपट्टावर जोडी केइन चीरा पाग पिछोडी ॥ ७२ ॥ पच पोशाक पेरावे चगी, जामो अंगरखी वर पचरंगी ॥ दीवि मंदिल बाल्यावदी, देखत तन मन होय आणंदी ॥ ७३ ॥ कइने कठी हारज दीना केइने कुडल अधिक नवीना ॥ बाजुबध अगूठो चगी, सिर सिरपेच दीवी मनरगी ॥ ७४ ॥ हाथी घोडा रथ पालखी, केइने दीना गाम मालकी ॥ यथायोग सबने सन्माने, द्वादशमे दिन महोत्सव ठाने ॥ ७५॥ सिद्धा-रथ नृप सहुने बोले, कुंवर नाम थापणन खोले ॥ जिण दिन राणी कूखें आया, तिण दिनथी द्रल बल सवाया ॥ ७६ ॥ दिन दिन वृद्धि कारण मानो, वर्द्धमान कुंवर इम ठाणो ॥ सहु सुणी हरखाणा गोती, नाम यथागुण कुडल मोती ॥ ७७ ॥ घर घर मगलमाल बधावे, गोरडिया मिल मगल गावे ॥ तिड़किड तिडकिड़ त्रांसां बाजे धिं धिं धिं धिं नौवत गाजे ॥ ७८ ॥ दों दों थप झप मादल रगी, कुण कुण कुण कुण करे सारंगी ॥ झालर बाजे झण झण झण झण

घुघरी घमके खग खण खण खण ॥ ७९ ॥ तुंतुनो करे तुन तुन तुन तुन, करतालो करे छुन छुन छुन छुन ॥ घणणण घंटानाद उच्चारे, नरसिंगो धु धु धु धुकारे ॥ ८० ॥ धनिकट धनिकट बजे नगारा, इत्यादिक गुणपच्चास प्रकारा ॥ नाचे पातर सभा मझारी, दियो दसोट्टण हर्ष अपारी ॥ ८१ ॥ तिलोकरिख कहे प्रभु पुण्य भारी, नाम लियां हरखे नर नारी ॥ जो कोइ दसोट्टण को गावे, खावे नहिं तो मन हरखावे ॥ ८२ ॥ श्रीजिनराज की कथा विस्तारे, करे अनुमोदन प्रेम अपारे ॥ तो पण निर्जरा पुण्य है भारी, इम जाणी सुणजो नर नारी ॥ ८३ ॥ संवत उगणीसें सेंतिस सालें, अहमदनगर दाक्षिण वरसाले ॥ भाद्रव कृष्ण चवदस तिथि जाणो, वार शुक्र शिवजोग वखाणो ॥ ८४ ॥ श्रीवर्द्धमान दसोट्टण केरी, कीनी कविता एह भलेरी ॥ श्रीजिन पुण्य प्रशंसा जाणो, सुण कर आरंभ नहिं बधाणो ॥ ८५ ॥ एसा भोजन वार अनंती, कीना पण तृष्णा न बुझती ॥ इणमे शंका रंच न मानो, केवलज्ञानी कहि हे वाणो ॥ ८६ ॥ इम जाणी तप जप आदरजो, चितमें समता भवकी करजो ॥ अनुभव ज्ञानी दिशारस आसो, सदा तृप्त रहेशो पद पासो ॥ ८७ ॥ अधिको ओछो जोड्यो कोइ, मिच्छामि दुक्कडं तस होइ ॥ सूत्र बचन प्रमाण सदाइ, पाले सो धन धन जगमांहा ॥ ८८ ॥ इति श्री माहावीर स्वामीनी दसोट्टणनी स्वाध्याय समाप्त ॥

॥ अथ माहावीर स्वामिनुं चोढालियुं लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ सासणनायक सुरतरु, वर्द्धमान सुखकंद ॥ प्रणमी कहुं तिणनीचरी, सुणतां परमानंद ॥ १ ॥ समकित आई जिहांथकी, भव सत्तावीश मूल ॥ पंच कल्याणिक वरणवुं, आगम वयण कबूल ॥ २ ॥

॥ ढाल पहली ॥

॥ धर्म पावेतो कोइ पुण्यवंत पावे ॥ ए देशी ॥ जय जय शासण स्वामी दयाला, परमपति उपगारी जी ॥ नयसार प्रथम भवमाही, उपशम समकितधारी जी ॥ ज० ॥ १ ॥ तिहांथी सुरभव थिति क्षय करिने, थया भरतजीका नदो जी ॥ मिरियच नाम कहाणो तिण भव, सजम मद स्वछन्दो जी ॥ ज० ॥ २ ॥ तापस व्रत पाली भव चोथे, लीनो सुर अवतारो जी ॥ तिहाथी तापस निर्जरभव, वली तापस व्रतधारो जी ॥ ज० ॥ ३ ॥ तिहांथी अवर तापस किरिया वली गया देव विमाणे जी ॥ तिहांथी तापस सुरपद पाया, तापसनाकने ठाणे जी ॥ ज० ॥ ४ ॥ ए सोला भव म्होटा करीने, रुलीयो बहुससारो जी ॥ विश्वभूति भवें करे नियाणो, तिहांथी सुर अवतारा जी ॥ ज० ॥ ५ ॥ उगणीशमे भवें हरिपद पाया, नाम त्रिपृष्ठ कहाणो जी ॥ सातमी पृथवी निकल्ये तिहांयो, सिंह तणो भव जाणो जी ॥ ज० ॥ ६ ॥ नरक गया तिहांथी कमावश, चक्रवर्ति पद पाया जी ॥ सजम पाल्यो कोडि वरस लग, अंते अणसण ठाया जी ॥ ज० ॥ ७ ॥ तिहांयी सातमे स्वर्ग सिधाया, चोविशमा भवमाय जी ॥ तिहांथी पचिशमा भवमांइ, हुवा नंद महाराय जी ॥ ज० ॥ ८ ॥ संजम ले कर तप आदरियो, मास मास तप ठाया जी ॥ एकसठ सहस्र ने लाख इग्यारा दोसें अधिक दरसाया जी ॥ ज० ॥ ९ ॥ वीश थाल सेवन कर बांध्यो, गोत्र तीर्थंकर नामो जी ॥ तिहांयी दशमे स्वर्ग सिधाया, वीश सागरथिति ठामो जी ॥ ज० ॥ १० ॥ तिहांयी भवथिति क्षय करी स्वामी, मास आषाढ मझारो जी ॥ शुकलपक्ष छठ मध्यनिशामें फाल्गुणी उत्तरा विचारो जी ॥ ज० ॥ ११ ॥ क्षत्रीकुंड सिद्धारथ राजा, त्रिशलादे राणो सुजाणो जी ॥ चउदे स्वपना देइने उपना, पुण्य तण परमाणो

जी ॥ ज० ॥ १२ ॥ चैतशुद्ध तेरश अध रयणी, जनम्या अंतरयामी जी ॥ चौसठ इद्र मिल महोत्सव करकें, मेल गया शिर नामी जी ॥ ज० ॥ १३ ॥ सिद्धारथ नृप महोत्सव कीधो, निज सहु जाति जमाई जी ॥ नाम दियो वर्द्धमान कुमर जी, दिनदिन अधिक बड़ाइ जी ॥ ज० ॥ १४ ॥ त्रीस वरस ग्रहवासमें बसिया, पुत्री एकज जाणो जी ॥ मात पिता पहोंता सुरलोके, अभिग्रह ताम पूराणो जी ॥ ज० ॥ १५ ॥ वरसीदान दियो नित्य साहिब, भाव संजमका आया जी ॥ तिलोकरिख कहे पहेली ढालमें, भव सत्ताविश दरसाया जी ॥ ज० ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मागशिरवदि दशमी तिथि, छठ तपस्या प्रभु धार ॥ एकाकी साहसपणे लीनो संजमभार ॥ १ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ देशी हमीरियाकी ॥ धन धन त्रिशलानंद जी, सिद्धारथ कुलचद ॥ जिनेश्वर ॥ तप तप्या प्रभु आकरो, तोड़या कर्मना वृंद ॥ जि० ॥ ध० ॥ १ ॥ नव चोमासी तप कीयो एक करी छ मास ॥ जि० ॥ अभिग्रह दूजी छमासीमे, तेरा बोल विमास ॥ जि० ॥ ध० ॥ ॥ २ ॥ एकसो पचोतेर दिवशमें, चंदनबाला हाथ ॥ जि० ॥ जोग मिल्यो कोसंबीमें, पारणो कियो जगनाथ ॥ जि० ॥ ध० ॥ ३ ॥ मास खमण द्वादश कीया, पक्ष बहोतेर कीध ॥ जि० ॥ आसण विविध प्रकारनां, सूत्तरमे सहु विध ॥ जि० ॥ ध० ॥ ४ ॥ अढाइमासी तीनमासी दोय, दोयमासी खट जाण ॥ जि० ॥ दोढ़ मासी वली दो करी, दोसे गुणतीस बेला मान ॥ जि० ॥ ध० ॥ ॥ ५ ॥ भद्र माहाभद्र शिवभद्र तपे, सोला दिन इम जोय ॥ जि० ॥ भिक्खुपड़िमा अष्टम तणी, कीनी द्वादश सोय ॥ जि० ॥ ध० ॥ ॥ ६ ॥ साड़ी ग्यारा वर्षनी उपरें, पच्चीस दिन तप धार ॥ जि० ॥

एक कम साढातीनसें, पारणे तारया दातार ॥ जि० ॥ ध० ॥ ७ ॥ देश अनारज विचारिया, सह्या परिसह कठोर ॥ जि० ॥ कुत्ता लगाया हरामर्णा, घव घषण कह्या चोर ॥ जि० ॥ ध० ॥ ८ ॥ श्रवणे खीला खोमीया, पग पर राधी खीर ॥ जि० ॥ डक दीयो चडकोशीये, रह्या अचलगिरि धीर ॥ जि० ॥ ध० ॥ ९ ॥ अभव्यसगमो देवता, आणी दुष्ट परिणाम ॥ जि० ॥ छमास लगें दुःख दीयो, राखी समता स्वाम ॥ जि० ॥ ध० ॥ १० ॥ नर सुर तिर्यंचना सहु, सह्या परिसह सर्व ॥ जि० ॥ शम दम उपशम भावशु, रच न आण्यो गर्व ॥ जि० ॥ ध० ॥ ११ ॥ चउविहार तपस्या सहु, निद्रा मुहुरत एक ॥ जि० ॥ तिणमांहा स्वपनां दश लह्या, गोदूज आसण टेक ॥ जि० ॥ ध० ॥ १२ ॥ धन धीरज प्रभुजी तणी, धन करणी करतूत ॥ जि० ॥ धन कुल जिहां प्रभु जनमिया, धन जाया एहवो पूत ॥ जि० ॥ ध० ॥ १३ ॥ मावडी जायो एहवो, दूजो नहिं ससार ॥ जि० ॥ क्षमाशूरा अरिहतजी, उपमा सूत्र मझार ॥ जि० ॥ ध० ॥ १४ ॥ करम भरम चकचूरिया, दूजी ढालमझार ॥ जि० ॥ तिलोकरिख कहे धन प्रभु, प्रणमु वार वार ॥ जि० ॥ध० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शुक्लदशमी वैशाखनी, दिन ऊगत परमाण ॥ वीर जिनेश्वर पामिया, निर्मल केवल ज्ञान ॥ १ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ कर्मसमो नहिं कोइ ॥ ए देशी ॥ आणी लोकालोकनी रचना, खटद्रव्य गुणपरजायो ॥ चोंतिस अतिशय पेंतिस वाणी, जग तारक जिनरायो रे ॥ भविका ॥ श्रीजिन पर उपगारी ॥ तारया बहु नर नारी रे ॥भ०॥१॥ चोसठ इद्र आया तिण अवसर, त्रिगडो रच्यो तिण वारें ॥ स्फटिक सिंहासन उपर विराजे, अमृतवेण उचारे रे ॥ भ० ॥२॥ मध्य पापापुरिमें तिणवेला, यज्ञ रचाणो छे भारी ॥ बहु पंडित

नो थयो समागम, जावे सुर गगन विहारी रे ॥ भ० ॥ ३ ॥ महिमा देखी मानविशेषें, पंचसया परिवारें ॥ इद्रभूति चल आया प्रभुपें, संशय गर्व निवारी रे ॥ भ० ॥ ४ ॥ संजम ले गणधर पद लीनो, अग्निभूति चल आवे ॥ ते पण संशय दूर भयासुं, संजमसूं चित्त लावे रे ॥ भ० ॥ ५ ॥ इम इग्यारा गणधर रचना, चम्मालिशसें सख्या जाणो ॥ एकण दिनमें लीनी ज्यां दीक्षा, गुण रत्नागर खाणो रे ॥ भ० ॥ ६ ॥ तीनसें चौदा पुरवधारक, तेरशें रिख ओहिनाणी ॥ पांचशें मनःपरयव मुनि जाणो, बोले यथातथ वाणी, रे ॥ भ० ॥ ७ ॥ सातशें वैक्रिय लब्धिना धारक, चारसें चर्चावादी ॥ आठशें अनुत्तरविमानें विराज्या, सातसे रिख शिव साधी रे ॥ भ० ॥ ८ ॥ चउदा सहस्र रिख संपदा सारी, ज्येष्ट गौतम गणधारी ॥ चंदनबालादिक सहस्र छत्तिसी, थइ समणी सुविचारी रे ॥ भ० ॥ ९ ॥ एक लाख गुणसठ सहस्र श्रावक, आणंदादिक व्रतधारी ॥ अठारा सहस्र तीन लाख श्राविका, सुलसादिक अधिकारी रे ॥ भ० ॥ १० ॥ विचरथा गाम नगर पुर पाटण, तारथा बहु नर नारी ॥ प्रथम चोमासो आस्थिग्रामसें, दूजो प्रष्टचंपा मझारी रे ॥ भ० ॥ ११ ॥ त्रीजो चंपा चतुर्थ सावत्थो, विशाला वाणिय कह्या बारा ॥ चउदा चोमासा राजगृहीमे, मथुरामें खट सारा रे ॥ ॥ भ० ॥ १२ ॥ भद्दलपुरीमें दोय दिपाया, आठतीस एम जाणो ॥ एक आलंबिका एक सावत्थी, एक अनारज थाणो रे ॥ भ० ॥ १३ ॥ तारथा बहु भावियण नर नारी, विचरता श्रीजिनराया ॥ अनुक्रमें आया पावापुरीमें, हस्तिपाल जिहां राया रे ॥ भ० ॥ १४ ॥ कर जोड़ी प्रभुसुं करे अरजी, रथशालाने मझारो ॥ अबके चोमासो इहां करो प्रभुजी, विनति ए अवधारो रे ॥ भ० ॥ १५ ॥ क्षेत्र फरसना जाणी दयानिधि, कीनो चरम चोमासो ॥ धरम दिवाकर धर्म दीपायो, पूरी भविजन आशा रे ॥ भ० ॥ १६ ॥ तिलोकारिख

कहे श्रीजी ढाळें, धन धन अंतरयामी ॥ गुण रतनागर परम उजागर, वदु नित शिर नामी रे ॥ म० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चोथो मास वरसातनो, पक्ष सातमो ठाण ॥ तेरश आधी रातध्रु, अणसण धारयो जाण ॥१॥देश अढारना भूपति, छठ तप पोषध कीध ॥ सोला प्रहर लग देशना, स्वामी निरंतर दीध ॥ ॥ २ ॥ सूत्र विपाकज उचरयो, उत्तराध्ययन छत्तिस ॥ भविजीवां हितकारणें, पूरी पद जगीश ॥ ३ ॥ गौतम मोहिणी टालवा, जोई अवसर सार ॥ पर उपगारी परमगुरु, शिवसुखना दातार ॥ ॥ ४ ॥ कार्त्तिक वदि अमावस्या, कहे गौतम सुं स्वाम ॥ देवशर्मा विप्र बोधवा, जावो तिणन ठाम ॥ ५ ॥ तहत्ति करी तिहां संचरया, पीछें दीन दयाल ॥ जाय विराज्या मोक्षमें, भवफेरा दिया टाल ॥ ६ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ क्षमावंत जोय भगवंतनो रे ज्ञान ॥ ए देशी ॥ श्रीजिन शिव पुर संचरया जी, थयो जगमें अंधकार ॥ गौतमस्वामी आणीयो जी, आरत आइ अपार ॥ जिनेश्वर ॥ हवे मुज कवण आधार ॥ १ ॥ ए टेक ॥ धसकी पडया धरणी तदा जी, शुद्धि न रही लगार ॥ धिक धिक मोहनी कर्मने जी, देखो कर्मविकार ॥ जि० ॥ ह० ॥ ॥ २ ॥ एक महूरतने आतरे जी, आइ चेतना ताम ॥ मोहवशें करे झूरणा जी, छोडी गया केम स्वाम ॥ जि० ॥ ह० ॥ ३ ॥ अंतेवासी हु आपको जी, रहेतो जिम तन छाय ॥ छले समे कियो आंतरोजी, ए तुम जुगतुं नाय ॥ जि० ॥ ह० ॥४॥ हुं पाछो नहिं झालतो जी, जाता मोक्ष मझार ॥ आगा पण नहिं रोकतो जी, किम आयो तुम सार ॥ जि० ॥ ह० ॥ ५ ॥ बाल ज्यों आडो न मांडतो जी, माग न मागतो ज्ञान ॥ अणख न करतो आपशुं जी, लागो तुमशुं ध्यान ॥ जि० ॥ ह० ॥ ६ ॥ कारमो राग होतो नहिं जी, तुमशुं माहरो माय

॥ तुम सम माहरे दुसरी जी, होती नहीं कोई आथ ॥ जि० ॥ ह० ॥७॥ एकपखी जे प्रीतडी जी, पार पडे नहिं तेह ॥ आज जाणी में परतिखे जी, इणमें नहिं संदेह ॥ जि० ॥ ह० ॥ ८ ॥ गोयम गोयम नाम ले जी, कुण बोलावसी मोय ॥ कुणकने लेशुं आज्ञा जी, चिंता मुझने सोय ॥ जि० ॥ ह० ॥ ९ ॥ जो मुझ मन शका होती जी, पूछतो सहु तत्काल ॥ भर्म सहु तुमें टालता जी, प्रत्यक्ष दीन दयाल ॥ जि० ॥ ह० ॥१०॥ तुम दरिसण अविलोकतां जी, रोमरोम हुलसंत ॥ हवे दरिसण किहां आपना, जी, भयभंजण भगवंत ॥ ॥ जि० ॥ ह० ॥ ११ ॥ तुम वाणी अमृत समो जी, साकर दूध सवाय ॥ हवे किणनी सुणशुं गिरा जी, जगतारक जिनराय ॥ जि० ॥ ह० ॥ १२ ॥ वली मनमांही चिंतवे जी, धिक धिक मोहनी कर्म ॥ धन्न धन श्रीजिनरायने जी, साध्यो आतमधर्म ॥ जि० ॥ ह० ॥१३॥ तुष कर्म परभावथी जी, रुलियो चउगतिमांय ॥ एकाकी तिहुं कालमें जी, ए जिनशासन राय ॥ जि० ॥ ह० ॥ १४ ॥ वीतराग प्रभुनी दिशा जी, शंका नहिं लगार ॥ तुं किम भूल्यो भर्ममें जी, शम दम उपशम धार ॥ जि० ॥ ह० ॥ १५ ॥ ध्यान शुक्ल तिहां ध्याइयो जी, दीनां कर्म खपाय ॥ केवलज्ञान प्रगट थयो जी, आरत रहि नहिं कांय ॥ जि० ॥ ह० ॥ १६ ॥ केवल महोत्सव सुरपति कीयो जी, निर्वाण पण तिण ठाम ॥ चार तीर्थ मली थापीया जी, पाटें सुधर्मा स्वाम ॥ जि० ॥ ह० ॥ १७ ॥ शिष्य थया जंबु जिसा जी, राते परणीया नार ॥ कोड़ि नन्याणुं त्यागिने जी, दिन ऊगां व्रत धार ॥ जि०॥ ह० ॥१८॥ तीन पाट थया केवली जी, श्रीजिन आगम वयण ॥ जे धारे भवि प्राणीया जी, उघड़े अंतर नयण ॥ जि० ॥ ह० ॥ १९ ॥ दिपायो जिन धर्मने जी, पूरव वर्ष हजार ॥ हवे तो सूत्र व्यवहार छे जी, हवणां परम आधार ॥ जिनेश्वर ॥ हवे प्रवचन आधार ॥ ए टेक ॥ २० ॥ इण परमाणे चालसी जी, टालसी आतमदोष ॥ तो भवि प्राणी

जीवडा जी, अनुक्रमें जासी मोक्ष ॥ जि० ॥ इ० ॥ २१ सवत उगणीशें जाणीयें जी, सतिस वर्ष मझार ॥ दीपमाला दिने ए कथ्यो जी, तिलोकरिख सुविचार ॥ जि० ॥ इ० ॥ २२ ॥ अहमदनगर देश दक्षिणें जी, सुखें रहिया चोमास ॥ भणशे गुणशे भावशु जी, लहेशे शिवसुख वास ॥ जि० ॥ इ० ॥ २३ ॥ कलश ॥ समकित पाया, भव घटाया, सत्ताविश थुऊ, जाणिया ॥ तेह वरणव, भवि कहे ते, चार ढाल, वखाणीया ॥ शासण नायक, सुखदायक, प्रणमु वार वार ए ॥ तिलोकरिख कहे, नाथ अरजी, करजो भव, निस्तार ए ॥ प्रभु दीजो जय जय कार ए ॥ १ ॥ इति श्रीवर्द्धमान जिनेश्वर नु चोढालीयु सपूर्ण ॥ सर्वगाथा ॥ ८२ ॥

॥ अथ खधकजी को चोढालीयो लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रणमु जगनायक सदा, भयभंजण भगवत ॥ आचारज उवज्झाय जी, गौतमादिक सब सत ॥ १ ॥ श्रीगुरुचरणांबुज नमु समरुं सरस्वति माय ॥ खधक मुनिगुण गावशु, सुणजो चित्त लगाय ॥ २ ॥

॥ ढाल पहली ॥

॥ रे प्राणी कर्म समो नहिं कोइ ॥ ए देशी ॥ सावथि नामें नगरी भलेरी, गढ मठ पोल प्रकारो ॥ हाट हवेली महेल मालीयां, शोभा विविध प्रकारो रे ॥ प्राणी धर्म सदा सुखदायी ॥ १ ॥ कनककेतु तिहां भूपति जाणो, धर्मकेतु गुणवंतो ॥ शूरवीर महीमडल मांही, प्रजा जनक जसवंतो रे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ मलया राणी पति सुखदाणी, वाणी मधुर गजगमणी ॥ चद्रवदन मृगनयणी शाणी, शीलरूप गुणरमणी रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ तस नदन सुखकद सकलने, खंधक नामें कुमारो ॥ गुण तस वदक चद ज्यों शीतल, शूरवीर शिरदारो रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ बोहोंतेर कलामांही अधिक विचक्षण, दिन दिन कीर्त्ति सवाई ॥ मात पिताकी भाक्ति कारक,

भद्रक भाव सदाइ रे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ तिण अवसर मुनि विजय सेण रिख, गुणरतनाकर भारी ॥ परम वैरागी आश्रवत्यागी, धर्म रागी तपधारी रे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ श्रीसंघ मंडण भर्म विहंडण, बहु शिष्यने परिवारें ॥ ग्राम नगर पुर पाटण विचरे, भवि प्राणी बहु तारे रे ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ अनुक्रमें आया तिण पुरमांही, उतरया बाग मझारो ॥ श्रावक सुणके अधिक आनंदे, वंदण गया अणगारो रे ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ भूपति निजसंपनि सब लेइ, मुनिवदन परवरिया ॥ अवसर देखी देशना देवे, ज्ञानगुणका सो दरिया रे ॥ प्रा० ॥ ॥ ९ ॥ ए संसार सुपनवत माया, देखतमें विरलावे ॥ धन संपत सब कारमी जाणे, ज्यों बादलदल छावे रे ॥ प्रा० ॥ १० ॥ नीट नीट एह नरभव पायो, रोटी साटे मति हारो ॥ धर्मरतन राखो अतिजतने, परभव खरचि या लारो रे ॥ प्रा० ॥ ११ ॥ कर्म निवारो धर्मज धारो, वारो विषय विकारो ॥ केवल पावो मुक्ति सिधावो, उतरो भवजल पारो रे ॥ प्रा० ॥ १२ ॥ इत्यादिक उपदेशना दीनी, प्रथम ढालके मांही ॥ तिलोकरिख कहे भविजन प्राणी, सुणके हरख्या घणाइ रे ॥ प्रा० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ खदक कुमर तब वीनवे, जोडी दोनुइ हाथ ॥ सत्यवाणी प्रभु ताहरी, धर्म बोळावु साथ ॥ १ ॥ आथ नहिं इण सारखी, मैं जाणी निर्धार ॥ मात पिता आज्ञा लेई, लेशु हुं सजमभार ॥ २ ॥ मुनिवर कहे जिम सुख होवे, तेम करो ततकाल ॥ धर्में ढिल न कीजियें, भांखी ए दीन दयाल ॥ ३ ॥ मुनि वंदी घर आविया, खधक नाम कुमार ॥ किणविध मांगे आज्ञा, ते सुणजो अधिकार ॥ ४ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ नंदन जसधारी, हुवा छे देवकी मायना ॥ अथवा माचका दोहामें देशी छे ॥ कुमर कहे करजोड़िने सो कांइ, यह संसार असार ॥

धन सपत सब कारमी स कांइ, शका नही लगार हो ॥ मातजी मोरां, आज्ञा देवो तो सजम आदरुं ॥ १ ॥ ए टेक ॥ वचन सुणी इम पुत्रका स कांइ, मूछाणी तत्काल ॥ शुद्ध बुद्ध सघली वीसरी स कांइ मोहकी म्होटी झाल हो ॥ मा० ॥ २ ॥ शीतल नीर समीर प्रभावें, कांइक थइ हुसियार ॥ करुणा स्वरें नयणां जल वरस, ज्यु श्रावण जलधार हो ॥ मा० ॥ ३ ॥ तु मुझ नद एकाकी कुलमें, जीवन प्राण आधार ॥ उवर फूल सम दरिसण थारो, मत ले सजमभार हो ॥ सुण नद हमारा, जोवन ढलिया सु लीजें जोगने ॥ ए टेक ॥ ४ ॥ विनय करीने कुमर पयपे, काल व्याल विकराल ॥ हरि हर इन्द्र चक्र नहिं छोडे, छिनमें करे बहाल हो ॥ मा० ॥ ५ ॥ जिणने हेत हाय कालरिपुसें, भाग जाणें की पहोंच ॥ अथवा जाणे हु कदी न मरशु, उणके ता नहिं सोच हो ॥ मा० ॥ ६ ॥ राजलक्ष्मी सपत बहुली, हय गय दल बल पूर ॥ ए भागव फिर सजम लीजे, मान केणी जरूर हो ॥ सु० ॥ ७ ॥ धन दौलत और माल खजीना, ज्यों विजली झबकार ॥ चोर अग्नि सजन भय धनमें, नरकगति दातार हो ॥ मा० ॥ ८ ॥ कोमल काया कचन वरणी, तरुणीसु सुख भोग ॥ वृद्धपणो जब आवे तनमें, तब आदरजे जोग हो ॥ सु० ॥ ९ ॥ काया माया बादल छाया, मल मूत्र भडार ॥ रोग शाकरो भाजन इणमें तप जप सजम सार हो ॥ मा० ॥ १० ॥ भोग हलाहल जहेरसु जादा, फल किंपाक समान ॥ अल्प सुखसु दुख अनता, सोहेतछुरी जिम जाण हो ॥ मा० ॥ ११ ॥ रतन पिंजरे शुक नहिं राजी, तिम हु इण ससार ॥ जनम मरण दुख मोहनो बधण, कहेतां न आवे पार हो ॥ मा० ॥ १२ ॥ मोह ताता वश माता बोले, तु वत्स अति सुकुमाल ॥ पच महाव्रत मेरु समाना तोडणो मोह जजाल हो ॥ सुण पुत्र पियारा, सजम लेणो जी

दुक्करकार छे ॥ ए टेक ॥ १३ ॥ पग अणत्राणे चालणो स कांइ, लोचन सोच अपार ॥ बाविश परिसह जीतणा स कांइ, चलणो खांडाधार हो ॥ सु० ॥ १४ ॥ घर घर भिक्षा मांगणी स कांइ, दोप वयांलीस टाल ॥ कोइक देशे उलट प्रणामें, कोइक देशे गाल हो ॥ सु० ॥ ॥ १५ ॥ वाय भरेवो कोथलो स कांइ, दुक्कर छे जगमांय ॥ शिला अलूणी चाटणी स कांइ, दीक्षा अति दुःखदाय हो ॥ सु० ॥ १६ ॥ कुंवर पयंपे सत्य कही सव, कायर नरने जाण ॥ शूरवीरने सहेज छे संजम, शंका रंच न आण हो ॥ मा० ॥ १७ ॥ तिलोकरिख कहे दूजी ढाले, लीनी दृढता धार ॥ मात पिता थाका समजातां, आज्ञा दी तिणवार हो ॥ सु० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कियो महोत्सव दीक्षा तणो, सूत्रमांहे विस्तार ॥ पंच महाव्रत आदर्‍या, धन खधक अणगार ॥ १ ॥ मात पिता मोहनी वशें, पंचसया परिवार ॥ राख्या रक्षा कारणें, सुभट वडा हुसियार ॥ २ ॥ जिहां जिहां मुनिवर संचरे, तिहां तिहां रहे सो लार ॥ नृप चुकावे नोकरी, जाणे नहिं अणगार ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ आज आणंद घण जोगीसर आया ॥ ए देशी ॥ खंधकमुनी गुणवंदक जगमें, पंचमहाव्रत पाले रे लो ॥ पांच समिति तीन गुप्ति आराधे, पंच प्रमाद मद टाले रे लो ॥ ख० ॥ १ ॥ छे काया प्रतिपाल दयानिधि, पांचु क्रिया परिहारी रे लो ॥ सतरा भेदे संजम पाले, द्वादश तपस्याधारी रे लो ॥ ख० ॥ २ ॥ चाकर ठाकर शत्रु सज्जन, सम जाणे रिखराया रे लो ॥ क्षमासागर गुणरत्नागर, त्यागी जगतकी माया रे लो ॥ खं० ॥ ३ ॥ सहे परिसह शूर परिणामें, चार कषाय निवारी रे लो ॥ मास मास तप करत निरंतर, शम दम उपशमधारी रे लो ॥ खं० ॥ ४ ॥ ज्ञान प्रबल

मुनि ध्यानमें शूरा, एकाकी पडिमा विहारी रे लो ॥ ग्राम नगर पुर पाटण विचरे, तारे बहु नर नारी रे लो ॥ ख० ॥ ५ ॥ एकदा मासखमण तप करता, कुंति नगरीमें आया रे लो ॥ सुभट विचारे इहां मुनिवरनां, बहेन बनेवी राया रे लो ॥ ख० ॥ ६ ॥ इहां डर कारण नहिं जरा भर, उतरया बाग मझारो रे लो ॥ लागा बहु भोजन करवाने, ते मुनिवर तिणवारो रे लो ॥ ख० ॥ ७ ॥ प्रथम पहेरमें सूत्र विचारे, दुजोमें ध्यानज ठाया रे लो ॥ त्रीजी पहेरसी पारणा कारण, मुनि गोचरीयें सिधाया रे लो ॥ ख० ॥ ८ ॥ कोमल काया पग अणुवाणे, परसेव भींज्यो शरीरो र लो ॥ खड़ खड़ वाजे हाड मुनिनां, चाल चल अति धीरो रे ला ॥ ख० ॥ ९ ॥ चल आवे नृप महेलनी पासें, राजाजी तिणवारो रे लो ॥ राणीसघातें चोपड खेल, हयवदन हुसियारा रे लो ॥ ख० ॥ १० ॥ राणीकी दृष्टि पडी रिख उपर, मनमें ताम विचारी रे लो ॥ मुझ बंधव पण संजम लीधा, सहेता हासी दुःख भारी रे लो ॥ ख० ॥ ११ ॥ ऊणारत आणी अति राणी, आंसु ततक्षण आया रे लो ॥ नृप पूछ सो काइ न बोली, नीचें देख्यो तब राया रे लो ॥ ख० ॥ १२ ॥ मुनिवर देखा वेरज जाग्यो, अधिको क्रोध भराणो रे ला ॥ ए मोडो इण पथें क्यों आयो, चाकरसुं कहेवाणो रे लो ॥ ख० ॥ १३ ॥ पकड ले जावा जंगलमाही, सब तन खाल उतारो रे लो ॥ छोडो मत एह कोइ प्रकारें, मानो हुकम ए माहरो रे लो ॥ ख० ॥ १४ ॥ आघी पाछी कांइ न सोची, पुरव वेर प्रभावें रे लो ॥ तिलोकरिख कहे त्रीजी ढालें, राय हुकम फरमावे रे लो ॥ ख० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुभट आया ततक्षण तदा ते मुनिवरनी पास ॥ महवा छग्या कर भणी, तब पूछे मुनि तास ॥ १ ॥ सो कहे आज्ञा रायनी,-

खाल उतारण काज ॥ ले जावां श्मशानमे, तव बोल्या रिख राज ॥ २ ॥ हाथ ग्रहो मत माहारा, हुं आवुं तुम लार ॥ मुनि पहुंता श्मशानमें, मनमें साहस धार ॥ ३ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ बलती द्वारिका देखिने रे ॥ ए देशी ॥ खधकमुनि श्मशानमें रे, आलोयणा शुद्ध कीध ॥ नमोत्थुणं सिद्धने दियो, दुजो अरिहंताने दीध रे ॥ धन धन मुनिराय ॥ १ ॥ पाप अठारा त्यागीया रे, जावजीव चोविहार ॥ काया माया ममता तजी कीयो, पादोपगमन संथार रे ॥ ध० ॥ २ ॥ उभा मुनि निश्चलपणे रे, ज्यों पाव्यो छोले सुतार ॥ राय सुभट लीया पाछणां भाइ, तींखी छे तिणरी धार रे ॥ ध० ॥ ३ ॥ खाल उतारी देहनी रे, चरड़ चरड़ तिण वार ॥ तरड़ तरड़ रुधिर वहे भाइ, दया न आणी लगार रे ॥ ध० ॥ ४ ॥ शिरसूं लगाइ पग लगें रे, छोली मुनिवर खाल ॥ नाकें सल लाया नहिं भाइ, मेटी क्रोधकी जाल रे ॥ ध० ॥ ५ ॥ उजली वेदना ऊपनी रे, कहेतां न आवे पार ॥ के दुःख जाणे आतमा भाइ, के जाणे किरतार रे ॥ ध० ॥ ६ ॥ मुनिवर मनमें चिंतवे रे, उदे थया तुझ कर्म ॥ समपरिणाम राख्या थकां भाइ, निपजसी आतम धर्म रे ॥ ध० ॥ ७ ॥ अज्ञानपणे अति हरखसुं रे, बांध्या निकाचित पाप ॥ भूक्त्यां बिण छूटे नहिं भाइ, भोगवे आपो आप रे ॥ ध० ॥ ८ ॥ तुं पुद्गलसुं भिन्नछे रे, अजर अमर अविकार ॥ नाश नहि त्रिहुं कालमें भाइ, मनमांही साहसधार रे ॥ ध० ॥ ९ ॥ थिरपरिणामें मुनिवरु रे, ध्यायो शुक्लज ध्यान ॥ अंतगडकेवल पायने, भाई, पाया पद निर्वाण रे ॥ ध० ॥ १० ॥ धन जननी जिणें जनमिया रे, धन धन ते अणगार ॥ पाछें देही पड़ी भू परें भाइ, पहेली लह्यो भवपार रे ॥ ध० ॥ ११ ॥ हवे वीतक सुणो पाछलुं रे, सुभट जे मुनिवर लार ॥ देख्या नहिं रिख नयणसुं

भाइ, शोधे नगर मझार रे ॥ ध० ॥ १२ ॥ तिणसमे दासी रावली रे, ओलखिया असवार ॥ पूछयुं कारण तिणे दासीयु भाइ, राणीथी कह्या समाचार रे ॥ ध० ॥ १३ ॥ राणी कहयु निज कथयु रे, सुण राजा मुरझाय ॥ वीतक वात कही सदा भाइ, राणी पडी मूर्च्छाय रे ॥ ध० ॥ १४ ॥ फिट फिट करता शु कियो रे, म्होटो एह अकाज ॥ मुझथीरो हीरो गुण तणो भाइ, महा म्होटो रिखराज रे ॥ ध० ॥१५॥ क्षण एक तो धरणी ढले रे, क्षण एक नाखे निसास ॥ क्षणएक दे ओलम्भडा भाइ, रुदन करे अति त्रास रे ॥ ध० ॥ १६ ॥ रोवे राणी रावली रे, कानें सुणी नहिं जाय ॥ रोतां सहु रोवाडीयां भाइ, हाहाकार पुरमाय रे ॥ ध० ॥ १७ ॥ झूरे सुनंदा बेनडी रे, झूरे पुरिससेण राय ॥ म्होटु अकारज ए थयु भाइ, घात करी मुनिराय रे ॥ ध० ॥ १८ ॥ तिणसमे केवल धारणा रे, समोसरया मुनिराय ॥ राय गयो वदण भणी भाइ, पूछे शीश नमाय रे ॥ ध० ॥ १९ ॥ निरपराधी महामुनि रे, किम उपनो मुझ द्वेष ॥ पूरव वैर काइ हुतो भाइ, ते दाखो कर्म रेख रे ॥ ध० ॥ २० ॥ मुनिवर कहे सुण भूपति रे, पूरव भव मझार ॥ काचरानो जीव तुं हतो भाइ नृपनद खंदकुमार रे ॥ ध० ॥ २१ ॥ ॥ छाल उतारी हरखशुं रे, आणद अंग न माय ॥ कीधी सरावणा तिण तिह भाइ, वार वार मन वाय रे ॥ ध० ॥ २२ ॥ कर्म निकाचित बांधियो रे, तेरे क्रोड भव मांय ॥ काचरानो जीव तु थयो भाइ, ते तो थयो मुनिराय रे ॥ ध० ॥ २३ ॥ वैर आव्यो रिख देखीने रे, कर्म न छोडे कोय ॥ जिन चक्री हरि हर भणी भाइ, हिरदे विमासी जोय रे ॥ ध० ॥ २४ ॥ कर्म समो शत्रु नहिं रे, कर्म करो मत कोय ॥ रखवाला पाचसें सुभट था भाइ, आडो न आयो काय रे ॥ ध० ॥ २५ ॥ राणी राय अने सुभटां रे, सांभली ए अधिकार, संजम लेइ मुक्तें गया भाइ, वरत्यो जयजयकार रे ॥ ध०

॥ २६ ॥ संवत उगणीशें गुणचालिशमें रे, ज्येष्टशुक्ल दूज जाण ॥ लश्कर घोड़नदी विषे भाइ, गुणि गुण कीया वखाण रे ॥ ध० ॥ २७ ॥ खंदक जिम क्षमा करो रे, तो उतरो भवपार ॥ तिलोकरिख कहे चौथी ढालमें भाइ, धर्म सदा श्रीकार रे ॥ ४०॥२८॥इति॥

॥ अथ मेतारज मुनिनुं चोढालियुं लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीजिन समरुं भावशु, सतगुरु लागुं पाय ॥ कथा अनुसारें गावशु, मेतारज मुनिराय ॥ १ ॥ पूरवभव दो मित्र था, ब्राम्हण केरी जात ॥ देशना सुणि रिखराजकी, संजम लियो संघात ॥ २ ॥ संजम पाले भावशुं, तपस्या करे करूर ॥ एक दिन मनमें चिंतवे, पूरवपाप अंकूर ॥ ३ ॥ जैनधर्म श्रीकार छे, शंका नहिं लगार ॥ स्नान नहिं इण मार्गमें, एतो कहि आचार ॥ ४ ॥ कुलमद दुगंछा भावथी, नीच कुलबंधन कीन ॥ आलोयणा विण सोचवी, सुरगति दोनु लीन ॥ ५ ॥ दोय मित्र तिहां देवता, बोले आपसमांय ॥ जो पहेलो नरभव लहे, घालीजें धर्ममांय ॥ ६ ॥ संजम लेवाणो तिण भणी, करि कोइ दाय उपाय ॥ इम संकेत कीधो उभे, सुरभव आपस मांय ॥ ७ ॥ कुलमद जिन कीनो हुंतो, ते पहेलो चव्यो तेथ ॥ मातंगकुलमें अवतर्यो, उदय कर्मके हेत ॥ ८ ॥ शेष पुण्यप्रतापथी, पायो संपति सार ॥ किणविध तिण संजम लियो, ते सुणजो अधिकार ॥ ९ ॥

॥ ढाल पहली ॥

॥ सोवन सिंहासण रेवती ॥ ए देशी ॥ शहर राजगृही दीपतुं, राज करे श्रेणिक राय रे ॥ शेठ युगधर दीपतो, लक्ष्मीवंत कहाय रे ॥ श० ॥ १ ॥ श्रीमती नार सुलक्षणी, रूप गुणें अधिकाय रे ॥ अवगुण कर्म प्रभावथी, मृतवंझणी ते थाय रे ॥ श० ॥ २ ॥

एकदा गर्भ रह्यो तेहने, चिंतवे ते मनमांय रे ॥ जीवे नहिं बालक माहरे, धन रखवालक नांय रे ॥ स० ॥ ३ ॥ जिम संतति रहे कुल विषे, तिम करु काइ उपाय रे ॥ एटले आवी मातगणी, गर्भवती सा देखाय रे ॥ स० ॥ ४ ॥ तिणने एकांतें लेइ करी, दीयो घणो सन्मान रे ॥ संपति छे मुझ घर घणी, जीवे नहिं मुझनी संतान रे ॥ स० ॥ ५ ॥ जो तुझ होवे नंदन कदा, गुप्तपणे घर मोय रे ॥ मेलजे सु निशिने समें, ठीक पडे नहिं कोय रे ॥ स० ॥ ६ ॥ द्रव्य देशुं तुझ सामटुं, होसी सुखी तुझ पुत रे ॥ प्रेम हुं राखशुं अति घणो, रहेसी मुझ घरतणो सूत रे ॥ स० ॥ ७ ॥ राजी थइ तिणे मानीयो, जनमीयो नंद जिणवार रे ॥ प्रच्छन्नपणे तिणें मोकल्यो, ठीक नहिं पुर नर नार रे ॥ स० ॥ ८ ॥ जनम महोत्सव सबळो कियो, दिवस थया जब चार रे ॥ दीयो दशोट्टण जातमें, वरतिया मंगल चार रे ॥ स० ॥ ९ ॥ नाम मेतारज थापीयुं, प्रतिपालण करे पंच धाय रे ॥ पूरव पुण्य प्रभावथी, रूपगुणें अधिकाय रे ॥ स० ॥१०॥ कुलमद कियो तिण कर्मथी, महेतर घर अवतार रे ॥ बीज शशी परें दिन दिने, वधे तस जश विस्तार रे ॥ स० ॥ ११ ॥ वहोंतर कलामें पंडित थयो, आवियो यौवन माय रे ॥ तिलोकरिख कहे पहेली ढालमें, पुण्यथी सुख सवाय रे ॥ स० ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ यौवन वय आणी करी कन्या परणाइ सात ॥ पंच इंद्रिय सुख भोगवे, आणंदमें दिन रात ॥ १ ॥ हवे तिण अवसरने विषे, पूर्वे कीनो करार ॥ ते सुर आई उपदिशे, ले तु संजम भार ॥२॥ तल्लीन ते भागवे, मान नहिं लगार ॥ कीनी सगाइ वळी तिणें, ते सुणजो अधिकार ॥ ३ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ इण सरवरीयारी पाळ, उभी दोय राबली ॥ माहारा लाल उ०॥

एआंक गो ॥ आठमी कन्या तेह, परणवा उम्माह्या ॥ माहारालाल परणवा०॥ कीनो सज्झाइ जान, जानी भेला थया ॥ मा० ॥ जा०॥ केशरीयो जामो पहेर, मुकुट शिरपर धर्यो ॥ मा० ॥ मु० ॥ माथे बांध्यो मोड़, वींदनो वेश कर्यो ॥ मा० ॥ वीं० ॥ १ ॥ शिरपर शिरपेच जडाव, तुर्रो झगझगे सही ॥ मा० ॥ तु० ॥ कलगी तिण उपर जाण, अधिक झलकी रही ॥ मा० ॥ अ० ॥ झगनगे कुंडल कान, हार झगझग करे ॥ मा० ॥ हा० ॥ बाजुबंद भुजदंड, पोंची कड़ा कर सिरे ॥ मा० ॥ पों० ॥ २ ॥ मुंद्री अगुलीके मांय, झलके हीरातणी ॥ मा० ॥ झ० ॥ कमर कंदोरो जड़ाव, सुवर्णकी खिंखणी ॥ मा० ॥ सु० ॥ अत्तर अंग लगाय, तिलक भालें कर्यो ॥ मा० ॥ ति० ॥ कियो उत्तरासण तेण, सुरथकी सो नहिं डर्यो ॥ मा० ॥ सु० ॥ ३ ॥ बेठो होय असवार, लाडो बण्यो सो सही ॥ मा० ॥ ला० ॥ गावे मंगल नार, अधिक उच्छावही ॥ मा० ॥ अ० ॥ धप मप मादल नाद, के साद सुहामणो ॥ मा० ॥ के० ॥ धड़िंदा धड़िंदा ढोल, तिड़ किड़ त्रांसा तणो ॥ मा० ॥ ति० ॥ ४ ॥ चाल्या अधिक उत्साह, ब्याह करवा भणी ॥ मा० ॥ ब्या० ॥ आय मध्य बजार, बणी शोभा घणी ॥ मा० ॥ ब० ॥ तिणसमे सो सुर कीध, बात कौतुक तणी ॥ मा० ॥ बा० ॥ मातंग मन दियो फेर, हेर अवसर अणी, ॥ मा० ॥ हे० ॥ ५ ॥ लीनो हाथमें लठ्ठ, धठ धीठो घणो ॥ मा० ॥ ध० ॥ आयो जानकेमांय, धरी कुलठ पणो ॥ मा० ॥ ध० ॥ माने नहिं कछु शक, वक्र एको जणो ॥ मा० ॥ वं० ॥ आयो सो वींद हजूर, काम नहिं दूर तणो ॥ मा० ॥ का० ॥ ६ ॥ सघलाही रह्या देख, बोले सुणो नंदना ॥ मा० ॥ बो० ॥ हुं छुं सगो तुझ बाप, जाण मत फदना ॥ मा० ॥ जा० ॥ सात कन्या व्याहि वणिक, परणाउ एक माहरी ॥ मा० ॥ प० ॥ पकड़ी अश्व लगाम, कोई नहिं वाहरी ॥ मा० ॥ को० ॥ ७ ॥ बदलायो चित्त

लोक भोको सवने पडयो ॥ मा० ॥ धो० ॥ साची दीसे ए घात, जोग इसडो घडयो ॥ मा० ॥ जो० ॥ लाक गया सव ठाम, थींद रह्यो एकला ॥ मा० ॥ थीं० ॥ अधिक खीसियाणा होय, टख सो भृड तले ॥ मा० ॥ दे० ॥ ८ ॥ निगसमे सो सुर वण, कहू शरवण विषे ॥ मा० ॥ क० ॥ ले हवे सजम ताम कह सो भूडी दीसे ॥ मा० ॥ क० हवे पाछो टोय सुजस, परणु कन्या वणिकनी ॥ मा० ॥ प० ॥ नवनी पाणु भूप, भूया श्रेणिकनी ॥ मा० ॥ भृ० ॥ ९ ॥ घारा वर गृहवास, रहु तदनतो ॥ मा० ॥ र० ॥ लेशु पछे सजम मार, वचन ए नाहिं फिरे ॥ मा० ॥ व० ॥ एम सुणी सुर वेण, सेण मन फरियो ॥ मा० ॥ से० ॥ छूटी मातगना घात, थींद वली हरीयो ॥ मा० ॥ थीं० ॥ १० ॥ हुइ सजाइ सर्व, तिहा वली व्याहनी ॥ मा० ॥ ति० ॥ आया साही बजार, वात थइ न्यावनी ॥ मा० ॥ वा० ॥ महेतर आयो सा चाल, जानम हो टाडिन ॥ मा० ॥ जा० ॥ उण मदिरा पीध, घाले कर जाडिन ॥ मा० ॥ थो० ॥ ११ ॥ ए नहिं माहरो नद, खाटो हु बोलिया ॥ मा० ॥ खा० ॥ माफ करो अपराध, कह्यो वे तोलीयो ॥ मा० ॥ क० ॥ मम टल्यो सहु लाक, कन्या परणी सही ॥ मा० ॥ क० ॥ तिलाकरिख कहे दूजी ढाल, सुग्धा राखी नही ॥ मा० ॥ दु० ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राजसुता परणावणी, सुर साचीन तास ॥ टीनी यकरी रूपडी, उगरे रतन उजास ॥ १ ॥ रत्नराशि झगमग करे, टग वहु नर नार ॥ पुरमें पसरी वारता, मेतारज पुण्य मार ॥ २ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ वेदर्भीशु मन वस्यो ॥ ए देशी ॥ राय सुणी इम वारता, मनम विस्मय थाय हो लाल ॥ यन्हो लावो यगगु, जन करो

मति कांय हो लाल ॥ रा० ॥ १ ॥ सुभट सुणी चल आविया, युगंधर ने गेह हो लाल ॥ मांगे बकरी शेठथी, उगले रत्नज जेह हो लाल ॥ रा० ॥ २ ॥ शेठ वदे सुभटां भणी, मैं नहिं मालक तास हो लाल ॥ मेतारजने पूछिने, लेइ जावो थें उल्लास हो लाल ॥ रा० ॥ ३ ॥ कुमर कने जाची तिका, सो बोले तिण वार हो लाल ॥ बकरी जीवन प्राण छे, रत्नपुंज दातार हो लाल ॥ रा० ॥ ४ ॥ सुभट गया फिर रायपें, दाख्या सहु समाचार हो लाल ॥ सुणि क्रोधातुर बोलियो, जेज न करो लगार हो लाल ॥ रा० ॥ ५ ॥ हलकारथा सुभटां भणी, धसमस करता जाय हो लाल ॥ छाली लाया छोडिने, पूछ्यो तिणसुं नाय हो लाल ॥ रा० ॥ ६ ॥ राय कचेरी लाविया, क्षणअतरनी मांय हो लाल ॥ बकरी छेरी तिण समे, दुर्गंध रहि फेलाय हो लाल ॥ रा० ॥ ७ सभा सहु व्याकुल थइ, उठि चाल्या सहु लोक हो लाल ॥ पूछे भूप कारण किस्युं, वात थइ ते फोक हो लाल ॥ रा० ॥ ८ ॥ सुभट कहे झूठी नहिं, एही रत्न दातार हो लाल ॥ पूछे कारण कुमरशुं, सुभट गया तिण वार हो लाल ॥ रा० ॥ ९ ॥ पुछ्यो कारण कुमरथी, किण कारण दुर्गंध हो लाल ॥ उगले नहिं किम रत्न ते, दाखो तेह प्रबधं हो लाल ॥ रा० ॥ १० ॥ सो कहे मुझ राजी करे, रत्न उगळे श्रीकार हो लाल ॥ नहिं तो ए छे र बुरी, शंका नहिं लगार हो लाल ॥ रा० ॥ ११ ॥ राय कहे जे छालिका, देवे रत्न श्री मोय हो लाल ॥ मुख मांगी वस्तु तिका, देशु हुं खुशी होय हो लाल ॥ रा० ॥ १२ ॥ सो कहे कन्या तुम तणी, द्यो मुझने परणाय हो लाल ॥ रत्न उगलसी ए भला, हाम भरी तब राय हो लाल ॥ रा० ॥ १३ ॥ गुणमंजरी कन्या भली, कीधो व्याह उत्साह हो लाल ॥ तिलोकरिख कहे त्रीजी ढालमें, कुमरनो पुरयो उमाह हो लाल ॥ रा० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नव कन्या परणी भली, नवनिधि पति जिम तेह ॥ भोगवे सुख ससारनां, दिन दिन वधते नेह ॥ १ ॥ बारा वर्ष इम वीतिया, सो सुर आयो चाल ॥ कहे ले हवे तु वेगसुं, सजम चित्त उजमाल ॥ २ ॥ नहिं तो देउ सकट घणो, इणमें फेर न फार ॥ सियालरें श्रीवीरर्ये, लीधो सजममार ॥ ३ ॥ मनमें ताम विचारीयो, धिक धिक कामविकार ॥ पायो हीनता लोकर्मे, महेतर घर अवतार ॥ ४ ॥ हवे करणी दुक्कर करु, कर्म करु सब छार ॥ मास मास तप भारीयो, नीरतर चोविहार ॥ ५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ जमिकदर्मे रे जीव आइ उपनो ॥ देशी ॥ नित नित प्रणमु रे मेतारज मुनि, तारण तरण जहाज ॥ परम वैरागी रे रागी धर्मना, साधे आतमकाज ॥ नि० ॥ १ ॥ थिविरांपासें रे शीख्या थिर मनें, नव पूरबको रे ज्ञान ॥ ग्राम नगर पुर पाटण विचरतो, ध्यावे निर्मल ध्यान ॥ नि० ॥ २ ॥ कोइसमे आया रे राजग्रही वली, पारणो आयो रे ताम ॥ प्रभुआज्ञा लेइ गोचरी पांगुरया, भिक्षा निरवद्य काम ॥ नि० ॥ ३ ॥ मारग जाता रे सुवर्णकार कें, आलखिया रिखिराय ॥ एह जमाइ रे थाय श्रेणिक तणा, गोचरी कारण जाय ॥ नि० ॥ ४ ॥ आवो पधारो रे अम घर साधु जी, कृपा करो मुनिराय ॥ वहोरो सूझतो आहार छे माहरे, बोल ते एम उमाय ॥ नि० ॥ ५ ॥ इम सुणि मुनिवर तिहां वहोरण गया, उभा रहिया रे बार ॥ सोनी घरमें रे आयो वेगसुं, वहोरावण भणी आहार ॥ नि० ॥ ६ ॥ सुवण जव घा रे गय श्रेणिकना, कुर्कुट आयो रे चाल ॥ सो जव चुगिने रे गयो ते शीघ्रसुं, मुनिवर रहिया रे माल ॥ नि० ॥ ॥ ७ ॥ बाहिर आयो रे आहार वहरायने, जव नहिं दीठा रे नयण ॥ कहो किण लीधा रे छुण आयो इहां, कहे रोषें भरयो वयण ॥

नि० ॥ ८॥ मुनिवर सोचे रे देखिया ना कहुं, झूठज लागे रे मोय ॥ कुर्कुट चुगिया रे इम उच्चारतां, हिंसा पातक होय ॥ नि० ॥ ९ ॥ देख्यो अदेख्यो रे कांइ न बोलणो, निश्चय कियो अणगार ॥ मौनज पकडी रे आण अराधवा, धन्य सो करुणा भंडार ॥ नि० ॥ १० ॥ मौनज जाणी रे सुवर्णकार ते, आइ रीस अपार ॥ इणना भेदसे थइ चोरी सही, पूछे वार वार ॥ नि० ॥ ११ ॥ मारे चपेटा रे कहे वलि चोर तु, किम नहिं बोले रे साच ॥ मुनिवर क्षमा रे धारी तन मनें, बोले नहिं मुख वाच ॥ नि० ॥ १२ ॥ तिम तिम अधिको रे सो क्रोधें भर्यो, सोचे ए अतिधीठ ॥ कूट्या विण रस ए देवे नहिं, मूरख चोल मजीठ ॥ नि० ॥ १३ ॥ मुनि कर पकडी रे ले गयो वाडामें, शिरपर आलो रे चर्म ॥ खेंचीने बांध्या रे तावडे राखिया, वेदना उपनी परम ॥ नि० ॥ १४ ॥ लोचन छटकीरे बाहिर नीकल्या, तड़ तड तूटी रे नाड़ ॥ मुनिवर थिर मन दृढ करी राखियु, जेम सुदर्शन पहाड़ ॥ नि० ॥ १५ ॥ केवल पाई रे मुगत सिधाविया, अजर अमर अविकार ॥ देव बजावे रे दुंदुभि गगनमे, बोले जयजयकार ॥ नि० ॥ १६ ॥ तिणसमे मोली रे एक कठियारडे, नाखी धमकसूं ताम ॥ बीटज कीनी रे कुर्कुट भयवशें, जव पड़िया तिण ठाम ॥ नि० ॥ १७ ॥ सोनी देखी रे थर थर धूजीयो, कीधो महोटो अकाज ॥ मैं मूढ़भावें रे निरअपराधिया, घात करी रिखराज ॥ नि० ॥ १८ ॥ राजा श्रेणिक भेद ए जाणशे, करशे कुटुंब संहार ॥ एम जाणीने रे सहु श्रीवीरपें, लीधो संजम भार ॥ नि० ॥ १९ ॥ तप जप करणी रे कीधी सहु जणा, पाया सुर अवतार ॥ अनुक्रमें जासी रे कर्म खपाइने, सहु ते मोक्ष मझार ॥ नि० ॥ २० ॥ नव कोटी धन नव कन्या तजी, नव विध ब्रह्मचर्य धार ॥ नव पूरवधर नव संवर करी, पाया भवजल पार ॥ नि० ॥ २१ ॥ एहवा मुनिवर क्षमासागरु, तस गुण

गाया उमाय ॥ तिलोकरिख दाखे रे चाथी ढाल ए, सुणतां पातक जाय ॥ नि० ॥ २२ ॥ सवत उगणीसे रे गुणचालीशमें, आषाढ वदि पडवा वखाण ॥ दक्षिणदेशें रे पूना शहेरमें, नानाकी पेठ में जाण ॥ नि० ॥ २३ ॥ जोड जमावी रे विपरीत जो कह्यो, मिच्छा मिदुक्कड मोय ॥ भणशे गुणशे रे विधि शुद्धभावशु, तस घर मगल होय ॥ नि० ॥ २४ ॥ इति मेसराजमुनिनु चोढालीयु सपूर्ण ॥

॥ अथ आणदजी श्रावकनु चोढालीयु लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

प्रणमु परमातम प्रभु, शासनपति वर्धमान ॥ तास ज्येष्ठ श्रावक भला, आणद आणदधाम ॥ १ ॥ नाम ठाम शुभ काम जिण, कीना व्रत अगीकार ॥ सातमे अंगे वर्णव्या, ते सुणजो विस्तार ॥ २ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ देशी न्यालदेमें ॥ तिण काले तिण अवसरें जी २ कांइ, वाणिय गाम मझार ॥ राय जितशत्रु जाणीयें जी २ कांइ, प्रजा भणी हितकार ॥ १ ॥ सुणो अधिकार सुहामणो जी २ काइ सूत्र तणे अनुसार, समकित व्रत होवे निमलो जी २ काइ होवे ज्यु भवनिस्तार ॥सु०॥२॥ तिणपुर आणद नामथी जी२काइ, गाथापति धनवान॥ बारे कोडी सुनैयाजी २ काइ, कह्यु तस धन परिमाण ॥ सु० ॥ ३ ॥ दश सहस्र गायां तणो जी२कांइ एक गोकुल इम चार ॥ धेनुवर्ग वखाणीयें जी२काइ शिवानदा तस नार ॥सु०॥४॥ पच विषय सुख भोगवे जी २ काइ, माने बहुजन वाय॥इम करता बहुज दिन गयाजी २ काइ, कोइक अवसर मांय ॥सु०॥ ५॥ धुतिपलाश नामें भलो जी २ कांइ, चैत्य मनाहर जाण ॥ समोसर्या जगगुरु तिहाजी २ कांइ, जगनायक जगभाण ॥ सु० ॥ ६ ॥ नृप सुणी वदण गयो जी २ काइ, आणद श्रावक ताम ॥ पाय विहारें सचर्या जी, २ कांइ, भेट्या त्रिभुवन स्वाम ॥ सु० ॥ ॥ ७ ॥ प्रभुजी दी उपदेशना जी २ कांइ, यो ससार असार ॥ तन धन

जोबन कारिमो जी २ कांइ, कारिमो सहु परिवार ॥ सु० ॥ ८ ॥ ए जीव आयो एकलो जी, २ कांइ, परभव एकलो जाय ॥ धर्मरत्न संग्रह करो जी २ कांइ, जो शिवसुखतणी चहाय ॥ सु०॥९॥ इत्यादिक उपदेशना जी २ कांइ, प्रथम ढाल मझार ॥ तिलोकरिख कहे आगलें जी २ कांइ, सुणजो श्रेय अधिकार ॥ सु० ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे आणंद सुणि देशना, बोले वयण विचार ॥ सत्य कहेणी प्रभु ताहरी, यह संसार असार ॥१॥ धन्य जे राजराजेश्वरु, लेवे संजम भार ॥ मुझ शक्ति ए छे नहीं, आदरशुं व्रत बार ॥ २ ॥ प्रभु कहे जिम सुखें तिम करो, जेज न करो लगार ॥ हवे व्रतकरणी सांभलो, सूत्र तणे अनुसार ॥ ३ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ या रस शेलडी, आदिजिणंद कियो पारणो ॥ ए देशी ॥ प्रथम व्रतमें धारीयो जी कांइ, त्रस प्राणी जगमांय ॥ जाणी प्रीच्छी निर अपराधी, सो सब हणवा नांय हो ॥ जगतारक पासें, श्रावक आणंदजी व्रत आदरे ॥ १ ॥ दूजो व्रत थूल मृषावादको, भू कन्या पशु काज ॥ झूठ न बोलुं ओलुं न थापण, नहिं लुं भोले व्याज हो ॥ ज० ॥ २ ॥ त्रीजो थूल अदत्त निवारुं, खात्र खणी गांठ छोड़ ॥ पड़कूंची देइ न करुं चोरी, त्यागुं विरुद्ध जे खोड़ हो ॥ ज० ॥ ३ ॥ चोथो थूल मेहुण व्रतमें, सेवानंदा निज नार ॥ वर्जीने त्यागी सकल कांइ, ममता दीनी मार हो ॥ ज० ॥ ४ ॥ व्रत पंचमो इच्छा परिमाणे, चार क्रोड़ भूमांय ॥ चार कोड़ि घरवखरी राखी, एतोही व्याज कहाय हो ॥ ज० ॥ ५ ॥ गोकुल चार धेनुका राख्या, खेतू वत्थू जाण ॥ पांचसें हलकी संख्या धरणी, गाड़ा गाड़ी सहस्र प्रमाण हो ॥ ज० ॥ ६ ॥ चार म्होटी चार छोटी जहाजां, राख्या

वाहण आठ ॥ उपभोग परिभोग व्रतकी विधि, कहुं जिम सूत्र पाठ हो ॥ ज० ॥ ७ ॥ स्नान कीया पीछें अग लूवणनो, रातो वस्त्र जाण ॥ दातण कारण आलु जेठीमध, अवरवीर आमलफल ठाण हो ॥ ज० ॥ ८ ॥ शतपाक हजार औषधको, तेलमर्दन ने काज ॥ सुगध सहित गोधूमनी पीठी, ए उवट्टणां साज हो ॥ ज० ॥ ९ ॥ आठ लोटी प्रमाण घडो एक, स्नान करणने नीर ॥ क्षोमयुगल कपासको निपनो, राख्यो ओढण चीर हो ॥ ज० ॥ ॥ १० ॥ अगर कुकुम वावनाचदन, विलेपन मरजाद ॥ धोलो कमल माळती कुसुम, सुघणो नहिं तस वाद हो ॥ ज० ॥ ॥ ११ ॥ कुडल अने नामाङ्कत मुद्रा, राख्या आभरण दोय ॥ अगर शेलारस धूपादिक सो, राखे इच्छा जोय हो ॥ ज० ॥ १२ ॥ घृत तेल तल्या तदूल पहुवा, दूधकी रावडी जाण ॥ पेज विधि परिमाण कह्यो ए, उपरतका पचक्खाण हो ॥ ज० ॥ १३ ॥ घृत पूरित घेवर मन गमता, खांड खाजा आगार ॥ कमल साल तदुल उपरंत सव, ओदनको परिहार हो ॥ ज० ॥ १४ ॥ मूग उडद मसूर ए तीनुं, उपरत त्यागी दाल ॥ नितको निपज्यो घृत शरद ऋतु ते, प्रातसन्ध्याको काल हो ॥ ज० ॥ १५ ॥ तिण वेलाको घृत जिण राख्यो, उपरांत को कियो त्याग ॥ अगथीयो स्वास्तिक रायडोडी, और नहिं खाणो साग हो ॥ ज० ॥ १६ ॥ आमळारस युत पालक सालणो, अवर तणो सव त्याग ॥ मूग दालका वडा कचोरी, उपरंत नहिं अनुराग हो ॥ ज० ॥ १७ ॥ टांकाको नीर सो पीणो राख्यो, झेल्यो जेह आकाश ॥ ककोल जायफल लविंग एलायची, कपूर ए पंच मुखवास हो ॥ ज० ॥ १८ ॥ चार अनरथा दडका सोगन, इम अठम व्रत धार ॥ शक्ति मुजब शिक्षा व्रत धारु, हरि हर देव परिहार हो ॥ ज० ॥ १९ ॥ ज्ञानका चौदे पंच समकितका, पच्योत्तर व्रत धार ॥ पांच संलेषणा ए सवि टाळु, नन्याणु अतिचार हो ॥ ज० ॥ २० ॥

पार्श्वसंतानीया गोशालकसे, जिग ते मिलीया जाय ॥ तिम अन्य तीर्थी ग्रहिया साधु, तिणने हुं वंदु नाग हो ॥ ज० ॥२१॥ वनलाउं नहिं पहेलां उपति, धर्मशुद्धि सुविचार ॥ चार आहार नहिं देउ तिणने, छ छंडी आगार हो ॥ ज० ॥ २२ ॥ समण निर्ग्रंथने देउ सुझतो, चउदे प्रकारनु दान ॥ इम व्रतधारी प्रभुने वदी, आव्या ते निज थान हो ॥ ज० ॥ २३ ॥ निजपत्नीसुं कहे प्रभु पासे, मे धार्यां व्रत बार ॥ तुमें पण जाइ करो प्रभु वदण, सफल करो अवतार हो ॥ ज० ॥ २४ ॥ कंत वचन सुणी रथमें बेठी, वांद्या श्री जगदीश ॥ तिण पण श्रावक व्रतज धार्यु, पूरी मन जगीश हो ॥ ज० ॥ २५ ॥ छे छे पोसा करे मासमे, नव तत्त्व का जाण ॥ तिलोकरिख कहे ढाल दूसरी, श्रावक करणी वखाण हो ॥ ज० ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ बारे व्रत पाले भलां, चउदा नियम विचार ॥ तीन मनोरथ चिंतवे, धारे शरणां चार ॥ १ ॥ निश्चल समकित दृढधर्मी, एकविश गुणका धार ॥ चउदे वर्ष एम वीतिया, करतां धर्म उदार ॥ २ ॥ पंदरमुं वर्ष वर्ततां, एक दिन आधी रात ॥ जागरणा करे धर्मकी, ते सुणजो विख्यात ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ आज भलो दिन उग्योजी, सीमधर स्वामीने वंदसां ॥ ए देशी ॥ आणदजी विचारी हो सुखकारी किरिया धर्मनी, कांइ भवजल तारण हार ॥ वाणिय ग्राममुरमांइ हो प्रभुताइ ठावी माहरी, कांइ बहु नरने आधार ॥ मुझ पर ममत सवाइ हो ममरथाइ नांइ माहरी, कांइ दुःकर संजम भार ॥ आ० ॥ १ ॥ जब थावे दिन उगाइ हो निपजाइ चारी आहारने, कांइ बुलाइ निज परिवार ॥ सयण सज्जन जीमाइ हो समलाइ कामज घर तणां, कांइ धारणी पडिमा ग्यार ॥ आ० ॥ २ ॥ थइ दिनकर उगाई हो कराई सहु विध

चिंतवी, कांइ ज्येष्टपुत्र घरभार ॥ सोंपी सीधाइ आया हो, कांइ कोळागनाम सनिवेशें, काइ वाणिय पुरन वार ॥ आ० ॥ ३ ॥ कोल्लाग सनिवेशने मांइ हो जिहा मित्र घणा कुलघर घणा, रहे पोपधशाला मझार ॥ तिणशालाने प्रतिलेखी छो, काइ दखी परठवण भूमिका वली कीनो दभसथार ॥ आ० ॥ ४ ॥ केवली भाख्यो धर्मज हो ते पाले परम आणदशु, कांइ प्रथम पडिमा मझार ॥ समकित निर्मल पाले हो काइ वद नहिं कोइ अन्य भणी, कांइ छे छडि परिहार ॥ आ० ॥ ५ ॥ दूजी पडिमामाइ हो अभि काइ धारा व्रतमें, कांइ पाले निरअतिचार ॥ त्रिजीम शुद्ध सामायिक हो चित्त लाइ पाले शुद्धपण, काइ घत्तिस दोप निवार ॥ आ० ॥ ६ ॥ चोथी पडिमामाइ हो चउदश ने आठम पूर्णिमा, कांइ अमावस्या तिथि धार ॥ मास मास खट पोसा हो धारे ते शुद्ध निश्चलपणे, कांइ वर्जित दोप अढार ॥ आ० ॥ ७ ॥ पचमी पडिमा पाले हो ते टाले स्नान शोभा वळी, काइ दिवस अब्रह्म निवार ॥ जे भाणे भोजन आवे हो नहिं खावे आप मगायने, करे काउस्सग्ग पापा मझार ॥ आ० ॥ ८ ॥ छठी पडिमा लव हो नहिं सेवे ते कुशीलने, काइ नारीकथा परिहार ॥ सातमी पडिमा जाणो हो प्रासुक ते खाणो मोकलो कांइ नहि करे सचित्त आहार ॥ आ० ॥ ९ ॥ आठमीम आरभ छड हो ते मढे प्रीति छे कायसु, काइ तेविशके भांगे विचार ॥ नवमीमें उम भाख हो नहिं राखे दासी दासने, कांइ पोत काम विचार ॥ आ० ॥ १० ॥ दशमी तु करकारी हो निज अरथे भोजन ज करयो, काइ ते वरज निरधार ॥ शिरपर मुड करावे हो पचप भापा दो भला, कांइ सत्य भने व्यवहार ॥ आ० ॥ ११ ॥ इग्यारमी पडिमा लेवे हो नहिं सेवे आश्रवद्वारने, काइ वरते जिम अणगार ॥मस्तक लोच करावे हो फरमावे हु साधु नहिं, काइ भेख मुनिनो धार ॥ आ० ॥

१२ ॥ पहेले मास एकांतर हो कांइ दुजी पडिमा दो मासनी, कांइ छट छट तपस्या धार ॥ त्रीजी तीन मासमे तेलां हो चोथी ते चारज मासनी, कांइ चोले चोले आहार ॥ आ० ॥ १३ एक एक मास वधावे हो वढावे तप इम एमही, कांइ इम पडिमा इग्यार ॥ करतां सुके भुक्खे हो लूखो अंग पड़ियो तदा, कांइ तन थयो पिंजराकार ॥ आ० ॥ १४ ॥ श्रावक सो विचारे हो नहिं सारे माहरी देहडी, कांइ शक्ति नहिं लगार ॥ आलोवि निंदी आतम हो निःशल्य थया शूरापणे, कांइ प्रणमी जगकिरतार ॥ आ० ॥ १५ ॥ पाप अठारा त्यागे हो कांइ वली जागे मोहनी नींदसें, कांइ थागे संवरद्वार ॥ धर्मध्यान चित्त ध्यावे हो कांइ त्यागे चारी आहारनें, कांइ जावजीव सुविचार ॥ आ० ॥ १६ ॥ इम निश्चल मन थापी हो तिण कापी ममता जालने, कांइ धार्‍यो अणसण सार ॥ तिलोकरिख कहे साची हो नहिं काची जाची भावमें, कांइ सफल कियो अवतार ॥ आ० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तिण अवसर आणंदजी, विशुद्ध लेश्या शुभध्यान ॥ ज्ञानावरणी क्षयोपशमे, उपन्युं अवधिज्ञान ॥ १ ॥ पूरव लवण समुद्रमें, पंचसें योजन जाण ॥ एतोही दाक्षिण पाश्चिमे, उत्तर हिमवत प्रमाण ॥ २ ॥ जाणे देखे ऊपरें, परथम स्वर्ग विचार ॥ नीचें जाणे रत्नप्रभा, स्थित चोरासी हजार ॥ ३ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ कीधां रे कर्म न छूटीयें ॥ ए देशी ॥ न्यायमारग जिनराज नो, भवःदुख भंजणहार लाल रे ॥ रिपुगंजण दृग अंजणो, शिव पदनो दातार लाल रे ॥ न्या० ॥ १ ॥ तिणकालें तिण अवसरें, समोसर्‍या जगदीश लाल रे ॥ गौतम छठतप पारणो, प्रभुने नमायो शीश लाल रे ॥ न्या० ॥ २ ॥ कहे मुझ छटतप पारणो,

जो तुम आज्ञा थाय लाल रे ॥ वाणियगाम नगर विषे, गोचरी जाऊं चलाय लाल रे ॥ न्या० ॥ ३ ॥ अहासुह प्रभुजी कह्यो, गौतम जी तिण वार लाल रे ॥ आज्ञा लेइने संचरया, जोवतां ईर्याविहार लाल रे ॥ न्या० ॥ ४ ॥ गोचरी करतां साभल्यो, आणद अणसण लीध लाल रे ॥ चिंतवे हुं देखु जई, इम निश्चे मन कीध लाल रे ॥ न्या० ॥ ५ ॥ पोषधशाला तिहां आविया, देखी आणद सोय लाल रे ॥ रोम रोम हर्षित थया, बोले अवसर जोय लाल रे ॥ न्या० ॥ ६ ॥ शक्ति नहिं प्रभु माहरी, आवणरी तुम पास लाल रे ॥ उरहा पधारा नाथजी, मानो मुझ अरदास लाल रे ॥ न्या० ॥ ७ ॥ चरणपें शीश नमाइने, प्रणम्या तीनज वार लाल रे ॥ पूछे उपजे के नहिं, अवधि गृहवास मझार लाल रे ॥ न्या० ॥ ८ ॥ गौतम सुणि स्वामी भणी तव सो कहे सुविचार लाल रे ॥ मुझ पण अवधि उपनो, कह्या छए दिशि विस्तार लाल रे ॥ न्या० ॥ ९ ॥ इम निसुणी गोयम वदे, ओहि उपजे गृहवास लाल रे ॥ पण एतो दीघ न उपजे, ए निश्चे वात विमास लाल रे ॥ न्या० ॥ १० ॥ ए स्थानक तुमें आलवो, ल्यो तप प्रायश्चित्त अगीकार लाल रे ॥ तव आणद वलता कहे, प्रभु सांभलो मुझ समाचार लाल रे ॥ न्या० ॥ ११ ॥ सत्य छतां यथाभाव से कहता नहिं दोप लगार लाल रे ॥ ए स्थानक तुमें आलवो, सुणि शका पडी तिण वार लाल रे ॥ न्या० ॥ १२ ॥ आई पूछे प्रभुथु तदा, आणद कह्यो जे विचार लाल रे ॥ नाथ कहे ते साची कहे थें लो प्रायश्चित्त तप सार लाल रे ॥ न्या० ॥ १३ ॥ जाय खमावो तिण प्रत्यें, इम सांभली गौतम जाय लाल रे ॥ प्रायश्चित्त लीनो प्रभु कने, खमावाने गया उमाय लाल रे ॥ न्या० ॥ १४ ॥ वीश वर्ष श्रावकपणो, धारी पडिमा अग्यार लाल रे ॥ एक मास अणसण कर्यो, सौधर्मकल्प मझार लाल रे ॥ न्या० ॥ १५ ॥ सौधर्मावतसक विमानथी,

कूण ईशाणने मांय लाल रे ॥ अरुणविमानमें ऊपना, चार पल्योपम आय लाल रे ॥ न्या० ॥ १६ ॥ सुख भोगवी त्यांथकी चवी, महाविदेहक्षेत्र मझार लाल रे ॥ संजम ले करणी करी, कर्म करी सहु छार लाल रे ॥ न्या० ॥ १७ ॥ केवलज्ञान लेई करी, जावसी मुक्तिनो मांय लाल रे ॥ अजर अमर सुख शाश्वता, लेसी सुख संवाय लाल रे ॥ न्या० ॥ १८ ॥ सवत उगणीशे गुणचालीसे, पौष कृष्ण बुधवार लाल रे ॥ त्रीज तिथि दिन रूयडो, दाक्षिणदेश विचार लाल रे ॥ न्या० ॥ १९ ॥ शहर सतारो प्रसिद्ध छे, पेठ भवानी वखाण लाल रे ॥ जोडयो चोढालियो चूपसू, सातमाअंग प्रमाण लाल रे ॥ न्या० ॥ २० ॥ अधिको ओछो जोडयो हुवे, ते मिच्छामि दुक्कड सोय लाल रे ॥ तिलोकरिख कहे सुणि धारसी, तस शिव सपत होय लाल रे ॥ न्या ॥ २१ ॥ इति आणंदजी श्रावकनु चोढालीयुं समाप्त ॥

॥ अथ कामदेवजीश्रावकनुं चोढालीयु प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ अरिहत सिद्ध आचार्यजी, उवज्झाया मुनिराज ॥ प्रणमुं सतगुरु देवजी, पूरो वंछितकाज ॥ १ ॥ सातमे अगें जाणीयें, दूजा अध्ययन मझार ॥ कामदेव श्रावक तणो, दाख्यो छे अधिकार ॥ २ ॥ तस अनुसारे वर्णवु, किंचित तास समास ॥ सुणो श्रोता शुद्धभावशुं, समकित रत्न उजास ॥ ३ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ घोडा देश कमोदना ॥ ए देशी ॥ तिण काले तिण अवसरें, चंपानगरी मझारो जी ॥ जितशत्रु तिहां राजवी, प्रजा भणी सुखकारो जी ॥ १ ॥ धन्य श्रावक जे शुभमति, कामदेव गाथापति जाणो जी ॥ छकोडी द्रव्य धरणी विषे, छकोडी व्याज वखाणो जी ॥ ध० ॥ २ ॥ छकोडी घर वखरी अछे, छ गोकुल वर्ग छे तासो जी ॥

मद्रा घरणी जाणीयें, भोगवे भोग उल्लासो जी ॥ भ० ॥ ३ ॥ अवररिद्धि आणद परें, दाखी छें सूत्रके माइ जी ॥ तिण काले तिण अवसरें, जगगुरु जगसुखदाय जी ॥ भ० ॥ ४ ॥ ग्राम नगर पुर विचरता, चपानगरी मझारो जी ॥ श्रीरजिणद समोसरया, करवा परउपगारो जी ॥ भ० ॥ ५ ॥ राजादिक गया वदवा, कामदेव पाय विहारो जी ॥ वदी बैठा प्रभु आगलें, मनमें हर्ष अपारो जी ॥ ॥ भ० ॥ ६ ॥ प्रभु दीनी उपदेशना, धर्म सदा सुखकारो जी ॥ जो आराधे भावशु, उत्तरे भवजलपारो जी ॥ भ० ॥ ७ ॥ कामदेव सुणि हरखीया, कहइ सत्य वेण छे थारो जी ॥ सयमनी शक्ति नहिं, धरावो व्रत बारो जी ॥ भ० ॥ ८ ॥ आणदनी परें जाणीयें, भन उपरत पच्चक्खाणो जी ॥ त्याग करया शुद्ध भावशु, धारा व्रत परिमाणो जी॥भ०॥९॥ सेवानदा तिम भद्रायें, धारया व्रत रसालो जी ॥ तिलोकरिख कहे सुणो आगलें, प यइ प्रथम ढालो जी ॥ भ० ॥१०॥

॥ दोहा ॥

॥ कामदेव श्रावक भला, टाले व्रत अतिचार ॥ चउद वर्ष इम बीतिया, पन्नरमा वर्ष मझार ॥ १ ॥ जागरणा आणंद जिम, ज्येष्ठ पुत्र घरभार ॥ देईने धारी नदा, पडिमा शुद्ध इग्यार ॥ २ ॥ एक दिन पोषधशालमें, पोषध लीनो भाव ॥ धर्मध्यान ध्याई रह्या, तिण अवसर प्रस्ताव ॥ ३ ॥ शक्रेंद्र सौधमपति, बैठा सभा मझार ॥ अवधिज्ञान करी जोइयो, कामदेव गुणधार ॥ ४ ॥ मुख जयणा करी बोलीयो भरतक्षेत्रनी मांय ॥ धर्मिपुरुष निश्चलमति, कामदेव अधिकाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ धिक सेरा जीवडा न करसा भरमकु ॥ प देशी ॥ निश्चल श्रद्धा समकित व्रतमाइ, इण अवसर कामदेव अधिकाइ ॥ नि० ॥ १ ॥ देव दानव असुर सुर जाइ, तिणने कोइ न सके

चलाइ ॥ नि० ॥ २ ॥ समदृष्टि सुर दीयो धनकारो, धन तिण नरनो सफल जमारो ॥ नि० ॥ ३ ॥ माहामिथ्यादृष्टि सुर तिणवारें, सुण कर सो मनमाहे विचारे ॥ नि० ॥ ४ ॥ अन्नको कीड़ो जीवे अन्न खाइ, तिणने एक छिनमे देउ चलाइ ॥ नि० ॥ ॥ ५ ॥ ऐसो विचार कियो मनमांइ, शीघ्रपणे तिहां आयो चलाइ ॥ नि० ॥ ६ ॥ महंत पिशाचको रूप बणायो, महा विद्रूप भयंकर कायो ॥ नि० ॥ ७ ॥ टोपला सरखो शीश बनायो, शूकर सरिखा केश जमायो ॥ नि० ॥ ८ ॥ कढायला सरखो कीयो कपालो, तालीकी पूंछ ज्युं भ्रमु विकरालो ॥ नि० ॥ ९ ॥ वाहिर छटक्या नेत्र का डोला, सूपड़ा सारिखा कान कुडोला ॥ नि० ॥ १० ॥ गाडर जिम चपटी तस नासा, फालीया सरखा दंतस त्रासा ॥ नि० ॥ ॥ ११ ॥ लटके उंट सा होठ कुरंगी, जिह्वा कतरणी जेम विभंगी ॥ नि० ॥ १२ ॥ खंध करया मृदंग आकारो, पुरपोल किमाड ज्यों हियो भयंकारो ॥ नि० ॥ १३ ॥ भुजा बीभत्स शिल्ला सी हथेली, खल बतासी अंगुलीकु मेली ॥ नि० ॥ १४ ॥ सीपपुड़सा तस नख विस्तारो, नाइ पेटी समथण भयभारो ॥ नि० ॥ १५ ॥ ढीलो छे संधी बंध शरीरो, देखतां कायर होत अधीरो ॥ नि० ॥ १६ ॥ काकीडा उंदराकी तनमाला, कुंडल नोलका अति विकराला ॥ नि० ॥ १७ ॥ उत्तरासण भुजगको अंग धरंतो, अट्टाट्टहास गर्जारव करंतो ॥ नि० ॥ १८ ॥ अति तीक्षण खांडो कर सायो, पोषधशाला तिहां चल आयो ॥ नि० ॥ १९ ॥ बोले वचन जिम कोपियो कालो, तिलोकरिख कहे दूसरी ढालो ॥ नि० ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

॥ हंभो कामदेव श्राद्ध तुं, मृत्युनो वंच्छणहार॥खोटा लक्षण ताहरां, हिरि सिरि वर्जणहार ॥१॥ धर्म पुण्य स्वर्ग मोक्षनो, तुं अछे वंछणहार॥ कल्पे नहिं तुझ खंडवां, शीलादिक व्रत बार ॥२॥पण हुं आज भंजावशुं,

पोषधादिक व्रत जेह ॥ नहिं तो येही खड्गशु, खंड खंड करुं देह ॥ ३ ॥ आरत रौद्र ध्यानवश, मरसी आज जरूर ॥ एक दोय तीन वार ते, बोले वेण करूर ॥ ४ ॥ वयण सुणी इम तेहनां, डरिया नहीं लगार ॥ धर्म ध्यान ध्यावे हिये, देव तदा तिण वार ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ सुरिजन सांभळजो सब कोय ॥ ए देशी ॥ क्रोधातुर मिस मिस थको काइ त्रिशूल लिलाडें चढाय ॥ तीक्ष्ण पाछणा धार सो कांइ, खड्गशु खंड काय ॥ भविकजन धन धन साहस धीर ॥ १ ॥ उजली वेदना ऊपनी कांइ, कहेता न आवे पार ॥ के तो जाणे आतमा काइ के तो जाण किरतार ॥ भ० ॥ २ ॥ त्रास नहिं एक रोममें कांइ, राख्या सम परिणाम ॥ कामदेव, सोचे सदा कांइ, मिथ्यात्वी सुरकाम ॥ भ० ॥ ३ ॥ ए खंडे मुझ कायने कांइ, मुझ समकित व्रतधार ॥ खंडवा समरथ छे नहिं कांइ, जो आवे देव हजार ॥ भ० ॥ ४ ॥ थाक्यो देव तिण अवसरें कांइ, जोर न चाल्यु लगार ॥ पोषधशालाथी नीकली कांइ, पिशाचको रूप निवार ॥ भ० ॥ ५ सत्त अंग लागे धरणीशु कांइ, धार्यो तिणें गजरूप ॥ अजनगिरिनी ऊपमा कांइ, दीसे महा विरूप ॥ भ० ॥ ६ ॥ पोषधशालामें आइने कांइ, तीन वार वली अेह ॥ बोल्यो ध॰न पहेली तणा कांइ, रच डरपा नहिं नेह ॥ भ० ॥ ७ ॥ क्रोधातुर महा शुंडमें कांइ, पोषधशालानी बहार ॥ उछाल्या आकाशमें कांइ, तीक्ष्ण दंत मझार ॥ भ० ॥ ८ ॥ झालीने निज पगतलें कांइ, ळोलळ्या तीनज वार ॥ महावेदना तिणें अनुभवी कांइ, चलिया नहीं लगार ॥ भ० ॥ ९ ॥ हस्तिरूप छोडी, करी कांइ सर्प घण्यो भयकार ॥ लाल नेत्र मशीपुंज सो कांइ, करतो फुफूंकार ॥ भ० ॥ १० ॥ पूर्वपरें वचन कह्या कांइ, अणबोल्या रह्या सोय ॥ निश्चलपणु जाणी करी कांइ, क्रोधातुर अति होय ॥ भ०॥ ११ ॥

तीन वीटा दिया कंठमें कांइ, विष सहित हिया मांय ॥ डंक कियो अतिजोरसुं कांइ, तो पण चलिया नांय ॥ भ० ॥ १२ ॥ थाको ते वेदनी देवता कांइ, जाण्या दृढ परिणाम ॥ तिलोकरिख कहे त्रीजी ढालमें कांइ, सुर कीधा वेदनी काम ॥ भ० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सर्परूप छोडी करी. निजरूप दिव्य ते धार ॥ कानें कुंडल झगमगे, साजि शोला शिणगार ॥ १ ॥ दश दिश प्रभा करतो थको, कटिघूघर घमकार ॥ हाथ जोडिने वीनवे लुल लुल वारं वार ॥ २ ॥ धन्य पुण्य कृत लक्षणा, सफल तुझ अवतार ॥ इंद्रें करी प्रशंसना, सोधर्मसभा मझार ॥ ३ ॥ में मिथ्यात्वतणे वशे. सत्य न मानी वाय ॥ धर्म डिगावण कारणे, दीयो परिसह आय ॥ ४ ॥ खमजो मुझ अपराध थे, नहिं करुं दूजी वार ॥ इम लघुता करी देव ते, संचरयो स्वर्ग मझार ॥ ५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ मोने वालो लागे विंछीयो ॥ ए देशी ॥ हांरे लाला तिणकालें तिण अवसरे, समोसरया वीर जिणंद रे लाला ॥ कामदेव सुणि धारीयो, पारणो करुं प्रभु पेली वंद रे लाला ॥ १ ॥ कामदेव श्रावक सिरें, जिणें पहेरया सहु शिणगार रे लाला ॥ प्रभु प्रणम्या शुद्ध भावशुं, हियडे अति हर्ष अपार रे लाला ॥ का० ॥ २ ॥ प्रभु दीनी उपदेशना, द्वादश परिषदाने मझार रे लाला ॥ कहे कामदेव थकी तदा, आजे आधी रात मझार रे लाला ॥ का० ॥ ३ ॥ तीन उपसर्ग देवें दीया, ते खमीया समपरिणाम रे लाला ॥ एह अर्थ समरथ छे के नहिं, सो दाखे हता छे स्वाम रे लाला ॥ का० ॥ ४ ॥ गौतमादिक साधु साधवी, आमंत्रिने कहे जिनराय रे लाला ॥ गृहस्थाश्रमें परिसह सह्या, तुमे तो थया मुनिराय रे लाला ॥ का० ॥ ५ ॥ द्वादश अंग भणीया तुमे, परिसह सहवा जोग रे लाला ॥ तहत्ति

वचन करिया सहु, श्रमणादिक राखी उपयोग रे लाला ॥ का० ॥ ६ ॥ प्रश्न उत्तर भगवतने, पूछी सहु गया निजगेह रे लाला ॥ आणन्द जिम पडिमा वही, अते ठायो अणसण तेह रे लाला ॥ का० ॥ ७ ॥ एकमास सलेपणा, प्रथम स्वर्ग मझार रे लाला ॥ अरुणाभ विमानें उपना, थिति दाखी पल्योपम चार रे लाला ॥ का० ॥ ८ ॥ चविने विदेहमें जावसी, तिहां लेसी नर अवतार रे लाला ॥ संजम ले करणी करी, ते जावसी मुक्ति मझार रे लाला ॥ का० ॥ ९ ॥ सवत उगणीशें गुणचालीशमें, पोपवदि चौथ तिथि जाण रे लाला ॥ देश दक्षिण कोकन विषे, शहर सातारो वखाण रे लाला ॥ का० ॥१०॥ तिलोकरिख कहे सूत्रन्यायशु, चोढालीयु रच्यु सुखकार रे लाला ॥ भणसी गुणसी शुद्ध सरधसी, तस होवसी खेवा पार रे लाला ॥ का० ॥ ११ ॥ इति कामदेवजी श्रावकनु चोढालीयु समाप्त ॥

॥ अथ एपणासमितिनु चोढालीयु प्रारभ ॥

॥ दोहा ॥

॥ धर्म मगल उत्कृष्ट छे, सयम तपस्या मांय ॥ प्रणमे सुर नर जेहने, सदा धर्म चित्त चहाय ॥ १ ॥ जिम मधुकर कुसुम भणी, दुःख नहिं देवे लगार ॥ रस ले तृप्त करे आतमा, तिम जाणो अणगार ॥ २ ॥ तप सजम प्रतिपालवा, भाडो देत शरीर ॥ दोप बइयालीस टालिने, आहार लहे गुणधीर ॥ ३ ॥ भिन भिन वर्णन तासको, कहु सूत्र अणुसार ॥ ते सुणजो भवियण तुमें, आलस उघ निवार ॥४॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ निर्मल सुद्धसमकित जिणे पाइ ॥ ए देशी ॥ त्रीजी समिति एपणा नामें, भांखी श्री जिनराया ॥ पाले मुनिवर शुद्ध रीतिसें शिवसुख गरजी डाह्या ॥ भाला श्रावक दाप लगावे, मुनिवर जाणे तो नट जावे ॥ १ ॥ ए टेक ॥ समुचय साधु कारण कीनो, असणादिक चउ आहारो ॥ आधाकर्मी आहार सो कहीयें, महोटो दोप विचारो

तीन वींटा दिया कंठमे कांइ, विष सहित हिया मांय ॥ ह
अतिजोरसुं कांइ, तो पण चलिया नाय ॥ भ० ॥ १२ ॥ थाको
देवता कांइ, जाण्या दृढ परिणाम ॥ तिलोकरिख कहे त्रीज
कांइ, सुर कीधा वेदनी काम ॥ भ० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सर्परूप छोडी करी. निजरूप दिव्य ते धार ॥ क
झगमगे, साजि शोला शिणगार ॥ १ ॥ दश दिश प्रभा क
कटिघूघर घमकार ॥ हाथ जोडिने वीनवे, लुल लुल
॥ २ ॥ धन्य पुण्य कृत लक्षणा. सफल तुझ अवतार ॥
प्रशंसना, सौधर्मसभा मझार ॥ ३ ॥ मे मिथ्यात्वतणे व
न मानी वाय ॥ धर्म डिगावण कारणे, दीयो परिसह आ
खमजो मुझ अपराध थे, नहिं करुं दूजी वार ॥ इम लघु
देव ते, संचरयो स्वर्ग मझार ॥ ५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ सोने वालो लागे विछीयो ॥ ए देशी ॥ हांरे लाला ति
तिण अवसरे, समोसरया वीर जिणंद रे लाला ॥ कामदे
धारीयो, पारणो करुं प्रभु पेली वद रे लाला ॥ १ ॥ कामदेव
सिरें, जिणें पहेरया सहु शिणगार रे लाला ॥ प्रभु प्रणम्य
भावशुं, हियडे अति हर्ष अपार रे लाला ॥ का० ॥ २ ॥ प्रभु दी
देशना, द्वादश परिषदाने मझार रे लाला ॥ कहे कामदेव थ
आजे आधी रात मझार रे लाला ॥ का० ॥ ३ ॥ तीन उपर
दीया, ते खमीया समपरिणाम रे लाला ॥ एह अर्थ सम
के नहिं, सो दाखे हता छे स्वाम रे लाला ॥ का० ॥ ४ ॥ ग
दिक साधु साधवी, आमंत्रिने कहे जिनराय रे लाला ॥ ह
श्रमें परिसह सह्या, तुमें तो थया मुनिराय रे लाला ॥ का०
द्वादश अग भणीया तुमे, परिसह सहेवा जोग रे लाला ॥

विण मिलीयां मुखडो कुम्हलावे, जिम राजानो गयो राजजी ॥ सो० ॥३॥ दीन दयामणो होय हियामें, घोले भिखारी जेम जी ॥ विणिमग दोप कह्यो जगदीशें, आहार मिल्या चितक्षेम जी ॥ सो० ॥४॥ ओषध भेपज केरें पडिगणो, आहार खुशामत काज जी ॥ तिगिच्छ दोप कह्यो जगदीशें, निपजे महोटो अकाज जी सो० ॥ ॥ ५ ॥ क्रोधें भरयो कहे रे रे कृपण, जो नहिं द्वे हम आहार जी ॥ होशे हाणी तन धन जननी, माया नहिं आसी तुझ लार जी ॥ सो० ॥ ६ ॥ तुम दातार उदार भलेरा और नहिं तुम तोल जी ॥ यें नहिं देशो तो कुण देशे, मान चढावे इम घोल जी ॥ सो० ॥ ७ ॥ दूध दहीदिक वछना मनमें, मुखसु मांगे छाछ जी ॥ दाखे सीरादिक पातरामाही, माया पदल कहे वाच जी ॥ सो० ॥ ८ ॥ आहार सरस अधिका त वहोरे, लाभ जणावे दातार जी ॥ दान दियासु अधिको मिलशे, लोभ दोप ए जहार जी ॥ सो० ॥ ९ ॥ वहोरतां पहेली अथवा पाछो वडाइ दोप दातार जी ॥ अथवा दोप लगावे कोइक, इणविध वहोरे आहार जी ॥ सो० ॥ १० ॥ विद्या शिखावे आहार खुशामत, मन्त्र जंत्र करि लेह जी ॥ चूर्ण वशीकरण जडी बुटी, आहारकाजें करे जेह जी ॥ सो० ॥ ११ ॥ ज्योतिप शुकन शास्त्र प्रयुजी दाखे सुख दुख जोग जी ॥ सुपनादिक फल आहारलोभथी, मोहे इणविध लोक जी ॥ सो० ॥ १२ ॥ विधवा कारण गर्भ गलावे, मूलकरम एह दोप जी ॥ आहार लोलुपी करम कर इम, पाप तणो करे पोप जी ॥ सो० ॥ १३ ॥ ए सोला दोपसो लागे साधुया सजमनो होय नाश जी ॥ तिलोकरिख कहे दोप निवारया लहीयें अविचल वास जी ॥ सो० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सोला उत्पातन तणा दोप कह्या जगदीश ॥ जे शिवसाधन ऊठिया, टाल विशवा वीश ॥ १ ॥ एहस्थिघरे गोचरी गया, दश वली

॥ भोला० ॥ २ ॥ एक साधुको नाम थापीने, करे सो उद्देशिक जाणो ॥ सुजतामांही मीन मिले तो, पूर्तकरम वखाणो ॥ भोला० ॥ ३ ॥ गृहस्थी साधू दोइ अरथे भेलो करि निपजावे ॥ मिश्रदोष कह्यो जगदीशे, कर्मबंध दरसावे ॥ भोला० ॥ ४ ॥ अवराने अंतराय देइने, थापे मुनिवर काजे ॥ पाहुणा आया पाछाने ते, सरस आहारी रिख साजे ॥ भोला० ॥ ५ ॥ अधाराथी करे उजवालो, वली वेचातो लावे ॥ उधारो मांगीने देवे, वदलो कर पलटावे ॥ भोला० ॥ ६ ॥ रिखजी काजे घरथी आणे, छादो उघाडी देवे ॥ अवके ठामें चढीने आपे, चढ ठाम तले देवे ॥ भोला० ॥ ७ ॥ निवला पासथी सवलो खोसे, अच्छिज्झ दोष ते कहाये ॥ सवकी पांतीमें एकज देवे, अणिशिठ दोष ते लहाये ॥ भोला० ॥ ८ ॥ आंधणमांही अधिको उरे, वहिरावणने कामे ॥ उदगसन ए सोला कहाये, गृहस्थी को छंदो हे जामे ॥ भोला० ॥ ९ ॥ असुझतो आहार वेरावे जो कोइ, ओछो आउखो पावे ॥ सूत्र भगवती तथा ठाणांगें, श्रीजिनवर दरसावे ॥ भोला० ॥१० ॥ देवावालो जहेरको दाता, तिणसुं अधिको जाणो ॥ तिलोकरिख कहे सूझतो देवो, पावो पद निर्वाणो ॥ भोला० ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सोला दोष दातारना, रिख टाली ले आहार ॥
भिन्न भिन्न वर्णन करु, सुणजो सव नर नार ॥१॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ आदर जीव क्षमा गुण आदर ॥ ए देशी ॥ वाल रमावे चित्र बतावे, आहार कारण जिम धाय जी ॥ समाचार कहे सगा सयणना, दूतिकर्म सो कहाय जी ॥ १ ॥ सोला दोष गुणीजन टाले पाले एषणा शुद्ध जी ॥ बुद्धिनिर्मल होय संजम साधो, पावो वास विशुद्ध जी ॥सो०॥२॥ जात जणावे गोत बतावे, आहार लेवणने काजजी॥

विण मिलीया मुखसो कुम्हलावे, जिम राजानो गयो राजजी ॥ सो० ॥३॥ दीन दयामणो होय हियामें, चोले भिखारी जेम जी ॥ विणिमग दोष कह्यो जगदीशें, आहार मिल्या चितक्षेम जी ॥ सो० ॥४॥ ओषध भेषज केरें पडिगणो, आहार खुशामत काज जी ॥ तिगिच्छा दोष कह्यो जगदीशें, निपजे महाटा अकाज जी सो० ॥ ॥ ५ ॥ क्रोधे भरयो कहे रे रे कृपण, जो नहिं देवे हम आहार जी ॥ होशे हाणी तन धन जननी, माया नहिं आसी तुम लार जी ॥ सो० ॥ ६ ॥ तुम दातार उदार भलेरा और नहिं तुम तोल जी ॥ यें नहिं देशो तो कुण दशे, मान चढावे इम बोल जी ॥ सो० ॥ ७ ॥ दूध दहींदिक वछना मनमें, मुखसु मांगे छाछ जी ॥ दाखे सीरादिक पातरामाही, भाषा चदल कहे वाच जी ॥ सो० ॥ ८ ॥ आहार सरस अधिका त वहोरे, लाभ जणावे दातार जी ॥ दान दियासु अधिको मिलशे, लोभ दोष ए जहार जी ॥ सो० ॥ ९ ॥ वहोरतां पहेली अथवा पाछो वढाइ दोष दातार जी ॥ अथवा दोष लगावे कोइक, इणविध वहोरे आहार जी ॥ सो० ॥ १० ॥ विद्या शिखावे आहार खुशामत मन्त्र जंत्र करि लेह जी ॥ चूर्ण वशीकरण जडी बुटी, आहारकाजें करे जेह जी ॥ सो० ॥ ११ ॥ ज्योतिष शुकन शास्त्र प्रयुजी दाखे सुख दुःख जोग जी ॥ सुपनादिक फल आहारलोभथी माहे इणविध लोक जी ॥ सो० ॥ १२ ॥ विधवा कारण गर्भ गलावे मूलकरम एह दोष जी ॥ आहार लोलुपी करम करे इम पाप तणा करे पोष जी ॥ सो० ॥ १३ ॥ ए सोला दोषसो लागे साधुथी संजमनो होय नाश जी ॥ तिलोकरिख कहे दोष निवारयां लहीयें अविचल वास जी ॥ सो० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सोला उत्पादन तणा दोष कह्या जगदीश ॥ जे शिवसाधन उठिया, टाले विशवा वीश ॥ १ ॥ गृहस्थिघरे गोचरी गया, दश वली

टाले संत ॥ ते सुणजो आलस तजी, भांख्यो श्रीभगवंत ॥ २ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ भावपूजा नित कीजीयें ॥ ए देशी ॥ शोला दोष उदगमन ना, एताही उतपातो जी ॥ और कोइ दूषण तणी, शंका पडे कोइ वातो जी ॥ १ ॥ तो मुनिवर वेहरे नहीं ॥ ए टेक ॥ जे अवसरका जाणो जी ॥ आप तथा दातारने, शंका अभिप्राय पिछाणो जी ॥ तो० ॥ २ ॥ हाथरेखा आली होवे, अंगुठादिक ठामो जी ॥ चोटी पटा डाढी मूछमें, आलो रहे कोइ जामो जी ॥ तो० ॥ ३ ॥ सचित्त द्रव्य नीचे धर्यो, उपर द्रव्य अचेतो जी ॥ अचेत उपर सचित्त धर्यो, गृहस्थी सो द्रव्य देतो जी ॥ तो० ॥४॥ लूण खडी जल सचित्तशु, ठाम जो खरडियो होवे जी ॥ तिणमें सो लावे आहारने, घहवो भाजन जोवे जी ॥ तो० ॥ ५ ॥ दातार अंधो ने पांगुलो, अथवा कंपण वाधी जी ॥ चालणकी शक्ति नही, अथवा कपण उपाधी जी ॥ तो० ॥ ६ ॥ पूरो शस्त्र नहिं परगम्यो, अधकाचो रह्यो जेहो जी ॥ होलाउंबी पुंखडा आद दे, गृहस्थि वेहरावे तेहो जी ॥ तो० ॥ ७ ॥ तुरतको लीप्यो आंगणो, टपका पाडतो लावे जी ॥ एषणाना दश दोष ए, श्रीजिनवर फरमावे जी ॥ तो० ॥ ८ ॥ ए दश दूषण न जेहमें, वेहरावे दातारो जी ॥ तिलोकरिख कहे त्रीजी ढालमें, दोषण तेणो विचारो जी ॥९॥

॥ दोहा ॥

॥ दोष बइयांलीस टालीने, आहार लावे अणगार ॥ पंच मांडला उपरें, दोष करे परिहार ॥ १ ॥ ते सुणजो सुगुणा रखी, रसना वश करि राख ॥ तो सुख लहिशो शाश्वता, सर्व सिद्धांतकी साख ॥२॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ पास जिनेश्वर रे स्वामी ॥ ए देशी ॥ एह रिख मारग रे नांइ, स्वाद करण करे आहार उमाही ॥ राजी गमतो रे आया,

अणगमतो करे सोच सवाया ॥ प० ॥ १ ॥ ताकी ताकी रे आवे, ताजा ताजा माळज लावे ॥ नीरसने वहोरे रे नांइ, घण रह्या कुवो लाल सदाइ ॥ प० ॥ २ ॥ जीमण देखीरे धावे, रसलपटने लाज न आवे ॥ मिलियाशु शोभा रे करतो, अणमिळीया पर निंदा उच्चरतो ॥ प० ॥ ३ ॥ मांड ज्यु कहीयें रे लेइने, परभव खटको रंच न जेइने ॥ दूधज आयो रे फीको, सक्कर आयां लागसी नीको ॥ प० ॥ ४ ॥ दाल अलुणी रे आइ, लुण विनाते स्वाद न कांइ ॥ चटणी पापड रे लावे, नानाविध सजोग मिलावे ॥ प० ॥ ५ ॥ गमतो आहारज रे आवे, दाबी चापीने अधिको खावे ॥ जिनजी की आज्ञा रे भगे, वली आशाता अति उपजत अगे ॥ प० ॥ ६ ॥ भोजन आयो रे भातो, देखी मनमें अति हरखातो ॥ सवटका लेइने रे खावे, चटपट चटपट मुडो वजावे ॥ प० ॥ ७ ॥ गरम मसाळो रे भारी, वघारी धुगारी रूडी तरकारी ॥ चतुरणी नारीरे दीसे, उण घरे जावणो विशवाविशें ॥ प० ॥ ८ ॥ स्वाता प्रशसा रे करतो, दिन उग्यांथी सांज लगे चरतो ॥ चारित्रने दाइज रे लागे, अगारा सम ओपमा सागे ॥ प० ॥ ९ ॥ आहारज नीरसो रे देखी, चित्तमें आरत आणे विशेपी ॥ मिरचां लुणज रे नांइ, वडनारी प नहिं छमकाइ ॥ प० ॥ १० ॥ वोले मुखशु रे खोटो, पाडे संजम धनको टोटो ॥ कारणविना आहारज रे खावे, पचमो दोप प स्वामि सुणावे ॥ प० ॥ ११ ॥ मडलदूपण रे पांची, तिलोकरिख कहे सुणजो साची ॥ उगणीसें छविस रे सालें, ग्राम सोनइ दक्षिण सुविशालें ॥ प० ॥ १२ ॥ आहारनां दूपण रे जाणो, चोथी ढाल रसाल वखाणो ॥ जे मुनि दूपण रे सवे, ते तो भवजल माहीज रेवे ॥ प० ॥ १३ ॥ छन्नु दुपण रे सारा, टाले सो धनधन अणगारा॥ इण भव शोभा रे भारी, आगे अजर अमर सुख स्यारी ॥ प० ॥ १४ ॥ इति पपणासमितिनु चोढालीयु सपूण ॥

॥ अथ विनयआराधनानुं चोढालीयुं प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीजिनराज प्ररूपीयो, विनयमूल जिनधर्म ॥ इम जाणी भवि आदरो, तूटे आठूं कर्म ॥ १ ॥ विनय विना शोभा नहिं, नाक विना जिम नूर ॥ जीवविना जिम देहडी, शस्त्र विना जिम शूर ॥ २ ॥ नमसी सो सुख आपने, इणमें शंक न कोय ॥ वालि तराजु तोलीयें, नमे सो भारि होय ॥ ३ ॥ आंत्र आंबली जंबुदिक, उत्तम वृक्ष नमंत ॥ तिम सुगुणी जन जाणीये, मध्यम तरु अकडंत ॥ ४ ॥ मात पिताथी अधिकता, गुरु उपगार अपार ॥ टालो अशातना सर्वथे, जो तरणो संसार ॥ ५ ॥ धर्मगुरु मत वीसरो, पल पल गुण करो याद ॥ सुगुणा जन सुणजो तुमें, गुरु गुण अगम अनाद ॥ ६ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ पास जिनेश्वर रे स्वामी ॥ ए देशी ॥ गुरुगुण समरो रे भावें, मोक्षमार्ग गुरु विना नहिं पावे ॥ गुरु गुण सागर रे दरिया, चरण करण रत्नागर भरिया ॥ गु० ॥ १ ॥ मोति जैसा मैला रे कहीयें, सक्कर सारिखा खारा मनइयें ॥ सुमेरु ज्युं समजो रे न्हाना, अणगमता निज प्राण समाना ॥ गु० ॥ २ ॥ अधीरज कुंजर रे जेहवा, केसरीसिंह जेम कायर कहेवा ॥ गुणधर जेहवा रे विराधि, भारंडपंखी जिम परमादी ॥ गु० ॥ ३ ॥ सुरगुरु जेहवा रे अभणीया, वैश्रमण जेहवा मूंजि सो थुणीया ॥ क्रोधी पूरा रे दीसे, टले नहिं जे कर्म शत्रु अरिसें ॥ गु० ॥ ४ ॥ शशिसम उष्णता रे जाणो, अप्रतापी जिम दिनकर मानो ॥ सुरतरु जेहवा रे अदाता, श्रीजिन जेहवा लोभी विख्याता ॥ गु० ॥ ५ ॥ शम दम उपशम रे करणी, करे गुरुदेव सदा भवतरणी ॥ भवजल तारक रे वाणी, दे उपदेश

सदा सुखदाणी ॥ गु० ॥ ६ ॥ मोहनी कर्मे रे अंधो, करतो नीच अकारज धधो ॥ दुर्गति पडतो रे राखे, निरवद्य वेण मधुर सत्य भांखे ॥ गु० ॥ ७ ॥ सतगुरु करुणा रे कीनी, धाधबीज समकित घट दीनी ॥ भर्म मिटायो रे भारी, सतगुरु सम नहिं कोइ उपगारी ॥ गु० ॥ ८ ॥ महिपति सजती रे नामें, पहुतो वन मृग मारणं कामे ॥ गर्दभाली मुनिवर रे तारयो, सजम लेइ निजकारज सारयो ॥ गु० ॥ ९ ॥ परदेशी हत्या र करतो, पाप करण सो रच न डरतो ॥ केशी गुरु तारयो र सोइ, गुणचालीश दिनमें सुर होइ ॥ गु० ॥ १० ॥ दृढप्रहारी रे नामें, चार हत्या करी जातो परगामें ॥ सतगुरु बोधज रे दीनो सजम दइ शिववासी सो कीनो ॥ गु० ॥ ११ ॥ एम अनता रे प्राणी, तरिया सतगुरुकी सुणि वाणी ॥ सेवा करसी रे भावें, सो नर भव भव में सुख पावे ॥ गु० ॥ १२ ॥ जिणें गुरु आज्ञा रे धारी, सो जिन आज्ञामें नर नारी ॥ गुरुकी तो महिमा रे भारी, तिलोकरिख कहइ नित बलिहारी ॥ गु० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ गुरु कारीगर सारिखा, टाकी वचन उचार ॥ पत्थरकी प्रतिमा करे, जिम सतगुरु उपगार ॥ १ ॥ मूल तेतीस आशातना, उत्तर अनेक प्रकार ॥ गुरुनी टालो आशातना जो तरणो ससार ॥ २ ॥ राग द्वेष पक्ष छोडजो, मत करजो मन रीस ॥ टाल्यांथी सुख पावसो, भाख्यो श्रीजगदीश ॥ ३ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ निर्मल शुद्ध समकित जिण पाइ ॥ ए देशी ॥ अडतो आगें पाछे बरोबर, उठे बेठे चाले ॥ एक एकमें तीन गणीजें ए नवभेद दीखाले ॥ १ ॥ जाणी एह आसातना प्राणी ॥ जिणन आगें नरक निसाणी ॥ ए आकणी ॥ गुरुसगात थंडिल पहुता, शुचि करे पहली चेला ॥ कोइक वदवा आवे तहने, बतलावे गुरु पहेलो

॥ जा० ॥ २ ॥ गुरु शिष्य आवे साथे उपाश्रय, पहेली ईर्या ठावे ॥ अवराने आगल आलोवे, आहार पाणी जे लावे ॥ जा० ॥ ३ ॥ गुरु पहेली वतावे परने, देवणकी मनवारो ॥ गुरुने विण पूछा पर सोंपे, सोलमी ये अवधारो ॥ जा० ॥ ४ ॥ लूखो सूखो निरसो विरसो, गुरुने दीनो चहावे ॥ सरस आहार मनगमतो देखी, आप लेइ हरखावे ॥ जा० ॥ ५ ॥ रात्रे सूतो गुरुजी पूछे, कुण सुतो कुण जागे ॥ सुण कर उत्तर दे नहिं जाणी, कामज करणो लागे ॥ जा० ॥ ६ ॥ गुरु वतलावे कारण पडिया, उत्तर दे आसण वेठो ॥ उठण केरो आलस अंगे, काम करणमें धिठो ॥ जा० ॥ ७ ॥ गुरु वतलायो कोइक कारण, सुणीयो करे अणसुणीयो ॥ जाणे कोइक काम वतासी, राखे मन अणमणियो ॥ जा० ॥ ८ ॥ गुरु वतलायो वेठो वेठो, शु कहो शु कहो वोले ॥ तहत्त वाणी मथेण वंदामि, सो तो कहे न भोले ॥ जा० ॥ ९ ॥ गुरु गरढा तपसीनी वेयावच्च, करता निर्जरा भारी ॥ एम सुणी सो कहे अपुठो, तुमने शु नहि प्यारी ॥ जा० ॥ १० ॥ गुरु देवे हित शिक्षा आणी, ज्ञान दीपक उजवालो ॥ कहे अपुठो गुरुशुं मूरख, पोते क्यो नहिं चालो ॥ जा० ॥ ११ ॥ तुं तुकारो देवे गुरुने, एसो मूरख प्राणी ॥ गुरु उपदेश देवे भविजनने, आणे चित्त अकुलाणी ॥ जा० ॥ १२ ॥ गोचरी वेला हुइ झाझेरी, दिन चढियो नहि दीसे ॥ वखाण थोभे नहिं भूखज लागी, वोले भरियो रीसे ॥ जा० ॥ १३ ॥ गुरुजी अर्थ कहे भविजनने, विचाविचमांही वोले ॥ कहे थाने शुद्ध अर्थ न आवे, वर्ष निकाल्या भोले ॥ जा० ॥ १४ ॥ गुरुजी कहेतां शिष्य पयपे, याद पूरी नहिं थाने ॥ मे कहुं सावत वात वणाइ, गुरु कथा छेदी वखाणे ॥ जा० ॥ १५ ॥ गुरु वखाण करे तिणमांही, कोइक काम वताइ ॥ पर्षदामांही भेदज पाडे, मूरख समझे नांइ ॥ जा० ॥ १६ ॥ गुरु वखाण करीने ऊठे, तिणहीज सभा मझारो ॥

॥ सोहीज शास्त्र सोहीज गाथा, करे अरथ विस्तारो ॥ जा० ॥ ॥ १७ ॥ हीणता जणावे निजगुरु केरी, पाडितपणो बतावे ॥ लोकसराबण सुण कर मूरख, मनमें अति अकडावे ॥ जा० ॥ १८ ॥ गुरुना आसण ओघा पुअणी पगसु ठोकर देवे ॥ गुरुने आसणे सुवे बेसे, उचो आसण ठेवे ॥ जा० ॥ १९ ॥ गुरुनी प्रशसा करे न पोतें, सुण कर अति मुरझावे ॥ तेत्तिस आशातना मूल कही सो, जहामूल्सु डावे ॥ जा० ॥ २० ॥ गुरुने आगें वस्तर केरी पालठी वाली बसे ॥ कर बांध किरसाण जु भोलो, टेके बेठे विशेषे ॥ जा० ॥ २१ ॥ पाय पसारी आलस मोडे पग पर पग चडावे ॥ विकथा माडे कडका मोड, गुरुन नहिं मनावे ॥ जा० ॥ २२ ॥ हडहड हस शरम नहिं राखे, जिम तिम बोले वाणी ॥ काम कर गुरुन विण पुछयां, खिच खिच बात ले ताणी ॥जा०॥ ॥ २३ ॥ गुरुजी काइक जिनस मगाय जावणका मन नाही ॥ उत्तर टाले बोज लगाइ, त सुणजा चित्त लाइ ॥ जा० ॥ २४ ॥ हाल वसत नही गोचरी केरी, अथवा नर नहि घरमें ॥ दीया होसी कीशाद बारणें, मिले न इण अवसरमें ॥ जा० ॥२५॥ वेहेरा वणरा भाव न दीसे, अथवा जिणर नांई ॥ असुजता के सूता होसी, वस्तु न मिलसी ठाइ ॥ जा० ॥ २६ ॥ अवार ता हु आखर सीखु लिखसु पाना परो ॥ पलेवणो तथा थडिल जाणो, अथवा घर छे दूरो ॥ जा० ॥ २७ ॥ सा तो कजूस तथा मिथ्यात्वी, मुझने नहिं पीछाण ॥ शरम आवे मुझ भीख मागता, जाउ केम अजाणे ॥ जा० ॥ २८ ॥ मुझने थड वाय नहीं सोसे, तडको चदीयो जासु ॥ कहे उन्हालो पाव बले मुझ, दिन ढलीयाथी सिधासु ॥ जा० ॥ २९ ॥ चोमासे कहे कीचड बहुलो, पग लपसे छे महारा ॥ भूख लागी थकलो पहिया पग अकड्या छे सारा ॥ जा० ॥ ३० ॥ महारा शरीरमें अडचण दीसे, चालण शक्ति नांइ ॥

एक वार मैं आणी दीधो, अब भेजो परनाइ ॥ जा० ॥ ३१ ॥ एक काम करावे तिणसे, जाणी ढील लगावे ॥ जाणे जलदी करसुं कारज, फेर मुझ और बतावे ॥ जा० ॥ ३२ ॥ विनयवंदणा करे न पहेली, कहे मुझ ज्ञान सीखावो ॥ पाछे करजो काम तुह्मारो, पहेला बोल बतावो ॥ जा० ॥ ३३ ॥ संयम लीधो मैं तुम पासे, एता दिनके मांइ ॥ काम कामसे काल वितावो, ज्ञान सीखावो नांइ ॥ जा० ॥ ३४ ॥ अवगुण आपणा देखे नांइ, वात करण को तसियो ॥ पेट भरीने नीदज लेवे, विकथा सुणवा रसियो ॥ जा० ॥ ३५ ॥ समीसांजथी पाय पसारे, भाणियो सो न चितारे ॥ टेके बेठ, अक्षर शीखे. भली शीख नहीं धारे ॥ जा० ॥ ३६ ॥ गुरुकी कहेणी करे वेठ जु, अवगुण ताके परका ॥ सुअर भ्रष्टा खावे खीर तज, ए लक्षण तिण नरका ॥ जा० ॥ ३७ ॥ अभिमानी अरु क्रोध घणेरो, चाले आपणे छंदे ॥ आप करे गुरुछानो कारज, परना अवगुण निंदे ॥ जा० ॥ ३८ ॥ गुरु देखीने अक्षर घोके, दीसे घणो सियाणो ॥ पीठ फेरीयां छांदे चाले, जाणे जग को राणो ॥ जा० ॥ ३९ ॥ आपणे हाथे कामज विगड़े, परने माथे नाखे ॥ गुरु पूछ्यां घुर्रावे श्वान ज्युं, रंच न साचु भाखे ॥ जा० ॥ ४० ॥ और आशातना भेद घणेरा, पूरा कह्या न जावे ॥ तिलोकरिख कहे ढाल दूसरी, भविक सुणी हरखावे ॥ जा० ॥ ४१॥

॥ दोहा ॥

॥ जे अविनयथी डरे नहीं, करे आशातना कोय ॥ ते दुःख किण परें भोगवे, सांभलजो भविलोय ॥ १ ॥ सडया कानकी कूतरी, जिणघरे जावे चाल ॥ नीकाले दुर दुर करे, इणविध होय हवाल ॥ २ ॥ परभव किल्विश देवमे, उपजे सो अविनीत ॥ तिहांथी मरी चउगतिसे, होवे पूरी फजीत ॥ ३ ॥ गुरु

बालक वृद्ध अणमण्या, ते पण अविनय टाल ॥ अग्नि जेम सेवन किया, शाता लहे विशाल ॥ ४ ॥ सुतो सिंह जगावणो, खेर अंगारे पाय ॥ गिरि खणवो जेम नखथकी, पोतें अशाता थाय ॥ ५ ॥ करतल मारे शक्तिपर, विष हलाहल खाय ॥ मिरचा आंजे आंखमे, पोतें अशाता थाय ॥ ६ ॥ एतो देवप्रभावथी विघन करे नहिं कांय, आशातना फल नां टले, करता कोइ उपाय ॥ ७ ॥ एक वचन ज्ञानीतणु, जो धारे नर नार ॥ तास अविनय तजवो कह्यो, दशवैकालिक मांय ॥ ८ ॥ जिणपासे धारणाकियो, सजम शिवदातार ॥ तेहनी करे आशातना, सो मूरख शिरदार ॥ ९ ॥ नीतिशास्त्रे पुण दाखीयो, सात वार होय श्वान ॥ सौ भव लहे चाडालना, आगें लहे दुख खान ॥ १० ॥ गुरुनी निंदा जे करे, महापापी कहेवाय ॥ सर्वशास्त्रे दरसावियो, मुक्ति कदहीं न जाय ॥ ११ ॥ के बेहेरा के बोबडो, के दुबल के दीण ॥ जिनमारग पावे नहीं, जो करे गुरुकी हीण ॥ १२ ॥ इम जाणी भवि प्राणिया, करा विनय गुरुदेव ॥ ते सुणजो सुगुणा तमें, किणविध करीयें सेव ॥ १३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ सोइ सयाणो अवसर साधे, अवसर साधे ने स्वामी अराधे ॥ ए देशी ॥ विनय करीजें भाइ विनय करीजें, विनय करीने शिवरमणी वरीजें ॥ ए टेक ॥ श्रीगुरुसेव करो मन रगे ॥ मोह कलेप कुमति सब भगे ॥ सजम किरिया गुरुमुख धारो, लुल लुल नमन करी गुरु ठावो ॥ वि० ॥ १ ॥ गुरु बतलाया तहत्त उच्चारो, क्रोध मान सब दूर निवारो ॥ कठिण सुणी श्रीगुरुजीकी वाणी, रीश करा मत हत पिछाणी ॥ वि० ॥ २ ॥ फरमावे गुरु काम जो कोइ, जज न करणी अवसर जाइ ॥ गुरु मुझ उपर कृपा कीनी, निजरारूप प्रसादी दीनी ॥ वि० ॥ ३ ॥ अगचेष्टा

श्रीगुरुकी देखी, सो कारज करणो सुविसेखी ॥ वैय्यावच्च करतां आलस छोडो, भक्ति किया पहेली मत पोड़ो, ॥ वि० ॥ ४ ॥ प्रश्न पूछतां हाथज जोड़ो, शीश नमावो मानज मोडो ॥ मधुर वचन प्रशसा करके, ज्ञान शीखो अति आणद धरके ॥ वि० ॥ ५ ॥ छोटा मोटासु हिलमिल रहीजे, अधिक भण्याको गर्व न कीजे ॥ खार इसको किणसुं राखणा नाई, महारो थारो करो मत कांइ ॥ वि० ॥ ६ ॥ वाद् विवाद् झोड़ मत मांडो, विकथा वात तणो रस छांडो ॥ वचन कहो मति कोइ मर्मनो, मनमे सदा डर राखो कर्मनो ॥ वि० ॥ ७ ॥ रीशवसे पातरा मत पटको, झजको खाइ दुजापर तटको ॥ जेम तेम वड वड पण नहिं करीये, लोक व्यवहारसु अधिको डरीये ॥ वि० ॥ ८ ॥ उंचे शब्दे करो मत हेला, सुण कर लोक होजावे ज्यु भेला ॥ जैनमार्गकी लघुता आवे, सांसारिक सगा सुणी दुःख पावे ॥ वि० ॥ ९ ॥ प्रियधर्मीकी आस्ता छूटे, क्रोधारिपु सजमधन लूंटे ॥ ऐसो काम करो मत शाणा, इणभवे निंदा आगे दुःख पाणा ॥ वि० ॥ १० ॥ रिद्धि छोड़ी जिणरो गर्व न कीजे, अधिकगुणी पर नजर जो दीजे ॥ आगलका अवगुण मत देखो, अपणा अवगुणको करो लेखो ॥ वि० ॥ ११ ॥ वाल तरुण वृद्ध जो जो नर नारी, सवथी जीकारे वोलो विचारी ॥ तु तुं तुकारो ओछी वोली, करीये नही कलु थट्टा रोली ॥ वि० ॥ १२ ॥ नींचे देखी धीरे पग मेलो, न्याय प्रमाण सुणी मत ठेलो ॥ संजम काममें निर्जरा जाणो, उज्ज्वलभावें शंका मत आणो ॥ वि० ॥ १३ ॥ पच व्यवहार प्रमाण करीजे, निश्चे व्यवहारकी नय समजीजे ॥ उत्सर्ग अरु अपवाद पीछाणो, सतगुरु वयण करो परमाणो ॥ वि० ॥ १४ ॥ इणविध करणी भवजल तरणी, दुःख दुर्गति आपद भयहरणी ॥ त्रीजी ढाल विनयरीत वरणी, तिलोकरिख कहे शिवसुख वरणी ॥ वि० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मान बडाइ ईरष्या, क्रोध कपट दे टाल ॥ महारो थारो छोडके, चाले रूडी चाल ॥ १ ॥ विनय करे गुरुदेवका, करे आज्ञा परिमाण ॥ तिणने महागुण नीपजे त सुणजो भवियाण ॥ २ ॥

॥ ढाल चाथी ॥

॥ रे भाइ सेवो साध सयाणा ॥ ए देशी ॥ रे विनयतणा फल मीठा, हलुकर्मी सुणकर हरखाव ॥ मुरझावे नर धिठा रे भाई विनय तणा फल मीठा ॥ ए टेक ॥ प्रगमे भलो ज्ञान विनीत शिष्यने, ज्ञान थकी भ्रम भाजे ॥ भर्मे गयासु समकित पुष्टि, समकीतसु व्रत छाजे रे ॥ भा० ॥ १ ॥ व्रत पाल्यासु धन धन बाजे, आदर अधिको थावे ॥ खमा खमा करे नर नारी, मनगमती चित्तपावे रे ॥ भा० ॥ २ ॥ विनयवत शिष्यने सीख चोखी, होवे सुशाताकारी ॥ इण भव मांही रिद्ध सिद्ध सपत, परभवमें सुख त्यारी रे ॥ भा० ॥ ३ ॥ होय आराधक सुरपद पावे, महेल मनोहर भारी ॥ रतनजडीत पचरग मनोहर, वासकुसुम छवि प्यारी रे ॥ भा० ॥ ४ ॥ ककर कटक पक रजादिक, नीच अपावन नांइ ॥ जाली झरोखा झगमग दीपे सुगंध रही महकाइ रे ॥ भा० ॥ ५ ॥ बत्तिस नाटक पड निस दिन जठ, राग छत्रिसें आलापे ॥ धप मप धप मप बाजे मृदगा, सुणतां श्रवण नहिं धापे रे ॥ भा० ॥ ६ ॥ नाना प्रकार हार ज्या लटके, तारण छे पच प्रकारें ॥ आयडता होय नाद् मनाहर, जाणे कोइ दवी उच्चार रे ॥ भा० ॥ ७ ॥ दोय सहस्र वर्ष छाटा नाटकमें, माटामें दश हजारो ॥ एक महुरतको काल ज्यु थीले, विनयकरणी फल भारो रे ॥ ॥ भा० ॥ ८ ॥ पल सागरथिति एम निकाली, तिहांथी चवी नर थावे ॥ सजमधारी करम निवारी, ज्ञान केवल साहि पाव रे ॥

भा० ॥ ९ ॥ होय अयोगी मुक्ति सिधावे, शाश्वता सुख जाणो ॥ विनय करण फल पार न पावे, शास्त्रका भेद पहिचाणो रे ॥ भा० ॥ १० ॥ सुणतां तो आणद वढावे, गुणता वुद्धि प्रकाशो ॥ पालतां तो शिवनां फल लहीये, राखो चित्त विश्वासो रे ॥ भा० ॥ ११ ॥ संवत उगणीसें छत्तिश सालें, तेरशवदि वैशाखे ॥ विनय फल ढाल कही वर चोथी, सर्व सिद्धांतकी साखे रे ॥ भा० ॥ १२ ॥ देश दाक्षिण विचरता आया, खानरा हिवड़ा मझारो ॥ तिलोकरिख कहे मूल धरमको, करवा पर उपगारो रे ॥ भा० ॥ १३ ॥ सुण कर राग द्वेष मत करजो, समुच्चय दियो उपदेशो ॥ नही मानो तो मरजी तुम्हारी, निजकरणी फल लहेशो रे ॥ भा० ॥ १४ ॥ दान शीयल तप भावना भावो, ए जगमें तंत सारो ॥ पालो अराधो विनय यथारथ, उतरया चाहो भव पारो रे ॥ भा० ॥ १५ ॥ कलश ॥ विनय करणी, दुःखहरणी, सुख निसरणी, जाणीयें ॥ इणलोक सोभा, आगें शुभगति, सिद्धांत न्याय वखाणीये, ॥ धरम मूलसो, विनय दाख्यो, सींचे तो फल पाइयें ॥ कहे रिख, तिलोक भाविका, आराध्यां शिव जाइये ॥ १ ॥ सर्व गाथा ॥ १११ ॥ इति विनयआराधनानुं चौढालीयु संपूर्णम् ॥

॥ ॐ अर्हं ॥

॥ अथ श्री गजसुकुमारकी लावणी प्रारंभः ॥

परम पति परमेश्वर समरो नेम जिनेश्वर उपकारी ॥ दे उपदेश भला हितकारक धार तिरे नर और नारी ॥ टेर ॥ खड़े खड़े तेलेकी तपस्या समरा वेसमण भंडारी ॥ कचनके गढ कोट बनाए देव पुरीसी छब प्यारी ॥ जरासंधकू मार चक्रसे तीन खंडका राज्य लिया ॥ परजाको फरजंदसी पाले वैरीका सब नाश किया ॥ अजर अमर खुशबखती शहरमे राज्य करत है मुरारी ॥ प० ॥ १ ॥ एक रोजका

जिन्न सुनो सब नेम प्रभूजी जहा आए ॥ छे साधूजी आज्ञा लेकर नगरी के अन्दर आए ॥ दो आए देवकीके घरमें मोदक लेकर सिधाए ॥ दो आए फिर उसी दममे आहार देके फिर पहुचाए ॥ दो आए फिर उनको घेराकर भरम भयो दिल विचारी ॥ प० ॥ २ ॥ कहे देवकी सुनो साधुजी स्वर्गपुरीके अनुहारे ॥ बडे बडे धनवत बसे यहा श्रावक हैगा दातारे ॥ कहो जी क्या नहीं मिले आहार यहा फिर फिर उस घरमें जाना ॥ कल्पे नहीं हम सुनी श्रवणसे नेम प्रभूका फरमाना ॥ हाथ जोडकर करे यों अरजी साधुक्रिया जाननहारी ॥ प० ॥ ३ ॥ देवकीका सवाल सुना यह समझ लिया मुद्दा सारा ॥ कहे साधुजी सुनरे देवकी महलपुर रहने हारा ॥ नाग गाथापति पिता हमारे सुलसाके अंगज प्यारे ॥ छहों भाइ हम एक सरीखे रग रूप वय उणिहारे ॥ मात पिताके बहुत लाडके बहोत्र कलामें हुसियारी ॥ प० ॥ ४ ॥ जवान उमर में जब हम आये मात पिता खुशवख्तीसे ॥ सुदर लडकी इम पतियोंकी शादी किवी सग बर्त्तीसे ॥ बत्तीस क्रोड रुपैये आये अशरफी इतनी जानो ॥ एकसो बानव बोल दायजो अलग अलग छहुके मानो ॥ और साहेबी थी बहुतेरी नहीं थे जन्मके भिखारी ॥ प० ॥ ५ ॥ बहोत रोज यों गुजरे भोगमें पडे नाटकके धुकारे ॥ एक रोज हम भाग्य उदयसे नेम जिनेश्वर पधारे ॥ बहोत थाठसे गये बदवा दिया उपदेश भला हमकू ॥ दुनियादारी जान अथिर हम जोग लिया है उस दमकू ॥ उसी रोज आज्ञा ले प्रभुकी छठ छठ तपस्या हम धारी ॥ प० ॥ ६ ॥ जनम मरणका डर हम रखके करें तपस्या सुन बाई ॥ तनको भाडा दन काज यहा चल आये मदिर माई ॥ पेट भरणके काम फकीरी हमने नहीं लीनी स्यानी ॥ पहले आये सा और जान तू हम दूजे यों ले मानी ॥ इतना जवाब देकरके सो फिर आये ठिकाने अनगारी ॥ प० ॥ ७ ॥

सुन जवाव देवकी सोचे जव मैं फिरती लडक पनमे ॥ कहा एवंतारिखजी मुझसे आठ पुत्र सुंदर तनसें ॥ जन्मेगा तू सुनरे देवकी और न जनेगी भरतखंडमे ॥ सो कहेनी तो झूठ भई सव आज देखे छहों परचंडमे ॥ नेम प्रभूके पास जायकर वहम मेरा मैं दूं टारी ॥ प० ॥ ८ ॥ उसी वक्त रथमाहे वैठ गई भ्रमभंजन पासे चलके ॥ जाते पहले हाल सुनाया वे थे धारक केवलके ॥ भद्दलपुरमें नाग गाथापति सुलसा उसकी थी नारी ॥ मृतवंध्या यों कही नैमित्तिक जव वो फिरती कोंवारी ॥ उसने सुन एक हिरनगवेषी मूरत कर पूजन धारी ॥ प० ॥ ९ ॥ किसी रोज पर प्रसन्न भया वह गर्भयोग समतोल करे ॥ जन्म समयकी वक्त बरोबर करके करमें लेके धरे ॥ तेरे फरजंद उसके पास रख पास रखे उसके तेरे ॥ छे लडके इस माफिक समझ ले विन तकदीर कैसे ठहरे ॥ छहों फरजंद ये तेरे मान तू तू है छहुंकी महतारी ॥ प० ॥ १० ॥ सुनके सो गइ छहुंके पास चल खडे खडे निरखन लागी ॥ हरख भराना वहुत वदनमे मोहदशा मनमें जागी ॥ अंगियाकी कस तूट गइ और दूध भराना है स्तनमें ॥ करके कंकण तंग भए हैं खुशीके आंसु भरे नैननमें ॥ वंदना करके आइ महलमें दिलमें सोच करे भारी ॥ प० ॥ ११ ॥ मेरे फरजंद सात हुये पन नहीं खिलाया एकही मैं ॥ नही न्हलाया जीमाया मैं काजल पन आंजा नही मैं ॥ चटा पटा चुखनी घुघरा नहीं वसाइ झूमर में ॥ नही पहिराया गहना कपडा थडी न कराइ उमर मैं ॥ डूब रही हैं फिकर समंदर नहीं मेरेसे दुखियारी ॥ प० ॥ १२ ॥ गदगली पाड हसाया नहीं मैं झगा टोपी बनवाया ॥ घाघू कहकर नहीं डराया पकड हाथ नहीं चलाया ॥ काजल दामना दिया न गालपर चांद सूरज मांड्या नही मैं ॥ कवा चाबके दिया

न मुँहमें जनवेकी दिक्कत सही मैं ॥ उस सायतमें पेर पदनकू चल आये वहां मुरारि ॥ प० ॥ १३ ॥ कहे कन्हैया सुनोजी मैया क्यों दिलगिरी हैं तुमकू ॥ फिक्र छोड कहो जिक्र सभी सच तब दिलगीरी मिटे मुझकू ॥ सो कहे सात जाये तुझ सरिखे खुब सूरत और श्यामवरन ॥ छह तो परघर बधे चैनमें जोग लिया उन भर जोबन ॥ आये थे घर आहार लेनेकू देखे नैननसे जहारी ॥ प० ॥ १४ ॥ सातवों सोला वर्ष गोकुलमें नाम अहिर थे धराया ॥ भाग्य उदयसे पाया राज्य अब सब दुश्मनकू हटाया ॥ छे छे महिने पेर पदनकू तू पन आता है चलके ॥ इसी वासते मैं दिलगीरी नैनन बुद पडे जलके ॥ कहे मुरारि सुन महेतारी मेटू मैं तुझ विसारी ॥ प० ॥ १५ ॥ करू इलाज जु होवे मुझ मैया खुब धीरप दीधी मैया ॥ आये पोषधशाला अंदर तप तेला कर जहां रैया ॥ याद किया दिल हिरनगवेषी चल आया वह उस दमसे ॥ हाथ जोडकर कहे देव यों क्यों बुलवाया कहो हमसे ॥ हाल कहा सब अपने दिलका सो सुनके यों उच्चारी ॥ प० ॥ १६ ॥ होगा मैया सही तुम्हारे आवेगा भर जोबनमें ॥ सो तो सजम जरूर लेगा खुशी रखो अपने मनमें ॥ ऐसा कहकर गया देव फिर हाल सुनाया जननीसे ॥ कोई कालमें चवके स्वगसे गर्भ रहा शुभ करनीसे ॥ नेक सायतमें जन्म भया है हुष मया घर घर भारी ॥ प० ॥ १७ ॥ सुरख रग और नल कुबेरसा गज तालव कोमल काया ॥ माता पिता फरजंद नाम तब गजसुकुमार यों ठहराया ॥ दर हमेशा बडे मोजसे बहोत्र कलामे राक भया ॥ बावीसमा जिनराज पधारे वदनकू केइ शक्स गया ॥ माधव छोटे भाइ सग ले चले खुशी सज असवारी ॥ प० ॥ १८ ॥ सोमल ब्राह्मणकी एक लडकी खेल रही थी रस्ते अदर ॥ रूप रग भर जोबन देखी भये अचंभे हरि

मन दर ॥ शादी लायक छोटे भैयाकी ऐसा दिलमें भान लिया ॥ कौवारा जनानखानामें रक्खो यों चाकरसे किया ॥ आप गये जहां थे जगनायक धर्मकथा सुनने सारी ॥ प० ॥ १९ ॥ नाथ कहे तन धन अरु जोबन कबहुं नहीं यह रहनेका ॥ मतलबकी यह सारी दुनिया पाप किया दिक्कत पावे ॥ अपनी करणी पार उतरणी और संग कछु नहिं आवे ॥ ऐसी समझ दिल धर्म धारना उतरोगे भवजल पारी ॥ प० ॥ २० ॥ बडे भ्राता निज महल पधारे गज-सुकुमार करे अरजी ॥ तुम फरमाइ सच दिल जानी मेरी दीक्षाकी है मरजी ॥ हुकम ले आउं मातपिताका नाथ कहे मत देर करो ॥ चल आया सो अम्मा पासे दो आज्ञा मत देर धरो ॥ मैं लहु जोग प्रभूके पासे मोहजाल है दुःखकारी ॥ प० ॥ २१ ॥ सुन सवाल यों फरजंदका तब मूर्च्छा खाय पडी धरती ॥ क्षणमात्रमे भइ सचेतन आंखें बुंदनसे झरती ॥ रे जाया तू मत ले फकीरी तेरे किस कामका नहीं टोटा ॥ कृष्ण सरीखा बधव तेरा तीन खंडमें हैं मोटा ॥ हाल चैन कर रह दुनियामें पिछे संजम ले धारी ॥ प० ॥ २२ ॥ जन्म मरण दिक्कत मेटनकी ताकत नही मेरे भैयाकी ॥ भोग हालाहल जहरसे जियादा खबर नहीं पलैयाकी ॥ काल जोरावर लगा सग मेरे कौन सायत ले जावेगा ॥ धन दौलत अरु माल खजाना यहांका यहां रह जावेगा ॥ इस वास्ते मैं लेउं फकीरी आज्ञा दे माता माहारी ॥ प० ॥ २३ ॥ बडे भाई दीक्षाकी सुनकर खोलेमे बैठाय कहे ॥ द्वारामतीका राज्य करो तुम अभीसे मत तू जोग लहे ॥ राज्य किया मैं वार अनती मेरेको नहीं कुछ परवा ॥ मैं तो चाहता प्रभुका शरणा भव सागरसे उद्धरवा ॥ हठ करो मत मुझसे कोइ खोटी है दुनियादारी ॥ प० ॥ २४ ॥ एक रोजका राज्य मनाकर दीक्षा महोत्सव मंडवाया ॥ पंच मुष्टि कर लोच सोच तज जगत जाल सब छिटकाया ॥ कहे देवकी सुनरे

मैया मुझको तूने रूलथाइ ॥ और मैयाको मत रूलाना यह मेरी कहनी माइ ॥ आज्ञा प्रभुसे दे गइ मंदिर गज मुनिवर दीक्षा धारी ॥ प० ॥ २५ ॥ हस्त जोडकर कहे साहेबसे मुक्तिपुरी सीधा रस्ता ॥ महाकाल मरघटमें धारु भिक्खु पडिमा दिल धस्ता ॥ नाथ कहे तुम सुख होय ज्यों लके हुकुम गए उस ठामे ॥ पलक खोलकर खडे ध्यान धर सिद्ध निरजन शिरनामें ॥ सराजाम यज्ञका लेनेको गया था सोमल धनधारी ॥ प० ॥ २६ ॥ दिन थोडा यों दिलमें सोचकर मरघट रस्ते चल आया ॥ पहेचाने मुनिराज चश्मसे बहोत बहोत गुस्स आया ॥ बिन तकसीरी शादी छोडकर बिन चताये जोग लिया ॥ त्रैखदला मे लऊ इसीसे बहोत बुरा यह काम किया ॥ शिरपर पाल बांधी मट्टीकी खैर अंगारे दिये डारी ॥ प० ॥ २७ ॥ तड तड तूटे नसाजाल सिर चरड चरड चमडी जलती ॥ खदबद खीच ज्यों भेजी करती आख छटक कर निकलती ॥ क बह दिक्कत मुनिवर जान के जाने जगनाथ पति ॥ अटल खडे सुमेरु पहाड ज्यों गुस्सा नहीं दिल एक रति ॥ क्षमासागर ज्ञान उजागर चित्त शरणा धारे चारी ॥ प० ॥ २८ ॥ अनंत वेर यह देह जली है नर्क बीच दु ख अनता ॥ महना पडा तेरे तह परवश फरमाया श्री भगवता ॥ जो तेरा शिर हले जराभर घात होवे छह कायनकी ॥ लहनायत लेवनकू आया तैयारी रख देवनकी ॥ सुसरे दिया सिरपाव मुक्तिका राख जतन कर हुसियारी ॥ प० ॥ २९ ॥ तेरा चेतन अजर अमर है नहीं कटे हाथियारनसे ॥ जले नहीं कुछ आतससे और बहे नहीं जलधारन से ॥ उडे नहीं यह हवामें कबही सडे नहीं कोइ खारनसे ॥ पुद्गल पिंड सो नहीं है मेरा गरज नहीं इस कारनसे ॥ ऐसा भाव चढे मुनिवरका चरण शरण की बलिहारी ॥ प० ॥ ३० ॥ पनिहारीकी नजर घडेपे नट ज्यों नृत्यपर रखे सुरता ॥ कामीक

दिल काम वसत है धर्मध्यान त्यों आतुरता ॥ शुक्लध्यानपर चढे मुनीश्वर कर्म शत्रुकों मार लिया ॥ पाये केवलज्ञान उसीदम मुक्तिनगरमें डंका दिया ॥ पहले पहुंचे सिद्ध क्षेत्रमें पीछे देह पडी जहारी ॥ प० ॥ ३१ ॥ आसपासके देवी देवता गगन माहे जयकार करे ॥ फूल पानीकी करे जहा बर्षा गायन गीत उछाह धरे ॥ दिन उगेसे भैया वंदनकु सज असवारी चल आते ॥ एक वुढ्ढा नाताकत बदनसे देखा ईंटको उठाते ॥ रहीम दिलमें आई हरिके एक मेली घर मझारी ॥ प० ॥ ३२ ॥ मालककूं जब ईंट उठाइ रखते देखी उस घरमें ॥ जवान सेकडा मिलके उस दम सबही मेली मंदिरमें ॥ प्रभुको वंदना करी हरखसे मन वचन तन भाव भले ॥ और सकल मुनिवरको वदे निजबंधव वंदनकूं चले ॥ देखे नही तब पूछे भैया कहा प्रभु पासे तब गिरधारी ॥ प० ॥ ३३ ॥ करुणा सागर कहे उजागर जिस कारण उन जोग लिया ॥ काम भया उसका सब सिद्धि एक शक्सने सहाय दिया ॥ मतलब सुनके गुस्से भराने कौन वो दुष्टी हत्यारा ॥ नाम पता उसका बतलावो जो भैया मारनहारा ॥ स्वामी कहे दिल गुस्सा छोडो वह तो हैगा उपकारी ॥ प० ॥ ३४ ॥ जैसे तुमने ईंट उठाइ दया आन दीनी साता ॥ ऐसे तुम समझो दिल अंदर क्यों होना उसपर राता ॥ पहिचानूं मैं कौन राहसे प्रभू कहे तुम घर जाता ॥ रस्ते अंदर तुमको देखकर मर जावेगा थरराता ॥ वे तो चले सोमल कहे दिलमें नेमिनाथ जाने सारी ॥ प० ॥ ३५ ॥ डरके निकला घरके बाहिर मिले सामने हरि उसके ॥ थर थर धूजके पडा जमीन पर छुटे प्राण तब एक धसके ॥ घीसके काया पुरीके बाहिर जल छिटकाया रस्तेमें ॥ बुरे कामका बुरा हाल है पापी नरककुंड धस्तेमें ॥ ऐसी समझ दिल करो धर्मको जो चाहते

भवजलपारी ॥ प० ॥ ३६ ॥ वसुदेव सरिखे जो पिता थे माता देवकीसी जिनके ॥ गरुडध्वज हलधरसा भैया कर्म न छूटे देखो उनके ॥ इसकर प्राणी कर्म बांधते रोतेही छूटे मुष्कल ॥ ऐसा समझ करम बांधो मत तबही चैन मिलेगा अचल ॥ शास्त्रमें देखा सो हम कहते मानो नसीहत नरनारी ॥ प० ॥ ३७ ॥ जय जय बोलो गजमुनिवर हद् क्षमा कर सिद्ध भये ॥ ऐसी क्षमा करे जो बदे उनकी जगमें सदा जये ॥ संवत् उगनीसे साल छत्तीसमें किवी निशानी यह चगी ॥ तिलोकरिख कहे धन जिनमारग जय जय साहेब सरवगी ॥ भव भव सरना हो जो मेरे तइ वंदू मे बारवारी ॥ प० ॥ ३८ ॥ इति श्रीगजसुकुमार की लावणी संपूर्ण ॥

॥ अथ श्रीसमकित छत्तिसी प्रारभ ॥

॥ रे भाई सेवो साध सयाणा ॥ एदेशी ॥ समकित विण भमियो चउगतमें, दु ख पायो महाभारी ॥ अपूर्वकरण आया विण भविका, समकित रहे सदा न्यारी ॥ रे भाई समकित रतन है भारी, राखो जतन सुविचारी रे ॥ भा० ॥ स० ॥ १ ॥ आउखो वर्जी सात कर्मकी, थिति गणल्यो नर नारी ॥ एक कोडा कोडी सागर बाकी, अतर मुहुरत हिण तारी रे ॥मा० ॥ स० ॥ २ ॥ अनतानुबधी की चोकडी जाणो ॥ मिथ्यात मोहनी अहारी ॥ समकित मोहनी मिश्र मोहनी, उपशमे सातु जे वारी रे ॥ भा० ॥ स० ॥ ॥ ३ ॥ उपशम समकित आवे जेवारे, खपायाथी क्षायिक भारी ॥ कांइक उपशमे कांइक क्षय थावे ॥ क्षयोपशम नाम विचारी रे ॥ भा० ॥ स० ॥ ४ ॥ पडति सास्वादन वेदे सो वेदक ॥ पांचु ए नाम विचारी ॥ उपशम सास्वादन उत्कृष्टी, फरसे जीव पचवारी रे ॥ भा० ॥ ५ ॥ क्षयोपशम असंख्या तिवारज आवे, वेदक एकही वारी ॥ क्षायिक आइ न जावे कदा फिर, सदा

काल रहे लारी रे ॥ भा० ॥ ६ ॥ पाछली चारमेंकी एक फरसे, अर्ध पुद्गलके मझारी ॥ पावे अजर अमर सुखनिश्चल, समकित की बलिहारी रे ॥ भा० ॥ ७ ॥ निश्चेमें समकित केवली जाणे, छद्मस्थ तो व्यवहारी ॥ सड़सठबोल अमोल आराधो, ते ते सुण जो विस्तारो रे ॥ भा० ॥ ८ ॥ प्रथम चार सद्दहणा सरधो ॥ मोक्षमारग तंतसारी ॥ एहनो परचो करो निशिवासर, भवभवमें सुखकारी रे ॥ भा० ॥ ९ ॥ दुजीसद्दहणा मोक्ष साधनकी ॥ सेव करो हित धारी ॥ समकित भ्रष्टनी संगति वरजो, कुतीर्थी परिहारी रे ॥ भा० ॥ १० ॥ तीन लिंग वली समकित केरा, सुणजो आलस वारी ॥ तरुण पुरुष जिम भोगमे राचे, तिम प्रभु वाणी विचारी रे ॥ भा० ॥ ११ ॥ भूख्यो क्षीरभोजन करे आदर, तिम जिनवाणी सुप्यारी ॥ भणवाकी इच्छा मिले तस दाता, हरखे जिनवचन संभारी रे ॥ भा० ॥ १२ ॥ दशको विनय करे मनरंगें, अरिहंत सिद्ध भगवानो ॥ आचारिज उवज्झाय थिवरनो, गण संघ सातमो जाणो रे ॥ भा० ॥ १३ ॥ साधर्मी शुद्ध क्रिया धारक नो, बहुमान भक्ति करीजें ॥ तीन शुद्धताकरो भवि प्राणी, भवसागरसुं तरीजें रे ॥ भा० ॥ १४ ॥ मन शुद्धता श्रीजिन ध्यावो, वचन थकी गुण गावो ॥ नमस्कार सो करो कायासु, अवर देव मत चावो रे ॥ भा० ॥ १५ ॥ पच लक्षणथी ओलख थावे, शत्रु मित्र सम भावे ॥ संसारशुं उदास रहे मन, धाय ज्युं बाल रमावे रे ॥ भा० ॥ १६ ॥ आरंभ परिग्रह त्यागणो वंछे, अनुकपा चित्त मांई ॥ सूक्ष्मभाव सुणी नहि मुरझे, दिढताई आणे सवाई रे ॥ भा० ॥ ॥ १७ ॥ पंच अतिचार टाले समकितना, प्रभु दाख्यो सत माने ॥ पाखंडीकी महिमादेख विशेषी, वंछे नही कछु जाने रे ॥ भा० ॥ १८ ॥ करणी फल संदेह न आणे, परपाखंडी नहीं परशंते ॥

॥जावे नही तिग पासे चऊाइ, सगे सुगुण सो विश्वसे रे ॥मा० ॥ १९॥ पच भूपण पहेला धीरजवतो, दीपावे मारग भारी॥ भक्ति करे वलि चतुर विचक्षण, श्रीसघ सेवे हुसियारी रे॥ भा०॥ २०॥ आठ प्रभाविकना गुण सानें, सर्वसिद्धात सो जाणे ॥ धर्मकथा केहवे विस्तारी, पावद्यु वादं सो ठाणे रे॥ मा० ॥ २१ ॥ तीन काल सर अवसर जाणे, तप करे दु करकारी ॥ अनेक विद्याना जाण सो होवे, कवितामें बुध भारी रे॥ मा०॥ २२॥ छे आगार विचारमु राखे, दान अ यतीर्थो ने देवे ॥ राजा बलवंत जातिना भयथी, मातिश्र स्वपमुख कहेवे र ॥ मा० ॥ २३॥ देवता अटवी काळ दुकाळें, देवे पण धर्म न माने ॥ जयणा षट करे भरमीसु, बोले पहेली प्रेम आने रे ॥ भा० ॥ २४॥ अधिक मिठासर्सु प्रीति जणावे, प्रतिलामे बहुमानो ॥ नमस्कार सो करे यथातथ, करता बडाई सयानो रे ॥ भा० ॥ २५ ॥ षट थानक वली धारो हियामें, धर्मरूपी तरु केरो ॥ समाकित मूळ कह्यो जगदीशें, सेवर वृक्ष रहे गेहेरो र ॥ भा० ॥ २६ ॥ धर्म सो नगर समाकित गढ सम, धर्म आभूषण जाणो॥ सम दरिसण पेटी जिम कहिये राखे अमेरीय नाणो रे ॥ मा० ॥ २७ ॥ धर्म सो मदिर नियम सो-समकित, इण विण ठेरे नाई॥ धर्म पदारथ समकित हाटमें, जतनसुं रहे तिणमाई र ॥ भा० ॥ २८ ॥ धर्म सो भोजन थाळी ज्युं समकित, राखो सुघड सदाई ॥ भावना खट वली छे समकितनी, भाव भव छे सुखदाई रे ॥ भा० ॥ २९ ॥ चेतना लक्षण जीवको परथम, सासतो पहिज युक्ते ॥ कर्मका कर्त्ता पहीज जाणो, पुण्य पाप पहि मुके रे ॥ भा० ॥ ३० ॥ भवि जीव कर्म खपावे तो मुक्ति, नही तो भम गति चारी ॥ ज्ञान दरिसण चारितर करणी, पही उपाय विचारी रे ॥ भा० ॥ ३१ ॥ सडसठ बोल व्यवहार समकितना, धारो हियाम तोळी ॥ भव घटे सा समकित सेव्या,

आगममें इम खोली रे ॥ भा० ॥ ३२ ॥ अंक विना जिम शून्यज वरथा, जैसो लिंपण छारो ॥ तप जप किरिया लेखे न आवे, पगाल कूटे जिम भारो रे ॥ भा० ॥ ३३ ॥ जिम सुई दोरा साहितज होवे, सो न खोवावे पावे ॥ तिम समकित फरसे एक विरियां, निश्चेइ मोक्ष सीधावे रे ॥ भा० ॥ ३४ ॥ देव अदोषी गुरु निर्लोभी, धर्मदयामें सदाइ ॥ ए शुद्ध सरधा परम पदारथ, राख्यो चित्त दृढताइ रे ॥ भा० ॥ ३५ ॥ समकित विण कोई मुक्ति न पहोचा, वर्त्तमान नही जावे ॥ नहीं जावे वली आवते कालें, आगममें दरसावे रे ॥ भा० ॥ ३६ ॥ संवत उगणीसें छत्तिस सालें, कीनी एह छत्तीसी ॥ तिलोकरिख कहे समकित धारो, चढति रहे धर्म विसी रे ॥ भा० ॥ ३७ ॥ इति समकित उत्पत्तिफर्सण संख्या नाम व्यवहार समकितका ६७ बोलाधिकार साहित समकित छत्तिसी संपूर्ण ॥

॥ अथ श्रावक छत्तिशी प्रारंभः ॥

॥ सिद्ध चक्रजीने पूजोरे भविका ॥ ए देशी ॥ देव निरंजन केवल धारी, वर्जित दोष अठारा ॥ चोत्तिश अतिशय पेतिश वाणी, भवजल तारण हारा रे ॥ भविका श्रीजिन आज्ञा आराधो, शिवपुर मारग साधो रे ॥ भविका श्रीजिन० ॥ १ ॥ गुरु गुण सागर परम उजागर, सत्यावीश गुण छाजे ॥ धर्म देवकी सेवन करतां, सकल भरम भय भाजे रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ २ ॥ धर्मजिन आज्ञा निरवद्य करणी, तरणी भवजल पारी ॥ इणसम अवर नहीं सुखदाता, तारिया अनंत ससारी रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ३ ॥ देव गुरु धर्म ए तिहु तत्त्व, निश्चल भावे सेवीजे ॥ अवर मत पराचित्त न दीजें, नरभव सफल करीजे रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ४ ॥ दशेरो दिवाली राखी ने होली, मिथ्या पर्व न कीजें ॥ धर्म पर्व सो सर्व मनावो, सुकृत लाहो लीजे रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ देव गुरु धर्म शास्त्र ए चारू,

रक्ष परख करो भाई ॥ यत्न करीने राखो हियामें, भव भवमें सुखदाई रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ निज आतम सम जीव जगतका, जाणी दया घट आणो ॥ सचत माटीसू अग नही धोजें, निर र्थक पाप घटाणो रे ॥ म० ॥ श्री० ॥ ७ ॥ अणछाण्या जलमें नहीं न्हाणो, पीणो पण वर्जीज ॥ मांसको भांगो घात पर्चेद्रिय, निरर्थक नहीं डालीर्जे रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ८ ॥ घृतसु मोंघो जल ने थें लेखो, पूज सो आग न दीजें ॥ उघाडो दीपक मति मेलो, जयणासें जतन करीजें रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ९ ॥ पाणीसु लकडी न बुझाणी, झटक फटक नहीं करियें ॥ छते मारग हरिकाय न चापो, निरथक रव न फरियें रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ १० ॥ रात्रि स्नान अरु भोजन वर्जो, रात्रे लीपणो टालो ॥ सलियो धान तावड नहीं दीर्जे सलिया लकड मत बालो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ११ ॥ आटो बेसण दाल अरू भाजी मत राखो विण जोई ॥ महोटो फल अथवा बहु बीजा छेदो मत जन कोइ रे ॥ भ० ॥ ॥ श्री० ॥ १२ ॥ दूध दही घी तलको बासण, उघाडो मत मेलो ॥ जूं माकड तावडे मत नाखो, चापड जूवा मत खेलो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ १३ ॥ निदयी पणे गाढ प्रहारं, मत मारो पर प्राणी ॥ गाडो वधण वजन घणेरा, लादो मति दया आणी रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ १४ ॥ आंधो काणो बहेरो पागुलो, बलो गुगो नर जेहने ॥ कठिण वचन वलि हांसी न करियें, दु:ख लागे जिम तेहने रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ १५ ॥ होय कलेश तो उपति खमावो, पक्खी पडिक्कमणा मांही ॥ हद चोमासी आधा न दीज, श्रावक व्रत कीजो चाही रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ १६ ॥ राज दंडे वलि लोकमें भंडे ॥ तइयो झूठ निवारो ॥ विना विचारे बात न कीर्जे, मर्म मोसा मत उचारो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ १७ ॥ विश्वास घात करो मत किणसू, थापण मन राखो पराइ ॥

लांच लेई झूठी साख न भरिये, परनिंदा दुःखदाई रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ १८ ॥ रागद्वेष वश आल न दीजे, पर अवगुण मत गावो ॥ पापको कारज होय कदापि, मनमें मति पोमावो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ १९ ॥ खोटो लेख लिखो मत कोई, मोटकी चोरी न कीजें ॥ कूडा तोला मापा ते वर्जो, चोरकूं साज न दीजे रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ २० ॥ कुंवारी विधवा परनारी, वेश्या गमन तज दीजें ॥ तीव्र अभिलाषा न किजें भोगकी, शीयलव्रत रस पीजें रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ २१ ॥ परधनकी अभिलाषा न करियें, निजधन समता राखो ॥ अधिक द्रव्य जो वधे त्यागसूं, पाप मांही मत नाखो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ २२ ॥ दिशि मर्याद करी तिण ऊपर, अधिक मत जावो आगे ॥ पच आश्रवको त्यागन करियें, जावतां त्याग न भागे रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ २३ ॥ अभक्ष आहार छोड़ो तुच्छ भोजन, कर्मादान तज दीजे ॥ अनर्थदंड कुचेष्टा कामकी, हिंसा उपदेश न दीजे रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ २४ ॥ घट्टी ऊखल मूसल सरोता, पावडा और कांदाली ॥ छुरा कटारी खड्गादिक शस्त्र, सग्रह करण दो टाली रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ २५ ॥ गइ वस्तुको सोच न कीजें, दुःख उपजे कोई आई ॥ निज कर्माको दोष बतावो, धीरज धरो मनमांई रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ २६ ॥ धर्मकाममें होजो अगवानी, पापमे मौन करीजे ॥ भोजन वस्त्र हाट हवेली, शोभाकूं शोभा न कहिजें रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ २७ ॥ वृक्षने मनुष्यकी उपमा दीनी, सूत्र आचारंग मांई ॥ महादूषण इणमांहि जाणके, झाड़ कटावणो नांई रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ २८ ॥ तीन वखत समभाव राखीने, सामायिक नित्य कीजें ॥ विकथा बात करो मत सुगुणा, दूषण दूर हरीजें रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ २९ ॥ दोष अठारा टालो पोसामें, मुनि जिम भाव धरीजें ॥ निर्दूषण प्रासुक आहार सो, भावशुं

साधु पडिलाभीज रे ॥ म० ॥ श्री० ॥ ३० ॥ चउदा नेम नित प्रते चितारो, तीन मनोरथ कीज ॥ दुःखीयो देख दया दिल लावो, शाकि जिम सहाज सो दीजें रे ॥ म० ॥ श्री० ॥ ३१ ॥ ज्ञान ध्यान तप जपका उद्यम, सदा करो भाव धरीने ॥ क्रोध कपट छल छद्द न कीजे धरीजें मुक्ति खीने र ॥ म० ॥ श्री० ॥ ३२ ॥ नव तत्त्वकी पाहिछाण करीजें, विनय भक्ति शुद्ध साधो, चिंतामणि सम नरभव दुर्लभ, समकित रत्न आराधो रे ॥ म० ॥ श्री० ॥ ३३ ॥ तन धन जोबन सर्व अथिर है, सज्जन स्नेही परिवारो ॥ पुण्य उदय सब जाग जा पाया, पाप उदय नहिं थारो रे ॥ म० ॥ श्री० ॥ ३४ ॥ दुःख आया शरणागत नाइ, भटक जीव ससारो ॥ तारक छे जैन धम जगतम इम जाणा उर धारो र ॥ म० ॥ श्री० ॥ ३५ ॥ अनत जीव तरिया और तरसी, वरसी शिवसुख प्राणी ॥ तिलाकरिख कह समजो भविका, साची श्रीजिन वाणी रे ॥ म० ॥ श्री० ॥ ३६ ॥ सवत उगणीशें माल सेंनीशें, महाशुक्ल दशमी जाणी ॥ वारभाम करमालापठमें, श्रावक छत्तिशी वखाणी रे ॥ म० ॥ श्री० ॥ ३७ ॥ इति श्रावक छत्तीसी सपूण ॥

॥ अथ भोलप छत्तिशी प्रारभ ॥

॥ सता दखो दुनिया मा॰ी ॥ ए देश ॥ ॥ भविका दखो न्याय विचारी ॥ सुगुणा दखा० ॥ भोली दुनिया भूलि भर्ममें, जाय जमारो हारी ॥ सु० ॥ ए टेक ॥ वीतरागका मारग तारक, जीवदया अगवानी ॥ हिंसा धरममें अधिकाराखे, कर जीवांकी हानी ॥ भ० ॥ १ ॥ दया दान विनय मूल धमसो, तीनुंही थास उठावे ॥ भग वत चूका कहे अज्ञानी, भव भव में दुःख पावे ॥ भ० ॥ २ ॥ सामायिक पोसाके मांही विकथा मांडे कुडी ॥ धर्म कथामें चित्त न राखे, रह्यो पापमें धूडी ॥ भ० ॥ ३ ॥ ज्ञानसीखतां गलो ज दुखे, लडता थुवडी पाडे ॥ स्तवन सज्झाय केहतां शरमावे,

ख्याल गावे अति गाडे ॥ भ० ॥ ४ ॥ धर्म दलाली पगलां दुःखे, पाप दलाली दोडे ॥ धर्मीने तो दूर बेठावे, पापीने राखे गोडे ॥ भ० ॥ ५ ॥ ताव तजारी आवे तनमें, सात दिवस नहिं खावे ॥ धर्मनिमित्त एक उपवासके, करतां मन मुकडावे ॥ भ० ॥ ६ ॥ व्याह मोहोत्सवमें खरचे सैंकडा, धनसें आग लगावे ॥ जीव दयामें खरचण काजें, दमडीसे नट जावे ॥ भ० ॥ ७ ॥ धर्म कामसे कायर अधिको, पाप करणने शूरो ॥ ले लोटो ने खावण दोडे, पर उपगारथी दूरो ॥ भ० ॥ ८ ॥ सज्जन कुटुंबी मिलिया हरखे, संत देख टल जावे ॥ मुनिवर वंदतां शरमज आवे, नीचने शीश नमावे ॥ भ० ॥ ९ ॥ पर्व पजूसण धर्मध्यान दिन, खेले चोपड पासा ॥ पापीकी तो करे बडाई, धर्मीका करे हासा ॥ भ० ॥ १० ॥ रांड भांड नट ख्याल करे जठे, सगली रात जगावे ॥ ज्ञान ध्यान की होय जहां चर्चा, झुक झुक झोला खावे ॥ भ० ॥ ११ ॥ होय लडाइ चर्चा विकथा, विण तेड्यो चल जावे ॥ धर्मकाज बोलावे कोई, मुखसें पट नट जावे ॥ भ० ॥ १२ ॥ पोते तो अवगुण को सागर, परनिंदामें राजी ॥ लोक बुराइसु नही डरपे, आल देत पर गाजी ॥ भ० ॥ १३ ॥ अक्रोधी अमानी अमायी, अलोभी जिनराया ॥ जिनको समरण करेन घेहला, भेरु भवानी माया ॥ भ० ॥ १४ ॥ लोक चढावे फूल फलादिक, देव देवे राखोडी ॥ तो पण विवेक अंध नहिं समझे, फिर फिर जावे दोडी ॥ भ० ॥ १५ ॥ वाजे जैनी ब्राह्मण वाण्या, मानता करे फकीरी ॥ वे बिन पाणी परवश मरीया, सो कांई देगा अमीरी ॥ भ० ॥ १६ ॥ भेरु भवानी कालिका चंडी, बोकडा भैंसा चडावे ॥ आप मारिने आपही खावे, देवी नाम बतावे ॥ भ० ॥ १७ ॥ बेटा बेटी काजे पापी, बकरा भैंसा मारे ॥ परकूं दुःख देकरके मूरख, अपनी शाता विचारे ॥ भ० ॥ १८ ॥ करे गणगोर पहेरावे गहेणां, गोरडी मंगल गावे ॥

पूजा कर पाणीमें पटकी, बेटा बेटी चावे ॥ भ० ॥ १९ ॥ देवकी गई हरि निरखण काजें, वरथपूजन मिश करके ॥ सा तेहवार मनावे भोळी, वाल्फवछा धरकें ॥ भ० ॥ २० ॥ घणा मनुष्य अरु रावण मरियो, वाज्यो नाम दशेरो ॥ सो दिन हर्ष मनावे अधिको, बांधे पाप घणेरा ॥ भ० ॥ २१ ॥ वीर जिनेश्वर मुक्ति विराज्या, दिवस दिवाळी जाणो ॥ दया धर्मतो पाले नहीं ओर, करे जीवकी हाणी ॥ भ० ॥ २२ ॥ व्यभिचारिणी हुई होलिका, भांड हुई जगमांही ॥ कु मौत नें भारी गई पापिणी, सो तेहवार थपाई ॥ भ० ॥ २३ ॥ धूल उडावे कीच मचावे, बणे होलीका पडा ॥ बोले खोटा निर्लज हुईने, सजे नरकका मडा ॥ भ० ॥ २४ ॥ पांचसें साधुको होमज करता, ब्राह्मणनाम नमुची ॥ विष्णुकुमर वामन रूप धरकें, दियो पगा तलें कुची ॥ भ० ॥ २५ ॥ हेमाचल नृप आई तेहने, मारताक दियो राखी ॥ भगत तेहवार थाप कर भोला, हाथमें बांधें राखी ॥ भ० ॥ २६ ॥ घरको मनुष्य मरे जिणदिवसें, सोग कहु मुखसेंती ॥ श्राद्ध ठेराई माल जेखावे, उलटी रीतें पचती ॥ भ० ॥ २७ ॥ मच्छ अवतार धरयो कहे प्रभुजी, मच्छ खावण नहीं छाडे ॥ वराह अवतार कहे वली धारयो, वराहा मारण दोडे ॥ भ० ॥ २८ ॥ गउ भाताके लाठी मारे, तुलशी माता ताडे ॥ जवार माता कही पीसिने खावे, मनकी वार्ता जोडे ॥ भ० ॥ २९ ॥ पृथ्वी पाणी तेउ वायु, दिश वड पिंपल पूज ॥ गाय गधेडा कन्या पूज, अंतरज्ञान न सूज ॥भ०॥ ३० ॥ इत्यादिककी पूजन थापे, कर न न्यायपरीक्षा ॥ घणा दुष्ट जो तुज पर एता, करशे आप सरीखा ॥ भ० ॥ ३१ ॥ देह अपावन परतक्ष सारी, उपर खाल पखाल ॥ न्हाया धोया धर्म होवे तो, मछली जलम चाले ॥ भ० ॥ ३२ ॥ श्रीजिन मारग उज्वल परतक्ष, तिणने भलो वताये ॥ हिंसाधम मळीन सदाही, जिणन

अधिक सरावे ॥ भ० ॥ ३३ ॥ गावे बजावे तानज तोडे, जेहनी महीमा सखरी ॥ होय उदासी जगमायासुं, तिणकी करे मस्करी ॥ भ० ॥ ३४ ॥ मोह करमके उदय करीने, भोलप कर दुःख पावे ॥ भोलप छत्तीसी सुण कर शाणा, श्रीजिनमारग आवे ॥ भ० ॥ ३५॥ इत्यादिक भोलपता तजवे, धर्म ध्यान करो खासा ॥ तिलोकरिख कहे सुकृतकीधां, होय मुक्तिमे वासा ॥ भ० ॥ ३६ ॥ संवत् उगणीसे छात्तिस फागण, वदि दशमी शनीवार ॥ सांईखेडा में एह निपाई, कर्या पर उपगार ॥ भ० ॥ ३७ ॥ इति भोलपछत्तिसी सपूर्ण ॥

॥ अथ पाच प्रकारना वैराग्यभाव उपर सवैया ॥

॥ आवत है तहेवार, तव करत स्नान, लोक करे अलंकार, केश समारे नर नारी है ॥ पहेरत भूषण निज, वित्तके मुजब सब, खावत सरस माल, फिरत हुशियारी है ॥ वीतत तेहेवार तव, फिरत निज रुपहीसे, आवत महोत्सव तब फिर वोही त्यारी है ॥ कहत तिलोकरिख, मटक वैरागी रीत, आवत परब धर्म, करे नर नारी है ॥ १ ॥ डंस मसक मच्छर जूं, माकड अरु दुष्ट जीव, तनपे चटको देत, दूःखत ते वारी है ॥ हाथसें खुंजाल कर, माने समाधान सुख, घडी पल वीत्या वाद, दुःख न लगारी है ॥ तैसी रीत चटक वैरागी नर जाणीयत, परत संकट माने, संसार दुखीयारी है ॥ मिटत है कष्ट तब, भूलत है धरम ध्यान, कहेत तिलोकरिख, सोहीबी असारी है ॥ २ ॥ लागत भूख वेग, मिलत न अन्न नित, मनमे विचारे सुखी, दीसे अणगारी है ॥ परखदामें कर जोड, कहे मुनिराज सेती, दीजीये संजम मोय, संसार असारी है ॥ मात कहे नंदनसे, आज्ञा है मेरी तुझ, भोजन जिमीने फिर, होजो दिक्षा धारी है ॥ खीचडी घृत खूब, जीमतही भूल्यो धर्म, खिचड्यो वैरागी रिख तिलोक उच्चारी है ॥ ३ ॥ तरुण

उमरमांही, मर जावे कोई जन, होवत उदास मन, झूरे नर नारी है ॥ ससार असार सब, सपनाकी माया सम, एक दिन सबहीकु, जाणो निरधारी है ॥ छोडीयें ससार फद, करस विचार जन, बालके स्नान करी, आवे घरबारी है ॥ मोह मदिरामें अध, करे फिर घर धध, मसाण्यो वैरागी रिख, तिलोक उच्चारी है ॥४॥, चटक मटक सीज्ये, खिचड्यो वैरागी जाण, मसाण्यो वैरागी चोथा, कह्यो सुविचारी है ॥ ऐसे जो वैरागी सोतो, कायरके माही जाण, छोडे न ससार चारी, मुखके लबारी है ॥ करत वडाइ खाली, बफोल सखकी रीत, आतमार्पे जोर सोतो, देत न लगारी है ॥ कहत तिलोकरिख, चारीकु न लागे शीख, सूका चूना उपर जो, टीपनीणा सारी है ॥ ५ ॥ करमची रग जैसे, धोवे कोइ खोम देवे, तार तार होवे रग, उडे न लिगारी है ॥ तैसे भव जीव हीये, धमरूपी लागे रग, जाणत असार जग, नागणीसी नारी है ॥ धन सब धूल सम, परिवार फास रूप, जानत अनीत विस, होय व्रत धारी है ॥ करणी तो करे शुद्ध, मन वच काय करी, कहत तिलोकरिख, वदना हमारी है ॥ ६ ॥ इति पाच प्रकारना वैराग्यभाव उपर सवैया समाप्त ॥

॥ अथ उपदेशिक तथा ३२ असज्झाय उपर सवैया ॥

॥ सचित्त पृथवी खड, पारेवासो करे सड, जबुद्वीपमें न माये जीव यता जाणीयें ॥ जलबिंदु मधुकर, तेउ सरसव सम, वाउ एक झवूकडे, खस खस ठाणीयें ॥ प्रत्यक वनसपती, असख्यात गुणाकार, साधारण सुइ अग्र, अनन्त प्रमाणीयें ॥ त्रस देह भिन्न भिन्न कहत है तिलोक चिन, निज प्राण सम जाण, अणुकपा आणीयें ॥१॥ चारे सहस्र आदर्श, चोवीस एक मुहूर्तमें, जनम

मरण पृथ्वी, पाणी तेउ वायमें ॥ साडी पेंसठ सहेंस, छत्तिस करे निगोदीया, बतिस हजार सो, प्रत्येक हरिकायमें ॥ बेंद्रीमांही असी साठ, तेंद्रिमांहि मरण होय, चौंद्रीमें चालीस संख्या, कही सूत्र रायमें ॥ असन्नी चोवीश सन्नी, एक भव होवे हद, कहत तिलोकरिख, धर्मी सो न जायमें ॥ २ ॥ आषाढ भाद्रव मास, कार्त्तिक पूनम चैत्र, असज्झायी चार एह, उरमें विचारियें ॥ श्रावण आसोज विद, अगण वैशाख धुर, पढवा चारुही इम, आठ ए संभारीयें ॥ प्रातःकाल मध्यादिन, संझा और मध्यरात, असज्झाय चार नित, दो दो घडी टारीयें ॥ एव बारे असज्झाय, कही चोथा ठाणामांही, ज्ञान आराधक जन, सूत्रपाठ वारीयें ॥ ३ ॥ आकाश की दश असज्झाइ, फरमाइ प्रभु, उल्कापात दिशिदाह, गाज विज जाणीयें ॥ कडके गगन बाला, वीज चंद्र जक्षु चेन, धुंवर शाम श्वेतरज, घात पहिचाणीयें ॥ दश औदारिक फुनि, हाड मांस रुद्र रसी, विष्टा स्मशाण चंद्र, रवि ग्रहण ठाणीयें ॥ राजमृत्यु विग्रह सवि, मिलके बत्तीस एह, कहत तिलोकरिख, प्रभु वेण मानीयें ॥ ४ ॥ दोहा ॥ अशुभ कर्मके हरणकुं, मंत्र बडो नवकार ॥ वाणी द्वादश अंगमें, शोध लियो तंतसार ॥ १ ॥ सवैया एकत्रीशा ॥ श्रीअरिहंत भगवंत बारे गुणवंत, सिद्धमहाराज मूल, अष्टगुण धारी है ॥ आचारज सो तो, गुण छत्तिस बिराजमान पच्चीस गुण उवज्झाय, ज्ञानके भंडारी हैं ॥ साधु साधे आतमा सो सत्ताविस गुण युक्त, सब मिली एक शत, आठ विसतारी है ॥ कहत तिलोकरिख, मन वच काय करी, सदाही उगंते सूर, वंदना हमारी है ॥ १ ॥ ज्ञान बधे ज्ञानी जोग, अनुभो प्रकाश भए, समकित बढे एक, निश्चलता धारेतें ॥ संजम वढत सो तो,

आश्रव तजत जेसो, तपस्या वधत तन, ममत निवारेतें ॥ क्लेश वढत टेक, करत न खावे गम, अहंकार वढे परहीणताके भारेतें ॥ आपके औगण पर, गुण ढाके छल वढे, कहत तिलोक लोभ, त्रसना वधारेतें ॥ २ ॥ क्रोध घटजाय एक, क्षमाके खडग मढे, मान घट जात भाव, विनय गुण धारेतें ॥ कपट घटत सो तो सरल स्वभाव किये लोभ घट जात एक, त्रसना निवारेतें ॥ हास घट जात मुख, मून कर लेम तदा, भय घट जात एक, धीरजता धारेतें ॥ कहत तिलोकरिख ज्ञान सों प्रमाद किये, किमत घटस एक, हिमतते हारेतें ॥ ३ ॥ दोहा ॥ जव लग मेरु अडग है, जव लग शशि अरु सूर ॥ तव लग आ पुस्तक सदा, रहेजो गुण भरपुर ॥ १ ॥

इति श्री सत्य बोध ग्रंथ

॥ समाप्त ॥

शुद्धिपत्र.

पान	ओळ	अशुद्ध	शुद्ध
१	२६	उंदगलं	उदंगलं
५	४	वैक्रियमा	वैक्रियकी
७	२०	नित्य	नित्यमेव
१६	९	वदूं	वंदू
२०	२	कष्ट	कष्ट
२१	१७	नमीश्वर	नेमीश्वर
२४	२१	दोयेशे	दोयेशे
२६	३	देवाद्धि	देवर्द्धि
२६	१६	तर्जंन	तर्जन
३४	६	वसुवर	विशुद्ध विशुद्ध
३४	१६	सुवर्ण नो	सुवणनो
३५	१७	सहस्र	सहस्र
३८	८	पूरमें	पुरमें
३८	१४	कया वखत	वखत कया
३८	२१	तीर्थंकरें	तीर्थंकरें
३९	७	चक्रराज१७	चक्र १७ राजपुर १८
...	...	पुरठाई १८॥	ठाई ॥
४०	२०	१७, तेज अनुक्र्में	तीज अनुक्रमें
		विचारो १८,॥	विचारो १७
४०	२०	१९	१८
४०	२१	२०, २१	१९, २०
४०	२२	जहारो ॥	जहारो २१
४२	५	हे	छे
५४	१५	सुनिवर	मुनिवर
५७	१७	मासामें	मासमें
७०	१	मा० ॥२॥	म० ॥२॥
८६	१	वामया	वमिया
८६	२२	रिधा	ऋद्धि
९०	९	ब्रम्हचर्यं	ब्रम्हचर्य
१०६	२६	घणी	वर्णी
१०७	७	बिनु	त्रिन
१०८	२१	नवकर	नवकार

पान	ओळ	अशुद्ध
११४	२४	ग्यान
११५	७	मेनें
११५	१५	मदन
११९		१०१
११०.	१२	सुण
११९	१४	अनुरागें
१२७	४	छेन
१३०	५	अमृता
१३४	१	ˎ
१३७	१७	जात्रमां
१३८	२२	आतरज्यामा
१३८	२५	सुजयत
१३९	२	मूज
१४३	२	साल
१४३	१७	श्रणिक
१५२	१२	खरि
१५२	२२	सूत्रक न्योंव
१८४	२	वेळ
१८४	२६	उ मुहा दाई
१९५	१	धनव्रत
१९८	३	मार्वक्त
१९८	१८	कहं
१९९	७	जवे
१९९	२५	द ख
२००	२५	हाणी
२२७	६	तिहं
२४३	१२	नोदमें
२५८	१९	वोग्गावुं
२६०	३	मिक्षा
२६२	७	मुनिराय
२७९	२	अवररिद्धि
३०५	१२	करता